

औलिया-ए-रिजालुल हदीस

लेखक

शैखुल हदीस हज़रत अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान

नाशिर

आज़मी बुक डिपो

तकसीम कार

मौहम्मदी बुक डिपो

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

ह़ज़रते इमाम अबूह़नीफ़ा(रह़मतुल्लाहितआलाअलैहि)

आपका इस्मे गिरामी नोमान बिन साबित और लक़ब इमाम आज़म है 80 हिजरी में आपकी विलादत हूई और 150 हिजरी में वफ़ात पाई और बग़दाद के क़बरस्तान ख़ैज़रान में मदफ़ून हूए।

खा़नदान

तमाम मोअर्रिख़ीन के नज़दीक़ इत्नी बात तो मुसल्लमुस्सुबूत है कि आप का ख़ान्दानी तअल्लुक़ अजमी नस्ल से है अल्बत्ता इस में इख़्तिलाफ़ है कि आप किस नस्ल से हैं ? और अरब में क्यों कर आए ? इस सिल्सिले में आप के पोते इस्माईल बिन ह़म्माद का बयान है कि हमारा शजरा–ए–नसब इस्माईल बिन ह़म्माद बिन नोमान बिन साबित बिन नोमान बिन मर ज़बान है और हम लोग नस्ले फ़ारस से हैं और हम कभी भी किसी की गुलामी में नहीं आए हमारे दादा साबित कूफ़े में पैदा हुए तो उनके वालिद उन्हें लेकर अमीरुलमोमेनीन ह़ज़रत अ़ली रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अमीरुल मोमेनीन ने उन के लिए और उन की औलाद के ह़क़ में ख़ैर व बरकत की दुआ़ फ़रमाई और हम को उम्मीद है कि वह दुआ़ बे असर नहीं रही। (तारीख़े बग़दाद तरजुमा अबूह़नीफ़ा)

ज़ाहिर है कि घर का ह़ाल घर वाला ही सब से ज़्यादा जानता है लिहाज़ा इस सिल्सिले में इस्माईल बिन ह़म्माद ही का बयान सब से ज़्यादा क़ाबिले वुसूक़ है।

हुलया–ए–मुबारक

इमामे आज़म अबूह़नीफ़ा मियाना क़द ख़ूबसूरत ख़ुश लिबास और इन्तिहाई वजीह थे इत्र का बकसरत इस्तिअ़्माल फ़रमाते थे हुसने सूरत के साथ हुस्ने सीरत में भी अपनी मिसाल नहीं रख़ते थे निहायत ही करीमुन्नफ़्स सख़ी ग़मख़्वार मुतवाज़ेअ़् बलन्द हिम्मत शीरीं आवाज़ और ख़ुश बयान थे ।

आप का इल्म

इब्तेदा–ए–उम्र में आप एक तिजारत पेशा सालेह(नेक)नौ ज़वान थे तअ्लीम व तअ्ल्लुम से कोई ख़ास तअ्ल्लुक़ नहीं रखते थे नागहाँ एक दिन कूफ़ा के अज़ीमुश्शान और मशहूर मुहद्दिस हज़रत इमाम शअ्बी ने आप को देखा तो फ़रमाया कि ऐ अबूहनीफ़ा ! मुझ को तुम में इल्मी सलाहीयत के जौहर नज़र आते हैं लिहाज़ा तुम उलमा की दर्सगाह में हाज़िर हो कर इल्म हासिल करो हज़रत इमाम शअ्बी की इस मुख़्लिसाना नसीहत का आप के दिल पर बड़ा गहरा असर पड़ा और आप एक दम तहसीले उलूम में मश्गूल हो गए और अपनी फ़ितरी ज़िहानत और ज़ौक़ व शौक़ के साथ बे पनाह मेहनत की बदौलत तमाम उलूमे मुरव्विजा यअ्नी अदब, इल्मुल अन्साब, अय्यामुल अरब, इल्मे कलाम, फ़िक़्ह व हदीस वग़ैरह में मरतबा कमाल पर पहुँच गये ख़ासकर इल्मे फ़िक्ह में तो ऐसे बाकमाल हो गये कि बड़े बड़े इल्मे हदीस व फ़िक्ह के पहाड़ों ने आपकी इल्मी जलालत व बरतरी का एअ्तेराफ़ करते हूए आपके इमामुलअइम्मा होने की शहादतें दीं इल्मे फ़िक्ह में इमाम मम्दूह ने हज़रत हम्माद बिन अबी सूलैमान की दर्सगाह को अपने लिए काफ़ी समझा और दस बर्स तक उन्की सोहबत से फ़ैज़ियाब होते रहे मगर इल्मे हदीस की तलब में बहुत ज़्यादा शुयूख़े हदीस की दर्सगाहों में हाज़री दी यहाँ तक कि बड़े बड़े बाकमाल मुहद्दिसीन व फ़ुक़्हा ने आप के इल्म व फ़ज़ल की दाद दी।

हज़रत इमाम औज़ाई जो मुल्के शाम के मुसल्लेमुस्सुबूत इमामुलहदीस हैं आपके मुख़ालिफ़ीन के परोंपैगन्डों से मुतास्सिर हो कर आप से बदगुमान थे लेकिन जब आपकी तसनीफ़ात के चन्द औराक़ का मुतालअ् किया और फिर अैयामे हज में मक्का मुकर्रमा के अन्दर जब इमाम अबूहनीफ़ा से मुलाक़ात हुई और रफ़ऐ यदैन के मसअ्ले में मुकालमा हूआ तो इमाम औज़ाई आपकी इल्मी जलालत पर हैरान रह गए और अपनी बद गुमानी पर कफ़े अफ़सोस मलने लगे

और खुश हो कर अपनी सनद से इमाम अबूहनीफ़ा को सर फ़राज़ फ़रमाया और तमाम उम्र आपके मद्दाह रहे।
(फ़तहुलक़दीर व हुज्जतुल्लाहिलबालिगा वग़ैरह)

हज़रते इमाम बाक़र का फ़ैज़े सोहबत

अहले बैत के चश्म व चिराग़ हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र रदियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमते अक़दस को जब हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा ने हाज़िरी दी और चन्द मसाइल पर सियर हासिल (भरपूर) तक़रीर फ़रमाई तो हज़रत इमाम मुहमम्द बाक़र रदियल्लाहु तआला अन्हु इस क़दर खुश हुए कि जोशे मसर्रत में उठ कर उनकी पेशानी चूमली। (उक़ूदुलजमान बाब नम्बर–16)

फिर एक मुद्दत तक आप इमाम मम्दूह की ख़िदमत में हाज़िर रहे और फ़िक्ह व हदीस के मुतअल्लिक़ बहुत सी नादिर मअ़लूमात हासिल कीं चूनाँचे शीआ व सुन्नी दोंनों मूअर्रिख़ीन ने उस को माना और इमाम अबूहनीफ़ा की मअ़लूमात का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा हज़रत इमाम बाक़र का फ़ैज़े सोहबत था ।

हज़रते इमाम जअ़फ़र सादिक़ से इल्मी इस्तेफ़ादा

इसी तरह आप ने हज़रत इमाम बाक़र के फ़रज़न्दे रशीद और जानशीन हज़रत जअ़फ़र सादिक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के फ़ैज़े सोहबत से भी बहुत ज़्यादा इल्मी इस्तेफ़दा फ़रमाया और यह दोनों मुक़द्दस हस्तियाँ जिन के घर से फ़िक़्ह व हदीस बल्कि तमाम मज़हबी उ़लूम निकले अपने सआदत मन्द शागिर्द इमाम अबूहनीफ़ा को अपने इल्मी फ़ैज़ान से हमेशा सर फ़राज़ फ़रमाती रहीं और उन दोनों बुज़ुर्गों और दूसरे अकाबिर ने आप की वुसअते मअ़लूमात पर अपनी मुहरे तस्दीक़ सब्त फ़रमाई और आप के तमाम असातिज़ा आप पर इन्तेहाई शफ़ीक़ और आप की इल्मी क़ाबिलियत के मद्दाह रहे।

हम्माद बिन अबूसुलेमान की दर्स गाह में इमाम अबूहनीफ़ा के सिवा कोई शख़्स आपके सामने नहीं बैठता था एक मौक़े पर हम्माद बिन अबी सुलैमान आप को अपनी जगह बैठा कर कहीं बाहर चले गए

आप तमाम लोगों के सवालों का जवाब देते रहे ऐसे मसाइल भी लोगों ने आप से दरयाफ़्त किए जो आपने उस्ताद से नहीं सुने थे उस्ताद की वापसी पर ऐसे साठ मसाइल को ख़िदमत में पेश किया उस्ताद ने चालीस से इत्तिफ़ाक़ किया और बीस से इख़्तिलाफ़ इमाम अबूहनीफ़ा ने क़सम खाली कि सारी उम्र हाज़िरे ख़िदमत रहूँगा चुनाँचे उस्ताद की वफ़ात तक साथ रहे। (तारीख़े बग़दाद वग़ैरह)

अक़्ल व दानाई

जलीलुलक़द्र महद्दिस अली बिन आसिम फ़रमाया करते थे कि अगर इमामे अबूहनीफ़ा की अक़्ल रुऐ ज़मीन के आधे आदमियों की अक़्ल से तौली जाए तो इमाम अबूहनीफ़ा की अक़्ल का पल्ला भारी रहेगा।

इसी तरह ख़ारिजा बिन मुस्अब का क़ौल है कि मैंने एक हज़ार उलमा का दीदार किया है मगर उन में तीन या चार ही को बहुत बड़ा आक़िल पाया उन में से एक अबूहनीफ़ा हैं ।

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अन्सारी मशहूर मुहद्दिस ने फ़रमाया अबूहनीफ़ा की अक़्ल उन के कलाम उनके इरादे और उन की नक़्ल व हरकत से ज़ाहिर होती थी (तारीख़ेबग़दाद वग़ैरह)

आप की ताबेईयत

उलमा–ए–मुहद्दिसीन व मुअर्रेख़ीन का इत्तेफ़ाक़ है कि आप ताबेई हैं और यही सही व राजेह क़ौल है कि आप हज़रत अनस बिन मालिक वग़ैरह सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम के दीदार व शर्फ़े सोहबत से मुशर्रफ़ हुए चूनाँचे बअ्ज़ उलमा ने उन सहाबा की फ़िहरिस्त भी मुरत्तब फ़रमाई है जिन की ज़ियारत से इमामे अबूहनीफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु सरफ़राज़ हूए और वह हस्बे ज़ैल हैं।

इमाम साइब ने जिन सहाबा की ज़ियारत की

1–अनस बिन मालिक ,2–अस्अद बिन सहल बिन हनीफ़ अन्सारी ,3–बसर बिन अरतात,4–साइब बिन यज़ीद कन्दी ,5–सहल बिन सअ्द साअ्दी ,6–सदी बिनअजलान अबूउमामह बा नी

,7–तारिक़ बिन शिहाब अ़जली कूफ़ी 8–अ़ब्दुल्ला बिन अबी औफ़ी

,9–अब्दुल्लाह बिन बसर 10–अब्दुल्लह बिन सअ्लबा11अब्दुल्लह बिनिलह़ारिसबिन नौफ़िल –12अब्दुल्ला बिन ह़ारिस बिन जुज़13–उत्बह बिन अ़ब्दे सल्मा,14–आमिर बिन वासेला,15–अबुत्तुफ़ैल अ़म्र बिन अबी सल्मा 16–अ़म्र बिन हरीस क़र्शी मख़ज़ूमी ,17–क़बीस़ह बिन ज़ुवैब,18–मालिक बिन हूवैरिस 19–मह़मूदबिन
लुबैद 20–मिक़्दाम बिन मअ्दी करब ,21–मालिक बिन औस 22–वासिला बिन असक़अ् रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु (तबस़रतुददराया)

<u>स़ह़ाबा किराम से रिवायते ह़दीस</u>

हाँ अलबत्ता इस बात में इख़्तिलाफ़ है कि आप ने किसी स़ह़ाबी से ह़दीस की रिवायत की है या नहीं ? तो इस सिलसिले में बाज़ उ़लमा ने स़हाबा से इमाम अबूह़नीफ़ा की रिवायत का इन्कार किया है चुनाँचे जहाँ तक मअ्लूमात बहम चहुँची हैं सब से पहले दारेक़ुत्नी अलमुतवफ़्फ़ा 385 हिजरी ने यह कहा है कि इमाम अबूह़नीफ़ा ने किसी स़हाबी से कोई ह़दीस रिवायत नहीं की फ़िर ख़त़ीबेबग़दादी ने भी तारीख़े बग़दाद में बिऐनेही यही बात दोहरादी बअ्द को दूसरे शवाफ़ेअ् ने भी उन दोनों के बयानों पर आम तौ़र पर यही फ़ैसला करदिया यहाँ तक कि अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़सक़्लानी भी उन ही लोगों के हम ज़ुबान बन गए लेकिन एक मुस़न्निफ़ मिज़ाज पर यह बात मख़्फ़ी नहीं कि दारे क़ुत्नी और ख़त़ीबे बग़दादी को ह़ज़रत इमाम आज़म की जनाब में जो सुऐ अक़ीदत है उस को देख़ते हुए उन दोनों के इस इन्कार की क्या वक़अत हो सकती है ? ख़ुसूस़न जबकि बड़े बड़े अइम्मा ह़दीस का फ़ैस़ला इस बारे में इमामे अबूह़नीफ़ा के ह़क़ में है चुनाँचे अक़्लीमे ह़दीस व रिजाली के बादशाह यह़या बिन मुईन जो जिरह़ व तअ्दील के मुसल्लिमुस्सुबूत इमाम हैं अपनी तारीख़ में तह़रीर फ़रमाते है कि बिला शुबह इमाम अबूह़नीफ़ा ने आइशा बिन्ते ग़जरह से ह़दीस सुनी जो स़ह़ाबिया हैं इसी त़रह़ ह़ाफ़िज़ अबूनअ़ीम स़ाइब

हिल्यतुल औलिया अलमुतवफ़्फ़ा 430 हिजरी (ख़तीबे बग़दादी फ़न्ने हदीस में शागिर्द व तिफ़्ले मकतब हैं) ने साफ़ साफ़ फ़रमाया कि इमामअबूहनीफ़ा ने इसबे ज़ैल सहाबा का दीदार फ़रमाया और उन से हदीसें सुनी हैं। 1–अनस बिन मालिक 2–अब्दुल्लाह बिन हारिस 3–अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा।
(अलइन्तेसारु वत्तरजीह लिमज़हबिस्सहीह)

उन के इलावाह दूसरे फ़ुक़्हा व मुहद्दिसीन की एक बड़ी जमाअत ने मुस्तनद रिवायतों के साथ उस को साबित किया है कि इमाम अबूहनीफ़ा ने सहाबए किराम से हदीस सुन कर रिवायत की है चुनाँचे ऐसी पचास हदीसें हैं जिन को इमाम अबूहनीफ़ा ने सहाबा किराम से रिवायत फ़रमाया है। (तबसेरतुददराया)

फिर इस बहस में रिवायत कि इलावह एक दिरायत व अक़्ली शहादत भी ख़ास तौर पर क़ाबिले तवज्जोह है और वह यह कि सब से आख़िर में वफ़ात पाने वाले सहाबी अबुत्तुफ़ैल आमिर बिन वासेला बिन अब्दुल्लाह बिन लैसी हैं जिन्होंने 110 हिजरी में वफ़ात पाई लिहाज़ा उन की वफ़ात के वक़्त इमाम अबूहनीफ़ा की उम्र यक़ीनन तीस बरस की थी और दुर्रे मुख़्तार वग़ैरह में तस्रीह मौजूद है कि इमाम अबूहनीफ़ा ने पचपन हज फ़रमाए हैं इस हिसाब से पन्दरह हज तो इमाम अबूहनीफ़ा ने अबुत्तुफ़ैल आमिर बिन वासेलह लैसी की हयात ही में किये और अबूत्तुफ़ैल आमिर बिन वासेलह लैसी मक्का मुकर्रमा में ही में मुक़ीम रहे और मक्का मुकर्रमा में ही वफ़ात पाई फ़िर यह क्यों कर मुमकिन हो सकता है कि इमाम अबुहनीफ़ा पन्दरह मरतबा मक्का मुकर्रमा मे हाज़िर हों और अबुत्तुफ़ैल आमिर बिन वासेलह लैसी सहाबी से मुलाक़ात और समाअ व रिवायते हदीस न करें ? जब कि यह आख़िरी सहाबी थे और तमाम लोग उन्हें एक नादिरुल वजूद तबर्रुक समझते थे और ख़ुसूसन जबकि वह दौर भी ऐसा था कि हर मुहद्दिस अपनी ऊँची अस्नाद पर फ़ख़्र करता था फिर भला इमाम अबूहनीफ़ह के लिए कौन सा ऐसा मानेअ्

(रोक)था कि वह एक सहाबी से रिवायत कर के अपनी सनद को आली न बनाते ? यह रिवायत यक़ीनन उन रिवायतों की बेहतरीन ताईद है जिन से साबितहोता है कि इमाम अबूहनीफ़ा को बअ्ज़ सहाबा से भी समाअत हदीस का शरफ़ हासिल हुआ।

बहर कैफ़ इमाम अबूहनीफ़ा ने सहाबए किराम का दीदार फ़रमाया और उन से रिवायत भी की यह दोनों बातें साबित हैं कि आप यक़ीनन ताबेई हैं और सहाबए किराम के शागिर्द भी हैं –

आप के मशाइख़ व तलामिज़ा

सहाबए किराम के इलावा आप बहुत से कबाइर ताबेईन व तबअ् ताबेईन के शागिर्दे जलील(बड़े शागिर्द) हैं चुनाँचे मुल्ला अली क़ारी ने फ़रमाया कि आप के मशाइख़े हदीस की तअ्दाद चार हज़ार है जिन में से चन्द यह हैं :1–इब्राहीम बिन मुहम्मद बिनिलमुन्तशिर 2–इस्माईल बिन अब्दुल मालिक 3,अबूहिन्द हारिस बिन अब्दुर्रहमान हमदानी ,4–हम्माद बिन अबी सूलैमान ,5–ख़ालिद बिन अलक़मा 6–रबीआ बिन अब्दुर्रहमान ,7–ज़ियाद बिन अलाक़ा 8–सईद बिन मसरूक़ सौरी ,9–सल्मा बिन कुहैल ,10–समाक बिन हर्ब ,11–शद्दाद बिन अब्दर्रहमान कुशैरी ,12–शैबान बिन अब्दुर्रहमान 13–ताऊस बिन कीसान 14–अब्दुल्लाह बिन दीनार, 15इमाम ज़हरी ,16अता बिन अबी रबाह ,क़तादा बिन दआमा 18–अबूज़अ्फ़र मुहम्मद बिन अली 19–अलक़मा बिन मुरसद 20–इकरमा मौला इब्ने अब्बास ,21–इमाम शअ्बी ,22–मन्सूर बिन मोअ्तमर ,23–अबूइस्हाक़ सबीअी 24–अ़ता बिन साइब,25–इमाम अअ्मश रिज़वानुल्लाहि तआला अ़लैहिम अजमाईन।

यह सब हदीसों के वह जलीलुश्शान शुयूख़ हैं जो तमाम दुनिया में हदीसों के पहाड़ शुमार किऐ जाते हैं –

आप के शागिर्दों के बारे में हाफ़िज़ अब्दुलक़ादिर क़रशी का बयान है चार हज़ार अफ़राद ने इमाम अबूहनीफ़ा से हदीस की रिवायत की और उनके मज़हब को नक़ल किया – (अलजवाहेरुलमुज़ियह)

इसी तरह इमाम हाफ़िज़ुद्दीन बिनिल बज़ाज़ करदरी ने इमाम अबूहनीफ़ा के शागिर्दों में सात सौ तीस ऐसे मशहूर उलमा का तज़किरा तहरीर फ़रमाया है जिन की जलालते शान पर मश्रिक़ व मग्रिब के माहेरीने फ़िक़ह व हदीस का इजमाअ् है जिन में चन्द हस्बे ज़ैल हैं

1–अब्दुल्लाह बिन मुबारक ,2–इमाम अबूयूसुफ़ 3–इमाम मुहम्मद बिनिलहसनशैबानी ,4– इमाम ज़ुफ़र 5–हसन बिन ज़ियाद 6–यहया हमानी 7–वकीअ् बिनिलजर्राह 8–यज़ीद बिन हारून ,9–अली बिन आसिम 10– इबादुब्निलअवाम 11–हफ्स बिनग़यास नख़ई कूफ़ी 12–असदबिन अम्र सजली 13–अबू इसमा नूह बिन अबी मरयम मरूज़ी 14–अबूमुतीअ् हकम बिन अब्दुल्लाह बलख़ी,15–यूसुफ़ बिन ख़ालिद सम्नी ,16– दाऊद ताई ,17–हम्माद बिन अबूहनीफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हुम।

आप की रिवायात

आप ब निस्बत दूसरे किबार मुहद्दिसीन के क़लीलुर्रिवायत हैं फिर भी एक क़ौल है कि आपकी रिवायत करदा हदीसों की तअ्दाद एक हज़ार सात सौ है (ज़र्क़ानी अ़ललमवाहिब)

आप की रिवायत कम होने के चन्द असबाब हैं मिन्जुमला उनके एक बहुत बड़ा सबब यह भी है कि जो अहले इल्म पर मख़्फ़ी नहीं कि रिवायत हदीस के बारे में इमाम अबूहनीफ़ा के शराइत इस क़दर सख़्त हैं कि बहुत सी हदीसें आप के मेअ्यार पर क़ाबिले क़बूल नहीं रहतीं और दुसरे मुहद्दिदसीन ने चुँकि शराइत में नरमी बरती इस लिए उन के नज़दीक वह सब अहादीस क़ाबिले क़बूल हो गईं जिनको इमाम अबूहनीफ़हा ने तर्क फ़रमादिया था लिहाज़ा यह लोग कसीरुल अहादीस हो गये।

बहर हाल गै़र मुक़ल्लिदीन (अपने आप को अहले हदीस कहने वाले) का यह परौपेगन्डा कि इमाम को सिर्फ़ सत्तरह हदीसें याद थीं यह एक ऐसा मरदूद क़ौल है कि अहले इल्म तो अहले इल्म गै़रत

मन्द जाहिल भी उस को जुबान पर लाते हुऐ शर्म महसूस करेंगे।

सोचने की बात यह है कि वह इमाम जिनको सहाबा की ज़ियारत व शगिर्दी का शरफ हासिल हुआ और चार हज़ार ऐसे ऐसे जलीलुलक़दर मुहद्दिसीन के हल्क़ा–ए–दर्स में शामिल हुए जो फ़ने हदीस में बहरे ना पैदा किनार थे वह इमाम अबूहनीफ़ा जिन्हों ने हदीस की तलब में बीस मरतबा से ज़्यादा बसरा का सफ़र किया और अकसर साल साल भर बसरा में मुक़ीम रह कर इल्मे हदीस पढ़ा।

वह इमाम अबूहनीफा जिन्होंने पचपन हज करके ममालिके इस्लामिया के गोशे गोशे से आने वाले मुहद्दिसीन से इस्तिफ़ादा किया।

वह इमाम अबूहनीफ़ा जिन्होंने 6 बर्स मक्का मुकर्रमा में क़ियाम करके इल्मे हदीस की तहसील की।

वह इमाम अबूहनीफ़ा जिनकी निगाहे इन्तेख़ाब ने अपनी तस्नीफ़ „किताबुलआसार„ को चालीस हज़ार हदीसों के मजमुआ से चुन कर मुरत्तब फ़रमाया।

वह इमाम अबूहनीफ़ा जिनके शगिर्द इमाम अबूयूसुफ़ को बे शुमार अहादीसे सहीहा के इलावा हज़ारों मौज़ू हदीसें भी याद थीं।

वह इमाम अबूहनीफ़ा जिनके शगिर्द इमाम मुहम्मद के दर्स में इत्ना कसीर मजमअ् होता था कि कूफ़े की सड़कें भर जाती थीं, वह इमाम अबूहनीफ़ा जिनके शगिर्द अली बिन आसिम की दर्सगाह में रोज़ाना तीस हज़ार तल्बा शरीके दर्स होते थे।

वह इमाम अबूहनीफा जिनके शगिर्द यज़ीद बिन हारून के दर्स में सत्तर हज़ार सामेईन हाज़िर रहते थे।

लिल्लाह इन्साफ

क्या इन तारीख़ी शवाहिद की मौजूदगी में कोई साहिबे अक़्ल यह कह सकता है कि इमाम अबूहनीफ़ा को सिर्फ़ सत्तरह हदीसें याद थीं मआज़ल्लाह।

ब सोख़्तअक्ल ज़ हैरत कि ई चे बुल्लहबी अस्त

आपकी इल्मी जलालत पर इमामों की शहादत

नाक़ेदीने ह़दीस ने आप को सिक़ह व साहिबे इत्क़ान हुफ़्फ़ाज़े ह़दीस की फ़िहरिस्त में शुमार फ़रमाया (तज़्किरतुलहुफ़्फ़ाज़)

इमाम मालिक ने इर्शाद फ़रमाया कि मैंने इमाम अबूह़नीफ़ा को देखा है अगर वह इस पत्थर के सुतून को सोना साबित करने के लिए दलाइल पर उतर आते तो वह दलीलों से उसे सोना साबित कर देते–(तबस़रा)

इमाम शाफ़ेई का क़ौल है कि तमाम लोग फ़िक़्ह ह़दीस में इमाम अबूह़नीफ़ा के अ़याल हैं और मैंने इमाम अबूह़नीफ़ा से बढ़ कर फ़क़ीह नहीं देखा ।

यह़या बिन मुईन मुह़द्दिस का क़ौल है कि हम खुदा का नाम ले कर झूट न बोलेंगे हम ने अबूह़नीफ़ा से बेहतर किसी की फ़िक्ह नही पाई और हम ने उनके अकसर अक़वाल इख़्तियार कर लिए हैं।

जअ़फ़र बिन रबीअ़ का कौल है कि पाँच बरस इमाम अबूह़नीफ़ा के पास रहा, उनसे ज़्यादा ख़ामोश आदमी मैंने नहीं देखा मगर जब कोई मसअ्ला पेश आता तों दरिया की त़रह़ रवानी की त़रह़ आप की तक़रीर तिश्निगाने इ़ल्म को सैराब कर देती थी।

(तबसरतुददरायह व तारीख़े बग़दाद)

मुह़म्मद बिन बशर बयान करते हैं कि मैं इमाम अबूह़नीफ़ा की दर्स गाह से उठ कर ह़ज़रते सुफ़यान सौरी की मजलिसे दर्स में ह़ाज़िर हूआ तो आप ने फ़रमाया कि ऐ मुह़म्मद बिन बशर! तू ऐसे शख़्स की

दर्स गाह से आया है कि आज रुए ज़मीन पर उस से बड़ा कोई फ़क़ीह नहीं है। (तबस़रा वग़ैरह)

मुसनदुल इराक़ ह़ाफ़िज़ अ़ली बिन आ़सिम ने फ़रमाया के अगर तमाम हम अ़स्र का इ़ल्म इमाम अबूह़नीफ़ा के इ़ल्म से तोला जाए तो यक़ीनन इमाम अबूह़नीफ़ा का इ़ल्म सब से भारी पड़ेगा।

(मनाक़िबे मोफ़िक़ बिन अह़मद व तारीख़े बग़दाद)

इमाम अअ्मश ने जब चन्द मसाइल दरयाफ़्त किए और इमाम अबूहनीफ़ा ने हर एक का जवाब इमाम अअ्मश ही की रिवायत करदा ह़दी सों से इरशाद फ़रमाया तो इमाम अअ्मश बोल उठे कि ऐ फ़ुक़हा यक़ीनन तुम लोग त़बीब हो और हम लोग (मुह़द्दिसीन) अ़त्तार (दवा फ़रोश) हैं।

हाफ़िज़ अ़ली बिनिलजअ्द जो इमाम बुख़ारी व इमाम अबूदाऊद व ग़ैरह के उस्ताद हैं फ़रमाया करते थे के इमाम अबूहनीफा जब ह़दीस बयान फ़रमाते हैं तो वह मोती की त़रह़ आबदार होती है–

(जामेअ् मसानीदिल इमामिलअअ्ज़म)

अबूबक्र बिन अ़याश मुह़द्दिस फ़रमाते हैं कि सुफ़यान सौरी के भाई उ़मर बिन सईद का जब इन्तेक़ाल हुआ तो हम लोग सुफ़यान सौरी

के पास तअ्ज़ियत के लिए गये मज्लिस में अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस और दुसरे बहुत से मुहद्दिसीन मौजूद थे ,इस अ़र्से में इमाम अबूहनीफ़ा मअ् अपनी जमाअ़त के वहाँ पहूँचे सुफ़यान सौरी ने जब उनको देखा तो एक दम खड़े हो गये और आगे बढ़कर निहायत ही गर्मजोशी के साथ मुआनिक़ा किया और उनको अपनी मसनद पर बैठा कर खुद उनके सामने बैठ गये यह देख कर मुझ को बड़ा गुस्स्सा आया चुनाँचे मैंने सुफयान सौरी से कहा ह़ज़रत!आज आपने ऐसा काम किया जो मुझ को और मेरे साथियों को बुरा मअ्लूम हुआ उन्हों ने पूछा कि वह क्या?मैंने कहा कि आप के पास अबूहनीफ़ा आए तो आप उनके लिए खड़े हो गए उनके लिए अपनी मसनद ख़ाली कर दी और उनके अदब में आप ने बहुत ही ज़्यादा मुबालग़ा से काम लिया , यह हम लोगों को नापसन्द हूआ? यह सुनकर सुफ़यान सौरी ने फ़रमाया कि तुम लोगों को मेरा यह अ़मल क्यों नापसन्द हुआ। अबूहनीफ़ा बहुत ही बड़े आ़लिम और बलन्द मरतबा शख़्स हैं मुझे उनके इल्म की तअ्ज़ीम के लिए उठनाही चाहिए था अगर मैं उनके इल्म के लिए न उठता तो उन की उ़म्र की बुजुर्गी के लिए उठता

अगर उनकी उम्र के लिए नही उठता तो उनकी फ़िक्ह के वास्ते उठता अगर फ़िक्ह के लिए न उठता तो उन के तक़्वा के लिए उठता अबूबक्र बिन अ़याश कहते हैं के सुफ़यान सौरी ने मुझ को ऐसा खामोश करदिया कि मैं बिल्कुल ही ला जवाब हो गया।

(तारीख़ेबग़दाद वग़ैरा)

अबूजअ़फर का क़ौल है मैंने अबूहनीफ़ा से बढ़ कर फ़क़ीह और पारसा किसी को नहीं देखा हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ कहा करते थे कि अबूहनीफ़ा मर्द फ़क़ीह थे फ़क़ीह में मअ़रूफ़ ,पारसाई में मशहूर, बड़े दौलतमन्द, इन्तेहाई सख़ी ,शब व रोज़ तअ़लीम व इबादत में मसरूफ़ ,रात अच्छी गुज़ारने वाले कम सुख़न लेकिन अगर कोई मसअ्ला सामने आजाता तो ऐसा कलाम फ़रमाते कि हिदायत का हक़ अदा कर देते मसअ़र बिन केदाम कहा करते थे कि कूफ़ा में सिर्फ़ दो आदमियों पर मुझ को रश्क आता है। अबूहनीफ़ा पर उनकी फ़िक़्ह की वजह से और ह़सन बिन सालेह़ पर उनके ज़ुहद की वजह से (तारीख़े बग़दाद व ग़ैरहा)

हज़रत वकीअ् बिनिलजर्राह़ के हालात में जो एक मशहूर मुहद्दिस थे ,लिख़ा है कि एक मौक़े पर चन्द अहले इल्म किसी मज्लिस में बैठे हूए थे नागहाँ किसी ने यह कह दिया कि फ़लाँ मसअ्ला में इमाम अबूह़नीफ़ा ने ग़लती की ह़ज़रत वकीअ् बिनिलजर्राह़ एक दम चौक कर उठ बैठे और फरमाया इमाम अबूहनीफ़ा क्यों कर ग़लती कर सकते थे? अबूयूसुफ़ और ज़ुफ़र क़ियास में यह़या बिन ज़ाइदह व हिफ़्ज़ बिन ग़यास व मुन्दिल व ह़ब्बान ह़दीस में क़ासिम बिन मुअ़न लुग़त व अ़रबियत में दाऊद ताई व फ़ुज़ैल बिन अयाज़ ज़ुहद व तक़्वा में यगाना रोज़ गार थे इस रुतबा के लोग जिस शख़्स के साथ हों भला वह कहीं ग़लती कर सकता है ? और अगर करता भी है तो यह लोग भला उस को कब ग़लती पर रहने देते ? वाज़ेह रहे कि यह वही वकीअ़बिनिल जर्राह हैंकि इमाम अह़मद बिन हंमबल को उनके आगे ज़ानुए तलम्मुज तै करने पर फ़ख़्र था चुनाँचे इमाम

अहमद बिन हंमबल जब उन की रिवायत से कोई हदीस बयान करते थे तो इन लफ़्ज़ों से शुरूअ् फ़रमाया करते थे कि यह हदीस मुझ से उस शख़्स ने बयान की है कि तेरी आँखों ने उन का मिस्ल न देखा होग। (तहजीबूल असमाअल्लामाह नौवी)

आपका जुहद व तक़्वा

आप इल्म व फ़ज़्ल में अअ्ला दरजे के बा कमाल होने के साथ साथ जुहद व तक़वा में भी बे मिसाल थे–बनूउमय्या के दौरे हकूमत में उ़मर बिन मैसरह गवर्नर ने क़ाज़ीयुलकुज़ा (चीफ़जिस्टस)का ओ़हदा पेश किया मगर आप ने उस को ठुकरा दिया गवरनर ने आप को कोड़े लगवाऐ और इस मन्सब को कबूल करने के लिऐ तरह तरह से मजबूर किया मगर आपने एक ज़ालिम हकूमत का चीफ़जस्टिस बनना किसी तरह कबूल नहीं फ़रमाया।

फिर अब्बासी दौरे हकूमत में ख़लीफ़ा अबू ज़अ्फ़र मन्सूर ने भी आप को इस ओ़हदा के लिए मजबूर किया लेकिन आप ने मन्जूर नही फ़रमाया तो इस ज़ालिम हाकिम ने आप को जेल में कैद करदिया और रोज़ाना दस कोड़े लगवाता रहा यहाँ तक कि आप कोड़ों की ज़र्ब से निढाल होते होते कैद खाने ही में वफ़ात पागए मगर एक ज़ालिम बादशाह का काज़ीयुलकुज़ा बनना कबूल नहीं फ़रमाया।

अ़ल्लामा इब्ने जोज़ी ने नक़ल फ़रमाया है कि ख़लीफ़ा अबूजअ्फ़र मन्सूर ने इस ओ़हदाकुज़ा के लिए इमाम अबूहनीफ़ा व सुफ़यान सौरी व मुस्इर व शरीक चार शख़्सों को तलब किया इमाम अबूहनीफ़ा ने दरबारे शही में जाने से पहले ही यह फ़रमाया था कि मैं तो यह ओ़हदा हरगिज़ कबुल नहीं करूँगा और सुफ़यान सौरी फ़रार हो कर रुपोश हो जायेंगे और मिसअ़र दीवाने बन कर इस बला से ख़लासी पाऐंगे मगर शरीक ज़रूर इस कीचड़ की दलदल में फँस जाऐंगे चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि सुफ़यान सौरी तो किसी गुमनाम गाँव में फ़रार हो कर छुप गए मगर इमाम अबुहनीफ़ा व मिसअ़र व शरीक तीनों शाही दरबार में हाज़िर किए गए मसअ़र दरबार में पहुँचते ही

एक दम पागल बन गये और ख़लीफ़ा मन्सूर से जल्दी जल्दी सवाल करने लगे कि अमीरुलमोमेनीन ! तुम्हारा क्या हाल है ? तुम्हारे बच्चे कैसे हैं ?तुम्हारे गधे आज कल तन्दुरुस्त हैं या लाग़र ? तुम्हारे घोड़े आज कल कौन सा चारा खाते हैं ? मिसअर की इन बेतुकी बातों को सुन कर ख़लीफ़ा ग़ज़बनाक हो गया और बोला यह तो मजनून है,उस को फ़ौरन दरबार से निकाल दो चुनाँचे मिसअर दरबार से बाहर करदिऐ गये फ़िर इमाम अबूहनीफ़ा की तरफ़ मुतवज्ह हुआ आप ने फ़रमाया कि ऐ अमीरुल मोमेनीन ! मै इस ओहदा के लाइक़ नहीं हूँ । मन्सूर ने कहा ऐ इमाम अबूहनीफ़ा तुम झुटे हो इमाम ने फ़रमाया सुब्हानल्लाह अब तो अमीरुल मोमेनीन ने भी इस की शहादत दे दी कि मैं इस ओहदे कि लाइक़ नहीं हूँ क्यों कि मैं जब झूटा हूँ तो भला एक झूटा शख़्स किस तरह क़ाज़ीयूलकुज़ा के ओहदे पर फ़ाइज़ हो सकता है ? मन्सूर ने झुल्ला कर कहा कि ऐ अबूहनीफ़ा! खुदा की क़सम तूम को क़ाज़ीयूलकूज़ात का मन्सब क़बूल करना पड़ेगा इमाम ने फ़रमाया कि खुदा की क़सम मैं इस ओहदे को कभी क़बूल नहीं करूँगा दरबारियों ने कहा अबूहनीफ़ा क्या करते हो ? तुम अमीरुल मोमेनीन के मुक़ाबिले में क़सम खाते हो ? इमाम ने फ़रमाया कि अमीरुल मोमेनीन को अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करना बे हद आसान है मन्सूर ने ग़ज़बनाक हो कर आप को कोड़े लगाने और जेल में बन्द करने का हुकम दे दिया शरीक ने हवा का रुख़ देखा तो मजबूरन इस ओहदे को क़बूल कर लीया।

उमरा सलातीन के हदाया व तहाइफ़ को आप ने कभी क़बूल नहीं फ़रमाया उम्र भर आप ने किसी की ग़ीबत नहीं फ़रमाई कभी किसी सुन्नत को तर्क नहीं फ़रमाया और न कभी ख़िलाफ़े मुरव्वत कोई अमल किया आप अपने कभी क़र्ज़ दारों की दीवार के साए में भी नहीं बैठते थे और फ़रमाते थे के जिस क़र्ज से कोई नफ़अ् हासिल किया जाए वह सूद है और अपने र्क़ज़दारों की दीवार के साऐ में ख़ड़ा होना भी एक तरह का नफ़अ् उठाना है।

आप की इबादत व करामत

आप बहुत ही कसीरुल इबादत व साहिबे करामत भी थे आप ने चालीस बरस तक इशा के वजू से फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाई अब्दुल्ला बिन मुबारक का कौल है कि आप चालीस बरस तक पाँचों नमाज़ें एक ही वुज़ू से अदा फ़रमाते गर्मीयों में जुहर व अस्र के दरमियान सोते और उठ कर ताज़ा वजू फ़रमाते उसी वजू से असर व मग़रिब व इशा व जुहर व फ़ज्र अदा फ़रमा लेते रात भर कियामुललैल की वजह से लोग आप को खुँटी कहा करते थे रात को ख़ौफ़े इलाही से इस क़दर रोते थे कि आप के पड़ोसियों को आप के हाल पर रहम आने लगता था जेल ख़ाने की जिस कोठरी में आप की वफ़ात हुई उस में आप ने सात हज़ार ख़त्म कुर्आन मजीद पढ़ा था।

आप की वफ़ात के बअ्द बग़दाद के किसी बुजुर्ग ने आप को ख्वाब में देखा तो दरयाफ़्त किया कि ऐ इमाम! आप के साथ क्या मुआमला हुआ ? फ़रमाया अल्हमदु लिल्लाह मेरी मग़फ़िरत होगई बुजुर्ग ने अर्ज़ की ग़ालिबन आप की इल्मी ख़िदमतों की वजह से मग़फ़िरत हुई होगी ? आप ने जवाब दिया कि जी नहीं ! मुझे तो अरहमुर्राहिमीन ने सिर्फ़ इतनी बात पर बख़्श दिया कि मेरे मुख़ालिफ़ीन मेरे बारे में ऐसी अफ़वाहें और तोहमतें फैलाया करते थे जो मुझ में नहीं थीं और मैं मुख़ालिफ़ीन की उन ईज़ाओं पर सब्र करता था।

आप की वफ़ात के बअ्द क़ाज़ीयुलकुज़ा हसन बिन अम्मारा ने आप को ग़ुस्ल दिया और कफ़न पहना कर क़ाज़ीयुलकुज़ा ने हज़ारों के मजमअ् में भर्राई हुई आवाज़ से चिल्ला चिल्ला कर यह कहा कि ऐ इमाम अबूहनीफ़ा! आप पर खुदा करीम रहम फ़रमाए आप ने तीस साल तक मुसलसल रोज़ा रखा और चालीस बरस तक रात में बिस्तर से पीठ नहीं लगाई आपकी नमाज़े जनाज़ा में इतना बड़ा हुजूम था कि पाँच मरतबा नमाज़े जनाज़ा हुई और सब से आख़िर में आप के साहबज़ादे हम्माद बिन अबुहनीफ़ा ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

आप के बे शुमार फ़ज़ाइल व मनाक़िब और ख़वारिक़े आ़दत व करामात के जलवे देखने हों तो मुन्दरजा ज़ैल किताबों का मुत़ाला करें :

इमाम अबूज़अ़फ़र त़हावी की किताब ,,उ़क़ूदुद्दुरर वल इक़यान फ़ी मनाक़िबिन्नुअ़मान,,और मूफ़िक़ बिन अह़मद मक्की की किताब ''मनाक़िबुलइमामिलअअ़ज़म'' और अ़ब्दुल क़ादिर क़रशी की किताब ,,अलबुस्तान फ़ी मनाक़िबिन्नोअ़मान ,, और इमाम जलालुद्दीन सियूती की त़स्नीफ़े लतीफ़ ''तबीसुस्सहीफ़ति फ़ी मनाक़िबिल इमाम अबी ह़नीफ़ति और अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन यूसुफ़ और दमिश्क़ी की किताब(,,तोह़फ़हतुस्सुलतान फ़ी मनाक़िबिलनोअ़मान ,, वग़ैरह)

2ह़ज़रत इमाम अबूयूसुफ़ (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

ह़ज़रत क़ाज़ी इमाम अबूयूसुफ़ यअ़क़ूब बिन इबराहीम फ़िक्ह व ह़दीस में ह़ज़रत इमाम अअ़ज़म अबूह़नीफ़ा के बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान शागिर्दे जलील (बुंजुर्ग) हैं आप 113हिजरी में कूफ़ा के अन्दर पैदा हुए आप के वालिदैन बहुत ही मिस्कीन थे वह आप को त़लबे इल्म से मनअ़ करते थे

और मेह़नत व मज़दूरी करने पर मजबूर करते थे मगर आप के ज़ेहन व ह़ाफ़िज़ा और इल्मी शौक़ व ज़ौक को देख कर ह़ज़रत इमाम अबूह़नीफ़ा आपकी माली मदद फ़रमाते थे और अपने ह़लक़ए दर्स में बैठाते थे इमाम अबूयूसुफ़ का बयान है कि मैंने सत्तरह बरस तक बराबर नमाज़े फ़ज्र ह़ज़रत इमाम अबूह़नीफ़ा के साथ पढ़ी और रोज़ाना उन के दर्स में शामिल होता रहा ।

आप ने इल्मे ह़दीस की त़लब में इराक़ व ह़िजाज़ वग़ैरा के शहरों का सफ़र भी फ़रमाया और अबूइस्ह़ाक़ शैबानी व इमाम अअ़मश व सुलैमान तैमी व यह़या बिन सअ़द व हश्शाम बिन उ़र्वह व अ़त़्त़ारबिन साइब व मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ बिन यसार व लैस बिन सअ़द वग़ैरा मुह़द्दिसीन से भी ह़दीस की समाअ़त व रिवायत की है और आपके शागिर्दों में इमाम अह़मद बिन ह़म्बल व बशर बिनिलवलीद कुन्दी व

मुहम्मद समाअह व मुअल्ला बिन मन्सूर व बशर बिन ग़यास व अली बिन जअ्द व यहया बिन मुईन व अहमद बिन मुनीअ् वग़ैरा मुहद्दिसीन आसमाने इल्म व फ़ज़्ल पर सितारों की तरह चमकते हैं।

मनकूल है कि आप चालीस हज़ार मौज़ूअ् हदीसों के हाफ़िज़ थे फ़िर भला आप की सहीह हदीसों का क्या शुमार होगा ?

फ़ने हदीस में आपकी जलालते शान का अन्दाज़ा लगाना हो तो आप के दो नामवर शागिर्दों इमाम अहमद बिन हम्बल व इमाम यहया बिन मुईन की शहादतें बहुत काफ़ी हैं इमाम अहमद का कौल है कि इमाम अबूयूसुफ़ हदीस में मुन्सिफ़ थे और इमाम यहया बिन मुईन फ़रमाते हैं मैंने असहाबे राऐ (फ़ुक़्हा) में इमाम अबूयूसुफ़ से ज़्यादा असबत और उन से बढ़ कर हफ़िज़ुलहदीस और सहीहुर्रिवायह किसी को नही देखा (मनाक़िबे अबी हनीफ़ा व साहिबैहि)

इसी तरह हाफ़िज़ अबूलफ़तह बिन सैयिदुन्नास नईमरी मिस्री शाफ़ेई अपनी किताब „उयूनुलअसर फ़ी फ़ुनूनिलमग़ाज़ी वस्सियर„ में लिखते हैं कि इमाम अहमद बिन हम्बल ने इमाम अबूयुसुफ़ व इमाम मुहम्मद से सुनकर इतनी हदीसों को लिखा कि तीन अलमारीयाँ भर कर किताबें तैयार होगईं।

हाफ़िज़ अब्दुल क़ादिर क़र्शी अपनी किताब "अलजवाहेरुलमुज़ियह" में तहरीर फ़रमाते हैं कि इमाम अबूयुसुफ़ से जिन लोगों ने उन की किताब इमाली को सुन कर रिवायत किया है
उन की तअ्दाद शुमार नहीं की जा सकती

आप ने बग़दाद की सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई थी और अ़ब्बासी दौरे हुकूमत में ख़लीफ़ा मेहदी व ख़लीफ़ा हादी व ख़लीफ़ा हारून रशीद तीनों खुलफ़ा के अहदे हुकूमत में आप क़ाज़ीयुलक़ुज़ा के ओहदे पर फ़ाइज़ रहे और ख़ास कर ख़लीफ़ा हारून रशीद आप की बे हद तअ्ज़ीम करता था एक दिन ख़लीफ़ा हारून रशीद के दस्तर ख्वान पर फ़ालूदा पेश हूआ ख़लीफ़ा ने उन से कहा यह खाओ यह रोज़ रोज़ नहीं तैयार होता पूछा अमीरूल मोमेनीन ! यह क्या है ?

कहा फ़ालूदा और रोग़ने पिस्ता यह सुन कर इमाम अबू यूसुफ़ हँस पड़े ख़लीफ़ा ने दरयाफ़्त किया कि क्यों हँसे ? इमाम अबूयुसुफ़ ने फ़रमाया के मेरी माँ ग़रीबी की वजह से मुझे इमाम अबूहनीफ़ा की दर्सगाह से इस लिए उठाले जाती थी ता कि मैं कुछ मेहनत मज़दूरी कर के कमाऊँ एक रोज़ इमाम अबूहनीफ़ा ने मेरी माँ से फ़रमाया कि नेक बख़्त! जा तेरा बेटा इल्म सीख कर फ़ालूदा रोग़ने पिस्ता के साथ खाएगा यह सुन कर मेरी माँ गुस्सा में बड़ बड़ाती हुई चली गई आज मुझ को फ़ालूदा और रोग़ने पिस्ता देख कर वह बात याद आगई ख़लीफ़ा ने कहा कि अल्लाह तआला अबूहनीफ़ा पर रहमत फ़रमाए वह अक़्ल की आँखों से उन चीज़ों को देख लिया करते थे जो हम को सर की आँखों से नज़र नहीं आतीं तमाम मुसन्निफ़ीन से पहले आप ने इमाम अबूहनीफ़ा के मज़हब पर उसूले फ़िक़्ह की किताबें तसनीफ़ फ़रमाई और हनफ़ी मज़हब के रुए ज़मीन पर खूब खूब नश्र व इशाअ़त का शरफ़ हासिल फ़रमाया।

आप ओहदए कुज़ा और इल्मी मशागिल के बावजूद इबादत व रियाज़त में भी बहुत बलन्द मक़ाम रखते थे और बिलाशुब्ह आप साहिबे करामत थे और आप की बड़ी खास़ करामत यह है कि आप ने क़ाज़ीयुलकुज़ा का ओहदा कबूल फ़रमाकर अपनी इल्मी व अ़मली जलालत से सल्तनते अ़ब्बासिया को हर क़िस्म की ला मज़हब व गुमराही से बचाए रखा क़ाज़ीयुलकुज़ा होने की मुद्दत में बावजूद इन्तेहाई मसरूफ़ियात के रोज़ाना दो सौ रकअ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़ा करते थे —(उमदतुर्रिआया)

सत्तरह बरस तक आप क़ाज़ीयुलकुज़ा के ओहदे पर फ़ाइज़ रहे अ़लालत के दौरान बग़दाद के मशहूर व मअ़रूफ़ वली हज़रते मअ़रूफ़ कर्ख़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने अपने एक रफ़ीक़ से फ़रमाया कि मैंने सुना है कि इमाम अबूयूसुफ़ बहूत ज़्यादा अ़लील हैं तुम उन की वफ़ात की ख़बर मुझ को ज़रूर देना रावी का बयान है कि मैं ,,दारुर रफ़ीक़,,दरवाज़े पे पहुँचा तो इमाम अबूयुसुफ़ का जनाज़ा निकल रहा

था दिल में कहा कि अगर अब मैं हज़रते मअ़रूफ़ कर्ख़ी को ख़बर करने जाता हूँ तो नमाज़े जनाज़ा फ़ौत हो जाएगी ,चुनाँचे मैं नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर उन के पास पहुँचा और ख़बरे वफ़ात सुनाई तो उन को सख़्त सदमा हुआ बार बार इन्ना लिल्लाह पढ़ते थे मैंने कहा हज़रत ! आप को नमाजे जनाज़ा में शरीक न होने का इस क़दर सदमा क्यों है ?तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं जन्नत में दाख़िल हूआ हूँ वहाँ देखता हूँ कि एक महल तैयार हुआ है मैंने पूछा कि यह किस के लिए तैयार हूआ है? लोगों ने कहा कि इमाम अबूयूसुफ़ के लिए ! मैंने सवाल किया कि यह बलन्द मरतबा उन्हों ने क्यों कर पाया ? जवाब मिला कि अच्छी तअ़लीम देने और तअ़लीमे दीन के शौक़ के सिले में और लोगों ने उन को जो अज़ीयत पहुँचाई और उन्होंने ने लोगों की ईज़ाओ पर सब्र किया उस के अज्र में खुदा वन्दे कुद्दूस ने उन को यह रुतबा बलन्द अ़ता फ़रमाया है।

शुजाअ़ बिन मुख़ल्लिद का क़ौल है कि हम इमाम अबूयुसुफ़ के जनाज़ा में शरीक हुऐ इबाद बिनिलअ़वाम भी हमारे साथ थे मैंने उनको यह कहते हुए सुना कि अहले इस्लाम को चाहिए कि इमाम अबूयुसुफ़ की वफ़ात पर एक दुसरे के साथ तअ़ज़ियत करें ख़लीफ़ा हारूनरशीद जनाज़े के आगे आगे चलते थे और खुद ख़लीफ़ा ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और मक़ाबिरे कुरैश में उम्मे ज़अ़फ़र ज़ुबैदा की क़ब्र के पास दफ़न किया।

(शुज़रातुज़्ज़हबलिइब्नि इमाद)

15 रबीउ़लअव्वल 182हिजरी में उन्हत्तर बरस की उ़म्र पा कर वफ़ात पाई –वफ़ात के वक़्त आप ने यह फ़रमाया कि काश मैं उसी ग़रीबी, फ़क़ीरी की हालत में मरता जो शुरूअ़ में थी और क़ाज़ीयुलक़ुज़ात के ओहदे में न फँस्ता खुदा का शुक्र है कि मैंने क़स्दन बाल बराबर ज़ुल्म नहीं किया और न एक फ़रीक़ मुक़द्दमा की दुसरे फ़रीक़ के मुक़ाबिले में कभी परवाह की ख़्वाह वह बादशाह हो या भिकारी।

यह भी मन्कूल है कि ऐन वफ़ात के वक़्त आप ने इस तरह

दरबारे इलाही में अ़र्ज किया और दुआ़ माँगी कि खुदा वन्द! तू खूब जानता है कि मैंने किसी फैसले में जो तेरे बन्दों के दरमियान किया ,कभी खुदराई से काम नहीं लिया अपनी त़ाक़त भर तेरी किताब और तेरे रसूल की सुन्नत की पैरवी की और जहाँ मुझ को इश्काल पेश आया इमाम अबूह़नीफ़ा मेरे नज़्दीक उन बुजुर्गों में से थे जो तेरे हुक्म को पह्चानते थे और कभी जान बूझ कर हक़ के दाइरे से नहीं निकलते थे।

वफ़ात के वक़्त यह कलिमात भी आप की ज़ुबाान पर थे कि इलाही ! तू जानता है कि मैंने कभी जान कर कोई ह़राम काम नहीं किया और न कभी कोई दिरहम ह़राम का खाया ।

आप बहुत ही दौलत मन्द और मुतमव्विल थे लेकिन अपनी दौलत का इस्तेअ़्माल हमेशा शरीअ़ते मुत़ह्हिरा के मुत़ाबिक किया बवक़्ते वफ़ात वसीयत फ़रमाई कि चार लाख रुपये मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा, और कूफ़ा व बग़दाद के मुह़ताजों को दीए जाऐं।

आपकी तारीखे ज़िन्दगी में जो चीज़ सब से ज़्यादा क़ाबिले क़द्र है वह यह है कि हारून रशीद जैसे जाबिर और खुद परस्त बादशाह के दरबार में अपने फ़राइज़ इस आ़लिमाना जुरअ्त और आज़ादी के साथ अदा करते थे जिस की मिसाल बहुत ही नादिरूलवजूद है किताबुल ख़राज में एक जगह हारून रशीद को मुख़ात़ब फ़रमाकर लिखते हैं कि ऐ अमीरूल मोमेनीन! अगर तू अपनी रिआ़या के इन्साफ़ के लिए महीने में एक बार भी दरबार करता और मज़लूमों की फ़रियाद सुनता तो मैं उम्मीद करता हूँ कि तेरा शुमार उन लोगों में होता जो रईयत से परदा करते हैं और अगर तू दो एक बार भी करता तो यह ख़बर तमाम अत़राफ़ में फैल जाती और ज़ालिम अपने ज़ुल्म से बाज़ आते बल्के अगर गवर्नरों और हाकिमों को यह ख़बर पहूँचे कि तू बरस दिन में इन्साफ़ के लिए बैठता है तो ज़ालिमों को कभी ज़ुल्म से जुर्अत न होने पाये ग़ौर फ़रमाईए कि आपके सिवा किस को जुर्अत थी के हारून रशीद को यह अलफ़ाज़

लिख देता

(सीरतन्नोअमान व ग़ैरह)

3–इमाम अहमद बिन हमबल (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आपकी कुन्नीयत अबूअब्दुल्लाह और नाम व नसब अहमद बिन मुहम्मद बिन हंमबल हिलाल बिन असद शैबानी मरूज़ी है 164 हिजरी में शहरे बग़दाद के अन्दर आप की विलादत हुई सब से पहले आपने बग़दाद के मुहद्दिसीन व फ़ुक्हा से इल्मी इस्तिफ़ादा फ़रमाया फ़िर मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा व कूफ़ा व बसरा व यमन व शाम व जज़ीरह व ग़ैरह का इल्मी सफ़र फ़रमाकर अपने ज़माने के तमाम मशहूर मशाइख़े हदीस व फ़िक़्ह की शगिर्दी की सआदत हासिल फ़रमाई।

आप के उस्तादों में इमाम अबूयुसुफ़ व यज़ीद बिन हारून (तलामिज़ऐ इमामअबूहनीफ़ा) व इमाम शाफ़ेई व यहया बिन सईद क़त्तान व सुफ़यान बिन ऐनियह व अब्दुर्रज़्ज़ाक़ व अबुदाऊद तयालिसी व बशर बिन मुफ़ज़्ज़ल व गुन्दर वग़ैरा हज़ारों बा कमाल फ़ुक़्हा व मुहद्दिसीन हैं और आपके तलामिज़ा की फ़िहरिस्त भी बहुत तवील है जिन में इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम बिन हज्जाज़ कुशैरी व अबूजुरआ व अबूदाऊद व सख़्तियानी और आप के दोनों साहबज़ादगान सालेह बिन अहमद व अब्दुल्लाह बिन अहमद और आप के चचा ज़ाद भाई हमबल बिन इस्हाक़ वग़ैरा बहुत ही नामवर हैं।

इमाम शाफ़ेई ने फ़रमाया कि मैं बग़दाद से मिस्र रवाना हुआ तो इमाम हंमबल से बढ़ कर कोई फ़क़ीह व साहिबे इल्म व मुत्तक़ी बग़दाद में नहीं था।

अबूज़ुरआ का क़ौल है कि इमाम अहमद बिन हमबल को दस लाख हदीसें ज़ुबानी याद थीं आप के मिज़ाज में तवक्कुल और इस्तिग़ना हद दरजा था हसन बिन अब्दुल अज़ीज़ ने तीन हज़ार दीनार का नज़राना आप की ख़िदमत में पेश किया और अर्ज किया कि यह मेरा हलाल माल है आप उस को क़बूल फ़रमा कर अपनी

हाजतों में ख़र्च फ़रमायें तो आप ने निहायत बे परवाही से फ़रमाया कि मुझे तो इस की ज़रूरत नहीं है मेरे पास जो कुछ है वही मेरे लिए काफ़ी है आपके साहबज़ादे अब्दुल्ला बिन अहमद फ़रमाते हैं के मेरे वालिद नमाज़ों के बअ्द अक्सर यह दुआ फ़रमाते थे कि या अल्लाह ! जिस तरह तूने मेरे चेहरे को ग़ैरुल्लाह के सज्दे से बचाया,उसी तरह मेरे चेहरे को किसी के आगे सवाल करने से भी बचाले।

आप हमेशा सूखी रोटी पानी में भिगो कर खाते थे और कभी कभी रोटी सिरका भी तनावुल फ़रमाते आप को गोशा नशीनी बहुत महबूब थी बिला ज़रूरत मकान से बाहर नहीं निकलते थे सारी रात शब बे दारी व गिर्या व ज़ारी करते और रोज़ाना बिला नाग़ा तीन सौ रक्अ्त नमाज़े नफ़्ल पढ़ते थे मगर जब कोड़ों की मार से आप निढाल हो गये तो रोज़ाना डेढ़ सौ रक्अ्त पढ़ने लगे।

आप ने पाँच हज किए तीन पैदल चल कर और दो हज सवारी पर मगर किसी हज में भी अपनी ज़ात पर बीस दिर्हम से ज़्यादा खर्च नहीं किया।

अबूदाऊद सख़्तयानी ने फ़रमाया कि इमाम अहमद बिन हम्बल की मज्लिस आख़िरत की मज्लिस थी जिस में कभी भी कोई दुनिया का तज़किरा नहीं होता था।

हिलाल बिन अ़ला फ़रमाते हैं कि ख़लक़े क़ुर्आन के फ़ितने में अगर अहमद बिन हम्बल कोड़े की सज़ा पाने के बावजुद हक़ पर सबित क़दम न रहते तो हज़ारों मुसलमान काफ़िर हो जाते खुदा वन्दे करीम इमाम अहमद हम्बल बिन को जज़ा–ए–ख़ैर अ़ता फ़रमाए कि उन्होंने कोड़ों की मार बरदाश्त करली और हक़ पर साबित क़दम रह कर सारी उम्मत को गुमराही से बचालिया।

ख़लीफ़ा मामून रशीद के भाई मोअ़तसिम बिल्लाह ने आप को गिरफ़्तार किया और उठ्ठाईस माह आप को जेल खाने में क़ैद रख कर कोड़े लगवाता रहा –ख़लीफ़ा मोअ़तसिम बिल्लाह की मौत के बअ्द वासिक़ बिल्लाह ख़लीफ़ा हुआ तो उस के दौरे हुकुमत में भी

आप पर कोड़ों की मार और जेल की सख़्तियाँ जारी रहीं यहाँ तक कि मुतवक्किल बिल्लाह जब ख़लीफ़ा हुआ तो फ़िरक़ा–ए–मोअ़तज़ला ? का ज़ोर टूट गया और आप क़ैद ख़ाने से रिहा किए गए।

मोमिन बिन अस़बअ़ का बयान है कि मैं उस वक़्त बग़दाद में मौजूद था जब इमाम अह़मद बिन ह़मबल को कोड़े लगाए जारहे थे उन्होंने अपनी आँखों देखा व़ाक़ेआ बयान किया कि जल्लाद ने जब आप को पहला कोड़ा मारा तो आप ने बलन्द आवाज़ में बिस्मिल्लाह पढ़ा और दुसरे कोड़े पर لاحول ولاقوة الا بالله۔ ला हौला व ला व ला कुव्वता इल्ला बिला पढ़ा। जब तीसरा कोड़ा पड़ा तो अलक़ुर्आनु कलामुल्लाह ग़ैरु मख़्लुक़ि फ़रमाया और चौथे कोड़े की मार पर लन युसीबना इल्ला मा कतबल्लाहु लना पढ़ा इसी त़रह उन्तीस कोड़े जल्लाद ने आप की पुश्त मुबारक पर लगाए और इसी ह़ालत में आप से एक अ़जीब करामत स़ादिर हुई कि तमाम अहले बग़दाद ह़ैरान रह गये कोड़ों की मार से आप का कमर बन्द टूट गया और पैजामा नीचे को आने लगा और आप के दोनों हाथ बँधे हुए थे उस वक़्त आप ने आसमान की त़रफ़ सर उठाया और आप के होंट हिलने लगे नागहाँ आप का पाइजामा खुद बखुद ऊपर चढ़ गया और कमर बन्द टूट जाने के बावजूद पाइजामा अपनी जगह पर क़ाइम रहा और किसी ने आप का सतर नहीं देखा।

मैमून बिन अस़बअ़ कहते हैं कि मैं एक हफ़्ते के बअ़्द इमाम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो मैंने पुछा कि आप ने कमरबन्द टूटने के ब़ाद आसमान की त़रफ़ सर उठा कर कौन सी दुआ़ पढ़ी थी ?तो आप ने जवाब दिया कि मैंने खुदावन्द तआ़ला से यह दुआ़ की थी के इलाही!अगर मैं हक़ पर हों तो मेरी परदा पोशी फ़रमाले और मुझे अपने बन्दों के रुबरु रुसवाई से बचाले।

241हिजरी में बउ़म्र सतहत्तर(77)साल बग़दाद में आप की वफ़ात हुई आप की वफ़ात की ख़बर सुन कर शहर व अतराफ़ में तहलका मच गया और लोग चीखें मार मार कर रोने लगे ।

अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद का बयान है के इमाम अह़मद की नमाज़े जनाज़ा में आठ लाख साठ हज़ार मुसलमान शरीक हुए और बअ़्ज़ मुअर्रिख़ीन का क़ौल है कि दस लाख और एक रिवायत में है कि बीस लाख़ का मजमा था और आपकी वफ़ात के दिन आप की नमाज़े जनाज़ा व दफ़न के मन्ज़र से मुतास्सिार हो कर बीस हज़ार यहूदी व नस्रानी व मजूसी मुसलमान हो गये।

अह़मद बिन कन्दी ने बयान किया कि मैंने इमाम अह़मद को उन की वफ़ात के बअ़्द ख़्वाब में देखा तो मैंने पूछा कि खुदा वन्द करीम ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? तो आप ने जवाब दिया कि रब्बे करीम ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमादी और मुझ से यह फ़रमाया के ऐ अहमद बिन ह़मबल तूने मेरी रज़ा के लिऐ कोड़ों की मार बरदाश्त की और स़ब्र किया तो अब तू मेरे जमाले पाक का दीदार कर ले मैंने तेरे लिए अपना दीदार मुबाह़ कर दिया।

अबुल ह़सन बिन ज़ाग़ौली से मन्कूल है कि इमाम अह़मद बिन ह़मबल की वफ़ात के दो सौ तीस बरस के बअ़्द आप की क़ब्र के पहलू में अबू जअ़्फ़र बिन अबीमूसा के लिए कब्र खोदी गई तो इत्तेफ़ाक़ से आप की क़ब्र खुल गई तो लोगों ने देखा कि दो सौ तीस बरस गुज़रजाने के बावजूद इमाम अह़मद का कफ़न स़ह़ीह़ व सालिम और आप का जिस्म बिल्कुल तर व ताज़ा था–

(रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) (इकमालुत्ताहज़ीब,तब्क़ाते शेअ़रानी)

4–हज़रत इबराहीम तैमी (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

ज़मानऐ ताबेईन के बड़े उ़लमा में आप का शुमार है निहायत आ़बिद व ज़ाहिद और ख़ौफ़ व ख़शीयते इलाही में यगाना–ए–रोज़गार थे आप का मक़ूला कि तुम जब किसी शख़्स़ को देख लो कि वह तकबीरे ऊला पाने में सुस्ती करता है तो तुम उस से नाउम्मीद हो जाओ और उस की स़लाह़ व फ़लाह़ से हाथ धोलो।

आप के शागिर्दों में मन्सूर बिन मोअ़्तमर जैसे सैकड़ों बाकमाल मुह़द्दिसीन हैं इमाम अअ़्मश का बयान है कि मैंने इबराहीम तैमी से

पूछा कि मुझे ख़बर मिली है कि आप एक एक महीने तक कुछ भी नहीं खाते ? तो आप ने जवाब दिया कि हाँ सह़ीह़ है बल्कि बअ़ज़ औक़ात तो मैं दो दो महीने तक कुछ नहीं खाता और इस वक़्त भी चालीस रातों से कुछ भी नही खाया है बीवी की ज़बर दस्ती से एक दाना मुँह में रखलिया था मगर बीवी के चले जाने के बअ़द मैंने उस को थूक दिया और इस का रस भी ह़लक़ के नीचे नहीं उतारा।

आप की वफ़ात का वाक़ेआ़ भी बड़ा ही ह़सरतनाक है ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ सक़्फ़ी ज़ालिम कूफ़े का गवर्नर थ ह़ज़रत इमाम इब्राहीम नख़्ई की ह़क़ गोई पर नाराज़ हो कर उन की गिरफ़्तारी का हुक्म दिया कोतवाल ने इब्राहीम नख़्ई के बदले इब्राहीम तैमी को गिरिफ़्तार कर लिया कोतवाल की इस ज़ब्र दस्त ग़लती से आप बिलावजह जेल खाने में बन्द कर दिए गये और ज़ालिम हज्जाज बिन युसूफ़ ने हुक्म दिया कि इन को रस्सी में बाँध कर एक ऐसी जगह कैद में रखो कि यह दिन भर धूप में जलते रहें और रात भर ह़माम की गर्मी से झुलसते रहें जहाँ और भी बहुत से नेक व सालेह़ उ़लमा क़ैद की सख़्तियाँ बरदाश्त कर रहे थे आप क़ैद खाने की मशक़्क़तों को ज़्यादा दिनों तक बरदाश्त नहीं कर सके चन्द ही दिनों में बीमार हो गये और इसी ह़ालत में 92 हिजरी में वफ़ात पागए

जिस रात आप ने वफ़ात पाई ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ज़ालिम ने ख़्वाब में देखा कि कोई शख़्स कह रहा है कि ऐ ह़ज्जाज उठ देख तेरे कैदियों में से आज एक जन्नती का इन्तेक़ाल हो गया ह़ज्जाज ने सुबह़ को कैदियों का ह़ाल पूछा तो पता चला कि इस रात में इब्राहीम तैमी का इन्तेक़ाल हो गया रदि़यल्लाहु तआला अ़न्हु(तब्क़ाते शेअ़रानी वग़ैरा)

5–हज़रत अबूलआलिया (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप का इस्मे मुबारक रफ़ीअ् बिन मेहरान है आज़ाद शुदा गुलाम थे मगर बहुत ही बलन्द मरतबा बस़री ताबेई हैं हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के ददीार से मुशर्रफ़ हुए और ह़ज़रत अम्र अबी कअ्ब वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हु के ह़दीस में शगिर्द हैं तीन मरतबा पूरा कुर्आन मजीद आप ने ह़ज़रत उ़मर रदियल्लहु तआला अन्हु को सुनाया

आप की दर्सगाहे ह़दीस से सैंकड़ों मह़द्दिदसीन ने फ़ैज ह़ासिल किया और आप के शागिर्दे ख़ास आ़सिम अह़वल तो मुह़द्दिदसीन की सफ़ों में ऐसे नज़र आते हैं जैसे तस्बीह़ के दानों में इमाम।

आप बहुत ही गोशा नशीन और तन्हाई पसन्द थे और जुहद व तक़्वा और इबादत व रियाज़त में भी बहुत ही मुमताज़ व मशहूर थे नमाज़ो में आपका खुजूअ् व ख़शूअ् ज़रबुलमस्ल है आप अकसर फरमाया करते थे कि जिस शख़्स को नमाज़ में खुशूअ् व खुजूअ़े क़ल्ब ह़ासिल नहीं होता फ़िर भला उस को कब और कहाँ खुशूअ् ह़ासिल होगा ? इबादत में भी आप के ज़ौक व इस्तिक़ामत को करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जासकता सफ़र और वत़न में कभी आप की नमाज़ तहज्जुद फ़ौत नहीं हुई आप का क़ौल है कि मेरे नज़दीक एक मुसलमान का सब से बड़ा गुनाह यह है कि वह आ़लिम व ह़फ़िज़े कुर्आन हो कर रात भर सोता रहे और नमाज़े तहज्जुद में कुर्आन न पढ़े।

इत्तिबाअ़े शरीअ़त का यह आ़लम था कि इस ह़दीस पर कि दाहिने हाथ से शर्मगाह को नहीं छूना चाचिए, इस तरह़ अ़मल किया कि पचास बरस तक कभी दायाँ हाथ शर्मगाह पर नहीं लगाया।

इस पैकरे इल्म व फ़न ने 90हिजरी में विसाल फ़रमाया (रह़मतुल्लाहि तआलाअलैहि) (इकमल व त़ब्क़ाते शेरानी)

6–हज़रत अबूउसमान नहदी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप का नाम अब्दुर्रहमान बिन मिल है आप के बुजुर्गों में एक शख़्स नहदी बिन लैस थे उन की तरफ़ निसबत करके आप नहदी कहलाते हैं किबार ताबेईन में से हैं आप हुजूर अलैहिसलातु वस्सलाम के ज़माने ही से मुशर्रफ़ बइस्लाम हो चुके थे मगर आप को दीदारे नबवी नसीब नहीं हूआ।

हदीस में आप हज़रत उमर बिन अब्दुल्लाह बिन मसऊद अबू मूसा अशअरी वगैरा किबार सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम के शागिर्दे रशीद हैं और क़तादा जैसे साहिबे फ़ज़ल व कमाल मुहद्दिस आप के शगिर्दों में हैं इमाम अहमद बिन हमबल आप के बेहद मद्दाह थे आप का अस्ली वतन कूफ़ा था मगर जब अहले कूफ़ा ने हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु को करबला में शहीद कर दिया तो आप को कूफ़ा से इतनी नफ़रत पैदा होगई कि आप यह कह कर कूफ़ा से अपना घर बार छोड़ कर बसरा चले आए कि मैं इस शहर में क़दम रख़ना नहीं चाहता जहाँ के लोगों ने हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के प्यारे नवासे को क़त्ल करदिया

एक सौ तीस बरस की उम्र शरीफ़ हुई साठ बरस ज़मान –ए–जाहिलियत में गुज़रे और बाक़ी उम्र ख़िदमते इस्लाम व तबलीगे दीन और इल्मे हदीस के दर्स व तदरीस में गुज़ारी

अपने दौर के बहुत बड़े आबिद व ज़ाहिद और अपने हम असरों में तक़वा व दियानत के एतेबार से कामिल और साहिबे विलायत व बा करामत बुजुर्ग थे इल्म व अमल का यह आफ़ताब 95 हिजरी में गुरूब हो गया जिस से इराक़ की इल्मी दुनिया में उजाला था और शहर बसरह को आप की आख़िरी आराम गाह होने का शरफ़ हासिल हुआ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि (इकमाल व नोवी वगैरा)

7–हज़रत असवद बिन यज़ीद नख़ई (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबू अम्र या अबू अब्दुर्रहमान है यह हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा के दादा उस्ताद हज़रते इबराहीम नख़्ई के मामूँ हैं यह हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माने अक़्दस में पैदा हो चुके थे लेकिन शरफ़े सोहबत हासिल नहीं हुआ निहायत जलीलुलक़द्र ताबेई और हज़राते अबूबकर व उमर अब्दुल्लाह बिन मसऊद व बी बी आइशा रदियल्लहु तआला अन्हुम से शर्फे तलम्मुज़ रखते हैं और इब्राहीम नख़्ई व अबूइस्हाक़ सबलीई वगैरा मुहद्दिसीन के उस्ताद हैं इमाम अहमद ने उन को साहिबे खैर और यहया बिन मुईन व इब्ने सअ्द वगैरा ने सिक़ा व सालिहुलहदीस फ़रमाया और इबराहीम नख़ई ने उन को अब्दुल्लाह बिन मसऊद के शगिर्दों में शुमार फ़रमाया जो साहिबे फ़तावा थे

इबादत व रियाज़त में उन का बहुत ही बलन्द व बाला मक़ाम है रोज़ाना सात सौ रकअ्त नमाज़े नफ़्ल पढ़ते थे और मुसल्सल रोज़े रखते थे यहाँ तक कि रोज़ा व इबादत की कसरत और शब बेदारी की मशक़्क़तों की वजह से उन के बदन का रंग पहले ज़र्द फिर सब्ज़ हो गया था।

कूफ़ा आप का वतन था और अपने वतन से आप ने चालीस हज और चालीस उमरा आदा किए और एक सफ़र में हज व उमरा दोनों कभी अदा नहीं किए बल्कि एक मरतबा हज की नियत से मक्का मुकर्रमा का सफ़र करते और दूसरी मरतबा उमरा के इरादे से मक्का मुकर्रमा हाज़री देते इसी तरह आप के साहबज़ादे अबदुर्रहमान बिन असवद ने भी चालीस हज और चालीस उमरा अदा किए।

असवद बिन यज़ीद खौफ़े इलाही से रातों को इस क़दर रोया करते थे कि रोते रोते आपकी एक आँख ज़ाय़ होगई थी और इतने लाग़र हो गए थे कि बदन पर हड्डी और चमड़ा के सिवा गोश्त की कोई बोटी बाक़ी नहीं रह गई थी ।

आप से बहुत सी करामतें सादिर और कुफ़े में आप की इबादतों और करामतों का इस क़दर चरचा था कि अवाम व ख़ास सब आप

को ,,असवद जन्नती कह कर पुकारा करते थे 75हिजरी में आप का विसाल हूआ और कूफ़े में दफ़न हूए रहमतुल्लाहि तआला अलैहि(उमदतुलक़ारी व तबक़ात व तहज़ीबुत्तहज़ीब)

8–हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

8–आप का नाम अब्दुल्लाह बिन सौब और लक़ब ,,ज़ाहिद शामी,,है आप यमन के बाशिन्दे हैं हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से बैअत करने के लिए अपने वतन से मदीना मुनव्वरा रवाना हुए मगर अभी रास्ते ही में थे कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का विसाल होगया।

उन्होंने इल्मे हदीस हज़रत उमर मआज़ बिन जबल व अबू उबैदा बिनिलजर्राह व इबादा बिन सामित व अबूज़र ग़फ़्फ़ारी वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम से हासिल किया और अबू इदरीस ख़ौलानी व अता बिन अबी रियाह व मकहूल वग़ैरह मुहद्दिदसीन ने उन की शगिर्दी का शरफ़ हासिल किया।

ताबेई मुहद्दिदसीन में यह बहुत बलन्द मरतबा बुजुर्ग हैं यहया बिन मुईन व इब्ने असअद व अजली वग़ैरा ने उन को सिक़ा व हाफ़िज़ व मुहद्दिदसे कबीर फरमाया।

बहुत बड़े आबिद व ज़ाहिद और मुत्तक़ी व परहेज़ गार थे बल्कि साहिबे विलायत व बा करामत वली थे और उन से बहुत सी करामतें मन्कूल हैं मशहूर है कि यह कई कई महीने तक खाना नही खाते थे मगर उन के चेहरे पर ज़ोअ्फ़ व नक़ाहत का कोई असर महसूस नहीं होता था न कसरते इबादत व दर्से हदीस के मशागिल में फ़ुतूर पड़ता था–

इब्ने सअ्द ने अपने तबक़ात में उन की एक बहुत ही अजीब व ग़रीब करामत नक़्ल फ़रमाई है कि असवद बिन क़ैस जुलख़िमार ने जब यमन में नुबुव्वत का दअ्वा किया और अपने बे पनाह जुल्म से लोगों को मजबूर कर के अपनी नुबुव्वत का इक़रार कराने लगा तो उस ने अबू मुस्लिम ख़ौलानी को भी गिरफ़्तार किया और कहने लगा के ऐ अबू मुस्लिम ! क्या तुम मेरे रसूलुल्लाह होने की शहादत देते

हो?तो आपने निहयात जुर्अ्त के साथ फरमाया कि मैं तेरी इस बात को सुनने की भी ताब नहीं ला सकता फिर उस ने पूछा कि कया तुम मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाह तआला अ़लैहि व सल्लम की गवाही देते हो ?आप ने जवाब दिया कि हाँ बे शक ! फ़िर आपने बलन्द आवाज़ से ज़बर दस्त बार बार अशहदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि पढ़ा असवद बिन कैस जुलख़िम्मार ने झुल्ला कर एक ज़बर दस्त आग जलवाई और जब आग के शोअ़ले काफ़ी बलन्द हो गए तो उस ज़ालिम ने अबू मुस्लिम खौलानी को उस आग में डाल दिया और आप आग के शोलों में कलिमा शहादत पढ़ते रहे और चलते फिरते रहे और आग ने आपके जिस्म या कपड़ों पर बिलकुल असर नहीं किया असवद बिन कैस जुलखिमार ने हैरान होकर आप को यमन से निकाल दिया और आप यमन से मदीना मुनव्वरा चले आए ।

हज़रत उ़मर रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को जब अबू मुस्लिम की इस करामत का इल्म हुआ तो आप ने फरमाया कि अलहम्दु ल्लिलाहि ! कि खुदा वन्दे करीम ने मुझ को इस वक़्त तक ज़िन्दा रखा कि मैंने अपने नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की उम्मत में से एक ऐसे शख़्स का दीदार कर लिया जो हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम की तरह आग में डाला गया और ज़िन्दा सलामत रहा मुफ़ज़्ज़ल का क़ौल है कि 62 हिजरी में आप का विस़ाल हुआ – (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

9–हज़रत अबूबकर बिन अ़ब्दुर्रहमान मदनी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप ख़ानदाने कुरैश के उ़लमा में बहुत जैयद व मुमताज़ हैं और मदीना मुनव्वरा के मशहूर सात फकीहों में आप का शुमार है इल्मे ह़दीस में आप को ह़ज़रत अबूहुरैरा व उम्मुलमोमेनीन आ़इशा सि़द्दीक़ा व उम्मे सल्मा वग़ैरा स़हाबा रदि़यल्लहु तआला अन्हुम की शागिर्दी का शरफ ह़ासिल हूआ और आप के शागिर्दों में इमाम ज़हरी व उ़मर बिन अब्दुलअ़ज़ीज़ वग़ैरा बहुत मशहूर हैं वाक़दी ने आप को सिक़ह फ़क़ीह आ़लिम शैख़ और कसीरुल ह़दीस तह़रीर फरमाया और इब्ने ह़राश

वग़ैरा ने इमामुल मुस्लिमीन और इल्म व फ़ज़्ल में सरदारे कुरैश कहा आप नाबीना थे मगर जलालते इल्म व कसरते ह़दीस में आप का नाम ज़रबुलमिस्ल था इल्म व फ़ज़्ल के साथ कसरते इ़बादत में भी यह अपने दौर के इमामुल आबिदीन शुमार किए जाते थे चुनाँचे कसरते नमाज़ की वजह से आ़म तौर पर लोग उन को कुरैश का राहिब(साधू) कहा करते थे यह नफ़्ल नमाज़ों में बहुत ही त़वील सज्दे करते थे देर तक हथेली ज़मीन पर रखने से उन की हथेली गर्म हो जाती थी इस लिए यह दो तश्तों में पानी भर कर रख कर सज़्दे करते थे इमाम शेअ़्बी उ़मर बिन अ़ब्दुर्रहमान से नाकि़ल है कि अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रह़मान बहुत ज़्यादा नवाफ़िल अदा करने के साथ साथ हमेशा लगातार रोज़ा भी रखते थे इब्ने मदीनी व ख़लीफ़ा वग़ैरा का क़ौल है कि आप की वफ़ात 93हिजरी में हुई (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

10–हज़रत इबराहीम नख़ई (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नियत अबू इमरान और नाम व नसब इब्राहीम बिन यज़ीद बिन क़ैस नख़ई है आप कूफ़ा के फ़क़ीहे अअ़्ज़म और मशहूर उस्ताद फ़िक़्ह व ह़दीस हैं आप ने ह़ज़रत उम्मुल मोमेनीन आ़इशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की ख़िदमत में ह़ाज़िरी दी है मगर उन से कोई ह़दीस रिवायत नहीं की अ़जली का बयान है कि इब्राहीम नख़ई ने सहाबा किराम रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की एक जमाअ़त से मुलाक़ात की है लेकिन किसी सहाबी से ह़दीस की रिवायत नहीं की।

आप इल्मे ह़दीस में अ़लक़मा बिन क़ैस व असवद बिन यज़ीद व मसरुक़ वग़ैरा सैंकड़ों बाकमाल मुह़द्दिसीन के फ़ैज़ याफ़्ता हैं और इमाम शेअ़्बी व अअ़्मश व मन्सूर वग़ैरा आप की दर्सगाह के फ़ाज़िल त़लबा हैं और ह़ज़रत इमाम अबूह़नीफ़ा आप के शगिर्दों के शागिर्द हैं जब इब्राहीम नख़ई का इन्तेक़ाल हो गया तो इमाम शेअ़्बी ने फ़रमाया कि इब्राहीम नख़ई से बढ़ कर हदीस व फ़िक़्ह का जानने वाला अब

कोई रूऐ ज़मीन पर मौजूद नहीं रहा तो लोगों ने सवाल किया कि ह़सन बस़री व इब्ने सीरीन भी इस मरतबे पर नहीं पहुँचे ?तो इमाम शेअ्बी ने जवाब दिया कि नहीं ह़सन बस्री और इब्ने सीरीन तो क्या पूरे इराक़ व शाम व ह़िजाज़ में कोई भी इब्राहीम नख़्ई का हम मिस्ल बाक़ी नहीं रहा इमाम अअ्मश फ़रमाते थे के मुह़द्दिसीन तो बहुत हैं लेकिन ह़दीस को परख़ने वाला इब्राहीम नख़्ई के सिवा कोई भी नहीं।

आप बहुत ही स़ाह़िबे जुहद व तक़्वा भी थे और कसरते इबादत नमाज़ व तिलावत वग़ैरा में भी अपने हमअस़्रों पर बहुत ज़्यादा फ़ौक़ियत रखते थे लेकिन बहुत छुप कर इबादत करते थे और शोहरत से इन्तिहाई नफ़रत करते थे मन्कूल है कि अपने को छुपाने के लिऐ कभी कभी ज़अ्फ़रान में रंगे हूऐ कपड़े पहन कर बाज़ार में निकला करते थे ताकि लोग आप को पहचान न सकें कि आप कूफ़े के मूह़द्दिसे कबीर व फ़क़ीहे अअ्ज़म हैं या कोई मनचले नो जवान !

आप बनी उमय्या के ज़ालिम उ़मरा को खुल्लम खुल्ला नसीह़त फ़रमाते थे इसी लिए कूफ़ा व बस़रा का गवर्नर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ सक़्फ़ी आप की जान का दुश्मन हो गया था इस लिए फ़ुक़्हा व मुह़द्दिसीन ने आप से दर ख़्वास्त की कि लिल्लाह आप कहीं रुपोश हो जायें क्यों कि आप की जान बड़ी क़ीमती है अगर ह़ज्जाज ने आप को शहीद करदिया तो फ़िक्ह व ह़दीस का चिराग़ गुल होजायेगा चुनाँचे आप एक पोशीदा मक़ाम पर छुप गए और ह़ज्जाज ने आप को गिरफ़्तार कराने की इन्तिहाई कोशिश की मगर कामयाब न हो सका उसी ह़ालत में 95हिजरी या 96 में आप का विस़ाल हो गया और फ़िक़्ह व ह़दीस का यह चिराग़ हमेशा के लिए गुल हो गया जिस से हज़ारों इल्म व फ़ज़्ल के चिराग रौश्न हुए थे ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के खौफ़ से आप के जनाज़े में सात आदमीयों के सिवा कोई शरीक नहीं हुआ उन ही सात सर फ़रोशें ने अपनी जान हथेली पर रख कर इस सरमाया करामत को पूरे एअ्ज़ाज़ के साथ सुपर्दे ख़ाक किया। (अैनी व त़ब्क़ातशेअ्रानी वग़ैरा)

11–हज़रत अबूइस्हाक़ सबीई (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप का इस्मे गिरामी अ़म्र बिन अ़ब्दुल्लाह हम्दानी और वत़न कूफ़ा है निहायत आ़बिद व ज़ाहिद और कसीरुर्रिवायत व स़ाहिबे करामत ताबेई बुज़ुर्ग हैं और अपने एक जद्दे अअ़्ला सबीअ़ बिन सअ़्ब की त़रफ़ निस्बत होने की वजह से सबीई कहलाते हैं अ़ली बिन मदीनी का बयान है कि आप ने हज़रत अ़ली व बर्राअ़ बिन आ़ज़िब व ज़ैद बिन अरक़म वग़ैरा अस्सी स़हाबा किराम रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से ह़दीस की रिवायत की है और सैकड़ों किबार मुह़द्दिसीन कि उस्ताज़े ह़दीस हैं अ़ली बिन मदीनी आप ही के क़ाबिले फ़ख़्र शगिर्द हैं जो आसमाने ह़दीस पर आफ़ताब बन कर चमके।

आप हज़रत उ़समान रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िलाफ़त के दूसरे साल कूफ़े में पैदा हुए और उ़म्र भर इ़बादत व रियाज़त और इ़ल्मे हदीस की ख़िदमत कर के 129हिजरी में वफ़ात पाई (इकमाल व नौवी)

12–हज़रत अअ़्मश (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नीयत अबू मुह़म्मद और नाम व नसब सुलैमान बिन मेहरान काहिली असदी और लक़ब अअ़्मश है आप 60 हिजरी में ईरान के अन्दर पैदा हुए और बअ़्द में कुफ़े के मुतवत्तिन बन गये और बाज़ का क़ौल है कि आप की विलादत कूफ़े में हूई वल्लाहु तआ़ला अअ़्लमु।

इ़ल्मे ह़दीस में आप के उस्तादों की तअ़्दाद इस क़दर ज़्यादा है कि शुमार दुशवार है जिन में से ज़ैद बिन वहब व अबूवाइल व आ़मिर शेअ़्बी व इब्राहीम नख़्ई वग़ैरा अकाबिर बहुत मशहूर हैं हज़ारों मुह़द्दिसीन आपके शगिर्द हैं बल्कि यूँ कहना चाहिए कि कूफ़े के अकसर मुह़द्दिसीन की रिवायत का दार व मदार आप ही की ज़ात पर है आप के तलामिज़ा में सुफ़यान सौरी व सुफ़यान बिन ऊ़ैनियह व शेअ़्बा व सुलैमान तैमी व अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक व फुज़ैल बिन अ़याज़ व अबूबकेर बिन अ़याश वग़ैरह सैंकड़ों ऐसे ऐसे इ़ल्म व फ़ज़्ल

के आफ़ताब व माहताब हैं जिन से क़ियामत तक इल्मी दुनिया में उजाला रहेगा।

आप बहुत ही मुफ़लिस बल्कि नाने शबीना के भी मोहताज़ थे मगर इस के बावजूद अपनी मज्लिस में अमीरों और बादशाहों को बड़ी हिक़ारत की नज़र से देखते थे और उम्र भर कभी किसी बादशाह या अमीर का नज़राना क़बूल नहीं फ़रमाया ।

आप का ज़ुहद व तक़्वा नादिरुल वजूद और कसरते इबादत बे मिस्ल है हर वक़्त बावुज़ू रहते और फ़रमाते थे के मुझे हर वक़्त यह डर रहता है कि कहीं बिला वज़ू मेरी मौत न हो जाए आप की करामतों में से एक बड़ी करामत यह है कि सत्तर बरस तक नमाज़ बाजमाअ़त की तकबीर ऊला फ़ौत नहीं हूई।

मिज़ाज में तवाज़ेअ़ व इन्किसारी भी हद से ज़्यादा था फ़रमाया करते थे कि मैं मरजाऊँ तो किसी को मेरी मौत की ख़बर मत देना बस चुपके से मुझे क़ब्र में डाल देना मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ कि दीनदार मुसलमान मेरे जनाज़े को कन्धे पर उठा कर चलें रबीउ़लअव्वल 148 हिजरी में बउ़म्र अठासी साल वफ़ात पाई।

(तब्क़ात शेअ़रानी व इकमाल व तहज़ीबुत्तहज़ीब)

13—हज़रत अबूबकर मुहम्मद अन्सारी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

यह हज़रत उ़मर बिन अब्दुलअ़ज़ीज़ के दौरे खिलाफ़त में मदीना मुनव्वरा के क़ाज़ी थे और यह एक तारीख़ी लतीफ़ा है कि अबूबकर बिन मुहम्मद के सिवा कोई अन्सारी कभी मदीना मुनव्वरा का अमीर नहीं हूआ उन के बारे में इमाम मालिक का क़ौल है कि मैंने अबूबकर बिन मुहम्मद से बढ़ कर मुत्तबऐ शरीअ़त व मुस्तक़ीमुलहाल किसी को नहीं देखा।

नाक़िदीने ह़दीस ने बिलइत्तिफ़ाक़ उन को सिक़ह व मोअ़्तमद व कसीरुल ह़दीस लिखा यह इल्मे ह़दीस में अपनी ख़ाला इमरा बिन्ते अ़बदुर्रह़मान व अ़िबाद बिन तमीम व उ़मर बिन अ़ब्दुलअज़ीज़ वग़ैरह जमाअ़ते मुह़द्दिसीन के शागिर्द हैं और इमाम ज़ुहरी व यह़या बिन

सईद अन्सारी वग़ैरा बड़े बड़े मुहद्दिसीन उन की मज्लिसे दर्स के फ़ैज़ याफ़्ता हैं ।

इल्म व फ़ज़्ल और तक़्वा व दियानत दारी में यकताए रोज़गार होने के साथ शब बेदारी व कसरते इबादत में भी अपने दौर के मुम्ताज़आ बिदों में हैं अ़ताफ़ बिन ख़ालिद अपनी वालिदा से नाक़िल हैं कि अबूबकर बिन मुहम्मद ने चालीस बरस तक रात में बिस्तर पर पीठ नहीं लगाई तमाम रात नवाफ़िल पढ़ते और इतना त़वील सज्दा करते थे के उन की पेशानी और नाक पर बहुत नुमायाँ सज्दों का निशान पड़गया था।

हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उन के बे हद मद्दाह़ व मोअ़्तक़िद थे अपने दौरे ख़िलाफ़त में उन को मदीना का हाकिम और क़ाज़ी और अमीरुल हज मुक़र्रर किया और जब कुछ लोगों ने एअ़्तिराज़ किया कि आप अबूबकर बिन मुहम्मद की नमाज़ पर इस क़दर फ़रेफ़्ता हो गये कि उन को इतने बड़े बड़े ओ़हदों पर फ़ाइज़ कर दिया तो आप ने जवाब दिया के अगर मैं अबूबकर बिन मुहम्मद जैसे नमाज़ियों पर फ़रेफ़्ता न होता तो फिर किस पर फ़रेफ़्ता होता ?

उ़मर बिन अ़बदुल्लाह तमीमी का क़ौल है कि 110 हिजरी में उन की वफ़ात हुई हेसम बिन अ़दी ने कहा है कि 117 हिजरी में उन का विसाल हूआ और वाक़िदी व इब्ने मदीनी वग़ैरा ने उन का सने वफ़ात 120 हिजरी तहरीर किया है वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम–

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

14—हज़रत अबूजअ्फ़र क़ारी मदनी (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उन का नाम यज़ीद बिन कोअ्क़ाअ् है बचपन में उम्मुलमोमेनीन हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लहु तआला अ़न्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उम्मुलमोमेनीन ने शफ़क़त फ़रमाकर उन के सर पर अपना हाथ फेरा।

यह फ़ने किरअत में अहले मदीना के इमाम व उस्ताद हैं इसी लिए क़ारी के लक़ब से मशहूर हैं यह अगरचे बहुत ही कम रिवायते ह़दीस फ़रमाते थे मगर इब्ने मुईन व निसाई व अबूहातिम वग़ैरा ने उन को सिक़ह व सालिहे व मुस्तक़ीमुल ह़दीस बताया है यह ताबेई हैं और ह़दीस में हज़रत अबूहूरैरा व इब्ने उ़मर व इब्ने अ़ब्बास वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अ़न्हुम के शागिर्द हैं और इमाम मालिक व नाफ़ेअ् बिन नईम क़ारी व उबैदुल्लाहि बिन उ़मर व इस्माईल बिन जअ्फ़र व दरावरदी वग़ैरा ने उन से ह़दीस की रिवायत की है यह बहुत ही परहेज़गार और बहुत बड़े इबादत गुज़ार और साहिबे विलायत बा करामत बुजुर्ग थे।

उन की एक मशहूर करामत यह है कि उन को वफ़ात के बअ्द जब गुस्ल दिया जाने लगा तो तमाम हाज़ेरीन ने देखा कि उन के सीने में दिल के मक़ाम पर खाल का रंग काग़ज़ के वर्क़ की तरह सफ़ेद व शफ़्फ़ाफ़ नज़र आता था और उस में एक ख़ास क़िस्म की चमक भी थी इस मन्ज़र को देख कर तमाम हाज़ेरीन ने यक़ीन के साथ बिल्इत्तिफ़ाक़ यही कहा कि बिला शुबा कुर्आन का नूर है जो उन के क़ल्ब में चमक रहा है क्यों कि तमाम उ़म्र उन्होंने कुर्आन की तअ्लीम दी है अबूमूसा का क़ौल है कि आप ने 127 हिजरी में वफ़ात पाई और ख़लीफ़ा ने आप का सन वफ़ात 130 हिजरी बताया है। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

15—हज़रत इब्ने जरीह (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबुलवलीद और नाम नसब अ़बदुलमलिक बिन अ़बदुलअ़ज़ीज़ बिन जरीह़ उमवी है यह वह जलीलुलक़दर उस्तादे ह़दीस हैं जो अ़ता बिन अबी रिबाह़ व इमाम ज़हरी व इमाम जअ़फ़र सादिक़ वग़ैरा सैंकडों मुहद्दिसीन की दर्से हदीस से फैज़ पाकर कसीरुल ह़दीस व बलन्द पाया ह़ाफ़िज़े ह़दीस हुए उन की जलालते शान का अन्दाज़ा उस से लगाया जासकता है कि इमाम बुख़ारी उन को इल्म का ख़ज़ाना कहा करते थे और यह़या बिन सईद उन की किताबों को कुतुबुलअमानह का लक़ब देते थे और अ़ली बिन मदीनी तो यहाँ तक फ़रमाया करते थे कि मैंने ह़दीसों की सनदों में ग़ौर किया तो सारी सनदों का दारो मदार छः मुह़द्दिसीन पर पाया फ़िर उन छः मुह़द्दिसीन का सारा इल्म इब्ने जुरैज के सीने में पहुँच गया अ़ली बिन मदीनी का यह भी क़ौल है कि मक्का मुकर्रमा के मुह़द्दिसीन में सब से पहले इल्मे ह़दीस की किताबें तस्नीफ़ फ़रमाने वाले इब्ने जुरैह़ ही हैं।

इब्ने ह़ब्बान ने लिखा है कि इब्ने जुरैज सिक़ा और अहले हिजाज़ के फ़ुक़्हा व मुह़द्दिसीन में बहुत ही ठोस इल्मी क़ाबिलियत के मालिक हैं अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक जैसे ह़ज़ारों मुह़द्दिसीन उन के दरयाऐ इल्म से सैराब हुए और उन की जलालते इल्म व फ़ज़ीलते रिवायत के मोअ़तरिफ़ हैं।

यह बहुत ही त़ाक़तवर व तन्दुरुस्त थे और निकाह़ के बे ह़द शौक़ीन थे चुनाँचे ह़ज़रत इमाम शाफ़ेई ने फ़रमाया कि उनहोंने एक के बाद दूसरी सत्तर औ़रतों से निकाह़ फ़रमाया लेकिन किसी औ़रत से उन की कोई औलाद नहीं हुई ।

मगर इस के साथ इबादत का शौक़ व ज़ौक़ भी करामत की मन्ज़िल पर पहुँचा हुआ था अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ मुह़द्दिस का क़ौल है कि मैंने इब्ने जुरैज से बढ़ कर बेहेतरीन नमाज़ पढ़ने वाला किसी नमाज़ी को नहीं देखा अबू आ़सिम नाक़िल हैं कि मक्का मुक़र्रमा में यह अपने दौर के सब से बड़े इबादत गुज़ार और ज़ाहिदे शब ज़िन्दादार थे हर माह

दार ही रहते थे 149 हिजरी में सत्तर बरस की उम्र पाकर मक्का मुकर्रमा में विसाल फ़रमाया (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

16–हज़रत औज़ाई (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नियत अबू उमर और नाम अबदुर्रहमान बिन उमर है आप शामी मुहद्दिसीन के मुसल्लमुस्सुबूत इमाम व उस्तादे हदीस हैं औज़ाई इस लिए कहलाते हैं कि यमन या हमदान के एक क़बीला औज़ाअ् से आप का तअल्लुक़ था और बअ्ज़ का क़ौल है कि औज़ाअ् दमिश्क़ के क़रीब में एक गाँव का नाम था उस की तरफ़ निस्बत कर के आप औज़ाई मशहूर हो गये–

आप का ज़ुहद व तक़्वा मशहूरे ज़माना और आप की इमामत व बुज़ुर्गी पर तमाम अकाबिर का इज्माअ् है आप का हाफ़िज़ा निहायत क़वी था सत्त्र हज़ार फ़तावा का जवाब आप ने अपने हिफ़्ज़ से तहरीर कराया और तेरह बरस की उम्र से आप ने फ़तवा देना शुरुअ् कर दिया था आप तबेअ् ताबेईन में से हैं और बड़े बड़े बलन्द पाया ताबेईन से आप ने हदीस की रिवायत की है और क़तादा व ज़हरी व यहया बिन कसीर वग़ैरह के आप उस्ताद हैं तमाम अहले शाम व अहले मग़रिब इमाम मालिक के मशहूर होने से पहले आप ही के मज़हब व फ़तावा पर अमल करते थे ।

पहले आप दमिश्क़ में बाबुलफिरदौस के बाहर सुकूनत फरमाते थे फ़िर बैरुत चले गऐ और वहाँ मुजाहिदीने इस्लाम के लश्कर में शमिल हो गए और आख़िर उम्र तक जिहाद में मशगूल रहे।

ख़लीफ़ा बग़दाद अबू जअ़फ़र मन्सूर आप से बे हद अक़ीदत रखता था और आप की ख़िदमत में मुअद्दबाना हाज़िरी देता था और निहायत जुर्अत व बेबाकी के साथ इस को अम्र बिल मअ़रूफ़ व नही अ़निलमुन्कर फ़रमाया करते थे ।

आप88हिजरी में बअ़लबक्क शहर के अन्दर पैदा हुए और बचपने से आख़िर उम्र तक इल्म की तलब व दर्से हदीस और हज व जिहाद के लिए सफ़र फरमाते रहे आप जलीलुश्शन फ़क़ीह व कसीरुलहदीस

मुहद्दिस होने के साथ इबादत व रियाज़त की मन्ज़िल में भी बहुत ऊँचा मक़ाम रखते हैं और इस में कोई शक नहीं कि आप साहिबे करामत औलियाअ् में से थे आप की वफ़ात का वाक़िआ भी बड़ा ही दर्द नाक व अजीब है आप हालते ज़िहाद में गुस्ल के लिए गुस्ल ख़ाना में दाख़िल हुए और हम्माम के मालिक ने बाहर से ताला बन्द करदिया और किसी ज़रूरत से बाहर चला गया फ़िर उस को ताला खोलना याद न रहा और कई दिन के बअ्द जब उस ने ताला खोला देखा आप हम्माम की दीवार से टेक लगाये क़िब्ला रू बैठे हुए हैं और आप की रुह परवाज़ कर चुकी है यह वाक़िआ 157 हिजरी का है–(नौवी, व तब्क़ाते शेअ्रानी ,वग़ैरह)

17–हज़रत इब्राहीम बिन अदहम बलख़ी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबूइस्हाक़ इब्राहीम बिन अदहम बलख़ी जो बहुत ही नामवर शैख़े तरीक़त व सुलतांने विलायत गुज़रे हैं और जिन की करामतों के तज़किरे मशहूरे ख़लाइक़ हैं यह अपने दौर के बड़े फ़ाज़िले हदीस व मशहूर सिक़ा मुहद्दिस भी थे।

यह हदीस व फ़िक़ह में हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा के बड़े ख़ास शागिर्द हैं उन का असली वतन बल्ख़ है मगर बअ्द में उन्होंने शाम में सुकूनत इख़्तियार करली थी ज़ुहद व तक़्वा इबादत व रियाज़त में बहूत ही बलन्द मक़ाम रखते थे यह जब हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो इमाम ममदूह ने इन से फ़रमाया कि ऐ इब्राहीम! तुम्हें इबादत की तौफ़ीक़ तो बहुत कुछ मिल चुकी है इस लिए अब तुम्हें कुछ इल्म का भी एहतेमाम करना चाहिए क्यों कि इल्म इबादत की असल और तमाम इबादतों का दारो व मदार है चुनाँचे इमाम मम्दूह की नसीहत पर अमल करते हुए इब्राहीम बिन अदहम इल्म की तहसील में मशगूल हो गए और हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा यहया बिन सईद बिन मरज़बान व मक़ातिल बिन हब्बान बन्ती वग़ैरा मुहद्दिसीन की दर्स गाहों में इल्मे हदीस पढ़ कर उस्तादे हदीस हो गए और आप के हलक़ा--ए–दर्स में सुफ़यान सौरी व शफ़ीक़ बलख़ी

व इब्राहीम बिन बशारू औज़ाई जैसे बाकरामत मुहद्दिसीन व उबाद व जुहादेउम्मत पैदा हुए।

इमाम निसाई व यहया बिन मुईन व इब्ने नमीर व अज्ली वग़ैरह ने उन को सिक़ह, ज़ाहिद, आबिद, फ़ाज़िल, मुहद्दिस फ़कीह, और सख़ावत में यकता–ए–रोजगार तहरीर किया और इब्ने हब्बान ने किताब अस्सिक़ात में उन के औसाफ़ का तज़किरा इन लफ़्ज़ों में फ़रमाया कि इबराहीम बिन अदहम मुजाहिदा, फ़िक्ह और मुसलसल तक़वा शिआरी व सख़ावत में आख़िरी दम तक साबित कदम रहे ।

आख़िरी उम्र में आप दर्स व तदरीस से किनारा कश हो कर हमा तन इबादत व रियाज़त में मशगूल हो गए और आप की रुहानी तवज्जह से हज़ारों ग़ैर मुस्लिमों ने इस्लाम क़बूल किया और सैकड़ों गुनाहगार मुसलमान आप के दस्ते हक़ परस्त पर ताइब हो कर मरतबा–ए–विलायत पर फ़ाइज़ हो गए मुजाहिदीने इस्लाम के लश्कर में शामिल हो कर जिहाद के लिऐ आप रोम भी तशरीफ़ ले गऐ और बिलादे रोम ही में161हिजरी में आप की वफ़ात हुई या 162 हिजरी में आप की वफ़ात हुई। (तहजीबुत्तहज़ीब व मुनाकिब सदरुलअइम्मह)

18–हज़रत इब्राहीम बिन तहमान (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

यह इमाम अबू हनीफ़ा के बलन्द पाया शागिर्दों में से हैं और अकाबिर अइम्मा–ए–हदीस में से शुमार किए जाते हैं उन के फ़ख़्र के लिए यही काफ़ी है कि खुद इमामे अअ्ज़म ने भी उन से हदीसों की रिवायत की है चुनाँचे हाफ़िज़ ज़हबी ने तज़किरतुलहुफ़्फ़ाज़ में इस की तसरीह की है कि उन के उस्तादों में से इमाम अबूहनीफ़ा और सुफ़वान बिन सलीम ने भी उन से रिवायते हदीस की है इस्तलाहे मुहद्दिसीन में इस क़िस्म की रिवायतोंको ,,रिवायतुलअकाबिर अनिलअसाग़िर ,,कहते हैं यअ्नी बड़ों की रिवायत अपने छोटों से।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने उन को सहीहुलहदीस व क़ाबिले एअ्तिमाद और तक़्वा शेआर कहा और क़ाज़ी यहया बिन अकसम का

तो उन के बारे में यह क़ौल है कि खुरासन व इराक़ और हिजाज़ के मुहद्दिदसीन में से बहुत ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ व मोअ्तमद और वसीउ़लइल्म हैं ,मगर अफ़सोस है कि ऐसा बाकमाल व बलन्द मरतबा मुहद्दिदस भी अरबाबे ज़वाहिर के हमलों से महफूज़ न रह सका चूँकि यह इमामे अअ्ज़म के शागिर्द थे और उस बात के क़ाइल थे कि ईमान व अ़मल दो जुदा गाना चीजें और दोनों का हुक्म मुख़्तलिफ़ है इस लिए इमामे अबूहनीफ़ा की जनाब में सुए अक़ीदत रखने वाले ज़ाहिर बीं मुहद्दिदसीन ने इन कोमुरहबा कहा और उनपर कलाम किया मगर उन की करामत है कि उन मुतअस़्सिब मुहद्दिदसीन का वार ख़ाली गया क्यों कि आख़िर हाफ़िज़ ज़हबी को मीज़ानु एअ्तेदाल में यह तसरीह करनी पड़ी कि फ़लाइब्रतुन लिमुद्‌ अिफ़ह यअ्नी उन को ज़ईफ़ बनाने वालों की बात का कोई एअ्तेबार नहीं इसी त़रह तमाम असहाबे सिहाह सित्ता ने भी उन की ह़दीसों को नक़्ल किया और सालेह बिन मुहम्मद ने भी एअ्तेराफ़ किया कि यह सालेह व हुस्नुलहदीस हैं।

इल्मी जलालत के साथ तक़्वा दियानत और इबादत व रियाज़त में भी निहायत जलीलुश्शान बुज़ुर्ग व बाकरामत वली थे इमाम अहमद बिन हमबल के क़ल्ब में उन की बुज़ुर्गी का इस क़दर एहतेराम था कि एक बार उन की मज्लिस में इबराहीम बिन त़हमान का ज़िक्र छिड़ गया और इमाम मौसूफ़ इस वक़्त बीमारी की वजह से लेटे हुए थे तो फ़ौरन सीधे उठ बैठ आ ैर फ़रमाने लग لا ينبغى ان يذكر الصالحون فيتكا "लायमबगी अंयज़कुरस्सालिहून फयतका" यअ्नी जब सालेहीन का तज़किरा हो तो तकिया लगाए रहना मुनासिब नहीं है।

इबराहीम बिन त़हमान हिरात में पैदा हुए फिर एक मुद्दत दराज़ तक नीशा पुर में सुकूनत पज़ीर रहे मगर आख़िरी उम्र में मक्का मुकर्रमा को अपना वत़न बना लिया और जवारे बैतुल्लाह में रहे और 163 हिजरी में वफ़ात पाई। (तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़ तहजीबुत्तहज़ीब वग़ैरा)

19—हज़रत अबूबकर बिन अ़याश कूफ़ी (रहमतुल्लाहि तआलाअ़लैहि)

उन के नाम में बहुत इख़्तिलाफ़ है बअ्ज़ ने इन का नाम मुहम्मद और बअ्ज़ ने अ़ब्दुल्लाह और बअ्ज़ ने सालिम या शोअ्बा या रूबा या मुस्लिम वग़ैरा बताया है लेकिन स़ही़ह़ क़ौल यह है कि उन की कुन्नियत ही उन का नाम है।

यह बहुत ही पाए के मुह़द्दिस हैं और कूफ़े के मुह़द्दिसों और क़ारीयों में उन को बे पनाह शोहरत ह़ासिल हूई उन्होंने इल्मे ह़दीस में अबूइस्ह़ाक़ सबीई व ह़मीद त़वील व सुफ़यान तिमार वग़ैरा की शागिर्दी इख़्तियार की और उन के तलामिज़ा की त़वील फ़िहरिस्त में अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक व इमाम अह़मद बिन ह़मबल व सुफ़यान सौरी व यह़या बिन मुईन भी हैं ।

उन के तक़्वा व दियानत का यह ह़ाल है कि ज़िन्दगी भर कोई बेहूदा लफ़्ज़ उन की जुबान पर नहीं आया और तमाम उम्र में किसी गुनाहे कबीरा के मुर्तकिब नहीं हुए और कसरते इबादत का यह आ़लम था कि तीस बरस तक मुसलसल रोज़ाना एक ख़त्म कुर्आन मुजीद की तिलावत करते रहे और सत्तर बरस तक मुतावातिर सारी रात बेदार रह कर नवाफ़िल पड़ते और दिन को रोज़ा रखते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक फ़रमाया करते थे कि मैंने अबूबक्र बिन अ़याश से ज़्यादा अच्छी नमाज़ पड़ने वाला किसी को नहीं देखा।

यह बहुत बड़े स़ाह़िबे करामत भी थे एक मर्तबा ज़मज़म शरीफ़ के कुँए में डोल डाला तो डोल भर कर दूध निकाला और एक मर्तबा ज़मज़म शरीफ़ के कुँए में से डोल भर शहद निकाला।

यह हारून रशीद ख़लीफ़ा बग़दाद को अ़लानिया नसीह़त फ़रमाते थे जमादिलऊला 193 हिजरी में छियानवे बरस की उ़म्र पाकर वफ़ात पाई।

इन्तेक़ाल के वक़्त उन की स़ाह़बज़ादी रोने लगीं तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि मेरी प्यारी बेटी ! तुम क्यों डरती हो ? क्या तुम रोती हो कि तुम्हारे बाप को अ़ज़ाब दिया जायेगा ? ऐ नूरे नज़र तुम्हें क्या ख़बर ? मैंने अपने मकान के सिर्फ़ इस एक कोने में 24हज़ार

मर्तबा कुर्आन मजीद ख़त्म किया है।
(तहज़ीबुत्तहज़ीब व नौवी)

उनके साहिबज़ादे इबराहीम का बयान है कि मेरे वालिद मोहतरम ने मुझ से फ़रमाया बेटा ! सुन लो । तुम्हारे बाप ने ज़िन्दगी भर कोई बे हयाई का काम नहीं किया है और तीस बरस से मुसल्सल मैं रोज़ाना एक ख़त्म कुर्आन मजीद पढ़ता रहा हूँ और ख़बर दार ! बाला खाने पर हरगिज़ तुम कोई गुनाह का काम मत करना क्यों कि इस बाला ख़ाने पर मैंने बारह हज़ार ख़्त्म कुर्आन मजीद पढ़ा है (नौवी)

20–हज़रत इब्ने उलया (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबूमुबश्शिर और नाम इस्माईल बिन इबराहीम बसरी है और इब्ने उलया उन का मशहूर लक़ब है यह सुलैमान तैमी व हमीद तवील व इब्ने औन व मुअम्मर वग़ैरह मुहद्दिसीन के नामवर शगिर्द हैं और उन के शागिर्दों में इमाम शाफ़ेई व इमाम अहमद बिन हमबल जैसे अइम्मा हदीस व फ़िक़्ह हैं मूहद्दिसीन आम तौर पर उन को सैयदुल मुहद्दिसीन व रैहानतुलफ़ुक़्हा (फ़ुक़्हा का फूल) कहा करते थे।

यह जुहद व तक़्वा में ताक़ और इबादत व रियाज़त में अपने ज़माने के फ़र्द थे तमाम उम्र कभी क़हक़हा लगा कर नहीं हँसे अली बिन मदीनी कहते हैं कि मैं एक रात उन के मकान पर सोया तो उन्होंने रात में एक तिहाई कुर्आन मजीद की तिलावल की और नवाफ़िल में रात गुज़ारदी।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक उन का बेहद एहतेराम फ़रमाते थे बल्कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक तो यहाँ तक फ़रमाते थे कि अगर सुफ़यान सौरी व सुफयान बिन अैनीयह व फ़ुज़ैल बिन अयाज़ व समाक बिन हरब व इब्ने उलया यह पाँचों मुहद्दिसीन न होते तो मैं कभी तिजारत न करता। यह पाँचों मुहद्दिसीन हदीस शरीफ़ के दर्स में मशग़ूल रहते थे और अब्दुल्लाह बिन मुबारक तिजारत कर के कमाते थे और उन पाँचों आलिमाने हदीस की माली इमदाद फ़रमाते थे।

मन्कूल है कि जब इब्ने उ़लया ने क़ाज़ी का ओहदा क़बूल कर लिया तो अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक को इतना रन्ज व स़दमा हुआ कि बग़दाद आऐ तो तमाम मुह़द्दिसीन को नज़राना पेश किया मगर इब्ने उ़लया से आप ने मुलाक़ात भी नहीं की इब्ने उ़लया ने इन्तिज़ार किया फ़िर खुद ही मुलाक़ात के लिए गये तो अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने मुँह फे़र लिया और सर उठाकर उनकी त़रफ़ देखा भी नहीं इब्ने उ़लया मायूस होकर वापस चले आये फिर दूसरे दिन अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक के नाम एक ख़त़ भेजा कि मेरे किस जुर्म की सज़ा में आप ने इतनी बे एअ़्तनाई बरती और मुझ से मुँह फे़र लिया अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ख़त़ पढ़ कर और भी ग़ज़बनाक हो गये और फ़रमाया कि जब तक छड़ी से उस शख़्स की चमड़ी न उधेड़ दी जाएगी यह शख़्स मानने वाला नहीं चुनाँचे ख़त़ के जवाब में मुन्दरजा ज़ैल अशआ़र लिख कर आप ने इब्ने उ़लया के पास भेज दीए।

يَا جَاعِلَ الْعِلْمِ بَازِيًا يَصْطَادُ اَمْوَالَ الْمَسَاكِيْنِ

ऐ इ़ल्म को एक बाज़ (शिकरा) बनाने वाले जो मिस्कीनों का माल शिकार करता है ।

اِحْتَلْتَ لِلدُّنْيَا وَلَذَّاتِهَا بِحِيْلَةٍ تَذْهَبُ بِالدِّيْنِ

तू ने दुनिया और उस की लज़्ज़तों के लिए एक ऐसा ह़ीला बनाया है जो तेरे दीन को बरबाद कर देगा।

فَصِرْتَ مَجْنُوْنًا بِهَا بَعْدَ مَا كُنْتَ دَوَاءً لِّلْمَجَانِيْنِ

तू खुद दुनिया का दीवाना बन गया ह़ालाँकि तू पहले तमाम दीवानों की दवा था।

اَيْنَ رِوَايَاتُكَ فِيْمَا مَضٰى عَنْ اِبْنِ عَوْنٍ وَابْنِ سِيْرِيْنِ

तेरी वह रिवायतें कहाँ गयीं जो तू पहले इब्ने औ़न और इब्ने सीरीन से रिवायत करता था

اَيْنَ رِوَايَاتُكَ فِىْ سَرْدِهَا فِىْ تَرْكِ اَبْوَابِ السَّلَاطِيْنِ

तेरी वह रिवायतें किधर गयीं जो तू बादशाहों के दरवाज़े से दूर रहने के बारे में रिवायत किया करता था।

اِنْ قُلْتَ اُكْرِهْتُ فَذَا بَاطِلٌ   زَلَّ حِمَارُ الْعِلْمِ فِي الطِّيْنِ

अगर (उ़ज़्र के त़ौर पर)तू यह कहे कि मुझ को मजबूर किया गया तो यह बिलकुल ग़लत़ है (दर ह़क़ीक़त बात यह है) कि इ़ल्म का गधा कीचड़ में फ़िसल गया है।

अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक के इन अशआ़र को पढ़ कर इब्ने उ़लया की दीनी ग़ैरत को ऐसी ठेस लगी के एक दम उन के त़क़्वा व दियानत की रग रग फड़क उठी फ़ौरन कचहरी से उठ कर खड़े हुए और खलीफ़ा बग़दाद हारून रशीद के दरबार में जाकर कह दिया कि ऐ सुलतान ! मैं खुदा का वास्त़ा देकर कहता हूँ कि मेरे इस बुढ़ापे पर रह़म कीजिए और ओहदए क़ज़ा से मेरा इस्तिअ़्फ़ा क़बूल फ़रमालिजिए अब एक लमह़ा के लिए भी मैं इस ओहदे पर क़ाइम नहीं रह सकता हारून रशीद ने आप की इस बे क़रारी को देख कर कहा कि ऐसा मअ़्लूम होता है कि ग़ालिबन उस मजनून (अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक)ने आप को भी बहका दिया है।

ग़र्ज़ आप का इस्तिअ़्फ़ा मन्जूर कर लिया और आप फ़िर बदस्तूर साबिक़ दर्से ह़दीस व इ़बादत में मशग़ूल हो गए अ़ब्दुल्लह बिन मुबारक को पता चला तो उन्हें बेह़द खुशी हुई और फ़ौरन दिरहमों से भरी एक थैली नज़राने में इब्ने उ़लया के पास भेज दी और फिर पुराने तअ़ल्लुक़ात इस्तिवार होगये जो आख़िरी उम्र तक क़ाइम रहे 194 हिजरी में आप की वफ़ात हूई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

21–हज़रत अबू ह़िफ़्जे़ कबीर (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन का नाम अह़मद बिन ह़फ़्स और कुन्नियत अबूह़फ़्स है और उन के साह़वज़ादे मुह़म्मद अह़मद बिन ह़फ़्स की कुन्नियत भी ह़फ़्स है चूँके बाप बेटे दोनों की कुन्नियत अबूह़फ़्स है इस बिना पर बाप अबूह़फ़्स कबीर और बेटे को अबूह़फ़्स स़ग़ीर कहा जाता है और बाप बेटे दोनों फ़िक़ह व ह़दीस में इमामत के मरतबा पर फ़ाइज़ हूए अबूह़फ़्स कबीर बुखारा के उन अइम्मा–ए–ह़दीस में से हैं जिन के दम से बुखारा में इ़ल्मे ह़दीस की गर्म बाज़ारी थी यह इमाम अबूयूसुफ़ व

इमाम मुहम्मद (शगिर्दाने इमाम अबूहनीफ़ा) के किबार तलामिज़ा में से हैं और बुख़ारा में उलमाए अहनाफ़ के इमाम व मुक़्तदा हैं और उन के शगिर्दों की तअ़दाद इस क़दर ज़्यादा है कि कोई उन्हें शुमार नहीं कर सका हाफ़िज़ इब्ने हजर अ़स्क़लानी ने फ़तहुलबारी के मुक़द्दमा में तहरीर फ़रमाया कि इमाम बुख़ारी ने भी उन के सामने ज़ानुए तलम्मुज़ तै (शागिर्दो इख़्तियार) किया है चुनाँचे अबूहफ़्स कबीर अकसर इमाम बुख़ारी के बारे में फ़रमाते थे कि "हाज़ा यकूनु लहू सीतुन यअ़नी इस शख़्स का हर तरफ़ शोहरा हो जाएगा।

यह हज़रत इमाम शाफ़ेई के हम अ़स्र थे मगर इमाम शाफ़ेई के बहुत बअ़द तक ज़िन्दा रहे उन के ज़ुहद व तक़्वा और इबादत व रियाज़त के बड़े अ़जीब अ़जीब वाक़ेआ़त और उन की करामतों के बड़े बड़े नादिर अहवाल मन्क़ूल हैं जिन को इमाम ज़िन्दोस्ती ने अपनी किताब "रौज़तुल उ़लमा" में तहरीर फ़रमाया है मगर अफ़सोस कि यह किताब फ़क़ीर राक़ेमुल हुरूफ़ की नज़र से नहीं गुज़री उन की वफ़ात 217हिजरी में हूई। (मुक़द्दमा अलजवाहिरुल मुज़ियह वग़ैरा)

22–हज़रत अबूइस्हाक़ हरवी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन का इस्मे गिरामी इबराहीम बिन अ़ब्दुल्लाह है यह अ़स्ल में हिरात के रहने वाले थे लेकिन बग़दाद को अपना वतन बना लिया था यह इमाम तिर्मिज़ी व इब्ने माजा वग़ैरा मशहूर मुहद्दिदसीन के उस्ताद हैं और हशीम(तिलमीज़ेइमाम अबूहनीफ़ा) के ख़ासुलख़ास शागिर्द हैं उन का खुद बयान है कि हशीम की कोई ऐसी हदीस नहीं है कि जिस को मैंने उन से बीस मरतबा या इस से ज़्यादा न सुना हो हाफ़िज़ ज़हबी ने उन के तज़किरे में तहरीर फ़रमाया कि "काना सुदूक़न ज़ाहिदन सवामन आबिदन कबीरूल क़दरि" यअ़नी यह बहुत ही सच्चे ज़ाहिद बहुत ज़्यादा रोज़े रखने वाले इबादत गुज़ार और निहायत ही बलन्द मरतबा शख़्स थे रमज़ान 224हिजरी में जबकि उन की उम्र नव्वे बरस से ज़ाइद हो चूकी थी इन्तिक़ाल फ़रमाया

23–हज़रत अह़मद बिन मुनीअ़ (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नियत अबूजअ़फ़र और लक़ब असम है और चूँके बग़सूर के रहने वाले थे इसी लिए बग़वी कहलाते हैं बअ़्द को बग़दाद में सुकूनत इख़्तियार करली थी इल्मे ह़दीस में इमाम अबूयूसुफ़ (शागिर्दे इमाम अबूह़नीफ़ा) के तिलमीज़े रशीद और इमाम बुख़ारी वग़ैरा सिहाहे सित्ता के मुसन्नेफ़ीन को उन की शगिर्दी का शरफ़ ह़ासिल है मुह़द्दिस ख़लीली ने फ़रमाया कि यह इल्मे ह़दीस में इमाम अह़मद बिन ह़मबल के हम पल्ला हैं फ़न्ने ह़दीस में उन की किताब मुसनद मशहूर व मअ़्रूफ़ है जिस को उन के शगिर्द नामवर इस्ह़ाक़ बिन इबराहीम बिन जमील उन से रिवायत करते हैं।

बड़े आ़बिद व ज़ाहिद और मशहूर साह़िबे करामत हैं इमाम बग़वी ने फ़रमाया कि यह औलिया अल्लाह के त़ब्क़ा–ए–अब्दाल में से थे इबादत का यह ज़ौक़ था कि चालीस साल तक मुतावातिर आप का यह मअ़्मूल रहा कि हर तीसरे दिन क़ुर्आन मजीद ख़त्म किया करते थे और तर्के दुनिया और जुहद का यह आ़लम था कि वफ़ात के बअ़्द जब आप का कुल मतरुका सामान फ़रोख़्त किया तो किताबों के इलावा कुल सामान चौ बीस दिरहम का हुआ आप 160 हिजरी में पैदा हुए और 244हिजरी में वफ़ात पाई। (तहज़ीबुत्तहज़ीबवग़ैरा)

24–हज़रत अबूज़रआ़ (रहमतुल्लहि तआ़ला अलैहि)

आप का नाम व नसब उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल करीम बिन यज़ीद बिन फ़रोख़ मख़ज़ूमी है और वत़न रए है आप इल्मे ह़दीस के मशहूर इमाम और इस फ़न में इमाम बुख़ारी के हम मरतबा समझे जाते हैं इमाम मुस्लिम व तिरमिज़ी व निसाई व इब्ने माजा जैसे अइम्मए ह़दीस आप के शागिर्दों में से हैं।

आप ने इल्मे ह़दीस पढ़ने के लिए मक्का मुअ़ज़्ज़मा मदीना

गुनव्वरा इराक़ शाम जज़ीरा खुरासान और मिस्र वग़ैरा का सफ़र किया और सिर्फ़ अबूबकर अबी शैबा से सुन कर एक लाख ह़दीसें आप ने लिखीं और आप के दूसरे उस्ताद इबराहीम बिन मूसा राज़ी की दर्सगाह में भी आप ने एक लाख ह़दीसों को तह़रीर फ़रमाया आप के उस्ताद अबूबक्र बिन अबी शैबह फरमाते थे कि मैंने अबू ज़ुरआ़ से बढ़कर कोई ह़दीसों का हाफ़िज़ नहीं देखा एक मरतबा एक शख़्स के मुँह से निकल गया कि अगर अबूज़ुरआ़ को एक लाख ह़दीसें ज़ुबानी याद न हों तो मेरी बीवी को त़लाक़ है उस शख़्स ने आप से आकर सूरते ह़ाल बयान की तो आप ने फरमाया कि तुम अपनी बीवी को अपने पास ही रखो और मुत्मइन रहो कि मुझ को एक लाख से ज़्यादा ह़दीसें ज़ुबानी याद हैं।

एक बार इमाम अह़मद बिन हमबल ने फरमाया कि मेरे इल्म में स़हीह़ ह़दीसों की तअ़दाद सात लाख है और यह जवान(अबूज़ुरआ़) उन में से छः लाख ह़दीसों को ज़ुबानी याद कर चुका है अबूज़ुरआ़ और अबूह़ातिम राज़ी दोनों ख़ाला ज़ाद भाई थे और अबूह़ातिम राज़ी की जलालते इल्म से कौन वाक़िफ़ नहीं ? मगर यही अबूह़ातिम राज़ी एअ़लानीया कहा करते थे कि मेरे इल्म में मशरिक़ व मग़्रिब का कोई मुह़द्दिस भी ऐसा नहीं है जो ह़दीसों को पहचानने में अबूज़ुरआ़ का हमसर हो सके अबूज़ुरआ़ खुद भी फरमाया करते थे कि मुझे एक लाख ह़दीसें तो इस त़रह़ याद हैं जिस त़रह़ किसी शख़्स को सूरए कुल हु वल्लाह शरीफ़ याद होती है।

आप बिला शुबा अपने ज़माने के इमामुलमुस्लिमीन और अमीरूलमोमेनीन फ़िल ह़दीस हैं और इल्म व अ़मल के एअ़तेबार से यक़ीनन आप एक खुदा रसीदा बुज़ुर्ग और स़ह़िबे करामत वली हैं और वक़्ते वफ़ात तो आप से एक ऐसी अ़जीब व ग़रीब करामत स़ादिर हुई जो अ़दीमुलमिस्ल है आप सकरात मौत व जाँकनी के आ़लम में थे और उस वक़्त आप के पास अबूह़ातिम राज़ी व मुहम्मद बिन मुस्लिम व मुनज़िर बिन शाज़ान वग़ैरह बहुत से मुह़द्दिसीन ह़ाज़िरे खिदमत थे

लोगों को ख़्याल आया कि आप को कलिमा तय्यबा की तलक़ीन करनी चाहिए मगर अबूज़ुरआ की जलालते शान के सामने किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि आप को कलिमा तय्यबा की तलक़ीन कर सके आखिर सब ने सोच कर यह राह निकाली के तलक़ीन वाली ह़दीस का तज़किरा करना चाहिए ता कि उन को कलिमा तय्यबा याद आ जाए चुनाँचे मुहम्मद बिन मूस्लिम ने इब्तिदकी की और यह सनद पढ़ी حدثنا الضحاک بن مخلد عبد الحمید بن جعفر इतना कह कर मुहम्मद बिन मुस्लिम की ज़बान बन्द होगई और बाक़ी भी खामोश ही रहे इस पर अबूज़ुरआ ने जाँकनी के आलम में रिवायत शुरूअ् करदी कि حدثنا بندار حدثنا عبد الحمید بن جعفر عن صالح عن کثیر بن مرة عن معاذ بن جبل قال قال رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه و سلم من کان اخر کلامه لااله الا الله इतना ही कहने पाऐ थे कि ताइरे रूह आलमे कुदस की तरफ़ पर वाज़ कर गया और आप की वफ़ात होगई पूरी ह़दीस यूँ है कि من کان اخر کلامه لا اله الا الله دخل الجنة यअ्नी जिस की ज़ुबान से मरते वक़्त आख़िरी कलाम "ला इलाह इल्लल्लाह" निकले वह जन्नत में दाख़िल होगा–सुब्ह़ानल्लाह सुब्ह़ानल्लाह अबूज़ुरआ कितने खुश नसीब थे और ह़दीस शरीफ़ से उन पाक रूहों को कितना लगाव और वालिहाना तअ़ल्लुक़ था कि मौत की आख़िरी साँस तक भी इल्म व अ़मल का साथ रहा 200हिजरी में आप की विलादत हूई और माह ज़िलहिज्ज़ा 264 हिजरी में आप का विसाल हूआ

(तज़किरतुलहुफ़्फ़ाज़ व तहज़ीबुत्तहज़ीब वग़ैरह)

25–हज़रत इब्ने माजा (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

(साहिबुस्सुनन)

अबूअ़ब्दुल्लाह कुन्नियत मुहम्मद बिन यज़ीद नाम रूबई क़ज़वीनी निसबत है और आ़म तौर पर इब्ने माजा के उर्फ के साथ मशहूर हैं और सहीह क़ौल यही है कि माजा आप की वालिदा का नाम है ह़दीस के छः इमामों में आप का शुमार है और सिहाह सित्ता में सुनने

इब्ने माजा आप ही की तस्नीफ़ है 209 हिजरी में आप की विलादत हुई क़ज़वीन के रहने वाले हैं जो ईरान के सूबा आज़र बाईजान का एक बहुत ही मशहूर मरदुम खेज़ शहर है आप ने इल्मे ह़दीस की त़लब में बड़ी जिद्द व जुहद फ़रमाई और इस सिलसिले में ह़िजाज़ व इराक़ शाम व खुरासन और मिस्र वग़ैरह का इल्मी सफ़र फ़रमाया और ख़ास़ कर बसरा व कूफ़ा और बग़दाद व ह़रमैन शरीफ़ैन व दमिश्क़ के शहरों में मुक़ीम रह कर तक़रीबन तीन सौ दस शूयूख़ से अह़ादीस की रिवायत फ़रमाई।

आप की इमामते फ़न व जलालते शान और अअ्ला ह़िफ़ज़ व इत्क़ान के तमाम उ़लमाए मुह़द्दिसीन मोअ्तरिफ़ व मद्दाह़ हैं मुह़द्दिस ख़लीली व अ़ल्लामा इब्ने जोज़ी व ह़ाफ़िज़ ज़हबी व इब्ने ख़लकान वग़ैरा ने आप को सिक़ा हाफ़िज़े कबीर, इमाम, साह़िबे इतकान, कबीरूश्शान, आ़रिफ़े उलूमे हदीस वग़ैरह तह़रीर किया है।

आप के तलामिज़ा की फ़िहरिस्त भी बहुत त़वील है जिस का ज़िकर बमूजिब त़वालत है आप के आ़म ह़ालाते ज़िन्दगी के बारे में तमाम तज़किरा नवेसों ने बहुत ही कम मअ्लूमात बहम पँहुचाई हैं ता हम इस क़दर ज़ाहिर है कि इल्मे ह़दीस की त़लब में आप ने जिस क़दर त़वील सफर किए फिर वतन आकर जिस त़रह़ दर्स व तस़नीफ़ का मशग़ला रहा इस से यही ज़ाहिर होता है कि आप की सारी ज़िन्दगी इल्मे ह़दीस की तह़क़ीक़ व इशाअ़त ही में बसर हुई।

आप की तस़ानीफ़ में तफ़सीर व तारीख़ व सुनन क़ाबिले ज़िक्र हैं जिन में सुनन इब्ने माजा तो बहुत ही मशहूर है।

सुनने इब्ने माजा

इमाम मम्दूह़ ने लाखों ह़दीसों के ज़ख़ीरे में से इन्तिख़ाब कर के चार हज़ार रिवायात को मूख़तलिफ़ अबवाब के तह़त पूरी मुनासिबत के साथ इस किताब में दर्ज फरमाया है हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अल बिदाया वन्निहाया में फरमाया कि सुनन इब्ने माजा में बत्तीस किताबें पन्द्रह सौ अबवाब और चार हज़ार ह़दीसें हैं जो थोड़ी सी रिवायात

कि इलावा सब उमदा हैं।

कुदमाऐ मुहद्दिसीन सुनन इब्ने माजा को सिहाह सित्ता में दाख़िल करना पसन्द नहीं करते थे मगर आम मुतअख़्ख़िरीन का यही फैसला है कि यह सिहाह सित्ता की छठी किताब है चुनाँचे हाफ़िज़ अब्दुलक़ादिर क़र्शी ने अलजवाहिरुलमुज़ियह की किताब अलजामेअ् में फरमाया कि जब मुहद्दिसीन किसी हदीस के बारे में रवाहुशैख़ान या रवा हुल इमामान कहें तो इस से इमाम बुख़ारी व मुस्लिम मुराद होते हैं और जब रवाहुल अइम्मतुस्सित्ता कहें तो इस से इमाम बुख़ारी व मुस्लिम व तिर्मिज़ी व अबूदाऊद व निसाई व इब्ने माजा मुराद होते हैं और जब रवाहूल ख़मसा फ़रमायें तो इमाम बुखारी व मुस्लिम व तिर्मिज़ी व निसाई व अबूदाऊद मुराद होते हैं ।

बहर हाल इस में शक नहीं कि सुनन इब्ने माजा सिहाह सित्ता में दाख़िल है बल्कि सच पूछिए तो सुनन इब्ने माजा दो हैसियतों से तमाम सिहाहसित्ता में मुम्ताज़ है एक हुसने तरतीब यअ्नी जिस खूबी व उमदगी के साथ अहादीस को बाब के मुनासिब बग़ैर तकरार के इस किताब में बयान किया गया है सिहाह सित्ता की दूसरी किताबों में यह खूबी नापैद है और उसी खूबी को देख कर हाफ़िज़ अबूज़ुरआ ने सुनन इब्ने माजा के बारे में फ़रमाया था कि अगर यह लोगों के हाथों में पहुँच गई तो अकसर जवामेअ् वग़ैरह हदीस की किताबें बेकार व मुअत्तल हो कर रह जाएंगी।

दूसरी नुमायाँ खुसूसियत यह है कि इस किताब में बहुत सी ऐसी हदीसें भी हैं जो सिहाह सित्ता की दुसरी किताबों में नहीं हैं इस बिना पर ज़ाहिर है कि उस की इफ़दीयत दूसरी कुतुब से बढ़ कर है मगर बावजूद उन खुबीयों के चूँके सुनन इब्ने माजा में सिहाह सित्ता की बाक़ी पाँच किताबों की निस्बत ज़ईफ़ हदीसें ज़्यादा हैं इस लिए उस का दरजा सिहाह किताबों में सब से कम्तर है।

21रमज़ान बरोज़ दौशंबा 272हिजरी में आप की वफ़ात हुई मुहम्मद बिन अली कहरमान और इबराहीम बिन दीनार वराक़ दो

बूज़ुर्गों ने आप को गुस्ल दिया और आप के भाई अबूबक्र ने आप की नमाज़े ज़नाज़ा पढ़ाई और आप के दोनों बरादरान अबूबकर व अ़ब्दुल्लाह और आप के फ़रज़न्द अ़ब्दुल्लाह ने आप को क़ब्र में उतारा आप की वफ़ात पर मुहद्दिसीन व अ़वाम में तहलका मच गया बहुत से शोअ़रा ने आप का मरसीया लिखा और मुहम्मद बिनिलअसवद क़ज़वीनी ने तो आप का ऐसा पुर दर्द मरसीया लिखा जिस को पढ़ कर आँखें नम हो जाती हैं नमूने के तौर पर दो शेअ़र मुलाहिज़ा फ़रमाए।

لَقَدْ اَوهىٰ دعَائمَ عَرْشِ عِلْمٍ   وَضَعْضَعَ رُكْنَهٗ فَقَدُ ابْنُ مَاجه

"यक़ीनन इब्ने माजा की मौत ने सरीरे इल्म को सुतूनों को तोड़ डाला और उस के पायों को मुन्हदिम कर के रख दिया है।

وَخَابَ رِجَاءُ مَلْهُوْفٍ كَئِيبٍ   يُدَاوِيْهِ مِنَ الدَّاءِ ابْنِ مَاجه.

और उस दर्द मन्द मगमूम की आस टुट गई जिस की इब्ने चार माजा साज़ी किया करते थे (तारीख़े इब्ने माजा)

26—हज़रत अबूक़लाबा (रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैहि)

उन का नाम अ़ब्दुलमलिक रक़ाशी है यह बसरा के असली बाशिन्दे हैं बअ़्द में बग़दाद को अपना वत़न बनालिया यह बड़े पाए के मुहद्दिस हैं हाफ़िज़ ज़हबी ने उन को आलिमे मुस्तनद ज़ाहिद और मुहद्दिस बसरा के लक़ब से याद किया है और मुहम्मद बिन जरीरी तबरी ने तो यहाँ तक कहा कि मैंने उन से बढ़ कर हदीस का हाफ़िज़ किसी को नहीं देखा मुस्लेमा का बयान है कि उन को शोअ़बा मुहद्दिस की तमाम हदीसे उसी तरह याद थीं जिस तरह कुर्आन पाक की कोई सूरह याद की जाती हैक़ाज़ी अहमद बिन कामिल ने उन के बारे में फरमाया कि उन को साठ हज़ार हदीसे ज़ुबानी याद थीं सिहाह सित्ता कि मुसन्निफ़ीन में से इब्ने माजा उन के शागिर्द हैं।

इल्मी कमालात के साथ इबादात व रियाज़ात की मन्ज़िल में भी आप का मक़ाम बहुत बलन्द है रोज़ाना बिलानागा चार सौ रकअ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़ते थे और बिलाशुबा यह साहिबे करामत वली थे उन

का सने विलादत 190 हिजरी और सने वफ़ात शव्वाल 276हिजरी है (तज़किरतुलहुफ़्फ़ाज़ व ग़ैरह)

27–हज़रत अबूदाऊद सबिस्तानी(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

(साहिबुस्सुनन)

आप का नाम व नसब सुलैमान बिन अशअ़स बिन शद्दाद बिन अ़म्र है 202हिजरी में आप की विलादत बमक़ामे बस़रा हूई और 14 शव्वाल 275हिजरी को बसरा ही में आप का विस़ाल हुआ आप का वत़न बसरा था मगर बार बार आप ने बग़दाद में इक़ामत फरमाई और मुद्दतों बग़दाद में रहे आप ने इल्मे ह़दीस की त़लब में हिजाज़ इराक़ शाम, खुरासान, जजीरा वग़ैरा का सफ़र फ़रमाया और हज़ारों मुहद्दिसीन से ह़दीस की समाअ़त फ़रमाई और उ़म्र भर ह़दीस की दर्स व तदरीस में मशग़ूल रहे इसी लिए आप के उस्तादों और शागिर्दों की तअ़दाद इस क़दर ज़्यादा है कि शुमार इन्तिहाई दुशवार है।

आप ने अपनी किताब सुनने अबुदाऊद बग़दाद में तस़्नीफ फ़रमाकर इमाम अह़मद बिन ह़मबल की ख़िदमत में पेश फरमाई तो इमाम ममदूह़ ने उस को एक बेहतरीन किताब क़रार दिया और बहुत ही तह़सीन फरमाई और इब्ने अअ़राबी ने तो सुनन अबूदाऊद को देख कर यहाँ तक कह दिया कि अगर किसी के पास क़ुर्आन मजीद के सिवा कोई किताब न हो और उस को सुनन अबूदाऊद मिल जाए तो बस यही दोनों किताबें उस के लिए काफ़ी हैं और उस को मज़ीद किसी दूसरी किताब की ह़ाजत नहीं पड़ेगी ।

पाँच लाख ह़दीसों में से मुन्तख़ब कर के चार हज़ार आठ सौ अह़ादीस आप ने अपनी सुनन अबूदाऊद में जमअ़ फरमाई हैं।

फने ह़दीस में शाने कमाली के साथ आप के ख़साइस़ में से यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि आप अपने दौर के बअ़ज़ तंग नज़र मुह़द्दिसीन की त़रह़ अइम्मा ए फ़िक्ह के मुख़ालिफ़ नहीं थे बल्कि फ़ुक्हा की मसाई जमीला को बड़ी क़द्र की निगाहों से देखते थे और

फ़िक़्ह के इमामों का बड़े अदब व एह़तिराम के साथ तज़किरा फरमाते चुनाँचे इब्ने अब्दुलबर कुर्तबी नाक़िल हैं कि अबुदाऊद अकसर यूँ फरमाया करते थे कि अल्लाह तआला इमाम अबूह़नीफ़ी पर अपनी रह़मत नाज़िल फरमाए वह इमाम थे अल्लाह तआला इमाम मालिक पर अपनी रह़मत नाज़िल फरमाए वह इमाम थे अल्लाह तआला इमाम शाफेई पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए वह इमाम थे सिह़ाह़ सित्ता के मुसन्निफ़ीन में आप की यह भी एक ख़ास खुसूसियत है कि आप पर फ़िक़ही ज़ौक़ का ग़लबा था यही वजह है कि सुनन अबूदाऊद में फ़िक़ही ह़दीस का जितना बड़ा ज़खीरा मौजूद है वह सिह़ाह़ सित्ता में से किसी किताब में नहीं मिलेगा।

इबराहीम ह़रबी जो आप के ज़माने में क़ाबिले एअ्तेमाद मुह़द्दिस शुमार किए जाते थे उन्हों ने जब सुनन अबूदाऊद का मुतालअ् किया तो फ़रमाया कि अबूदाऊद के लिए इल्मे ह़दीस को अल्लाह तआला ने ऐसा नर्म कर दिया है जैसा हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के लिए लोहे को नर्म फ़रमा दिया था आप एक जलीलुकदर मुह़द्दिस व अज़ीमुलमर्तबा मुसन्निफ़ होने के इलावह स़लाह़ व तक़्वा व अअ्माले स़ालिह़ा और इबादत व रियाज़त के एअ्तेबार से भी यकताए रोज़ गार हैं मूसा बिन हारून मुह़द्दिस जो आप के मुआस़िर (हम ज़माना) थे इलानीया फ़रमाया करते थे कि अबूदाऊद दुनिया में ह़दीस के लिए और आख़िरत में जन्नत के लिए पैदा किऐ गये हैं।

बग़दाद के औलिया किराम आपका बेह़द एह़तिराम फरमाते थे चुनाँचे मन्कूल है कि बग़दाद के एक स़ाह़िबे करामत मशहूर वली सहल बिन अ़ब्दूल्लाह तसतरी एक दिन अबूदाऊद की मुलाक़ात के लिए आए और फरमाया कि अए अबूदाऊद ! अपनी ज़ुबान बाहर निकालिए मैं आप की ज़ुबान का बोसा लूँगा क्यों कि आप उस ज़ुबान से हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम की ह़दीस बयान फरमाते हैं चुनाँचे उन के इसरार से मजबूर हो कर अबुदाऊद

ने अपनी ज़बान बाहर निकाली और सहल बिन अ़ब्दुल्लाह तसतरी ने निहायत गर्म जोशी और प्यार के साथ अबूदाऊद की ज़बान चूम ली।

अबूदाऊद के मज़हब में मुअर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है बअ़ज़ कहते हैं कि शाफ़ेई और बअ़ज़ का क़ौल है कि हमबली थे वल्लाहु तआ़ला अअ़लमु (बुस्तानुलमुहद्दिसीन व तारीख़ इब्ने माजा वग़ैरा)

28हज़रत इब्ने नजीद (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

अबू अ़म्र इस्माईल बिन नजीद नेशापुरी इल्मे ह़दीस में मुहद्दिसे कबीर और तस़व्वूफ व इबादत व मुआमलात में अपने ज़माने के शैख़े अकबर, ज़ुहद व तक़्वा में यकताए ज़माना और अपने दौर के वली –ए–कामिल थे चूनाँचे आप के अह़वाल व करामात को देख कर आम त़ौर पर लोग कहा करते थे कि यह अपने वक़्त के अब्दाल हैं।

खुरासान में ह़दीस की आ़ली सनदों के एअ़्तेबार से बे ह़द मशहूर थे इल्मे हदीस में अ़ब्दुल्लाह बिन इमाम अह़मद बिन ह़मबल के फ़ाज़िल शागिर्द और तस़व्वुफ़ में शैख़ जुनैद व अबुउ़समान जबरी के सोहबत याफ़्ता थे और उन के शागिर्दों में उन के नवासे अबूअ़ब्दुर्रह़मान सल्मी हैं जो सूफ़ियाए किराम के शैख़े अअ़ज़म शुमार होते हैं और अबूअ़ब्दुल्लाह ह़ाकिम जैसे बाकमाल मुह़द्दिस ने भी इब्ने नजीद की दर्स गाह में ज़ानूए तलम्मुज़ (शागिर्दी) तै किया और कमाल को पहुँचे इब्ने नजीद के वालिद बहुत मालदार शख़्स थे मीरास में इब्ने नजीद को बे शुमार माल मिला मगर दौलते इल्म व अ़मल के इस धनी ने दिरहम व दीनार की सारी दौलत को उ़लमा व मशाइख़ व त़लबा पर निसार कर दिया और चन्द ही दिनों में मीरास का सारा माल खुदा की राह में ख़र्च कर डाला।

उन की सख़ावत के सिल्सिले में यह वाक़ेआ अ़जीब व ग़रीब है कि एक मरतबा उन के शैख अबूउ़समान हैरी को मुजाहिदीन की ज़रूरत के लिए कुछ रक़म की ज़रूरत आन पड़ी इन्तिज़ार न हो सका तो शैख़ इब्ने नजीद से उस ज़रूरत को बयान फरमाया इब्ने नजीद ने फ़ौरन दो हज़ार दिरहमों की थैलियाँ लाकर शैख़ के क़दमों

पर डाल दीं शैख़ बे हद खुश हूए और भरी मज्लिस में उस का एअ्लान फरमाया और लोगों ने खूब वाह वाह की मगर इब्ने नजीद को इन्तिहाई सदमा हुआ कि अफ़्सोस मेरा यह अमले ख़ैर लोगों पर ज़ाहिर हो गया बे ताबाना मज्लिस से उठे और थोड़ी देर में फिर वापस आये और भरी मज्लिस में शैख़ से अर्ज़ किया कि हुजूर ! मुझे मेरा माल वापस कर दिजिए मैं अभी उस को खुदा की राह में खर्च करना नहीं चाहता शैख़ ने फौरन दिरहमों की थैलियाँ इब्ने नजीद के सामने डाल दीं और इब्ने नजीद थैलियाँ उठा कर घर लाए और हाज़िरीने मज्लिस में खूब चेमीगोई हूई मगर जब रात हुई और शैख़ अकेले रह गये तो इब्ने नजीद फ़िर दो हज़ार दिरहमों की थैलियाँ ले कर शैख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरे शैख ! आप इस माल को पोशीदा तौर पर खर्च फ़रमाऐं और मेरा नाम हरगिज़ किसी पर ज़ाहिर न फरमायें शैख़ अबूउ़समान पर हालते गिरया त़ारी हो गई और फरमाने लगे कि इब्ने नजीद ! तेरी हिम्मत पर सदआफ़रीन है शैख़ अबूउ़समान फ़रमाते थे कि मैं इब्ने नजीद से जो इस क़दर वालेहाना महब्बत रखताहूँ तो लोग मुझे मलामत करते हैं लेकिन लोग नहीं जानते कि मेरे त़रीक़ पर इब्ने नजीद कि सिवा कोई चलने वाला नहीं होगा और यक़ीनन मेरे बअ्द यही शख़्स मेरा सच्चा जानशीन और ख़लीफ़ा होगा जुज़ इब्ने नजीद के नाम से इल्मे ह़दीस में आप की किताब मशहूर है तिरानवेसाल की उम्र पाकर 365हिजरी में आप ने वफ़ात पाई (बुस्तानूल महदिदसीन)

29—हजरत अबूबकर जस्सास (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

इन का नाम अह़मद बिन अ़ली राज़ी है मशहूर अकाबिर ह़न्फ़िया से हैं और अपने दौर के बड़े नामवर मुहद्दिस व फ़क़ीह गुज़रे हैं फ़न्ने ह़दीस में इमाम अबुल ह़सन कर्ख़ी व अबुल अ़ब्बास अस़म व ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुलबाक़ी क़ानेअ् वगैरा के शागिर्दे ख़ास हैं और उन के ह़लक़ा–ए–दर्स में बड़े बड़े अइम्मा किबार पैदा हुए जिन में इमाम अबूबकर मुह़म्मद बिन मूसा खारज़मी व इमाम अबूजअ़फ़र मुह़म्मद

बिनअह़मद नसफ़ी व इमाम अबूअ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन यह़याह बिन मेहदी जुरजानी व इमाम अबुलफ़र्ज अह़मद बिन मुह़म्मद बिन उ़मर अलमअ़रूफ़ बिह इब्ने अलमुलिमा व इमाम अबुलह़सन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़अ़फरानी व इमाम अबुलहुसैन मुह़म्मद बिन अह़मद बिन त़य्यब कमारी खास़ तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं इल्मे ह़दीस की तह़सील के लिए ख़ास़ शहरों का सफ़र किया 325हिजरी में पहली मरतबा बग़दाद में आए और इमाम अबुलह़सन कर्ख़ी की दर्स गाह के तालिबेइल्म बने फ़िर बग़दाद से अहवाज चले गये फिर जब दो बारा बग़दाद आए तो इमाम अबुल हसन कर्ख़ी के मशवरे से हा़किमे नीशापुरी के पास फ़न्ने ह़दीस की तकमील के लिए नीशापुर गये अभी नीशापुर ही में थे कि इमाम अबुल ह़सन कर्ख़ी का इन्तिक़ाल हुआ फिर 344हिजरी में तीसरी मरतबा बग़दाद आए तो फिर बग़दाद ही को अपना वतन बनालिया और इल्मे ह़दीस की दर्स गाह क़ाइम की जिस में आ़लमे इस्लाम के त़लबा बकसरत फ़ैज़याब होते रहे और बड़े बड़े स़ाहिबे कमाल अकाबिर अइम्मा आप की दर्स गाह से पैदा हुए।

आप के ज़ुहद व तक़्वा और इबादत व रियाज़त का पूरे बग़दाद में चरचा था ख़लीफ़ा बग़दाद ने बार हा आप को क़ाज़ीयुलक़ुज़ा का ओ़हदा क़बूल करने की पेशकश की मगर आप अपनी पाक बाज़ी व तक़्वा शिआ़री की बिना पर हमेशा उस को ठुकराते रहे इमाम स़मीरी का बयान है कि बग़दाद में अबूबकर जस़्स़ास राज़ी के दर्स का सिल्सिला क़ाइम हुआ तो आप की दर्स गाह मरजअ़े ख़लाइक़ बनगई और तमाम दुनियाए इस्लाम के त़लबा आप के दरियाए इल्म से सैराब होने के लिए बग़दाद में वारिद होने लगे और आप ज़ुहद व तक़्वा के एअ़तेबार से बुज़ुर्गाने सलफ़ का नमूना थे ख़तीबे बग़दाद ने उन के बारे में फ़रमाया कि अबूबकर जस़्स़ास़ उ़लमाए ह़नफिया के इमाम थे और ज़ुहद व तक़्वा में उन की बुज़ुर्गी तमाम आ़लमे इस्लाम में मशहूर थी ।

हा़फ़िज़ अ़ब्दुल क़ादिर क़र्शी ने अलजवाहेरुल मुज़िया में आप का

ज़िक्र इन लफ़्ज़ों में फरमाया कि ''अहमद बिन अलीयर्राज़ी युलइमाम कबीरुश्शान यअ्नी अहमद बिन अली राज़ी बहुत बड़ी शान वाले इमाम हैं।

आप 305 हिजरी में रए में पैदा हुए और 370 हिजरी में वफ़ात पाई और शहर बग़दाद को आप के मदफ़न होने का शरफ़ हासिल हुआ आप साहिबे तसानीफ़ भी हैं और आप की किताब ,,अहकामुल कुर्आन,,बहुत मशहूर है (तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़ तरजमा हसन बिन रशीक वग़ैरा)

30–हज़रत इब्ने जमीअ् (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन का नाम व नसब मुहम्मद बिन अहमद बिन मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन यहया बिन जमीअ् है उन को सैदावी व ग़स्सानी भी कहते हैं उन्हों ने मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा व कूफ़ा व बसरा व बग़दाद व मिस्र के मशहूर शुयूख़े हदीस से इल्मे हदीस हासिल किया उन के उस्तादों में इब्ने एअ्राबी व मुहाली च अबुलअब्बास बिन अकीदा बहुत नामवर हैं और हाफ़िज़ अब्दुलग़नी बिन सईद व तमाम राज़ी उन के शागिर्दों की फ़िहरिस्त में बहुत मुमताज़ हैं।

अबूबकर ख़तीब वग़ैरह ने उन को आदिल व सिक़ह तहरीर फरमाया बहुत इबादत गुज़ार व साहिबे रियाज़त व मुजाहेदा थे अठ्ठारह बरस की उम्र से वफ़ात तक यही मअ्मूल रहा कि साल भर हमेशा रोज़ा दार ही रहे।

आप की तसानीफ़ में से ''मोअ्जम इब्ने जमीअ्'' बहुत मशहूर है आप की विलादत 305 हिजरी में हुई और आप का सने वफ़ात 402हिजरी है।

(बूस्तानुलमुहद्दिसीन)

31–हज़रत अबूमूसा मदीनी(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप का नाम व नसब मुहम्मद अबूबकर उमर बिन अबू ईसा अहमद बिन उमर मुहम्मद मदीनी है यह असफ़िहान के रहने वाले हैं और यह उन बा कमाल मुहद्दिसीन में शुमार होते हैं जिन्होंने बहुत सी मुफ़ीद किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई हैं चुनाँचे उन की तसानीफ़ में से ,,नूज़हतुल हुफ़्फ़ाज़,,बहुत मशहूर हैं उन्होंने हाफ़िज़ अबुल क़ासिम

इस्माईल बिन मुहम्मद बिन फ़ज़ल तैमी वग़ैरा मुहद्दिसीन से इल्मे हदीस हासिल किया उन का हाफ़िज़ा इतना क़वी था कि हाकिम की किताब''उलूमुलहदीस'' को एक मरतबा पढ़ा और पूरी याद होगई।

उन के मिज़ाज में बहूत ज़्यादा इस्तिग़ना था दुनियादारों से बहुत दूर रहते और कभी किसी का नज़राना क़बूल नहीं फ़रमाते थे उन के पास थोड़ा सा माल था उसी से तिजारत कर के अपनी ज़िन्दगी बसर करते थे हाफ़िज़ अ़बदुल क़ादिर रुहादी फरमाते हैं कि डेढ़ साल तक बराबर दोनों वक़्त उन की ख़िदमत में आता जाता रहा मगर उस मुददत में कोई बात ख़िलाफ़े शरीअ़त उन से सादिर होते हुए मैंने नहीं देखी इन्तिहाई पाबन्दे शरीअ़त कसीरुल इ़बादत व साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे असफ़हान में क़हत पड़ गया और लोग गर्मी और पानी की कमी से बे हद परेशान थे उन्हीं दिनों में 9जमादिल उख़रा 581 हिजरी को आप का विसाल होगया अभी लोग आप के दफन से फ़ारिग़ नहीं हुए थे कि इस कसरत से बारिश हो गई के सारा इलाक़ा सैराब हो गया।

उस ज़माने के एक बुज़ुर्ग का बयान है कि उसी रोज़ मैंने यह ख्वाब देखा था कि जनाब रसूले करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात होगई उन्होंने घबरा कर एक मुअ़ब्बिर से इस ख्वाब की तअ़बीर दरयाफ़्त की तो उस ने कहा कि तुम्हारे ख्वाब की तअ़बीर यह है कि पेशवाओं में से किसी ऐसे कामिल शख़्स की वफ़ात होगई जो अपने वक़्त का बे मिस्ल आ़लिम होगा क्यों कि ऐसा ही ख़्वाब हज़रत इमाम शाफ़िई व हज़रत इमाम अहमद बिन हमबल व हज़रत सुफ़यान सौरी रहमतुल्लाहि अ़लैहिम की वफ़ात के वक़्त पर भी देखा गया था ख़्वाब देखने वाले बुज़ुर्ग का बयान है कि शाम नहीं होने पाई थी कि गली कुचों में यह ख़बर मशहूर होगई कि हाफ़िज़ अबू मूसा मदीनी का इन्तिक़ाल होगया

(बूस्तानुलमुहद्दिसीन)

32–हज़रत बसर बिन सईद मदनी(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

यह वह कसीरुल हदीस ताबेई हैं जो रिवायतों व दर्से हदीस के साथ इस क़दर बकसरत इबादत करते थे कि हर ख़ास व आम उन को आबिद के लक़ब से पुकारता था यह हज़रत उसमान व अबूहुरैरा वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम के तरबीयत याफ़्ता फ़ाज़िल शागिर्द हैं और सालिम अबुन्नज़र व बुकैर बिन अशबह व मुहम्मद बिन इबराहीम वग़ैरह मशहूर मुहद्दिसीन के शैख़ हैं।

अली इब्ने मदीनी व इब्ने सअ्द वग़ैरा ने उन को सिक़ह व मुत्तक़ी और बहुत बड़ा आबिद व ज़ाहिद तहरीर फ़रमाया।

यह उन ताबिईन किराम में से हैं जो ज़ुहद व तवक्कुल और कसरते इबादत में ख़ास शोहरत रखते हैं बिल्कुल बे सर व सामान एक परदेसी मुसाफ़िर की तरह अपने वतन में रहते थे उम्वी ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुलमलिक ने हज़रत उमर बिन अब्दुलअज़ीज़ से पूछा कि इस वक़्त मदीना मुनव्वरा में सब से अफ़ज़ल कौन बुज़ुर्ग हैं ? तो आप ने जवाब दिया के बसर बिन सईद।

इब्ने हब्बान का क़ौल है कि बसर बिन सईद इन्तिहाई नेक व सालेह और अअ्ला दर्जे के आबिद व ज़ाहिद थे उम्र भर माल व सामान से किनारा कश रहे यहाँ तक कि अपने कफ़न का सामान भी अपने बअ्द नहीं छोड़ा 101हिजरी में रेहलत (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

33–हज़रत बक्र बिन अब्दुल्ला मुज़नी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबू अब्दुल्ला बक्र बिन अब्दुल्ला मुज़नी दौरे ताबिईन में मशहूर मुहद्दिस व फ़क़ीह गुज़रे हैं इल्मे हदीस में हज़रत अनस बिन मालिक व इब्ने उमर वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम से शरफ़े तलम्मुज़ रखते हैं और हसन बसरी वग़ैरा किबार ताबेईन की दर्स गाहों से भी फ़ैज़ पाए हुए हैं और उन के शागिर्दो में साबित बनानी व सुलैमान तैमी व आसिम अहवल वग़ैरा बड़े शोहरत व क़ाबिलयत के मालिक हैं ।

इब्ने मुईन व निसाई व अबुज़ुरआ व इब्ने सअ्द वग़ैरा ने उन को

क़ाबिले एअ्तेमाद व हुज्जत व फ़क़ीह व फ़ाज़िल लिखा और उन के तक़्वा शिआर व इबादत गुज़ार होने की शहादत दी और हमीद तवील का बयान है कि यह औलियाए मुस्तजाबुद्दअ्वात में से थे यअ्नी यह उन बर गुज़ीदा बा खुदा सालिहीन में से हैं जिन की दूआऐं बारगाहे खुदावन्द में बहुत ज़ियादा और बहुत जल्द मक़बूल होती हैं 180हिजरी में उन की वफ़ात हूई

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

34–हज़रत बिलाल बिन सईद बिन तमीमी अशअ़री(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबू अ़म्र या अबूज़ुरआ है दमिश्क़ के बाशिन्दे थे अपने वालिद अबूदर्दा व अमीर मुआवीयह वग़ैरह सहाबा रदियल्लहु तआ़ला अन्हुम से हदीस रिवायत करते हैं और उन से रिवायते हदीस करने वालों में इमाम औज़ाई बहुत मशहूर मुहद्दिस हैं इब्ने सअ्द व अज्ली वग़ैरा ने उन्हें बुजुर्ग ताबेई व सिक़ा मुहद्दिस लिखा और अबूज़ुरआ ने फ़रमाया यह बेहतरीन वाइज़ भी थे और इल्म व अमल व तक़्वा व इबादत व रियाज़त के एअ्तेबार से शाम में उन का वही दर्जा था जो इराक़ में ख़्वाजा हसन बसरी का और इमाम औज़ाई ने तो यहाँ तक फ़रमाया कि इबादत के मुआमला में बिलाल बिन सअ्द का वह मरतबा है कि उस उम्मत में से किसी के बारे में इतनी कसीर इबादत का हाल सुनने में नहीं आया इब्ने हब्बान ने उन के बारे में कहा कि यह क़ाबिले एअ्तेमाद मुहद्दिस और अपने दौर के सब से अफ़ज़ल व अअ्ला दर्जे के आबिद व ज़ाहिद थे यह दूसरी तरह की इबादतों के इलावा रोज़ाना बिलानाग़ा एक हज़ार रक्अ्त नमाज़े नफ़्ल पढ़ते थे उन का सने वफ़ात तक़रीबन 120 हिजरी है।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

35–हज़रत बशर बिन मन्सूर सल्मा (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नीयत अबू मुहम्मद और वतन बसरा है यह हदीस में अय्यूब सख़्तियानी व आसिम अहवल व इब्ने जुरैज वग़ैरह मशहूर मुहद्दिसीन के शगिर्द हैं और अब्दुर्रहमान बिन मेहदी व फुज़ैल बिन अयाज़ व बशर हाफ़ी व शैबान बिन फ़रोख़ जैसे बा खुदा व आबिद व

ज़ाहिद मुहद्दिस ने उन से सबक़ पढ़ा ।

यह बड़े खुदा तरस व मुत्तक़ी उस्तादे ह़दीस थे अ़ब्दुर्रहमान बिन मेहदी आ़म तौर पर कहा करते थे कि मैंने बशर बिन मन्सूर से बढ़ कर खुदा से डरने वाला किसी को नहीं देखा क़वारीरी का क़ौल है कि मैंने जितने मशाइख़ को देखा उन में सब से अफ़ज़ल बुजुर्ग बशर बिन मन्सूर ही हैं इब्ने ह़ब्बान ने उन को सिक़ा मुहद्दिस और बसरे का सब से नेक व सालेह़ आ़लिम और सब से बड़ा इबादत गुज़ार आ़बिद बताया यह रोज़ाना पाँच सौ रकअ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़ते थे और हर तीसरे दिन कुर्आन शरीफ़ का एक ख़त्म पूरा करते थे आख़िरी उ़म्र में नाबीना हो गए थे मगर फ़िर भी उन की इबादत के मअ़मूलात में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ नहीं पड़ा 180हिजरी में दुनिया से रेह़लत फ़रमाई

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

36—ह़ज़रत बशर बिनिलमुफ़ज़्ज़ल (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

अबू इस्माईल बशर बिनिल मुफ़ज़्ज़्ल रक़्क़ाशी बस़री बसरा के उन उ़लमाए ह़दीस में से हैं जो ह़दीस व फ़िक़्ह और तक़्वा व इबादत में अपने दौर के मुम्ताज़ उ़लमाए रब्बानीन में से हुए यह ह़मीद तवील व अबू रैह़ाना व मुह़म्मद बिन मुन्कदिर व इब्ने औ़न वग़ैरा मशहूर मुह़द्दिसीन के गहवारए तअ़लीम व तर्बीयत के परवरदा हैं और इमाम अह़मद बिन ह़मबल व इस्ह़ाक़ वग़ैरह किबार मुहद्दिसीन उन के सीने से इल्म का दूध पी कर बालिगुन्नज़र हुए।

अ़ज्ली व बज़ाज़ वग़ैरा ने उन को फ़िक़ और बेहतरीन ह़दीसों वाला बताया और अ़ली बिन मदीनी ने उन के तक़्वा व इबादत और रियाज़त व मुजाहेदा की तफ़सील बताते हुए तह़रीर फ़रमाया कि यह रोज़ाना बिला नाग़ा चार सौ रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़ते थे और उ़म्र भर सौमे दाऊदी के पाबन्द रहे यअ़नी एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़तार फरमाते 187 हिजरी उन का विसाल हुआ (तहज़ीबूत्तहज़ीब)

37–हज़रत बशर बिन हारिस मरोज़ी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबू नस्र है और यह वही मशहूर साहिबे विलायत व बा करामत बुजुर्ग हैं जो तज़किरतुलऔलिया में बशर "हाफ़ी" के नाम से मशहूर हैं आम तौर पर लोग उन को सिर्फ़ एक रियाज़त व मुजाहिदा करने वाला सूफ़ी समझते हैं लेकिन हक़ीक़त यह है कि यह इतने बाकमाल शैखुल हदीस व फ़कीह व मुफ़ती अअ्ज़म थे कि इमाम अहमद बिन हमबल उन की दर्स गाह के तालिबे इल्म बने।

यह हदीस में इमाम मालिक व हम्माद बिन ज़ैद व फुज़ैल बिन अयाज़ व अब्दुर्रहमान बिन मेहदी वग़ैरह सैकड़ों औलियाए मुहद्दिसीन के शागिर्दे रशीद हैं और इल्म व अमल जुहद व तक़्वा और इबादत व रियाज़त में इस क़दर कामिल व अकमल हुए कि अपने मुआसिरीन से खिराजे तहसीन हासिल किया और उ़लमाए मुताअख़्ख़ेरीन ने उनकी मदह व सना फ़रमाई चुनाँचे दारे कुतनी व इब्ने सअ्द वग़ैरा ने उन को मोअ्तमद सिक़ह साहिबे फ़िक़्ह कसीर हदीसों वाला मुहद्दिस और बहुत बड़ा आबिद व ज़ाहिद तहरीर किया है और खतीबे बग़दाद ने फ़रमाया कि यह अपने ज़माने में तक़वा व जुहद व इबादत वग़ैरा क़िस्म क़िस्म की फ़ज़ीलतों में सब से बढ़ कर थे ख़तीबे बग़दादी ने हज के मौक़अ् पर ज़मज़म शरीफ़ के कुँए के पास जो चन्द दुआऐं माँगी थीं उन में से एक दुआ यह भी थी कि या अल्लाह मुझे बशर हाफ़ी की क़बर के पहलू में दफ़न की जगह मिल जाए चूनाँचे उनकी यह दुआ क़बूल हूई और ख़तीबे बग़दादी हज़रत बशर हाफ़ी के पहलू में दफ़न हुए।

अबू अब्दुल्लाह को जब आप की वफ़ात की ख़बर हुई तो फरमाया कि बशर हाफ़ी इस उम्मत में यक़ीनन बेनज़ीर साहिबे इल्म व अमल थे।

बग़दाद में बशर हाफ़ी की दर्स गाहे हदीस बहुत मशहूर थी जहाँ हज़ारों तिश्निगाने इल्म सैराब होते थे और अहले बग़दाद आप से फ़तावा भी हासिल करते थे मगर बअ्द में मज्लिसे दर्स व फ़तावा

ख़त्म कर के आप बिल्कुल गोशा नशीन होगए और 11रबीउ़लअव्वल 227 हिजरी को बग़दाद में आप का विसा़ल हुआ जनाज़े में इतना हुजूम हुआ कि सुबह़ को जनाज़ा उठाया गया और रात को क़बरस्तान पहुँचा और नमाज़े जनाज़ा में ह़ाज़िरीन की तअ़दाद का शुमार नहीं हो सका (तहज़ीबूत्तहज़ीब वग़ैरा)

38—ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नियत अबू अ़बदुल्लाह और नाम व नसब मुह़म्मद बिन इस्माईल बिन इबराहीम बिन मुग़ीरा बरोज़ियह बुख़ारी जअ़फ़ी है आप के परदादा मुग़ीरह ह़ाकिमे बुख़ारा ईमान जअ़फ़ी के हाथ पर इस्लाम लाए थे और चूँकि उस ज़माने का दस्तूर था कि जो शख़्स किसी के हाथ पर मुसलमान होता था तो उस को उसी क़बीले की त़रफ़ मन्सूब करते थे इस लिए इमाम बुख़ारी को भी जअ़फ़ी कहने लगे।

आप 13 शव्वाल 194 हिजरी को जुम्अ़ा के दिन बादे नमाज़े जुम्अ़ा पैदा हूए और बासठ साल की उम्र में शबे शम्बा ई़दुलफ़ित्र की रात में इशा की नमाज़ के वक़्त 256 हिजरी में वफ़ात और खरतंग गाँव में जो समर क़न्द से दस मील के फ़ासले पर है मदफ़ून हुए किसी बुज़ुर्ग ने आप के सने विलादत व मुद्दते उ़म्र सने वफ़ात को एक क़त़आ़ में बयान किया हैं ।

كان البخارى حافظا و محدثا جمع الصحيح مكمل التحرير
ميلاده صدق ومدة عمره فيها حميد وانقضیٰ في نور
۱۹۴ ۶۲ ۲۵۶

इस कत़आ में लफ़्ज़ के अअ़दाद 194 सने विलादत और ह़मीद के अअ़दाद मुद्दते62उ़म्र और नूर के अअ़दाद 256वफ़ात का साल ज़ाहिर करते हैं।

इमाम बुख़ारी बचपन ही में नाबीना होगए थे इस वजह से उन की वालिदा को बड़ा रन्ज व क़लक़ रहता था और वह हर वक़्त निहायत गिरया व ज़ारी के साथ खुदावन्द तआ़ला की बारगाह में अपने फ़रज़न्द की बसा़रत के लिए दुआऐं माँगा करती थीं नागहा एक

रात उन की वालिदा को ख़्वाब में हज़रत इबराहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का दीदार हुआ आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तेरी गिर्या व ज़ारी और दुआ के सबब से तेरे फरज़न्द को बसारत इनायत फरमाई चुनाँचे जब वह सुबह उठीं तो अपने नूरे नज़र की आँखों को रौशन व बीना पाया।

इमाम बुख़ारी को अहादीस याद करने का शौक़ बचपन ही से था और हाफ़िज़ा बे हद क़वी था चुनाँचे दस साल की उम्र में आप का यह हाल था कि मकतब में जो हदीस सुनते इस को याद कर लेते मकतब से फरागत पाने के बअ्द पता चला कि इमाम दाख़ली बहुत बड़े आ़लिमे हदीस हैं तो उन की ख़िदमत में आने जाने लगे एक रोज़ का वाकेआ है कि इमाम दाख़ली अपनी किताबों से लोगों को अहदीस सुनारहे थे उन की ज़ुबान से निकला कि सुफ़यान अ़न अबी ज़ुबैर अ़न इबराहीम इमाम बुख़ारी फ़ौरन बोल उठे कि अबूज़ुबैर तो इबराहीम से रिवायत नहीं करते इमाम दाख़ली ने इमाम बुख़ारी की बात को तसलीम नहीं किया तो इमाम बुख़ारी ने कहा कि इस को किताब के अस्ल नुस्ख़ा में देखना चाहिए चुनाँचे इमाम दाखिली ने मकान में जाकर अस्ली नुस्खा का मुतालआ किया और बाहर आकर फरमाया कि इस लड़के को बुलाओ इमाम बुख़ारी हाज़िर हुए तो इमाम दाख़िली ने फ़रमाया कि मैंने इस वक़्त जो पढ़ा था वह बे शक ग़लत था अच्छा अब तुम बताओ कि सहीह किस तरह है ? तो इमाम बुख़ारी ने अ़र्ज़ किया कि सहीह सुफ़यान अ़निज़्ज़ुबैर बिन अ़दी अ़न इबराहीम है इमाम दाख़िली हैरान रह गये और फरमाया कि वाक़ई तुम सच कहते हो फिर उठा कर अपनी किताब की तसहीह कर ली यह वाक़िआ उस वक़्त का है जब इमाम बुख़ारी की उ़म्र सिर्फ़ गियारह साल की थी।

जब इमाम बुख़ारी सोलह बरस के हूए तो अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक की तमाम किताबें याद कर लीं और मुहद्दिस वकीअ् के तमाम नुस्ख़े भी अज़ बर कर डाले फिर अपनी वालिदा और अपने भाई अहमद बिन

इस्माईल के हमराह ह़ज के लिए रवाना हुए हज से फराग़त हुई तो वालिदा और भाई वतन वापस चले आए और खुद बिलादे ह़िजाज़ में त़लबे ह़दीस के लिए ठहर गए और तमाम इल्मी मरकज़ों का सफ़र करके एक ह़ज़ार अस्सी शूयूख़ की खिदमतों में ह़ाज़िरी देकर छः लाख हदीसों को जुबानी याद कर लिया इल्मे हदीस की त़लब में आप ने मक्का मुकर्रमा मदीना मुनव्वरा ,कूफा, बस़रा, बग़दाद,मिस्र, वासिता, अलजज़ाइर शाम,बल्ख, बुख़ारा, मरूहियात ,नीशापुर वग़ैरा इल्मी मरकज़ों का बार बार सफ़र फरमाया ह़ाशिद इब्ने इबराहीम (जो इमाम बुखारी के ज़माने के मुह़द्दिस)कहते हैं कि इमाम बुख़ारी त़लबे ह़दीस के लिए मेरे हमराह मुह़द्दिसीन की ख़िदमत में आमद व रफ़्त रखते थे लेकिन उन के पास क़लम व दवात वग़ैरह लिखने का कोई सामान न होता था और न वह दर्स की मज्लिसों में कुछ लिखते थे आख़िर मैंने उन से एक दिन क़ह दिया कि जब तुम ह़दीस सुनकर लिखते ही नहीं तो दर्स गाह में आने जाने से तुम्हारा क्या फ़ाइदा ? सोलह दिन के बअ़द इमाम बुख़ारी ने मुझ से कहा कि तुम लोगों ने मुझ से बहुत कुछ कह डाला अच्छा आओ ! अब मेरी याद दाश्त का तुम लोग अपनी लिखी हुई कापियों से मुक़ाबला करो उस मुद्दत में हम लोगों ने पन्द्रह हज़ार ह़दीसें लिखी थीं इमाम बुख़ारी ने उन पन्द्रह हज़ार हदीसों को ज़ुबानी इस त़रह सुना दिया कि मैं खुद अपनी लिखी हुई कापियों को उन की याद दाश्त से स़ह़ीह़ करता था उस के बअ़द इमाम बुख़ारी ने फ़रमाया कि तुम लोग समझते हो कि मैं ख्वाह मख़्वाह बिला फ़ाइदा इधर उधर की दर्सगाहों में सर गर्दानी करता रहता हूँ ह़ाशिद बिन इस्माईल का बयान हैं कि मैं उसी दिन यह समझ गया था कि इमाम बुखारी वह होनहार त़लिबे इल्म हैं कि आगे चल कर कोई उन से मुक़ाबला नहीं कर सकेगा।

चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि आप इल्मे ह़दीस में इमामुद्दुनिया व शैखुलइस्लाम व अमीरुल मोमेनीन फ़िलहदीस हुए और दुनिया भर के मशाइख़े हदीस से ख़िराजे तहसीन ह़ासि़ल किया इमाम मुस्लिम

बिनिलहज्जाज़ कुशैरी आप की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो पहले आप की पेशानी का बोसा दिया फ़िर अ़र्ज़ किया कि يا استاذ الاستاذين و आप मुझे इजाज़त दीजिए कि يا سيد المحدثين و يا طبيب الحديث मैं आप का पाँव चूमलूँ इमाम अहमद बिन हमबल फरमाते थे कि खुरासान की ज़मीन पर इमाम बुख़ारी जैसा मुहद्दिस पैदा नहीं हुआ और मुहम्मद इस्माईल बिन इस्हाक़ बिन खुज़ैमा (जो मश्रिक़ व मग़्रिब के मशाइख़े ह़दीस की सहोबत उठा चुके थे) इलानिया कहा करते थे कि आसमान के नीचे इमाम बुख़ारी से बड़ कर कोई आ़लिमे ह़दीस नहीं हैं अठ्ठारह साल की उ़म्र में तस्नीफ़ का सिल्सिला शुरूअ् कर दिया यूँ तो आप ने बहुत सी किताबें तस्नीफ फ़रमाईं मगर आप की तस्नीफ़ात में किताबुततारीख़ व सहीह़ बुखारी यह दो बहुत ही मअ्रकतुलआरा व मशहूर किताबें हैं।

सह़ीह़ बुख़ारी।

सह़ीह़ बुख़ारी की तस्नीफ़ का सबब यह हुआ एक दिन इस्हाक़ बिन राहवाया के अह़बाब ने कहा कि क्या ही अच्छा होता अगर किसी मुह़द्दिस को अल्लाह तआ़ला यह तौफ़ीक़ अ़ता फरमाता कि वह इल्मे ह़दीस में कोई ऐसी मुख़्तसर किताब तैयार कर देता जिस में सिर्फ़ वही ह़दीसें दर्ज हों जो सेह्ह़त में अअ्ला मरतबा रखती हैं इमाम बुख़ारी इस मज्लिस में मौजूद थे उन के दिल में यह बात जम गई चुनाँचे 6लाख ह़दीसों के ज़ख़ीरे में से अअ्ला दर्जे की सह़ीह़ ह़दीसों का इन्तिख़ाब कर के सोलह बरस की कड़ी मेह़नत के बअ्द अपनी उस किताब को तस्नीफ़ फ़रमाया जो आ़म तौर पर सह़ीह़ बुखारी के नाम से मशहूर है और सिह़ाह सित्ता की सब से बड़ी और अ़ज़ीमुश्शान किताब है इस किताब में कुल ह़दीस मुकर्ररात व मुअ़ल्लक़ात व मुताबिआत को शामिल कर के शुमार की जाऐं तो नौ ह़ज़ार बियासी ह़दीसें हैं और अगर मुकर्ररात को ह़ज़्फ़ कर के गिन्ती की जाऐ तो कुल ह़दीसो की तअ्दाद सिर्फ दो हज़ार सात सौ इकसठ रह जाती है (मुक़द्दमह फ़त्हुल बारी)

यह तअ़दाद अगर चे इमाम बुख़ारी को ज़िस क़दर स़ह़ीह़ ह़दीसें याद थीं उन के दसवें ह़िस्से के बराबर भी नहीं हैं लेकिन उस में शुबा नहीं कि यह किताब इमाम मौसूफ़ के हुसने इन्तिख़ाब का बेहतरीन नमूना है मगर यहाँ यह बात भी ज़हन नशीन कर लेनी चाहिए कि इमाम बुख़ारी को लाखों स़ह़ीह़ ह़दीसें ऐसी भी याद थीं जो उन की किताब स़ह़ीह़ बुख़ारी में दर्ज नहीं हैं और दूसरे मुह़द्दिसीन की किताबों में मौजूद हैं लिहाजा बअ़ज़ कज फ़हम मुल्लाओं का यह कहना कि जो अहादीस सहीह़ बुख़ारी में दर्ज नहीं हैं वह स़ह़ीह़ अह़ादीस नहीं हैं यह एक खुला हुआ फरेब और पहाड़ से भी बड़ी ग़लती हैं ।

ह़ाफ़िज़ अबू जअ़फ़र अ़क़ीली कहते हैं कि इमाम बुख़ारी ने जब अपनी स़ह़ीह़ बुख़ारी तस्नीफ़ फरमाई तो उसे इमाम अह़मद बिन ह़मबल व अ़ली बिन मदीनी व यह़या बिन मुईन वग़ैरह किबार मुह़द्दिसीन की ख़िदमत में पेश किया तो उन सब ह़ज़रात ने उस किताब के स़ह़ीह़ होने की शहादत दी अलबत्ता सिर्फ़ चार ह़दीसों के बारे में लोगों ने इख़्तिलाफ़ किया मगर अ़क़ीली का बयान है कि उन चारों के बारे में इमाम बुख़ारी का फ़ैस़ला दुरूस्त है और वह चारों ह़दीसें भी स़ह़ीह़ हैं (मुकद्दमाफत्हुलबारी)

उस किताब में इमाम बुख़री किसी ह़दीस को लिखते तो पहले ग़ुस्ल करके दो रक्अ़त नमाज़ अदा करते और मज़ामीने अ़हादीस के उन्वान को (जिसको मुह़द्दिसीन तर्जमतुल बाब कहते हैं)मदीना मुनव्वरा में क़बरे अन्वर मिमबरे नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दरमियान बैठ कर मुरत्तब फरमाते हर तर्जमतुल बाब पर भी दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल अदा की चुनाँचे इमाम बुख़ारी के इस हुसने नियत ही की बरकत है कि यह किताब इस क़दर मक़बूल हुई कि इस को नव्वे हज़ार शागिर्दो ने बिला वास्ता खुद इमाम बुख़ारी से पढ़ा और सुना और आप के उन शागिर्दों में सब से आख़िरी शागिर्द मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फरबरी मुतवफ़्फ़ा 320 हिजरी हैं उन्हों ने इमाम

बुख़ारी से दो मरतबा इस किताब का सिमाअ् किया एक बार 248 हिजरी में अपने वत़न फरबर में जब इमाम बुख़ारी वहाँ तशरीफ़ लाए और दूसरी बार 252 हिजरी में खुद बुख़ारा जाकर और आजकल हिन्दुस्तान बलके अ़रब व अ़जम में उन की ही रिवायात उ़लुव्वे असनाद की वजह से शाइअ् व मशहूर हैं।

<u>आप के मस़ाइब</u>

तरीक़ए सालिह़ीन की त़रह इमाम बुख़ारी को भी इम्तिह़ान व इब्तिला पेश आया और वह यह कि अमीरे बुख़ारा ख़ालिद बिन अह़मद ज़हली ने हुक्म दिया कि आप शाही मह़ल में आकर मेरे फरज़न्दों को स़ह़ीह़ बुख़ारी और दूसरी किताबों का सबक़ पढ़ाएं इमाम बुख़ारी ने जवाब दिया कि यह इल्मे ह़दीस है मैं इस इल्म को ज़लील नहीं करना चाहता आप अपने फरज़न्दों को मेरी दर्सगाह में भेज दें दूसरे त़ालिब इल्मों की त़रह वह भी इल्म ह़स़िल करेंगे अमीर ने कहा जिस वक़्त मेरे शह़ाज़दे दर्स गाह में आएं आप दूसरे त़लबा को अपनी दर्स गाह में न आने दें मेरे दरबान व चोबदार दरवाज़े पर खड़े रहेंगे क्योंकि मेरी नखुव्वत इस चीज़ को गवारा नहीं कर सकती कि ग़रीबों और मिसकीनों के लड़के मेरे फरजन्दों के बराबर बैठें इमाम बुख़ारी ने उस को भी क़बूल नहीं फरमाया और जवाब दिया कि यह इल्म ह़ज़रत पैग़म्बर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम की मीरास है इस में अमीर व फ़कीर सारी उम्मत बराबर की शरीक हैं इस इल्म में किसी को कोई ख़ास़ खुसूसियत नहीं दी जासकती इतनी बात पर अमीरे बुख़ारा ख़फ़ा हो गया और उस ने ह़रीस बिन अबिलवरक़ा वग़ैरह गुमराह उ़लमाए ज़वाहिर को आपने साथ मिला लिया और इमाम बुख़ारी के मज़हब व इज्तिहाद में ख़्वाह मख़्वाह की ग़ल्तियाँ निकाल कर और अ़वाम को भड़का कर एक तूफ़ान ख़ड़ा कर दिया और उस में दसीस कारी व ह़ीला साज़ी से इमाम बुख़ारी को बुख़ारा से निकाल दिया।

इमाम बुखारी रन्ज व ग़म में डूबे हुए अपने वतन से रवाना हो

गए मगर चलते वक़्त अपने दर्द मन्द दिल से यह दुआ की इलाही ! उन लोगों को तू इस बला में मुब्तला कर जिस बला में यह लोग मुझे मुबतला करना चाहते हैं चुनाँचे आप की दुआ मक़बूल होगई और एक महीना भी नहीं गुज़रा कि अमीरे बुख़ारा ख़ालिद बिन अहमद ज़हली मअ्ज़ूल कर दिए गए और खलीफ़ा का हुक्म पहुँचा कि इस को गधे पर सवार कर के शहर में गश्त करायें और फ़िर शहर से बाहर निकाल दें इस तरह अमीरे बुख़ारा ख़ालिद बिन अहमद ज़हली को कामिल तबाही व बर बादी का सामना हुआ और एक बे गुनाह अल्लाह वाले की बे अदबी की सज़ा दुनिया ही में मिल गई।

इसी तरह हरीस बिन अबिलवरक़ा और दुसरे दुनिया दार मौलवियों को भी जो इमाम बुख़ारी की तौहीन में शरीक थे बे हद ज़िल्लत व रुसवाई का मुँह देखना पड़ा उन सब लोगों का वक़ार ख़ाक में मिल गया और सब के सब तरह तरह की आफतों और बलाओं में गिरफ़तार हुए।

इमामे बुखारी बुख़ारा से निकल कर निहायत बे कसी की हालत में पहले नीशापूर गये मगर वहाँ के मुतकब्बिर अमीर से भी आप की नहीं बनी तो मजबूरन वहाँ से लौट कर खर तंग तशरीफ़ लाए और उस छोटे से गाँव में आप ने क़ियाम फरमा कर दर्से हदीस शुरूअ् कर दिया यहाँ तक कि उसी गाँव में आप की वफ़ात हो गई और खास ईदुलफित्र के दिन बअ्द नमाज़े जुहर उसी गाँव में आप मदफून हुए।

क़ब्र की मिटटी से मुश्क की खुश्बू

मन्कूल है कि जब आप दफ़न किए गये तो आप की क़ब्र की मिट्टी से मुश्क की खूश्बू आने लगी चूनाँचे लोग इन्तिहाई तअ़ज्जुब के साथ क़ब्र की मिट्टी को सूँगते थे और उठा कर ले जाते थे और एक मुद्दत दराज़ तक यह सिल्सिला जारी रहा कि दूर दूर से आकर लोग आप की क़ब्र की मिटटी को खूशबू की वजह से उठा ले जाते थे।

सय्यदे आ़लम और स़हाबा इमाम बूख़ारी के मुन्तज़िर

शैख़ अ़ब्दुलवाहि़द तोसी ने (जो उस ज़माने के औलियाए कामिलीन में से थे) ख्वाब में देखा कि हुजूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम अपने अस्ह़ाब के साथ रास्ते पर मुन्तज़िर खड़े हैं उन्होंने सलाम अ़र्ज़ कर के पूँछा या रसूलल्लाह! (स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)आप किसी का इन्तिज़ार फ़रमा रहे हैं ? आप ने जवाब इरशाद फरमाया कि मैं मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी का इन्तिज़ार कर रहा हूँ ! शैख़ अ़ब्दुल वाहि़द त़ोसी का बयान है इस ख़्वाब के चन्द रोज़ बअ़्द ही मैंने इमाम बुख़ारी की वफ़ात की ख़बर सुनी जब मैंने लोगों से वफ़ात का पूछा तो पता चला कि ठीक उसी वक़्त उसी घड़ी में आप की वफ़ात हुई थी जिस साअ़त में हुजूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को मैंने ख़्वाब में मुन्तज़िर देखा था इमाम बुख़ारी निहायत ज़ाहिद परहेज़ गार और स़ाहि़बे तक़्वा व इबादत गुज़ार थे उ़म्र भर किसी की ग़ीबत नहीं की उमरा व सलात़ीन के दरबारों में कभी नही गये दर्से ह़दीस के बअ़्द फ़ाज़िल औक़ात में कसरते नवाफ़िल व तिलावत कु़र्आन मजीद का शग़ल रखते थे।

आप कभी कभी नज़्म का भी शौक़ फरमाते थे चुनाँचे आप का एक क़त़्आ तबर्रुकन तह़रीर किया जाता है।

اِغْتَنِمْ فِیْ الْفَرَاغِ فَضْلَ رُکُوْعٍ　　فَعَسٰی اَنْ یَّکُوْنَ مَوْتُکَ بَغْتَۃً

फ़ुर्स़त के वक़्त में एक रकअ़्त नमाज़ की फ़ज़ीलत को ग़नीमत जान क्योंकि शायद तेरी मौत अचानक आजाए''

کَمْ صَحِیْحٍ رَاَیْتُ مِنْ غَیْرِ سَقْمٍ　　ذَھَبَتْ نَفْسُہُ الصَّحِیْحَۃُ فَلْتَۃً

''मैंने तो बहुत से तन्दुरूस्तों को देखा कि बिला किसी मर्ज़ के उन की तन्दुरुस्त जान अचानक चल बसी''

बहुत से मूहद्दिसीन व बूजुर्गाने दीन ने बारहा तजरबा किया है कि आप की किताब स़ही़ह बुख़ारी शरीफ़ का ख़त्म पढ़ना दुश्मनों के ख़ौफ़मर्ज़ की स़ख़्ती और दुसरी बलाओं में तिरयाक़ का काम देता है

बहुत से बुजुर्गाने दीन के ख्वाबों में हुजूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम

ने सहीह़ बुख़ारी को अपनी तरफ़ मनसूब फ़रमाया है चूनाँचे उन में से एक यह है कि एक मरतबा मुह़म्मद बिन अह़मद मरूज़ी मक्का में मक़ामे इबराहीम व ह़जरे असवद के दरमियान सोए हुए थे तो यह ख्वाब देखा कि हुज़ूर अ़लैहिस्स़लातु वस्सलाम फ़रमाते हैं कि ऐ अबू ज़ैद ! तुम शाफ़ेई की किताब का दर्स कब तक देते रहोगे ? तुम हमारी किताब का दर्स क्यों नहीं देते ? मुह़म्मद बिन अह़मद ने हैरान हो कर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैक व सल्लम मेरी जान आप पर कुर्बान हो आप की किताब कौन सी है ? तो इरशाद फ़रमाया कि जामेअ़ मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी यअ़नी

(सहीहुलबुख़ारी शरीफ़)

वाज़ेह हो कि सह़ीह़बुख़ारी का पूरा नाम "अलजामिउ़लमुसनदुस्सह़ीहुल मुख़्तस़र मिन उमूरे रसूलिल्लाहि स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम सुननेही व अय्यामेही" है । मगर बअ़ज़ लोग उस को जामेअ़ मुह़म्मद इस्माईल और बअ़ज़ लोग अलजामिउ़स्स़ह़ीह़ और बअ़ज़ लोग स़ह़ीहुलबुख़ारी और हमारे हिन्दुस्तान में आम तौर पर लोग उस को बुख़ारी शरीफ़ कहते हैं। (बूस्तानुलमुह़द्दिसीन व मुक़द्दमा बुख़ारी वग़ैरह)

39—हज़रत बैहक़ी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

अबूबकर अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी शअ़बान 384 हिजरी में नीशापुर से तीन कोस दूर बैहक़ नामी गाँव में पैदा हुए इस लिए बैहक़ी कहलाते हैं हिजाज़, कूफ़ा, बस़रा बग़दाद, खुरासान वग़ैरा के इल्मी मदारिस में मशहूर शूयूख़े ह़दीस से इल्मे ह़दीस पढ़ा आप के उस्तादों में ह़ाकिम व अबूत़ाहिर व इब्ने फौरक मुतकल्लिम उसूली व सुफ़ी अबूअ़ली रोद बारी व अबू अ़ब्दुर्रह़मान स़ल्मी सूफ़ी वग़ैरह बहुत मशहूर हैं आप बड़ी बड़ी अ़जीब व मुफ़ीद किताबों के मुसन्निफ़ हुए जिन में किताब मअ़रिफतुस्सुनन वलआसार बहुत मशहूर हैं आप की कुल तस़ानीफ़ का अन्दाज़ा सोलह ह़ज़ार सफ़ह़ात के क़रीब है।

ज़ुहद व तक़्वा और दियानत व इबादत में उ़लमा ए रब्बानीन की तमाम ख़स़ाइल ह़मीदा के जामेअ़ थे इमामुल ह़रमैन ने उन के बारे में

फ़रमाया कि दुनिया में बैहक़ी के सिवा किसी का एहसान इमाम शाफ़िई की गर्दन पर नहीं है क्यों कि बैहक़ी ने अपनी तमाम किताबों में इमाम शाफ़िई के मज़हब की खूब खूब नुसरत व ताईद की है बैहकी ने जब किताब मअ़रिफ़तुस्सुनन वलआसार की तस्नीफ़ शुरूअ़ की तो उस ज़माने के बअ़ज़ औलिया ने इमाम शाफ़िई को ख़्वाब में देखा कि वह इस किताब के चन्द वरक़ अपने हाथ में ले कर फ़रमाते हैं कि आज मैंने फ़क़ीह अबूबक्र अहमद बिन हुसैन बैहक़ी की किताब के सात जुज़ पढ़े हैं।

मशहूर फ़क़ीहे वक़्त मुहम्मद बिन अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ मरूज़ी का बयान है कि एक रोज़ मैंने ख़्वाब में देखा कि एक सन्दूक़ ज़मीन से आसमान की तरफ़ उड़ा जा रहा है और उस के इर्द गिर्द एक नूर चमक रहा है मैंने दरयाफ़्त किया कि यह क्या चीज़ है ? तो फ़रिश्तों ने जवाब दिया कि बैहक़ी की तसनीफ़ात का सन्दूक़ है जो बारगाहे इलाही में मक़बूल हो गया है।

10जमादिल ऊला 485 हिजरी को शहर नीशापुर में आप का विसाल हुआ लोग उन को ताबूत में रख कर बैहक़ गाँव में लाए और मक़ामे खुस्रू जर्द में दफ़न किया ।

कभी कभी आप शाअ़िरी का भी शौक़ फ़रमाते थे चूनाँचे यह तीन शेअ़र आप के फ़िके सुख़न का बेहेतरीन नमूना हैं।

مَنِ اعْتَزَّ بِالْمَوْلٰى فَذَاکَ جَلِيْلٌ وَمَنْ رَامَ عِزًّا عَنْ سِوَاهُ ذَلِيْلٌ

"जो खुदा वन्द तआ़ला से इज़्ज़त का ख़्वास्तगार हो वह बुज़ुर्ग है और जिसने खुदा के सिवा किसी दूसरे से इज़्ज़त तलब की वह ज़लील है"

وَلَوْ اَنَّ نَفْسِى مُذْ بَرَاَهَا مَلِيْكُهَا مَضٰى عُمْرُهَا فِىْ سَجْدَةٍ لَقَلِيْلٌ

"अगर मेरी जान जब से उसके मालिक ने उस को पैदा किया तमाम उ़म्र एक ही सजदे में गुज़ार दे फिर भी यह निहायत ही क़लील है।

اُحِبُّ مُنَاجَاةَ الْحَبِيْبِ بِاَوْجُهٍ وَلٰكِنْ لِسَانُ الْمُذْنِبِيْنَ كَلِيْلٌ

"मेरा दिल तो यही चाहता है कि महबूब से तरह तरह की बातें करूँ

मगर उस को क्या करूँ कि गुनाह गारों को ज़बान गूँगी हो जाती हैं''

(बुस्तानूल मुहद्दिसीन)

40–हज़रत इमाम तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नियत अबू ईसा और नाम व नसब मुहम्मद बिन ईसा बिन सूरह बिन मुसा ज़िहाक सल्मी बोग़ी है बोग़ एक गाँव का नाम है जो शहर तिर्मिज़ से छः कोस के फासिले पर है उस गाँव की तरफ़ निस्बत होने से आप बोग़ी भी कहलाते हैं आप उसी गाँव में 209 हिजरी में पैदा हुए इमाम तिरमिज़ी इमाम बुख़ारी के सब से मशहूर शगिर्द व जानशीन शुमार किए जाते हैं और उन को यह शरफ़ भी हासिल है कि खुद इमाम बुख़ारी ने हदीसों में उन की शागिर्दी इख़्तियार फ़रमाई है।

इमाम मुस्लिम व इमाम अबूदाऊद से भी आप को तलम्मुज़ हासिल है और उन दोंनें शुयूख़ से भी आप ने रिवायत फ़रमाई है।

आप ने इल्मे हदीस सीखने के लिए मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा बसरा व कूफ़ा व वासेता व रेए व खुरासान व बग़दाद वग़ैरा के इल्मी मरकज़ों के सफ़र व इक़ामत में बहुत साल गूज़ार दिए।

आप का हाफ़िज़ा बे हद क़वी था मशहूर हिकायत है के एक शैख़ की हदीस के दो जुज़ आप ने नक़ल किए थे मगर अब तक उन को पढ़ कर सुनाने का मौक़ा नहीं मिला था मक्का मुकर्रमा के रास्ते में इत्तिफ़ाक़न शैख़ से मुलाक़ात होगई इमाम तिर्मिज़ी ने उन अजज़ा की क़िरात की दरख़्वास्त पेश की शैख़ ने मन्जूर फ़रमाली और फ़रमाया कि तुम उन वरक़ों को अपने हाथ में ले लो मैं पढ़ता हूँ और तुम मुक़ाबला करते जाओ इमाम तिर्मिज़ी ने उन वर्क़ों को तलाश किया तो वह दस्तियाब नहीं हुए फ़ौरन सादे कागज़ के चन्द वर्क़ हाथ में लेकर फरज़ी तौर पर सुनने में मशगूल हो गए और शैख़ क़िरात फ़रमाने लगे इत्तिफ़ाक़ शैख़ की नज़र सादे कागज़ों पर गई तो शैख़ को बड़ा गुस्सा आया और फ़रमाया कि तुम मेरा मज़ाक़ बनाते हो ? इमाम तिर्मिज़ी ने लिखे हुए वर्क़ों के गुम होने का वाक़ेआ साफ़ साफ़

अ़र्ज़ कर दिया कहा कि वह औराक़ आगरचे मेरे साथ नहीं हैं मगर मुझे लिखे हुए से भी ज़्यादा याद हैं शैख ने फ़रमाया अच्छा पढ़ कर तो सुनाओ इमाम तिर्मिज़ी ने सारी ह़दीसों को फ़र फ़र सुना दिया शैख़ ने इन्तिहाई तअ़ज्जुब करके फ़रमाया कि मुझे यक़ीन नहीं आता कि तुम ने मुझ से सिर्फ़ एक बार सुन कर सब ह़दीसों को याद कर लिया होगा इमाम तिर्मिज़ी ने अ़र्ज़ किया कि अच्छा अब इम्तिह़ान कर लीजए चुनाँचे शैख़ ने ख़ास तौर पर अपनी रिवायतो में से चालीस ह़दीस पढीं इमाम तिर्मिज़ी ने सुन कर फ़ौरन ही चालीस ह़दीस को लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ सुना दिया और कहीं एक जगह भी कोई ग़लती नहीं हुई शैख़ ने इमाम तिर्मिज़ी की कुव्वते ह़ाफ़िज़ा पर इन्तिहाई हैरत व तअ़ज्जुब फरमाते हूए उन के ह़िफ़्ज़ व याद दाश्त की बे ह़द तह़सीन फ़रमाई।

जामेअ़ तिर्मिज़ी

इमाम तिर्मिज़ी की इल्मे ह़दीस में बहुत सी तस्नीफ़ात हैं मगर उन की जामेअ़ तिर्मिज़ी बेह़द मशहूर व मक़बूल किताब है जो सि़ह़ाह़ सित्ता में दाख़िल है यह किताब इमाम बुख़ारी व इमाम अबूदाऊद दोनों के त़रीक़ों की जामेअ़ हैं एक तरफ़ तो उन्होंने अह़ादीसे अह़काम में से सिर्फ़ उन ह़दीसों को लिया है कि जिन पर फुक़हाऐ किराम का अ़मल है दूसरी त़रफ़ इमाम बुख़ारी की त़रह़ सब अबवाब की ह़दीसों को लेकर अपनी किताब को जामेअ़ बना दिया है फ़िर मज़ीद बराँ उ़लूमे ह़दीस के दुसरे शोअ़बों को भी उस किताब में शामिल कर के उस को इस कसीरुलमुनाफ़ेअ़ बना दिया है कि मज़मूई हैसियत से उस को सि़ह़ासित्ता की तमाम किताबों पर फ़ौक़ीयत ह़ासि़ल है।

ह़ाफ़िज़ इब्ने रुशैद ने उन फुनूने ह़दीस की जो इस किताब में मज़कूर हैं इसबे ज़ैल तफ़सील बयान फ़रमाई है ।

(1) तर्तीबे अबवाब (2)फ़िक़्हे ह़दीस का बयान(3)इ़लले अह़ादीस व बयाने सही़ह़ व ज़ईफ(4)रावीयों के नामों और कुन्नितयतों का बयान (5) जिरह़ व तअ़दील(6)जिन से ह़दीस नक़ल की हैं उन से यह

तस़रीह़ कि उन में से किन किन लोगों ने आँ ह़ज़रत स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व स़ल्लम से शरफ़े मुलाक़ात ह़ासिल किया और किस ने नहीं (रावीयाने ह़दीस का शुमार)

और ह़ाफ़िज़ अबुलफ़तह बिन सैयदुन्नास ने फ़रमाया कि मिनजूम्ला उन उ़लूम के जो इमाम तिर्मिज़ी की किताब में मौजूद हैं और जिन को इब्ने रुशैद ने ज़िक्र नहीं किया यह हैं।

(8)बयाने शुजूज़ (9)बयाने मौकूफ़(10)बयाने मुदर्रज! और ह़ाफ़िज़ अबूबकर बिनिल अ़र्बी ने तो यहाँ तक फ़रमाया कि इल्मे ह़दीस के शोअ़बों में से चौदह फुनून इमाम तिर्मिज़ी की जामेअ़ में मौजूद हैं

(आरिद़तुल अह़वज़ी व मजमुआ शुरुहे अ़रबअ़ित तिर्मिज़ी)

इमाम तिर्मिज़ी फ़रमाते है कि जब मैं अपनी इस जामेअ़ की तालीफ़ से फ़ारिग़ हुआ तो सब से पहले मैंने उस को उ़लमाऐ ह़िजाज़ के सामने पेश किया तो उन्होंने उस को बेह़द पसन्द फ़रमाया फिर उ़लमाऐ इ़राक़ की ख़िदमत मे ले गया तो उन्हों ने भी एक जुबान हो कर उस की मदह़ सराई फ़रमाई फिर उ़लमाऐ खुरासान के रु ब रु पेश किया तो उन्होंने भी अपनी रिज़ा मन्दी ज़ाहिर फ़रमाई उस के बअ़द मैंने उस किताब के नश्र व इशाअ़त की कोशिश की

इमाम तिर्मिज़ी का यह भी क़ौल है कि जिस घर में यह किताब हो गोया उस घर में हुज़ूर पैग़म्बरे खुदा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व स़ल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं जो कलाम फ़रमा रहे हैं।

इमाम तिर्मिज़ी ज़ुहद व तक़वा और इ़बादत व रियाज़त में भी अपने दौर के बे मिसाल आ़बिद व ज़ाहिद थे और ख़ौफ़े खुदा इस दर्जा रखते थे कि उस से ज़्यादा उन के लिए मुमकिन नहीं था शब बेदारी और ख़ौफ़े इलाही से इस क़दर गिरया व ज़ारी फ़रमाते कि रोते रोते आप की आँखों में पहले आशोबे चश्म हुआ फिर बीनाई जाती रही 17 रजब शब दो शम्मबा 279 हिजरी में आप ने वफ़ात पाई और ख़ास तिर्मिज़ शहर में मदफून हुऐ – (बुस्तानुल मुह़द्दिसीन)

41हज़रत तक़ीयुद्दीन इब्ने दक़ीक़ुलईद (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबुलफ़तह और नाम व नसब तक़ीयुद्दीन मुहम्मद बिन अली बिन वहब बिन मुतीअ़ कुशैरी मनफ़लूती है उन का उर्फ़ इब्ने दक़ीक़ुलईद है यह मालिकी व शाफ़ेई दोनों मज़हबों के पेशवा और साहिबे तसानीफ़े कसीरा हैं माह शअ़बान 625 हिजरी में इन की विलादत बहरे यम्बोअ़ (हिजाज़) में हुई और ह़ाफ़िज़ ज़कीयुद्दीन मुन्ज़िरी व इब्ने अबदुद्दाइम वग़ैरा मशाइख़े ह़दीस से दमिश्क़ में इल्मे ह़दीस हासिल किया और अपने दौर के अहले इल्म पर अपनी वुसअ़ते इल्मी की बिना पर फ़ौक़ियत व फज़ीलत रखते थे और तक़्वा व इबादत में भी यकताऐ रोज़गार थे लोगों को यक़ीन था कि हर सात सौ बरस के बअ़द जिस आ़लिम के ज़ुहूर की खूश्ख़बरी वारिद हुई है वह यही हैं।

फ़तहे मुबीन की ग़ैबी ख़बर

त़रीक़े तसव्वुफ में भी बड़ा कमाल ह़सिल था और आप बिला शुबह वली–ए–कामिल व साह़िबे कश्फ़ व करामत थे आप की एक मशहूर करामत यह है कि जब ज़ालिम तातारियों की फौजें दयारे शाम की त़रफ़ ह़मला आवर हुईं तो सुल्तान ने उ़लमा को ख़त्म बुख़ारी शरीफ़ पढ़ने का हुक्म दिया चूनाँचे उ़लमा ने ख़तमे बुख़ारी शरीफ पढ़ा और सिर्फ़ चन्द औराक़ को बाक़ी रखा कि जुम्आ़ के दिन खत्म करेंगे अभी जुमआ़ नहीं आया था कि शैख़ तक़ीयुद्दीन जामेअ़ मस्जिद में तशरीफ़ लाए और ह़ाज़ेरीन से पूछा कि क्या उ़लमा ख़तमे बुख़ारी से फारिग़ हो गए ?लोगों ने अ़र्ज़ किया सिर्फ एक दिन का वज़ीफ़ा बाक़ी है उ़लमा की राए है कि जुमआ़ के दिन ख़त्म पूरा करे आप ने फ़रमाया अल्ह़म्दु लिल्लाहि ! इस्लामी लश्कर को फतह मुबीन ह़ासिल होगई और तातारी फौज शिकस्त खाकर फ़रार हो गई और इस्लामी लश्कर उस वक़्त फलाँ गाँव में जश्ने फ़तह़ मना रहा है लोगों ने अ़र्ज़ किया कि क्या उस ख़बर को शाइअ़ कर दें और शहर में एलान कर दें ? आप ने जवाब दिया कि हाँ हाँ ! खूब अच्छी त़रह़ एअ़लान कर

दो चुनाँचे उस का एअ्लान कर दिया गया और चन्द दिन के बअ्द जब सुल्तानी डाक आई तो उस ख़बर की तस्दीक़ हो गई और बाल बराबर फ़र्क़ नहीं निकला।

बे अदब की मौत हो गई

एक दिन किसी दुनिया दार बे अदब ने भरी मज्लिस में आप की सख़्त बे अदबी की आप को जलाल आगया और तड़प कर तीन मरतबा फ़रमाया कि तूने अपने को मौत के हवाले कर दिया चुनाँचे ऐसा ही हूआ कि तीसरे दिन यह बे अदब मर गया उन के भाई को किसी ज़ालिम अमीर ने नाहक़ तकलीफ़ पहुँचाई मज़लूम भाई की मुसीबत देख कर तैश में आगये और ज़ालिम अमीर के हक़ में फ़रमाया कि हलाक हो जाऐ चुनाँचे फ़ौरन ही वह ज़ालिम अमीर हलाक होगया।

अपने औक़ात के बे हद पाबन्द थे रात को दो हिस्सों में तक़्सीम कर रखा था आधी रात हदीसों का मुतालआ और तस्नीफ़ करते और आधी रात ज़िक्र व तहज्जुद में गुज़ारते थे बहर हाल सारी रात बेदार रहते और बअ्ज़ वक़्त तो एक ही आयत को बार बार पढ़ते पढ़ते सुबह कर देते चुनाँचे एक रात नमाज़े तहज्जुद में जब उस आयत पर पहुँचे कि فَاِذَانُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَا اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ तो सुबह तक उसी को तिलावत करते रहे।

ग़र्ज़ इल्म व अमल ज़ुहद व तक़्वा इबादत व रियाज़त में बे मिस्ल व यगानए रोज़ गार थे।

उन की तसनीफात में से इलहाम फी अहादीसुल अहकाम वह इल्मी शाहकार हैं कि हदीसों के ऐसे अनमोल दक़ाइक़ व हक़ाइक़ का ज़ख़ीरा शायद ही किसी मुहद्दिस की तसनीफ़ में मिलेगा सिर्फ़ एक हदीस

بَرَاْ بِنْ عَاذِبْ اَمَرَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَبْعٍ وَ نَهَانَا عَنْ سَبْعٍ से चार सौ फवाईद व मसाइल इस्तिमबात कर के उन को ऐसे नफीस व उमदा तर्ज़ पर तहरीर फ़रमाया है कि बिला शुब्ह अहले

इल्म के लिए यह किताब नवादिरात का एक अजाइब ख़ाना है एक मरतबा उन की ख़िदमत में एक शख़्स ने हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि मुझे नमाज़ में ख़तरात व वस्वसे बहुत आते थे तो मैंने एक जाहिल फकीर के पास जाकर उस से अपना हाल कहा उस फ़कीर ने मेरा हाल सुन कर जवाब दिया कि उस दिल पर अफ़सोस है जिस में नमाज़ की हालत में भी ग़ैरुल्लाह का ख़्याल आए फकीर के यह अलफाज़ सुन कर मेरे दिल पर बड़ा असर हुआ और एक दम मेरे दिल से ख़त्रात व वस्वसे जाते रहे शैख़ तक़ीयुद्दीन ने फ़रमाया कि उस खुदा रसीदा अल्ला वाले फ़क़ीर को जाहिल कहते हो? हालाँकि मेरे नज़दीक यह शख़्स एक हज़ार फ़क़ीहों से बेहतर है।

आप का मत़लब यह था कि खाली फ़कीह की इस्तिलाहात जानने वाले फुक़्हा जो रुहे अमल और इल्मे बातिन की रौशनी से कोरे हैं ऐसे फ़कीहों से यह बे पढ़ा लिखा आरिफ़ बिल्लाह फ़कीह बढ़ कर है कि उस को मअरिफ़ते इलाही की दौलत हासिल है जो हकीकी फ़िक़्ह और तफक्कोह फ़िद्दीन की रुह है ।

आप तस्नीफ़ व दर्स के इलावाह चन्द साल दयारे मिस्र में काज़ी भी रहे और 702 हिजरी में वफ़ात पाई (बुस्तानूल मुहद्दिदसीन वग़ैरा)

42–हज़रत साबित बिन अस्लम बनानी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नियत अबू मुहम्मद और वतन बसरा है आप के वालिद का नाम साहिबे इकमाल ने असलम और अल्लामा शोअ्रानी ने असद तहरीर किया है आप ताबेईन बसरा के बड़े बावकार नामवर उल्माए हदीस में से हैं चालीस बरस तक हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु की सोहबत में रहे और अब्दुल्लाह बिन उमर रियाह अन्सारी व मुतरिफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन शख़ीर वग़ैरह सहाबा रदियल्लहु तआला अन्हुम व किबारे ताबेईन की जमाअते कसीरा से हदीस की रिवायत की है और आप के शागिर्दों की जमाअत में शोअ्बा व अअ्मश व अत्तार बिन अबी रियाह व कतादा व सुलैमान तैमी जैसे बलन्द पाया मुह्दिदसीन भी हैं।

आप पर ख़ौफ़े इलाही का बड़ा ग़लबा था चुनाँचे आप के सामने जब जहन्नम का ज़िक्र कर दिया जाता तो आप को ऐसा इज़्तिराब होता कि तड़पने लगते और बदन पर इतना शदीद लरज़ा त़ारी हो जाता कि किसी न किसी अ़ज़्व का जोड़ अलग हो जाता इबादत का यह आ़लम था कि पचास बरस तक नमाज़े तहज्जुद फ़ौत नहीं हुई रात भर नमाज़े नफ़्ल पढ़ते रहते और सुबह को रो रो कर सिर्फ़ यही एक दुआ़ करते कि ऐ अल्लाह ! अगर तू अपने किसी बन्दे को क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त अ़ता फ़रमाए तो मुझ को ज़रूर यह तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाना कि मैं अपनी क़ब्र में भी नमाज़ पढ़ता रहूँ चुनाँचे दुआ़ की मक़बूलियत और आप की करामत तो दखिए कि दफ़न के बअ़्द बिल्कुल अचानक नीचे से एक ईंट टूट गई और क़ब्र में एक सूराख़ हो गया तो लोगों ने अपनी आँखों से देखा कि आप क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे हैं और यह तो आपकी मशहूर करामत है कि वफ़ात के बअ़्द आपकी क़ब्र से एक मुद्दत तक तिलावते क़ुर्आन की आवाज़ आती रही और हज़ारों इन्सान सुनते थे।

अबूबकर मोज़नी व इब्ने ह़ब्बान ने फ़रमाया कि बसरा में साबित बिन असलम बनानी से बड़ा कोई आ़बिद नहीं था रात भर नवाफ़िल पढ़ने के इलावह बिला नाग़ा रोज़ाना एक ख़त्म क़ुर्आन मजीद की तिलावत भी करते थे और हमेशा रोज़ा दार भी रहते थे छियासी बरस की उ़म्र शरीफ़ हुई और 123 हिजरी में यह मुक़द्दस त़ाइरे रूह आ़लमे बाला को परवाज़ कर गया (इकमाल तहज़ीबुत्तज़ीब वग़ैरा)

43–हज़रत सय्यदिना इमाम जअ़्फ़र स़ादिक़ (रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु)

आप की कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह और नाम व नसब ज़अ़्फ़र बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली बिन अबी त़ालिब है और लक़ब स़ादिक़ है आप ह़दीस में अपने वालिद माजिद इमाम मुह़म्मद बाक़र और दूसरे अकाबिरे वक़्त के शागिर्द जलील हैं और आप के शागिर्दो में इमाम आ़ज़म अबूह़नीफ़ा व इमाम मालिक व सुफ़यान सौरी

व सुफ़यान बिन अ़ैनीयह व यहया बिन सईद व इब्ने जुरैज वग़ैरा अकाबिरे उम्मत व अस़ातीने मिल्लत हैं आप के जुहद व तक़वा शिआ़री नीज़ रियाज़त व मुजाहेदा और इबादत गुज़ारी के अह़वाल बे शुमार हैं इमाम मालिक का बयान है कि मैं एक ज़माने तक आप की ख़िदमत में आता जाता रहा मगर मैंने हमेशा आप को तीन इबादतों में से एक में मसरूफ पाया या तो आप नमाज़पढ़ते हुए मिलते या तिलावत में मशगूल होते या रोज़ा दार होते आप बिला वुज़ू कभी ह़दीस की रिवायत नहीं फ़रमाते थे आप की दुआ़ बहुत जल्द मक़बूल होती थी और आप इस दर्जा मुस्तजाबुद्दअ्वात व कसीरूल करामात थे कि जब आप को किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस होती तो आप हाथ उठा कर दुआ़ करते कि ऐ मेरे रब ! मुझे फ़लाँ चीज़ की ह़ाजत है आप की दुआ़ ख़त्म होने से पहले ही वह चीज़ आप के पहलू में मौजूद हो जाती ख़लीफ़ा बग़दाद मन्सूर अ़ब्बासी आप का दुश्मन था एक दिन उस ने आपने वज़ीर से कहा कि तुम इमाम ज़अ्फ़र स़ादिक़ को दरबार में ह़ाज़िर करो ताकि मैं उन्हें क़त्ल करादूँ वज़ीर ने इमाम ममदूह को त़लब किया ख़लीफ़ा ने जल्लादों को हुक्म देरखा था जूँही इमाम जअ्फ़र स़ादिक़ दर बार में ह़ाज़िर हों और मैं अपना ताज सर से उतारूँ तो फौरन तुम उन्हें कत्ल कर देना मगर हुआ यह कि जब इमाम दरबार में तशरीफ़ लाए तो नागाह मन्सूर घबराकर खड़ा हो गया और इमाम को सदर मक़ाम पर बैठा कर खुद आप के रुबरु मुअद्दब हो कर बैठ गया जल्लादों को सख्त तअ़ज्जुब हुआ कि प्रोग्राम तो कुछ और ही था आख़िर यह क्या हो रहा है ? मन्सूर ने इमाम से अ़र्ज़ किया कि आप को कोई ह़ाजत हो तो बयान फ़रमाएं इमाम ने फ़रमाया कि बस मेरी ह़ाजत यही है कि आइन्दा मुझे दरबारे शाही में कभी न बुलाया जाये ताकि मैं यकसूई व इत्मीनाने क़ल्ब के साथ खुदा की इबादत में मशगूल हों मन्सूर ने आप को रुख़्सत किया मगर उस का बदन काँप रहा था इमाम के तशरीफ़ ले जाने के बअ़्द वज़ीर ने उस ह़ाल का सबब पूछा

तो मन्सूर ने जवाब दिया कि जब इमाम दर बार में दाख़िल हुए तो मैंने अपनी आँखों से देखा कि एक अज़दहा मुँह फैलाए हुए इमाम के साथ है और वह गोया ज़ुबाने ह़ाल से कह रहा है कि अगर तूने इमाम को सताया तो मैं तुझे निगल जाऊँगा चुनाँचे उस के ख़ौफ़ से मेरे जिस्म का रोंगटा रोंगटा और बदन का बाल बाल काँपने लगा और मैंने ख़ौफ़ व ह़िरास के आ़लम में इमाम के साथ जो सुलूक किया उस को तुम लोगों ने अपनी आँखों से देखा।

आप का इरशाद है कि जिस के रिज़्क में तन्गी हो वह बकस्रत इस्तिग़फार पढ़े तो उस के रिज़्क़ में बहुत जल्द कुशादगी व फराख़ी हो जायेगी आप यह भी फ़रमाते थे कि अगर कोई चीज़ देखने में अच्छी लगे तो ماشاء الله لا قوة الا بالله पढ़ले तो वह चीज़ नज़्र और हलाकत से मह़फूज़ रहेगी।

आप का यह भी क़ौल है कि उ़लमा रसूलों के अमीन हैं मगर शर्त यह है कि लोग बादशाहों और अमीरों के दरवाज़ों पर न जायें वरना यह लोग अमानत में ख़ियानत करने वाले शुमार किए जायेंगे।

आप अकसर यह दुआ़ फ़रमाते थे कि या अल्लाह मुझे अपने मिस्कीन बन्दों का कुर्ब अ़ता फ़रमा और उन की ग़मख्वारी की तौफ़ीक़ दे।

आप ने मदीना मुनव्वरा में 148 हिजरी में वफ़ात पाई और जन्न्तुलबक़ीअ् में अपने वालिद माजिद इमाम मुहम्मद बाक़र रद़ियाल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पहलू में मदफून हुए।

(इकमाल,त़ब्क़ात,तहज़ीब,तज़किरातुलऔलिया)

44–हज़रत जअ़फ़र बिन बरक़ान(रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नीयत अबूअब्दुल्लाह जज़री हैं उन का अ़सली वतन रक्क़ा था मगर कूफ़ा आए तो यहीं के हो कर रह गए उन्होंने इल्मे ह़दीस यज़ीद अस़म व ज़हरी व अ़ता व नाफ़ेअ़ मौला इब्ने उ़मर वग़ैरा किबार मुह़द्दिसीन से पढ़ा और अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक व सुफ़यान बिन अ़ैनीयह व वकीअ़ वग़ैरह मुह़द्दिसीन उन की दर्स गाह के तालिबे इल्म रह चुके हैं इब्ने मुईन व इब्ने सअ़्द वग़ैरह ने आप को सच्चा सिक़ह और स़ाह़िबे फ़तावा फ़क़ीह लिखा और सुफ़यान सौरी जैसे मुसल्लिमुस्सुबूत बुज़ुर्ग ने तो यहाँ तक फ़रमाया कि मैंने जअ़फ़र बिन बरक़ान से अफ़ज़ल किसी को नहीं देखा यह बिलकुल उम्मी थे लिखना नहीं जानते थे तमाम अह़ादीस ज़ुबानी अपनी याद से रिवायत फ़रमाते थे मगर उन का ह़िफ़्ज़ बेह़द क़ाबिले एअ़्तेमाद था कभी रिवायते ह़दीस में एक लफ़्ज़ की भी ग़लती नहीं करते थे चुनाँचे ह़दीस को परखने वाले मुह़द्दिसीन ने उन को स़ह़ीहुर्रिवायत तस्लीम किया है।

यह बड़े आ़बिद व ज़ाहिद और स़ाह़िबे करामत वली थे उन के बारे में आ़म तौर पर यह मशहूर था कि मुस्तजाबुद्दअ़्वात हैं यअ़्नी उन की दुआ़एं बहुत जल्द और बहुत ज़्यादा बारगाहे खुदा वन्दी में मक़बूल होती थीं और बहूत ज़्यादा आप की दुआ़ओं से लोगों की मुरादें पूरी हूई थीं 151हिजरी या 155हिजरी में आप की वफ़ात हुई

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

45–हज़रते हसन बस़री (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नीयत अबूसईद और वालिद का नाम अबूलह़सन यसार है आप मदीना मुनव्वरा में ह़ज़रत अमीरुल मोमेनीन सैयिदिना उ़मर रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शहादत से दो साल क़ब्ल पैदा हुए और ह़ज़रत अमीरुल मोमेनीन ने आप के मुँह में अपना लुआ़बे दहन

डाला आप की वालिदा हज़रत उम्मुल मोमेनीन बी बी उम्मे सल्मा रदियल्लाहु तआला अन्हा की ख़ादिमा थीं बचपन में जब आप की वालिदा किसी काम से बाहर जातीं और आप रोते तो हज़रत उम्मुल मोमेनीन बी बी उम्मे सल्मा रदियल्लाहु तआला अन्हा आप को बहलाने के लिए अपना पिस्तान आप के मुँह में लगा देतीं और आप चूसते रहते चुनाँचे अहले मदीना आम तौर से यह कहा करते थे कि हसन बसरी का सीना जो इल्म का सफ़ीना बन गया यह फ़ारुके अअ्ज़म के लुआबे दहन और उम्मुल मोमेनीन बी बी उम्मे सल्मा रदियल्लाहु तआला अन्हा के दूध की बरकत है।

आप इल्मे हदीस में हज़रत अनस व अब्दुल्लाह बिन अब्बास व अबूमुसा अशअरी वग़ैरा सहाबा किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम के शागिर्द हैं और आप के शागिर्दों में बे शुमार ताबेईन व तब्अे ताबेईन हैं आप इल्मे शरीअत व इल्मे तरीक़त दोनों में इमामुल वक़्त थे और आप का ज़ुहद व तक़्वा और आप की बे मिसाल इबादत व रियाज़त मशहूरे ख़लाइक़ हैं और आप के फ़ज़्ल व कमाल नीज़ ख़वारिक़े आदात व कश्फ़ व करामात का चरचा मुहद्दिसीन व सूफ़िया की जमाअतों में है आप.अमीरुल मोमेनीन हज़रत उसमान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बअ्द मदीना मुनव्वरा से बसरा चले आए और बसरी कहलाने लगे आप की वफ़ात से चन्द दिन पहले एक बुजुर्ग ने यह ख़्वाब देखा कि कोई परिन्दा आया और मस्जिद की सब से खुबसूरत कन्करी उठा कर ले गया उन बुजुर्ग ने इमाम मुहम्मद बिन सीरीन से उस ख़्वाब की तअ्बीर दरयाफ़्त की इमाम मौसूफ़ ख़्वाब सुन कर ग़मगीन हो गए और फ़रमाया कि उस ख़्वाब की तअ्बीर यही है कि ख़्वाजा हसन बसरी की वफ़ात होगई या अन्क़रीब होने वाली हैं चुनाँचे उस के चन्द ही दिन के बअ्द ख़्वाजा हसन बसरी का विसाल हो गया आप बड़े हसीन व जमील और इन्तिहाई वजीह व साहिबे वक़ार

थे आ़सिम अह़वल मुह़द्दिस का बयान है कि मैंने इमाम शअ़्बी से कहा कि मैं बस़रा जा रहा हूँ अगर कोई काम हो तो फ़रमाऐं इरशाद फ़रमाया ख़्वाजा ह़सन बस़री से मेरा सलाम अ़र्ज़ कर देना आ़सिम अह़वल ने कहा कि मैं तो उन को पहचानता नहीं हूँ तो इमाम शअ़्बी ने फ़रमाया कि तुम बस़रा की जामेअ़् मस्जिद में दाख़िल होना तो सब से ह़सीन व खुबसूरत इन्सान जिस को देखते ही तुम्हारा सीना हैबत से भर जाए जब तुम को नज़र आए तो उस से मेरा सलाम कह देना चुनाँचे आ़सिम अह़वल कहते है मैं जब बसरा की जामेअ़् मस्जिद में गया तो मैंने देखा एक पैकरे हुस्न व जमाल इन्तिहाई वक़ार के साथ रौनक़ आफ़रोज़ हैं और लोग उस के इर्द गिर्द ह़ल्क़ा बनाऐ इन्तिहाई अदब के साथ बैठे हुए हैं चुनाँचे मैंने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर इमाम शोअ़्बी का सलाम अ़र्ज़ कर दिया।

ह़ज़रत इमाम मुह़म्मद बाक़र रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दरबार में जब ख़्वाजा ह़सन बस़री का तज़किरा होता तो आप फ़रमाते कि सुब्ह़ानल्लाहि! ह़सन बस़री का क्या कहना ? उन के कलाम में तो अमबीया अ़लैहिमुस्सलाम के कलामों की लज़्ज़त व तासीर होती है आप के मिज़ाज में तवाज़ेअ़् व इन्किसारी बहुत ज़्यादा थी मज्लिसे दर्स में इन्तिहाई सादगी के साथ बग़ैर मसनद लगाऐ बैठते और जब ह़दीस की रिवायत या वअ़्ज़ फ़रमाते तो ऐसा दर्द नाक लहजा होता था कि ह़ाज़ेरीन के दिल दहल जाते खौफ़े इलाही का यह आ़लम था कि जहन्नम का ज़िक्र होता तो आप मुज़तरिब व बे क़रार हो कर इस क़दर गिरया व ज़ारी फ़रमाते कि गोया जहन्नुम आप के सामने ही है।

आप का क़ौल है कि उ़लमा को सब से ज़्यादा अ़ैब दार बनाने वाली चीज़ त़मअ़् लालज है यह भी अकसर फ़रमाया करते थे कि दुनिया तुम्हारी सवारी है अगर उस पर सवार होगे तो यह तुम्हारा बोझ उठाती रहेगी और दुनिया तुम पर सवार होगई तो यह तुम्हें

कुचल डालेगी एक शख़्स ने आप के सामने कहा कि फ़लाँ मसअ्ले में फ़ुक़्हा ने ऐसा ऐसा फ़रमाया है आप ने डाँट कर फ़रमाया कि तुम ने कभी किसी फ़क़ीह को देखा है ? ऐ नादान फ़क़ीह वह है जिस की निगाहों में दुनिया एक मच्छर से भी ज़्यादा ज़लील हो और जिस की नज़र हर वक़्त अपने छोटे बड़े गुनाहों पर हो और जो एक लमहा के लिए भी अपने रब की याद से ग़ाफ़िल न हो।

आप यह भी इरशाद फ़रमाते थे कि आलिमों के तक़वा का इम्तिहान लेना हो तो माल व सामान दुनिया के मुआमले में आज़मा कर देखो आप अकसर यह शेअ्र पढ़ा करते थे।

لَيْسَ مَنْ مَّاتَ فَاسْتَرَاحَ بِمَيِّتٍ
إنَمَا الْمَيْتُ مَيِّت الاَحْيَاءِ

रजब 110हिजरी में आप का विसाल हुआ ।

(इकमाल, तब्क़ात, तहज़ीबुत्तहज़ीब, वग़ैरा)

46–हज़रत हम्माद बिन अबी सुलैमान(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

फ़क़ीहे इराक़ अबू इस्माईल हम्माद बिन अबी सुलैमान कूफ़ी बड़े जलीलुल क़द्र उस्तादे हदीस हैं सहाबा किराम में से हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु और ताबिईन में से सईद बिन मुसैयब व जैद बिन वहब व सईद बिन जूबैर व अबू वाइल व इबराहीम नख़्ई व शअ्बी वग़ैरह फ़ुक़्हा व मुहद्दिसीन के माया नाज़ शागिर्द हैं और आप के शागिर्दों में हज़रत इमाम अबूहनीफा व इमाम अअ्मश व शअ्बा व सुफ़यान सौरी व हम्माद बिन सल्मा व आसिम अहवल व हश्शाम व सत्वाई वग़ैरा अइम्मा फ़िक़्ह व हदीस हैं।

मुअम्मर मुहद्दिस का क़ौल है कि मैंने हम्माद बिन अबी सुलैमान व ज़हरी व क़तादा से बढ़ कर किसी को फ़क़ीहे हदीस का माहिर नहीं पाया यहया बिन मुईन व इमाम निसाई व इमाम बुख़ारी व इब्ने हब्बान वग़ैरा बड़े बड़े नक़्क़ादे हदीस इमामों ने उन को कसीरुल

हदीस व फ़क़ीह व साहिबे फ़तावा व सिक़ा तहरीर किया है।

अगरचे बअ्ज़ मुहद्दिदसीन ने तअस्सुब या दूसरे अस्बाब की बिना पर उन को ज़ोअ्फ़ व ख़ता की तरफ़ मन्सूब किया मगर हक़ यह है कि हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा व अअ्मश व शोअ्बा व सुफ़यान सौरी व आसिम अहवल जैसे हदीस के पहाड़ों का उन के रु ब रु ज़ानु–ए–तलम्मुज़ तै करना उन की जलालते शान व अज़मते इल्म व इत्क़ान के लिए सूरज से ज़्यादा रौशन दलील है।

मुग़ीरा मुहद्दिदस का बयान है कि जब हम्माद बिन अबी सुलैमान हज से वापस लौटे और हम लोग उन के इस्तिक़्बाल के लिए हाज़िर हुए तो उन्होंने फ़रमाया कि ऐ अहले कूफ़ा तुम्हें मुबारक हो । मैंने अ़ता व ताऊस व मुजाहिद को देखा मगर तुम्हारे बच्चे बल्कि बच्चों के बच्चे उन लोगों से ज़्यादा फ़क़ीह हैं।

दाऊद ताई का क़ौल है कि हम्माद बिन अबी सुलैमान कूफ़ा से ज़्यादा मेहमान नवाज़ सब से ज़्यादा सख़ी थे गर्ज़ इल्म व अ़मल फ़िक़ह व हदीस ज़ुहद व क़नाअ़त सख़ावत व इबादत हर हैसियत से आप अपने दौर के मुमताज़ व बे नज़ीर मुहद्दिदस थे अबूबक्र बिन अबी शैबा का क़ौल है कि 120 हिजरी में आप की वफ़ात हुई।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब व उमदतुल क़ारी वग़ैरा)

47–हज़रत हारिस बिन यज़ीद हज़रमी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

यह मिस्र के रहने वाले थे और हदीस में जनादा बिन उमय्या व ज़ुबैर बिन नफ़ीर व अ़ली बिन रियाह वग़ैरा के शागिर्द हैं और लैस व इमाम औज़ाई वग़ैरा मशहूर मुहद्दिदस के उस्ताद हैं इमाम अहमद बिन हमबल व इमाम निसाई व अजली वग़ैरा ने उन को सच्चा मोअ्तमद और सहीहुर्रिवायत क़रार दिया और उन के इल्म व फ़ज़्ल और तक़वा व इबादत की शहादत दी यह दर्से हदीस के बअ्द अपना पूरा वक़्त नफ़ली इबादतों में गुज़ारते थे लैस का बयान है कि यह

रोज़ बिला नागा छःसौ रकअ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़ा करते थे 130 हिजरी में उन की वफ़ात हुई। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

48–हज़रत हम्ज़ा बिन हबीब ज़ियात (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उन की कुन्नियत अबूअम्मारह और वत़न कूफ़ा है यह इल्मे ह़दीस व इल्म क़िराअ़त व इल्मे फ़राइज़ तीनों उ़लूम में फ़ाज़िल व कामिल थे ह़दीस का इल्म उन्होंने इमाम अअ़्मश, अबूइस्हाक़ सबीई़ वग़ैरह की शागिर्दी में सीखा और अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक व वकीअ़ बिनिल जर्राह वग़ैरह अअ़्ला दर्जे के मुह़द्दिसीन ने उन की दर्स गाह से फ़ैज़ उठाया इब्ने मुई़न ने उन को सिक़ह फरमाया और इमाम निसाई का क़ौल है कि उन से रिवायत करने में कोई हर्ज नहीं इमाम अबूहनीफ़ा का इरशाद है कि क़िराअ़त और फ़राइज़ के मुआमले में तो हम्ज़ा सब से बढ़ कर हैं अबूबक्र बिन मन्जूया फ़रमाते हैं कि हम्जा फन्ने क़िराअ़त में बहुत ही जय्यद आ़लिम थे और बेहतरीन इबादत गुज़ार परहेज़ गार थे उमरा व सलातीन के तहाइफ से बहुत इन्तिहाई मुतनफ़्फ़िर व बे ज़ार थे बल्कि उ़म्र भर कभी किसी का नज़राना कबूल नहीं फ़रमाया उन्होंने तिजारत को अपना ज़रीआ मआश बनाया था यह कूफ़ा से रोग़ने ज़ैतून ला कर हल्वान में बेचा करते इसी लिए उन का लक़ब ज़ियात (रोग़ने ज़ैतून वाला)है शहर हल्वान के अन्दर 156 हिजरी में आपकी वफ़ात हुई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

49–हज़रत ह़ीवा बिन शरीह (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबू ज़ुरआ है यह मिस्र के बहुत ही नामवर फ़क़ीह आ़बिद व ज़ाहिद व बा करामत वली थे यह अबू ह़ानी व सालिम बिन ग़ीलान व रबीआ बिन यज़ीद व मश्क़ी वग़ैरा से ह़दीस की रिवायत करते हैं और उन से रिवायते ह़दीस करने वालों में अ़ब्दुल्ला बिन मुबारक व इब्ने लहीअ़ह भी हैं।

इब्ने यूनुस का क़ौल है कि यह बहुत ही साहिबे फ़ज़ीलत व बाकरामत बुज़ुर्ग थे और आम तौर पर उन के बारे में मशहूर था कि यह मुस्तजाबुद्दअ़वात वली हैं और मिस्र में उन की यह करामत बहुत ही मशहूर है यह कन्करियाँ हाथ में ले कर दुआ फ़रमाते तो उन की दुआ से कन्करियाँ खजूर बिन जाती थीं और यह उन खजूरों को फ़ुक़रा–व मसाकीन में तक़सीम कर देते थे।

इब्ने विज़ाह से मन्कूल है कि एक शख़्स कअ़बा मुअज़्ज़मा का तवाफ़ कर रहा था और वह तवाफ़ के वक़्त सिर्फ़ यही एक दुआ करता था कि ऐ अल्लाह ! में बहुत क़र्ज़दार हूँ तू मेरे क़र्ज़ अदा होने का सामान पैदा फ़रमा दे यह शख़्स तवाफ़ से फ़ारिग़ हो कर सो गया तो किसी ने ख़्वाब में आकर उस को यह बशारत दी कि अगर तुम अपना क़र्ज़ अदा करना चाहते हो तो यहाँ से इस्कन्दरिया चले जाओ और वहाँ से शैखुल हदीस हीवा बिन शरीह से दुआ की दर्ख़्वास्त कराओ चूनाँचे यह शख़्स इस्कन्दरिया पहूँचा और आप की ख़िदमत में हाज़िर हो कर दुआ की दर्ख़्वास्त की और तवाफ़े कअ़बा और अपने ख़्वाब का सारा माजरा बयान किया तो हीवा बिन शरीह ने जुम्आ के दिन नमाज़े अ़स्र के बअ़्द दुआ के लिए हाथ उठाया तो थोड़ी देर में उस शख़्स ने देखा कि आप के इर्द गिर्द सोने के दीनारों का ढेर लगा हुआ है फ़िर आप ने फ़रमाया कि ऐ शख़्स देख खुदा से डर और अपनी हाजत से ज़्यादा उस में से मत ले चुनाँचे उस शख़्स का बयान है कि मैं तीन सौ दीनार का कर्ज़दार था तो मैंने गिन कर तीन ही सौ दीनार उस में से उठा लिए और इस्कन्दरिया से अपने वतन चला आया।

इस तरह की दूसारी बहुत सी करामतें भी आप से मन्कूल हैं 158 हिजरी में इस पैकरे करामत ने दुनिया से आलमे आख़िरत का सफ़र फ़रमाया (तहज़ीबुत्तहज़ीब वग़ैरा)

50–हज़रत हम्माद बिन सल्मा बस़री (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नियत अबू सल्मा है आप ने साबित बनानी व क़तादा व यह़या बिन सईद आन्सारी व सुलैमान तैमी वग़ैरा ताबेई मुह़द्दिसीन से इल्मे ह़दीस पढ़ा और आप की मज्लिसे दर्स के फ़ाज़िल त़ालिबे इल्मों में सुफ़यान सौरी व शअ़बा व अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक यह़या बिन सईद क़त्तान व इमाम अबूदाऊद जैसे किबार मुह़द्दिसीन हैं।

यह़या बिन मुईन व इब्ने मदीनी वग़ैरह नाक़िदीने ह़दीस ने उन को सिक़ह व फ़क़ीह और कसीर ह़दीसों वाला तहरीर किया है इब्ने हब्बान ने फ़रमाया कि हम्माद बिन सल्मा बस़रा में अपने तमाम हमअ़स्र आ़लिमों में दीन व दियानत और कसरते ह़दीस के लिहाज़ से सब से बढ़ कर थे और ह़िमायत व सुन्नत व रद्दे बिदअ़त में भी बे मिसाल थे और परहेज़गारी व इबादत गुज़ारी में भी सब से मुमताज़ और मक़बूलियते दुआ़ व करामत के एअ़्तिबार से तो बहुत मशहूर थे चुनाँचे शहाब बिन मुअ़म्मर बलखी ने तो यहाँ तक फ़रमाया कि बस़रा का बच्चा बच्चा यह यक़ीन रखता था कि ह़म्माद बिन सल्मा अब्दाले औलिया में से हैं अबदाल की एक ख़ास़ निशानी यह भी है कि वह स़ाहिबे औलाद नहीं होते चुनाँचे ह़म्माद बिन सल्मा के बारे में मन्कूल है कि उन्होंने यके बाद दीगरे सत्तर औ़रतों से निकाह़ किया मगर कोई औलाद नहीं हुई इब्ने मेहदी का क़ौल है कि ह़म्माद बिन सल्मा दिन रात इस क़दर इबादत करते थे कि अगर उन से कह दिया जाता कि कल आप की वफ़ात होने वाली है तो वह उस से ज़्यादा इबातद नहीं कर सकते थे सुलैमान बिन ह़र्ब व इब्ने ह़ब्बान व इमाम बुख़ारी वग़ैरह का क़ौल है कि आप ने माह ज़िलह़िज्जा 167 हिजरी में वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

51–हज़रत हुसैन बिन वलीद कुरैशी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

फक़ीहे नीशापुर अबू अब्दुल्लाह हुसैन बिन वलीद कर्शी का लक़ब मकील है यह सुफ़यान सौरी बिन अैनीया व हम्माद बिन ज़ैद व हम्माद बिन अबी सुलैमान व इमाम मालिक व इब्ने जुरैह व इस्राईल व शोअ्बा वगैरह के शागिर्द और इमाम अहमद बिन हमबल व अब्दुर्रहमान बिन बशर व इस्हाक बिन राहवियह व यहया नीशापुरी वग़ैरा के उस्तादे हदीस हैं।

यह बहुत ही सख़ी थे अपने हर शागिर्द को हदीस सुनाने से पहले फ़ालूदा खिलाते थे यहया बिन मुईन व दारे कुत्नी व हाकिम व इब्ने हब्बान वग़ैरा उन को सिक़ह व फ़क़ीह बताया और ख़तीब ने भी उन को क़ाबिले एतिमाद और साहिबे फ़तावा फ़क़ीह तहरीर किया और हाकिम ने तो यहाँ तक कह दिया कि हमारे शहर (नीशापूर)में हुसैन बिन वलीद से बड़ा न कोई फकीह़ हुआ न उन से बढ़ कर कोई सख़ी व मुत्तक़ी हुआ दर्से हदीस व फ़तावा के साथ क़िस्म किस्म की नफ़ली इबादतों में दिन रात मशगूल रहते और बिला नाग़ा हर तीसरे साल जिहाद के लिए तशरीफ़ ले जाते और हर पाँचवें साल हज करते थे इमाम बुख़ारी का क़ौल है कि 203 हिजरी में वफ़ात पाई

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

52–हज़रत हुसैन बिन अली बिनिल वलीद जअ्फ़ी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन का वतन कूफ़ा है और यह इमाम अ़मश व ज़ाइदा व इस्राईल बिन मूसा व फुज़ैल बिन अयाज़ वग़ैरा बड़े बड़े अइम्मा हदीस की आगोश तअ्लीम व तरबीयत के परवर्दा हैं और इमाम अहमद बिन हमबल व इस्हाक़ व यहया बिन मुईन व अबूबक्र बिन अबी शीबा व सुफ़यान बिन अैनीया जैसी शख़्सीयतो ने उन के ख़िरमने इल्म से खुशा चीनी की है यह अपने दौर के बहुत मुमताज़ व बावक़ार शैखुलहदीस थे इमाम अहमद बिन हमबल ने उन के बारे में फ़रमाया

मैंने हुसैन जअ्फ़ी से अ़फ़ज़ल किसी को नहीं देखा क़तीबा व मूसा बिन दाऊद बयान करते हैं कि सुफ़यान बिन अ़ैनीया अपनी दर्स गाह में बैठे हुए थे कि किसी ने कहा हुसैन जअ्फी तशरीफ़ लाये तो सुफ़यान बिन अ़ैनीयहजल्दी से खड़े हो गए और चन्द क़दम आगे बढ़ कर हुसैन जअ्फ़ी का हाथ चुम लिया सुफ़यान बिन ऐनिया अकसर फ़रमाते थे कि मुझे उस शख़्स़ पर तअ़ज्जुब है कि जो कूफ़े में दाख़िल हो और हुसैन जअ्फ़ी की पेशानी को बोसा न दे।

हज्जाज बिन हम्ज़ा का क़ौल है कि मैंने हुसैन जअ्फ़ी का कभी हँसते बल्कि मुस्कुराते हुए भी नहीं देखा और उन की ज़ुबान से कभी कोई ऐसा लफ़्ज़ नहीं सुना जिस में दुन्यादारी की बू आती हो।

ख़लीफ़ा बग़दाद हारुन रशीद ने इमाम किसाई से पूछा कि उस वक़्त सब से बड़ा आ़लिम कौन है ? तो इमाम किसाई ने हुसैन जअ्फ़ी का नाम लिया।

हमीद बिन रबीअ् ख़ज़ाज़ कहते हैं कि हुसैन जअ्फी ने कुछ दिनों इल्मे ह़दीस का दर्स बन्द कर दिया था और हमा दिन इबादत में मशगूल हो गए थे मगर फ़िर उन्हों ने कोई ख़्वाब देखा जिस से मुतअस्सिर हो कर फिर दर्स गाह में बैठ गऐ और दर्से ह़दीस की मज्लिस गर्म होगई और हम लोगों ने दस हज़ार से ज़्यादा अहादीस को उन से सुन कर लिखा।

अ़ज्ली ने उन को सच्चा व स़ालेह़ व मोअ्तमद मुह़द्दिस लिख कर फ़रमाया कि मैंने उन से अ़फ़ज़ल किसी को नहीं पाया सुफ़यान सौरी का यह ह़ाल था कि जब हुसैन जअ्फी को देखते तो लपक कर बड़ा ही पुर जोश मुआनिक़ा फ़रमाते और लोगों से कहते कि देखो ! यह हुसैन जअ्फ़ी हैं यह तो साधू हैं साधू ।

मशहूर है कि उन्होंने उ़म्र भर शादी नहीं की ह़ालाँकि खुद बहुत ही खुबसूरत और तन्दरूस्त थे यह़या बिन यहया नीशापुरी अ़लानीया

लोगों से फ़रमाया करते थे कि इस ज़माने में अगर तबक़ा अबदाल में से कोई वली बाक़ी रह गया है तो वह हुसैन जअ़फ़ी हैं 119 हिजरी में आप की विलादत हुई और 203 हिजरी में आप ने वफ़ात पाई

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

53—हज़रत हुसैन बिन ज़ियाद(रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

यह हज़रत इमाम अअ़ज़म अबूहनीफ़ा रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के बहुत ही ज़हीन शागिर्दों में से हैं इल्मे फ़िक्ह में इन्तिहाई माहिर बल्कि मुजतहिद होने के साथ साथ बहुत बलन्द मरतबा मुहद्दिस भी हैं उन का खुद बयान है कि मैंने अपने मशाइख़ से सुन कर बारह हज़ार हदीसों को लिखा बाक़ी वह अहादीस उन के इ़लावह हैं जिन को उन्होंने ज़ुबानी याद कर लिया था और दाइरा तहरीर में नहीं लाए।

यह बहुत ही मुत्तक़ी व इ़बादत गुज़ार थे और इत्तिबाअ़ सुन्नत में तो बे मिसाल थे हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सल्लम की सुन्न्तों से उन को इन्तिहाई इ़श्क़ था उन का असली वतन कूफ़ा है और यह कूफ़ा के क़ाज़ी भी हुए मगर उन की तवाज़ोअ़ का यह आ़लम था कि इतने बड़े बड़े ओ़हदे पर फ़ाइज़ होने के बावजूद खुद जो लिबास पहनते थे वही लिबास अपने गुलामों को भी पहनाते थे 204 हिजरी में वफ़ात पाई।

(तब्सरतुद्दराया फी मुक़द्दमातुल्हेदाया)

54—हज़रत हबीब बिन मुहम्मद अ़जमी(रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबू मुहम्मद और नाम हबीब बिन मुहम्मद और वतन बसरा है और यह वही बुज़ुर्ग हैं जो सिल्सिला चिश्तिया के शजरा में ख़्वाजा अ़जमी के नाम से मशहूर हैं आ़म तौर पर लोग उन को ख़ाली एक सूफ़ी और पीरे तरीक़त समझते हैं हालाँकि यह अपने दौर के माया नाज़ मुहद्दिस व जलीलुल क़दर शैख़ुलहदीस भी थे यह इल्मे हदीस में हज़रत हसन बसरी व मुहम्मद बिन सीरीन व बक्र

बिन अ़ब्दुल्लाह वग़ैरह बाकमाल व मशहूर मुह़द्दिसीन के शागिर्द व जानशीन थे और उन के शागिर्दों में सुलैमान तैमी व ह़म्माद बिन सल्मा व मोअ़्तमिर बिन सुलैमान व उ़समान बिन हेशम मौदिब वग़ैरह मुह़द्दिसीन की बहुत बड़ी जमाअ़त है ।

यह बहुत बड़े आ़बिद व ज़ाहिद कसीरुल इ़बादत व साहिबे विलायत थे इब्ने ह़ब्बान ने उन को आ़बिद व ज़ाहिद और फ़ाज़िल व साह़िबे तक़्वा लिख कर फ़रमाया कि यह साह़िबे करामात व मुस्तजाबु द्दअ़्वात थे।

उन की करामतों के बे शुमार वाक़िआ़त तज़किरए औलिया की किताबो में मज़कूर हैं उनकी एक करामत बहुत ही मशहूर है कि यह हर साल हज के मोक़ेअ़् पर आठवीं ज़िल्हिज्जा को बस़रा में रहते थे और नवीं ज़िलहिज्जा को मैदाने अ़र्फ़ात में लोग उन्हें देखते थे (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

55–हज़रत ह़ाकिम शहीद (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उनका नाम व नसब मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन अह़मद बिन अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्दुलमजीद बिन इस्माईल बिन ह़ाकिम मरूज़ी बल्ख़ी है यह फ़िक्ह ह़नफ़ी के बहुत बड़े आ़लिम और निहायत ही बलन्द पाया मुह़द्दिस थे साठ हज़ार ह़दीसें उन को ज़ुबानी याद थीं।

यह इल्मे ह़दीस में अ़ली बिन अ़िसाम बिन इस्माईल मरूज़ी व इबराहीम बिन यूसुफ़ राज़ी व हेसम बिन ख़लफ़ बग़दादी व अ़ली अबुलअ़ब्बास बिज्ली कूफ़ी व मुफ़ज़्ज़ल बिन मुह़म्मद मक्की व अह़मद बिन सुलैमान मिस़री वग़ैरह आ़लिमाने ह़दीस व फ़ुक़्हाऐ शागिर्द हैं।

जिस ज़माना में आप बुख़ारा के काज़ी हुए तो बादशाहे वक़्त अमीर ह़मीद को भी आप फ़िक्ह ह़नफ़ी की तअ़्लीम देते थे और बादशाह आप पर क़दरे एअ़्तेमाद करता था कि उस ने आप को वज़ीर बना कर पूरी सल्तनत के सियाह व सफेद का मालिक बना

दिया था उस हालत में भी आप ने इल्मे दीन का मशग़ला तर्क नहीं किया और "मुख़्तसर" व मुन्तफ़ी व "काफ़ी" वग़ैरा फ़िक्हे हनफ़ी की किताबें आप ने अपनी वज़ारत ही के दौर में तस्नीफ़ फ़रमाई हैं ।

मन्कूल है कि आप को शहादत की बेहद तमन्ना थी और हर नमाज़ के बअ्द शहादत की दुआ माँगा करते थे चुनाँचे आप की दुआ मक़बूल हो गई और शहादत नसीब हुई आप की शहादत का वाक़िआ बड़ा अजीब व ग़रीब है और वह यह है कि तन्ख्वाह में देर होने की वजह से बादशाह के कुछ फ़ौजियों ने बग़ावत करदी और वज़ीरे सल्तनत होने की वजह से उन बाग़ी फ़ौजों ने आप के मकान का मुहासरा कर लिया जब आप को पता चला तो आप ने निहायत इत्मिनान के साथ हजामत बन्वाई और गुस्ल कर के बेहेतरीन कफ़न पहना और पूरी रात सुबह़ तक नमाज़ पढ़ते रहे बादशाह ने बाग़ीयों के मुक़बिले के लिऐ फ़ौज भेजी और बाग़ीयों से उस फ़ौज की खूँरेज़ जंग भी हुई मगर बाग़ी फ़ौज ग़ालिब आई और बिल आख़िर मकान के अन्दर दाख़िल होगई आप बहालते नमाज़ सज्दे में थे कि बाग़ीयों ने आप को शहीद कर दिया यह वाक़िआ माह रबीउ़ल आख़िर 334 हिजरी में हुआ (तब्सरतुद्दराया)

56–हज़रत हमीदी (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबू अ़ब्दुल्लाह और नाम व नसब मुहम्मद बिन अबी नस्र फ़ुतूह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़मीदी अज़दी और लक़ब ह़मीदी है उन का असली वतन उन्दुलुस है मगर आख़िरी उम्र में बग़दाद की सुकूनत इख़्तियार कर ली थी अबू बक्र ख़तीब वग़ैरा मुहद्दिसीन से इल्मी इस्तिफ़ादा किया था मशहूर मुहद्दिस अमीर बिन माकूला उन के दोस्तों में से हैं उन का बयान है कि परहेज़गारी व पाकदामनी मैं ह़मीदी के बराबर मैंने किसी मुहद्दिस को नहीं देखा बहुत से लोगों ने घर और मज्लिस में उन का इम्तिहान किया मगर कहीं भी उन की

ज़ुबान पर दुनिया का तज़्किरा नहीं आया तक़्वा व पाबन्दी –ए–शरीअ़त का यह आ़लम था कि एक मर्तबा अबूबक्र बिन मैमून उनके मकान पर गये दरवाज़ा खटखटाया मगर ह़मीदी ग़ाफ़िल थे खामोश रहे अबू बक्र बिन मैमून यह समझ कर अन्दर चले गये कि जब मुमा निअ़त नहीं फ़रमाई तो मुझे अन्दर जाने की इजाज़त है मगर अन्दर तशरीफ़ ले गये तो ह़मीदी की रान खुली हुई थी ह़मीदी को उस का बेह़द सदमा हुआ और देर तक यह कहते हुऐ रोते रहे कि आफ़सोस कि जब से मैंने होश संभाला आज तक किसी ने मेरी रान नहीं देखी थी।

17ज़िलहिज्जा 488 हिजरी में ह़मीदी की वफ़ात हुई अबू बक्र शामी मशहूर शाफ़िई फ़क़ीह ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

ह़मीदी ने बग़दाद के रईसुर्रुऊसा अमीर मुज़्फ़्फ़र को यह वसीयत फ़रमाई थी कि मुझ को ह़ज़रत बशर ह़ाफ़ी की क़ब्र के पहलू में दफ़न किया जाए मगर अमीर मुज़फ़्फ़र ने किसी वजह से वसीयत पर अ़मल नहीं किया और आप को शैख़ अबू इस्हाक़ शीराज़ी के पहलू में दफ़न कर दिया उस के बअ़द बार बार अमीर मुज़फ़्फ़र ने ख़्वाब में देखा कि ह़मीदी इस बात की शिकायत करते हैं चुनाँचे मजबूर होकर अमीर मुजफ़्फ़र ने दो बरस दो माह के बाद आपकी क़ब्र को खोदकर आप के जिस्म को बशर हाफ़ी के पहलू में दफ़न किया यह ह़मीदी की करामत है कि दो बर्स दो माह गुज़रजाने के बावजूद आप का कफ़न सह़ीह़ व सालिम और जिस्म बिल्कुल तर व ताज़ा था और बहुत दूर दूर तक खुशबू महक रही थी आप बहुत सी मुफ़ीद किताबों के मुसन्निफ़ हैं जिस में बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसों को मसानीदे सह़ाबा के मुताबिक़ मुरत्तब किया है।

वाज़ेह़ रहे कि यह ह़मीदी वह ह़मीदी नहीं हैं जो इमाम बुख़ारी के उस्ताद और सुफ़यान बिन अ़ैनियह के शागिर्द हैं इमाम बुख़ारी के

उस्ताद हमीदी उन हमीदी से बहुत पहले गुज़रे हैं और उन की कुन्नीयत अबू बक्र और नाम व नसब अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर कुरैशी असदी और वतन मक्का मुकर्रमा है उन का सने वफ़ात 219 हिजरी और उन की तस्नीफ़ कर दा किताब मसनदे हमीदी है।

(बुस्तानुल मुहद्दिदसीन वग़ैरा)

57–हज़रत हुसैन बिन मसऊद बग़वी(रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नियत अबू मुहम्मद हैं बअ़सूर के रहने वाले थे इस लिए बग़वी कहलाते हैं यह ह़दीस व तफ़सीर व फ़िक्ह तीनों उ़लूम में मेअ़राजे कमाल पर पहुँचे हूए बे नज़ीर आ़लिमे दीन थे शाफ़िई मज़हब रखते थे और फ़िक्ह में क़ाज़ी हुसैन बिन मुहम्मद शाफ़िई के शागिर्दे ख़ास थे तमाम उ़म्र तस्नीफ़ और ह़दीस व तफ़सीर व फ़िक़ह के दर्स में मशगूल रहे हमेशा बा वुज़ू दर्स देते थे और उ़म्र भर यह अ़मल रहा कि सारी रात नवाफ़िल पढ़ते और दिन भर रोज़ा दार रहते ज़ुहद व क़नाअ़त का यह ह़ाल था कि इफ़्तार के वक़्त ख़ुश्क रोटी का एक टुक्ड़ा तनावुल फ़रमालेते जब लोगों ने बहुत इसरार किया कि ख़ुश्क रोटी से दिमाग़ में ख़ुश्की हो जायेगी तो बतौर सालन के रोग़ने ज़ैतून इस्तिअ़्माल फ़रमाने लगे आप की तसानीफ़ में से शरहूस्सुन्नह बहुत मशहूर है–516 हिजरी में आप का विसाल हुआ और अपने उस्ताद क़ाज़ी हुसैन शाफ़िई के मक़बरे में मदफ़ून हुए।

(बुस्तानुल मुहद्दिदसीन)

58–हज़रत ख़ुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

यह अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर स़हाबी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हू के सब से बड़े साह़बज़ादे हैं यह सहाबा में से अपने वालिद और उम्मुल मोमेनीन हज़रत बीबी आ़इशा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से और ताबिईन में कअ़ब अह़बार वग़ैरह रदियल्लाहू तआ़ला अ़न्हुम से ह़दीस रिवायत करते हैं कसीरुल इ़ल्म स़ाहिबे तक़्वा व इ़बादत गुज़ार होने के

साथ साथ आ़ला दर्जा के साहि़बे कश्फ़ व करामत भी थे यअ़्ला बिन उक़बा का बयान हैं कि मैं उन के हमराह चल रहा था कि यह नागहाँ खड़े हूए और एक दम ज़ोर ज़ोर से कहने लगे।

उस ने थोड़ा सा माँगा था उस को बहुत ज़्यादा दिया गया और ज़्यादा माँगा तो थोड़ा दिया गया फ़िर उस ने उस को नेज़ा मार दिया फ़िर ज़मीन पर पछाड़ दिया फ़िर क़त्ल कर दिया।

यअ़्ला बिन उ़क़बा कहते है कि मैंने कुछ नहीं समझा और है़रत से उन की तरफ़ देखने लगा तो मुझ को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि ऐ यअ़्ला ! देख अभी अभी उ़मर बिन सईद क़त्ल कर दिया गया मैं है़रत से उन का मुहँ तकने लगा और खामोश रहा चन्द दिनों के बअ़्द वाक़ई यह ख़बर आगई कि ठीक उसी वक़्त में उ़मर बिन सईद क़त्ल किया गया था जिस वक़्त खुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह ने उस के मक़्तूल होने की ख़बर दी थी उ़मर बिन सईद वह ज़ालिम शख़्स है जिस ने अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से जंग के लिए मक्का मुकर्रमा पर चढ़ाई की थी और कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा की बे हुरमती की थी ।

इस कि़स्म के कश्फ़ व करामात की बातें बहुत ज़्यादा खुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह से मन्क़ूल हैं और उन के बकरामत वली होने को तक़रीबन हर शख़्स़ जानता था।

आप की वफ़ात का वाकि़आ भी बड़ा ही दर्द नाक है आप की ह़क़ गोई की वजह से बनू उमय्या के ज़ालिम उमरा आप के दुश्मन हो गये थे चुनाँचे उम्वी ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुलमलिक का दौरे हुकुमत था और उस की तरफ़ से उ़मर बिन अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ ने मजबूरन वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के हुक्म की तअ़्मील की और खुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह को एक सौ कोड़े लगवाए खुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह कोड़ों की मार से निढाल हो गऐ और उनकी वफ़ात होगई

इस वाकिआ का उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के क़ल्ब पर इतना गहरा असर हूआ कि फौरन गवर्नरी से मुस्तअ़फ़ी होगए और उ़म्र भर ख़ुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह जैसे साहि़बे कश्फ़ व करामत वली को दुर्रे लगाने पर शर्मिन्दा हो हो कर कफ़े अफ़सोस मलते और रोते थे इब्ने ह़ब्बान ने ख़ुबैब बिन अ़ब्दुल्लाह का सने वफ़ात 93 हिजरी तह़रीर किया है। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

59–हज़रत ख़ालिद बिन इमरान तुजीबी(रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप अफ़रीक़ा के काज़ी और बहुत बड़े मुह़द्दिस हैं ह़दीस में सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर वहब बिन मुनब्बह व उ़र्वह बिन ज़ुबैर व अअ़मश वग़ैरह मुह़द्दिसीन के ह़लक़ा–ए–दर्स से इस्तिफ़ादा किया था और आप के शागिर्दों की जमाअ़त में यह़या बिन सईद व लैस बिन सअ़द व इब्ने लहीआ़ वग़ैरा मुहद्दिसीन हैं अ़जली व इब्ने ह़ब्बान वग़ैरा ने आप की तौसीक़ व तह़सीन फरमाई है और इब्ने यूनुस ने आप का इन लफ़्ज़ों में तआरुफ़ कराया कि आप अहले मग़रिब के फ़कीह और अहले मिस्र व मग़रिब के मुफ़ती थे और आप के बारे में आ़म तौ़र पर यह बात मशहूर थी कि आप स़ाहि़बे करामत व मुस्तजाबुददअ़वात वली हैं आप की दुआए बहुत जल्द और बहुत ज़्यादा मक़बूल होती थीं 129 हिजरी में अपकी वफ़ात हूई और आप की क़ब्रे अन्चर अफ़रीक़ा में ज़ियारत गाहे ख़लाइक़ है–

(तहज़ीबुत्तहज़ीब वग़ैरा)

60–हज़रत ख़लील बिन अह़मद नह़वी(रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

यह फ़न्ने उरूज़ के मूजिद नह़व के इमाम लुग़त के माहिर और किताबुलऔन के मुसन्निफ़ होने के साथ बहुत ही सिक़ह व मोअ़्तमद व सालिह़ मुह़द्दिस भी थे और इल्मे ह़दीस में अय्युब सख़्तियानी व आ़ज़िम अह़वाल व ग़ालिब क़त़्त़ान वग़ैरह मुह़द्दिसीन के वारिस उ़लूम व जानशीन थे और उन के तलामिज़ा में सीबवैह व नज़र बिन शमील

व हम्माद बिन ज़ैद वग़ैरह अअ्ला दर्जे के मुहद्दिसीन हैं ।

यह बहुत ही मुतवक्किल कनाअत पसन्द व गोशा नशीन बुज़ुर्ग आलिमे दीन तक़्वा व दियानत के एअ्तेबार से भी इन्तिहाई सालेह और बे हद इबादत गुज़ार थे उमय्या बिन ख़ालिद का कौल है कि बसरा में ख़लील बिन अहमद से बढ़ कर उन के हमअसरों में कोई सिक़ह व सालेह मुहद्दिस था ही नहीं और ज़ुहद व कनाअत में तो यह बिलकुल नमूना –ए–सल्फ़ थे बसरा के गवरनर ने उन के पास क़ासिद भेजा कि आप गवरमेंट हाउस में कियाम फरमाऐ और मेरे फ़रज़न्दों को तअ्लीम दें तो इस इल्म व कनाअत के बादशाह ने अपनी झोली में से एक खुश्क रोटी निकाली और गवरनर के क़ासिद को दिखा कर फ़रमाया कि तुम गवरनर से कह दो कि जब तक यह सूखी रोटी मेरे पास मौजूद है मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं है ।

175 हिजरी में उनकी वफ़ात हुई और फन्ने उरूज़ व नह्व व लुग़त व इल्मे हदीस का यह ख़ज़ाना बसरा की ज़मीन में दफ़न कर दिया गया। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

61–हज़रत ख़लफ बिन अय्युब बल्ख़ी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नीयत अबू सईद है आप अहले बल्ख़ के इमाम बहुत बड़े फकीह व मुहद्दिस और अपने दौर के अकाबिर औलिया अल्लाह में से हैं फ़िक़ह व हदीस में हज़रत इमाम अबू यूसुफ व इमाम मुहम्मद व इमाम ज़फ़र(शागिर्दाने इमाम अबू हनीफ़ा)व इस्राईल बिन यूनुस वग़ैरा फुक़हा व मुहद्दिसीन के क़ाबिले फख़्र शागिर्द हैं और इमाम अहमद बिन हमबल व यहया बिन मुईन व फक़ीह अय्यूब बिन हसन हनफ़ी वग़ैरह बाकमाल मुहद्दिसीन व फुक़हा के उस्ताद हैं।

हाफ़िज़ ज़हबी ने फ़रमाया कि ख़लफ़ बिन अय्यूब बिलाशुबह आलिमे रब्बानी थे एक मरतबा ख़ल्फ़ बिन अय्यूब इमाम अहमद बिन हमबल की मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ ले गये तो इमाम अहमद ने उठ

कर निहायत गर्मजोशी के साथ मुआनका फ़रमाया और बे हद तअ़ज़ीम की और हाज़िरीन को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि देखो ! ख़ल्फ़ बिन अय्यूब का तर्ज़ अहले जन्नत के तर्ज़ से कितना मिलता जुलता है।

एक मरतबा आप ह़म्माद बिन सल्मा की दर्स गाह में हाज़िर हुए तो उन्हों ने फ़रमाया कि खुरासान से आने वालों में आज तक ख़ल्फ़ बिन अय्यूब से बेहतर व बाअ़ज़मत शख़्स कोई मेरी मज्लिसे दर्स में नहीं आया।

ज़ुहद व क़नाअ़त और शाने इस्तिग़ना में भी आप अपने दौर के बे मिसाल आ़लिमे दीन थे ह़द होगई कि एक मरतबा बल्ख़ का बादशाह आप की ज़ियारत के लिए आप की दर्स गाह में हाज़िर हुआ तो आप ने मुँह फेर लिया और उस से बात भी नहीं की ।

205 हिजरी में आप की वफ़ात हुई जब जनाज़ा उठाया गया तो नूह़ बिन असद बादशाहे बलख़ ने बढ़ कर सब से पहले आप के जनाज़े को कान्धा दिया और खुद ही नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई जब सलाम फेरा तो फ़ज़ा में से एक ग़ैबी आवाज़ आई कि ऐ नूह़ बिन असद ! तूने रूए ज़मीन के बेहतरीन आ़लिमे दीन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई है तू बड़ा कामयाब व खुश नसीब है कि तूने ख़ल्फ़ बिन अय्यूब की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

ह़ाकिम ने तारीख़े नीशापुर में आप का सने वफ़ात 225 हिजरी और इब्ने जौज़ी ने अलमुन्तज़िम में 220 हिजरी में ज़िक्र किया है मगर मीज़ानुल एअ़्तेदाल में 205 हिजरी ही को सह़ीह़ करार दिया है वल्लाहु तआ़ला अअ़्लमु।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब वलजवाहिरुल मुज़ियह वग़ैरह)

62–हज़रत ख़तीब बग़दादी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नीयत अबू बक्र और नाम व नसब अह़मद बिन अ़ली बिन साबित बिन अह़मद बिन मेहदी है 24 ज़ीक़अ़्दा 392 हिजरी में पैदा हुए गियारह साल की उ़म्र से इल्मे ह़दीस पढ़ना शुरूअ़ कर दिया और उस इल्म की त़लब में बसरा कूफ़ा,असफ़हान, नीशापूर, हमदान, रए, मक्का मुकर्रमा मदीना मुनव्वरा, वग़ैरा की मरकज़ी दर्स गाहों में ह़ाज़िरी दी और ह़ाफ़िज़ अबूनईम साह़िबे ह़िलयतुल औलिया वग़ैरह के शागिर्दे ख़ास़ हुए और उन से इल्मी इस्तिफ़ादा करने वालों में मुह़द्दिस इब्ने माकूला बहुत ही मशहूर हैं ।

ख़तीबे बग़दादी ने मक्का मुअ़ज़्ज़माह में सहीह़ बुख़ारी को करीमा बिन्ते अह़मद मरवज़ियह से सिर्फ़ पाँच दिन में ख़त्म किया और अबू अ़ब्दुर्रह़मान इस्माईल बिन अह़मद ज़रीर ह़ीरी की ख़िदमत में सिर्फ़ बुख़ारी को ख़त्म किया कि मग़रिब के वक़्त से पढ़ना शुरूअ़ करते और नमाज़ फ़ज्र तक पढ़ते रहते दो रातें उसी तरह़ गुजरी तीसरे दिन चाश्त के वक़्त से मग़रिब तक और मग़िरब के वक़्त से सुबह़ तक पढ़ा और पूरी सहीह़ बुख़ारी ख़त्म कर डाली।

ह़ाफिज़ ज़हबी कहते हैं कि दिमाग़ की यह त़ाक़त और किरात की ऐसी महारत इन्तिहाई नादिरुलवजूद है ।

ख़तीब बग़दादी ने साठ से ज़्यादा किताबें तस्नीफ़ की हैं मगर उन की कुल तस्नीफ़ात में तारीख़े बग़दाद बेहद मशहूर है जो दर ह़क़ीक़त उन का बहूत बड़ा इल्मी शाहकार है।

मन्कूल है कि ख़तीबे बग़दादी जब ह़ज के लिए गये तो ज़मज़म शरीफ़ के कुओं के पास तीन मुरादों की दुआ माँगी अव्वल यह कि तारीख़े बग़दाद इस क़दर मक़बूल हो कि उ़लमा उस की रिवायत करें दूसरे यह कि जामेअ़् मस्जिद मन्सूर बग़दाद में मुझे तअ़्लीमे ह़दीस का शरफ़ ह़ासिल हो तीसरे यह कि मेरी क़ब्र हज़रत बशर हाफी

अ़लैहिर्रहमा की क़ब्र के मुत्तसि़ल हो आप की यह तीनों दुआ़ऐं मक़बूल हो गईं चुनाँचे तारीख़े बग़दाद की मक़बूलीयत का ह़ाल इस से ज़ाहिर है कि उस ज़माने के बूज़ुर्गो में से किसी ने यह ख़्वाब देखा कि ख़तीबे बग़दादी की दर्सगाह में तारीख़े बग़दाद की क़िरअ़त के लिए लोग ह़ाज़िर हैं और उस मज्लिस में शैख़े नस़्र बिन इबराहीम मुक़द्दसी भी तशरीफ़लाए हैं और एक निहायत ही हैबत व जलाल वाले बुजुर्ग भी मज्लिस में रौनक़ अफ़रोज़ हैं जिन के जमाल से आँखें मुनव्वर हो जाती हैं उन के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो लोगों ने बताया कि यह हुजूर सरवरे काइनात स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वस़ल्लम हैं जो तारीख़े बग़दाद सुनने के लिए तशरीफ़ लाए हैं

सुब्हानल्लाहि! मक़बूलीयत का यह वह अअ़्ला शरफ़ जो ख़तीबे बग़दाद और उनकी किताब तारीख़े बग़दाद को ह़ासिल है यक़ीनन उस पर दोनों जहान की नेअ़्मतें क़ुरबान हैं बग़दाद की जामेअ़् मस्जिद मन्सूर में आप की मज्लिस क़ाइम हूई और बग़दाद में आप के उ़रूज का यह आ़लम था कि बादशाह ने यह हुक्म दे दिया था कि कोई वाइज़ कोई ख़तीब कोई मुह़द्दिस उस वक़्त तक वअ़्ज़ व ख़ुत्बा व दर्से ह़दीस की मज्लिस नहीं क़ाईम कर सकता जब तक वह ख़तीबे बग़दादी से इजाज़त नामा ह़सिल न करे उसी त़रह़ आप की तीसरी मुराद भी पूरी होगई और आप को ह़ज़रत ह़ाफ़ी अ़लैहिर्रह़मा के पहलू में दफ़न की ज़गह मिल गई उस का वाक़ेआ भी बड़ा अ़जीब है जब आप का इन्तिक़ाल हुआ तो ह़जरते बशर ह़ाफी अ़लैहिर्रह़मा की क़बर के पास एक क़बर की जगह भी बाक़ी नहीं थी सिर्फ़ एक पुख़्ता कब्र की जगह थी जो बग़दाद के एक सालेह़ नो जोवान ने अपने लिए पहले ही तैयार कर रखी थी उस के सिवा कोई जगह नहीं थी लोगों ने नौ जवान से यह जगह देने की दरख़्वास्त की तो उस ने मनअ़् कर दिया फिर अहले बग़दाद ने उस नो "जवान सालेह़ के बाप से मुलाक़ात की और ख़तीबे बग़दादी की तमन्ना का ज़िक्र किया तो बाप

ने अपने सालिह़ फरज़न्द को बुला कर फ़रमाया कि ऐ नूरे नज़र ! तुम बताओ के अगर हज़रत बशर हाफ़ी ज़िन्दा होते और उन की मसनद के पास सिर्फ़ एक ही आदमी के बैठने की जगह होती तो उस ख़ाली जगह में तुम बैठते या ख़तीब बग़दादी ? तो नो जवान सालेह़ ने जवाब दिया कि ख़तीब बग़दादी के होते हुए मुझे वह जगह हरगिज़ नहीं मिलती तो बाप ने कहा कि ऐ फ़रज़न्द स़ालेह यही सूरत अब भी है कि हज़रत बशर ह़ाफी की क़ब्र के पहलू में उस एक क़ब्र के सिवा दूसरी कोई जगह खाली नहीं है तो फ़िर तुम ही बताओ कि तुम उस जगह के ज़्यादा मुस्तह़क हो या ख़तीबे बग़दादी ? लड़के ने बाप की तक़रीर सुन कर बखुशी इजाज़त दे दी कि उस कब्र में ख़तीब बग़दादी को दफ़न किया जाए चुनाँचे उसी क़ब्र में खतीबे बग़दादी दफ़्न हूए।

ख़तीबे बग़दादी बहुत मालदार शख़्स थे और इल्मे ह़दीस के तल्बा व मुह़द्दिसीन पर बे दरैग़ माल ख़र्च करते थे जिस वक्त बीमार हुए तो चूँके उन का कोई वारिस नहीं था इस लिए अपनी तमाम किताबों को वक़्फ कर दिया और अपना सारा माल खुदा की राह में ख़र्च कर दिया।

इबादत का ज़ौक़ भी करामत की ह़द तक पहुँचा हूआ था सफ़र व ह़ज़ में हर रोज़ तरतील व तजवीद के साथ रोज़ाना बिला नाग़ा एक ख़त्म क़ुर्आन मजीद की तिलावत करते थे जिस को तमाम लोग लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ सुनते थे सफ़र की तकान और बीमारी की ह़ालत में भी आप अपने विर्द का नाग़ा नहीं फ़रमाते थे ।

7ज़िलहिज्जह 462 हिजरी को आप ने रेह़लत फ़रमाई शैख़ अबूइस्हाक़ शीराज़ी ने सब से पहले आप के जनाज़े को कान्धे पर उठाया आप की वफ़ात के बअ़द बग़दाद के औलिया में से किसी ने आप को ख़्वाब में देखा और ह़ाल दरयाफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया انا فی رَوْحٍ وَرَيْحَانٍ وَجَنَّةِ نَعِيم (यअ़नी मैं राहत व आराम और नेअ़मतों की जन्नत में हूँ (बुस्तानुलमुह़द्दिसीन)

63–हज़रत दाऊद ताई (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबू सुलैमान दाऊद बिन नसीर ताई कूफ़ा के मशहूर फ़क़ीह और नामवर आबिद व ज़ादि हैं यह हज़रते इमामे अअ्ज़म अबूहनीफ़ा के अर्शद तलामिज़ा में से हैं और इल्मे हदीस में अअ्मश व हमीद तवील व अब्दुल मलिक बिन उमैर वग़ैरह से भी इस्तिफ़ादा किया है और सुफ़यान बिन अैनीया व इब्ने उलया व वकीअ् वग़ैरह के उस्ताद हैं

यह इब्तेदा में तअ्लीम व तअल्लुम के बहुत ही शैदाई थे और फ़िक़्ह व हदीस के बहुत नामवर मुअल्लिम थे लेकिन फ़िर एक दम इल्मी मशग़ला छोड़ कर हमा तन इबादत में मशगूल हो गये यहाँ तक कि कूफ़ा मैं फ़क़ीह ज़ाहिद के लक़ब से मशहूर हुए उन के ज़ुहद व

क़नाअत का अजीब आलम था अता बिन मुस्लिम कहते हैं हम जब भी दाऊद ताई के मकान पर गये तो उस के सिवा हमें कोई सामान नज़र नहीं आया कि एक चटाई बिछी हूई है और उस पर तकिया के लिए एक ईंट रखी हूई हैं और एक झोली में खुश्क रोटी के चन्द टुकड़े पड़े हूए हैं और एक लोटा है जिस से वह वुज़ू व इस्तिनजा भी फ़रमाते हैं और उसी से पानी भी पीतें है।

बीस साल का बजट बीस दीनार

उन को अपने वालिद की मीरास में से बीस दीनार मिले थे उसी रक़म को उन्होंने बीस साल तक ख़र्च किया और उम्र भर न कभी किसी बादशाह का नज़राना लिया न दोस्तों का हदिया क़बूल किया और इस तरह ज़िन्दगी बसर फ़रमाई के मुहारिब बिन दिसार फ़रमाया करते थे कि अगर दाऊद ताई अगली उम्मतों में होते तो ज़रूर अल्लाह तआला क़ुर्आन में उन का क़िस्सा बयान फ़रमाता।

अबूनईम ने उन का सने वफ़ात 160 हिजरी बताया और इब्ने नमीर का क़ौल है कि 165 हिजरी में उन का विसाल हूआ वल्लाहु

तआला अअ्लमु (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

64–हज़रत दाऊद बिन अत्की (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नीयत अबू सुलैमान और वत़न बसरा है यह ह़म्माद ज़ैद व अ़ब्दुलवारिस वग़ैरह मुह़द्दिसीन के शागिर्द और इमाम अबू दाऊद ह़ातिम व जअ़फ़र फरयाबी वग़ैरा उलमाऐ ह़दीस के शैख़ हैं इमाम निसाई वग़ैरह ने उन को सिक़ा मुह़द्दिस बताया और इस्माईल हरवी ने फ़रमाया के दाऊद बिन मआ़ज़ अपने दौर में सब आ़लिमों से अफ़ज़ल थे और इबादत व रियाज़त में तो अपनी मिसाल नहीं रखते थे तमाम उ़म्र रोज़ा रखा और कभी बिस्तर पर पीठ लगा कर नहीं सोये और ज़िन्दगी भर, बग़ैर सालन के रोटी खाई और ख़ौफे इलाही से चालीस साल तक सर उठा कर आसमान की त़रफ़ नहीं देखा इमाम अह़मद बिन ह़मबल की त़रह ख़ल्क़े क़ुर्आन के फितने में उन को भी कोड़े लगाए गये थे और क़ैद खाने में उन पर भी बड़े बड़े मज़ालिम के पहाड़ तोड़े गये लेकिन इमाम अह़मद बिन ह़मबल की त़रह़ यह भी स़ब्र व इस्तिक़ामत का पहाड़ बन कर तमाम तकलीफ़ों को बरदाश्त करते रहे ओर आ़खिर दिन तक ह़क़ पर साबित क़दम रहे । (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

65हजरत दारे कुत्नी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबुल ह़सन और नाम व नसब अ़ली बिन अह़मद है बग़दाद के मुह़ल्ले दारुल कुतन में रहते थे इस लिए दारे कुत्नी कहलाते हैं शाफियुल मज़हब थे 306 हिजरी में पैदा हुए और अबुल क़ासिम बग़वी व अबूबकर बिन दाऊद महामंली वगै़रह मुह़द्दिसीन से ह़दीस की समाअ़त की और बग़दाद के इलावह बस्रह व मिस्र व शाम वग़ैरह के इल्मी मरकज़ों का दौरा कर के बहुत से फुक़हा व मुह़द्दिसीन से भी इल्म ह़ासिल किया और ह़ाकिम व इमाम राज़ी व अबूनईम वग़ैरह मुह़द्दिसीन उन के ह़लक़ा दर्स के फ़ैज़

याफ़्ता हैं यह इल्मे हदीस के इलावा फन्ने नह़ व क़िरअ़त में भी कामिल महारत रखते थे ह़ाफ़िज़ा बेह़द क़वी था चुनाँचे मन्कूल है कि यह एक दिन इस्माईल सिफ़ार मुहद्दिस की दर्स गाह में ह़ाज़िर हो कर अह़ादीस लिख रहे थे जब सोलह स़फहात के क़रीब लिख चुके तो इस्माईल सिफ़ार ने फरमाया के दारे कुत्नी ! तुम लिखने में इस क़दर मशगूल रहते हो कि न अच्छी त़रह़ ह़दीसों को सुनते हो न समझते हो तो दारे कुत्नी ने अ़र्ज़ किया कि जनाब को याद है कि इस वक़्त आप ने कित्नी ह़दीसें लिखाई हैं ? इस्माईल सिफ़ार ने फ़रमाया कि मुझ को तो याद नहीं दारे कुत्नी ने अ़र्ज़ किया कि जनाब ने इस वक़्त तक अठारह ह़दीसें लिखवाई हैं पहली ह़दीस फ़लाँ अ़न फ़लाँ हैं इसी त़रह अठारह हदीसों की पूरी सनदें मअ़ मतने ह़दीस अपने ह़िफ्ज़ से ज़ुबानी पढ़ कर सुना दी इस्माईल सिफ़ार ने और तमाम ह़ाज़िरीने मजलिस उन की कुव्वते ह़ाफ़िज़ा पर ह़ैरान व मुतअ़ज्जिब रह गये।

उन के लताइफ़ में से एक यह है कि अबुल ह़सन बैज़ावी एक त़ालिबे इल्म को उन की ख़िदमत में अह़ादीस लिखने के लिए लाये पहले तो दारे कुतनी ने टाला मगर जब अबुल ह़सन बैज़ावी ने इस़रार किया तो दारे कुत्नी ने बीस सनदें उस त़ालिबे इल्म को ऐसी लिखवाई जिन में हर सनद का मतने हदीस यह था कि نعم الشئ الهدية امام الحاجة 'यअ़नी'' अपनी हाजत से क़ब्ल कुछ हदिया पेश करना बहुत अच्छी बात है)दूसरे दिन यह त़ालिबे इल्म कुछ हदिया ले कर ह़ाज़िर हुआ तो सत्तरह सनदें लिखवाई और उन सब का मतन यह था कि اذااتا کم کریم قومفا کرموه 'यअ़नी'' 'जब तुम्हारे पास किसी क़ौम का मुअ़ज़्ज़ज आदमी आए तो उसकी इ़ज़्ज़त करो।

इस वाक़िआ से दारे कुत्नी के तबह़हुरे इ़ल्मी का अन्दजा लगाया

जा सकता है चुनाँचे हाकिम व ख़तीबे बग़दादी वग़ैरा फन्ने हदीस के बड़े बड़े इमामों ने दारे कुत्नी के इल्म व फ़ज़ल की वुस्अ़त और इल्मी महारत की शहादत दी है दारे कुत्नी साहिबे तसानीफ़ भी हैं और उन किताबों में सुनने दारे कुतनी बहुत मशहूर व मअ़रूफ़ है।

8ज़िलक़अ़दा बरोज़ जुमेअ़रात 385हिजरी को उन की वफ़ात हूई हाफ़िज़ अबू नस्र बिन माकूला मुहद्दिस का बयान है कि मैंने उनकी वफ़ात के बअ़द ख़्वाब देखा कि मैंने फ़रिश्तों से मुलाक़ात की और दारे कुत्नी का हाल पूछा कि आख़िरत में उन के साथ क्या मुआम्ला हूआ ? तो फ़रिश्तों ने जवाब दिया कि जन्नत में उन का लक़ब इमाम है। (बुस्तानुल मुहद्दिसीन)

66—हज़रत ज़कवान मदनी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबू सालेह और लक़ब सुम्मान व ज़ियात है यह ताबेई हैं और हज़रत अबू हुरैरह व अबूदर्दा व अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु तआला अन्हुम के शागिर्द हैं और उन के शागिर्दों में ज़हरी व अअ़मश व अ़ताबिन रिबाह जैसे जय्यद व बाकमाल मुहद्दिसीन हैं

इब्ने मुईन व अबू हातिम व अबू ज़ुरआ व इब्ने सअ़द वग़ैरह हदीस के इमामों ने उन की वुसअ़ते इल्म व जलालते शान की शहादत दी और उन को सिक़ह व सालेह व कसीरूल हदीस व मुस्तकीमुर्रिवायत लिखा यह बहुत ही रक़ीकुलक़ल्ब थे और उन पर खौफ़े इलाही का बड़ा ग़लबा था अअ़मश का बयान है कि यह अपनी मस्जिद में पन्ज वक़्ता लेवज्हिल्ला अज़ान देते थे एक दिन इमाम के आने में ताख़ीर होगई तो लोगों ने उन को इमामत के लिए खड़ा करदिया किरअ़त शुरूअ़ करते ही उन पर इस क़दर रिक़्क़त तारी होगई कि कसरते गिरया से किरअ़त नहीं फ़रमा सके यह अमीरों व सलातीन के नज़रानों से बेहद मुतनफ़्फ़िर थे और दोस्तों के हदाया व तहाइफ़ से भी परहेज़ फ़रमाते थे अपने ज़रीआ

मआश के लिए घी और रोग़ने ज़ैतून कुफ़े में लाकर फ़रोख़्त किया करते थे उसी लिए सम्मान (घी वाला) और ज़ियात (रोग़ने ज़ैतून वाला)कहलाते थे 101 हिजरी में वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

67—हज़रत रिब्ई बिन ह़राश (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

आपकी कुन्नीयत अबू मरयम और नाम व नसब रिबई बिन ह़राश बिन जह़श अ़ब्सी है कूफ़ा के रहने वाले जलीलुलक़दर ताबिई हैं और इल्मे ह़दीस में उ़मर ह़ज़रत अ़ली व अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द व अबू मूसा अशअ़री वग़ैरह किबार सह़ाबा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के शागिर्दे रशीद हैं और आप के शागिर्दों में मन्सूर बिन मोअ़्तमर बहुत नामवर हैं जो शोअ़्बा वग़ैरा बलन्द मरतबा मुह़द्दिसीन के उस्ताद हैं।

आप बहुत ही मुत्तक़ी इबादत व रियाज़त में मुमताज़ और साह़िबे करामात थे ज़िन्दगी भर में कभी कोई झूट आप की ज़ुबान पर नहीं आया आप की एक मशहूर करामत यह है कि आप ने क़सम खाई थी कि मैं इस वक़्त तक नहीं हँसूँगा जब तक मुझे यह न मअ़्लूम होजाए कि मैं जन्नती हूँ चुनाँचे तमाम उ़म्र में कभी नहीं हँसे मगर इन्तिक़ाल के बअ़्द आप के ग़ुस्ल देने वालों का बयान है कि जब तक हम लोग उन्हें ग़ुस्ल देते रहे वह बराबर लगातार मुस्कुरा मुस्कुरा कर हँसते रहे 101 हिजरी में या104हिजरी में उन की वफ़ात हूई (नौवी तहज़ीबुत्तहज़ीब)

68—हज़रत रबीअ़् बिन हराश (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

यह मज़कूरा बाबा रिब्ई बिन ह़राश के भाई हैं यह भी मुहदिदस है और सलाह़ व तक़्वा में मुमताज़ साहिबे इबादत व करामत बुज़ुर्ग थे उन्होंने भी अपने भाई की त़रह क़सम खाली थी कि जब तक मुझे यक़ीन न होजाए कि मेरा ठिकाना जन्नत में है मैं हरगिज़ नहीं हँसूँगा चुनाँचे यह भी उ़म्र भर कभी नहीं हँसे मगर वफ़ात के बअ़्द ग़ुस्साल ने ग़ुस्ल देने के लिए आप को तख़्त पर लिटाया तो यह सब के सामने मुस्कुराते रहे और हँसते रहे और ह़ाज़िरीन उन की इस करामत

पर हैरान हो कर तअज्जुब करते रहे उन के एक भाई का नाम मसऊद बिन हिराश है यह भी मुहद्दिस व साहिबे करामत थे उन की एक मशहूर करामत यह है कि वफ़ात के बअ्द उन्होंने दफ़न से कुछ पहले लोगों से बात चीत की।

गुर्ज़ रिब्ई बिन हराश व रबीअ बिन हराश व मसऊद बिन हराश तीनों भाई मुहद्दिस व बा करामत साहिबे विलायत थे – (नोवी व तब्क़ाते शेअ्रानी)

69–हज़रत रबीअ् सबीह सअ्दी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नीयत अबू बक्र वतन बसरा है उन्होंने इल्मे हदीस हसन बसरा व हमीदी तवील व साबित बनानी वग़ैरह से सीखा और उन से इल्मी इस्तिफ़ादा कर ने वालों में इमाम अबूदाऊद व अब्दुल्लाह बिन मुबारक व वकीअ् जैसे बाकमाल अइम्मा –ए–हदीस हैं ।

यह बहुत बहादूर और बड़े ज़बर दस्त मुजाहिद थे मुहम्मद बिन मुसन्ना व इब्ने सअ्द का बयान है कि यह सिन्ध जिहाद में शरीक हुए थे और समन्दर में 160 हिजरी में उन की वफ़ात हुई और एक जज़ीरे में मदफून हूए बहुत नेक व सालेह मुहद्दिस और अअ्ला दरजे के इबादत गुज़ार बुज़ुर्ग थे इब्ने हब्बान का क़ौल है कि यह बसरा के बे नज़ीर ज़ाहिद और बे मिसाल आबिद थे रात को उन के घर में से तिलावत की कसरत और तहज्जुद के बाइस शहद की मक्खी के छत्तों की सी आवाज़ आती थी घर में बच्चा बच्चा आबिद शब ज़िन्दा दार व तहज्जुद गुज़ार था (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

70—हज़रत रबीअ् बिन नाफ़ेअ् हलबी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नीयत अबू तोबा है और उन्होंने त़रतूस को अपना वत़न बनालिया था अबूइस्हाक़ फ़राज़ी व मुआविया बिन सलाम व सुफ़यान बिन ऐनीया वग़ैरा मुह़द्दिसीन के ह़ल्क़ा दर्स में इल्मे ह़दीस पढ़ा और अबूदाऊद साहि़बुस्सुनन उन के ख़ासुलख़ास शागिर्द हैं और इमाम बुख़ारी व मुस्लिम व निसाई व इब्ने माजा भी बिलवास्ता उन के तलामिज़ा में हैं अबू हा़तिम ने उन को सिक़ा व सा़दिक़ व हुज्जत फ़रमाया और इमाम अबूदाऊद का बयान है कि लम्बी लम्बी ह़दीसें उन्हें खूब याद थीं।

यह हमेशा नंगे पाँव चलते फ़िरते थे उ़म्र भर कभी जूती नहीं पहनी और टोपी बहुत ऊँची पहनते थे और उन के बारे में अ़वाम व ख़वास का यह क़ौल था कि यह साहि़बे करामत वली और अब्दाल में से हैं 241 हिजरी में वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

71—हज़रत ज़ुरारह बिन अबी औफ़ा (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नीयत अबू हा़जिब है बस़री ताबिई़ हैं और सहा़बा किराम खुसूसन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हुम से शरफ़े तलम्मुज़ रखते हैं और आप के तलामिज़ा में क़तादा व औफ़ बहुत मशहूर मुह़द्दिसीन हैं।

आप बसरा के क़ाज़ी भी थे और क़बीला बनी कुशैर की मस्जिद में लिवजहिल्ला इमामत फ़रमाते थे।

निहायत ही आ़बिद व ज़ाहिद और खौफ़ व ख़शीयते इलाही में डूबे हुए आ़लिमे बाअ़मल थे तिलावते कुर्आन मजीद के वक़्त वई़द व अ़ज़ाब की आयतें पढ़ कर लरज़ा बर अन्दाम बल्कि कभी कभी ख़ौफ़े इलाही से बेहोश हो जाते थे बहज़ बिन ह़कीम का बयान है कि एक दिन की फ़ज्र की नमाज़ में उन्होंने 0 فاذا نقر فی الناقور لا فذالک "يومئذ يوم عسير" की आयत तिलावत फ़रमाई जिस का तर्जमा यह

है कि जिस दिन सूर फूँका जाऐगा वह बहुत ही सख़्त दिन होगा यह आयत पढ़ते ही आप पर हालते नमाज़ में इस क़दर खौफ़े खुदावन्दी का ग़ल्बा हुआ कि लरज़ते काँपते हुए ज़मीन पर गिर पड़े और आप की रूह परवाज़ कर गई बहज़ बिन हकीम कहते हैं कि मैं भी उन की नअ़श मुबारक को मस्जिद से घर तक उठा कर ले जाने वालों में शामिल था यह वाक़िआ 93 हिजरी में हुआ।

(इकमाल व तिर्मिज़ी शरीफ)

72–हज़रत जुहरी (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

आप की कुन्नीयत अबू बक्र और नाम व नसब मुहम्मद बिन उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन शहाब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जुहरा बिन किलाब है जुहरी आप का मशहूर लक़ब और आप का वतन मदीना मुनव्वरा है ताबिई मुहद्दिसीन में आप बहुत ही जलीलुल क़द्र व अ़ज़ीमुलमरतबत आ़लिमे दीन और इल्मे हदीस में अपने दौर के मशहूर मुक़्तदा व इमाम हैं इमाम मालिक व क़तादा जैसे अइम्मा हदीस व फ़िकह ने आप की सोहबत व शागिर्दी का शरफ़ हासिल किया तक़रीबन दस सहाबा किराम और सैकड़ों किबार ताबिअ़ीन से आप ने अहादीस समाअ़त फ़रमाई और हज़ारहा ताबिअ़ीन आप के हलक़ा–ए–दर्स में शमिल हुए।

आप की इल्मी जलालत और इल्मे हदीस में महारत का अन्दाज़ा इस से लगाया जासकता है कि इमाम मकहूल से लोगों ने सवाल किया कि आप की नज़र में सब से बड़ा आ़लिम कौन है ? तो आप ने जवाब दिया कि मुहम्मद बिन शहाब जुहरी ! लोगों ने पूछा फिर उन के बअ़्द तो फ़रमाया कि मुहम्मद बिन शहाब जुहरी।

इमाम निसाई का बयान है कि दुनिया भर में सब से बेहतरीन हदीस की सनदें चार हैं।

الزهری عن علی بن الحسین عن ابیه (۲) الزهری عن عبید الله

ابن عباس (۳) ایوب عن محمد عن عبیدة عن علی (۴) منصور عن ابراهیم عن علقمه عن عبد الله بن مسعود .

मज़कूरा बाला चार बेहतरीन सनदों में से दो में जुहरी मौजूद हैं ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुलअज़ीज़ अकसर अपनी मज्लिसों में फ़रमाया करते थे कि जुहरी से ज़्यादा अहादीस का जानने वाला अब कोई बाक़ी नहीं रहा उसी तरह इमाम मालिक व लैस वग़ैरह ह़दीस के इमामों ने भी जुहरी के इल्म व फ़ज़्ल और इबादत व सख़ावत की मदह़ व तारीफ़ फ़रमाई

नोवी का बयान है कि इल्म व हिफ़्ज़ इत्क़ान व सब्र इज़तिहाद व तक़वा इबादत व सख़ावत वग़ैरह में आप के अह़वाल बे शुमार व मशहूरे आफ़ाक हैं आख़िरी उम्र में आप ने मदीना मुनव्वरा से मुन्तक़िल हो कर शाम में सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई थी जहाँ रमज़ान 124 हिजरी में आप का इन्तिक़ाल हुआ।

(नोवी, इकमाल, तहज़ीबुत्तहज़ीब वग़ैरा)

73–हज़रत ज़ुबैद बिन ह़ारिस कूफ़ी(रह़मतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उनकी कुन्नीयत अबू अ़ब्दुर्रह़मान या अबू अ़ब्दुल्ला है और वतन कूफ़ा है यह मुर्रा बिन शराहील व अ़बूवाइल व इबराहीम नख़ई व इबराहीम तैमी व मुजाहिद वग़ैरा बा कमाल उ़लमाए ह़दीस की दर्सगाहों के फ़ैज़ याफ़्ता हैं और शोअ़बह व सुफ़यान सौरी व मन्सूर व अअ़मश वग़ैरा के ह़दीस है।

शोअ़बा का क़ौल है कि मुझे कूफ़ा में ज़ुबैद बिन ह़ारिस से अफ़ज़ल व बेहतर कोई उस्तादे ह़दीस नज़र नहीं आया।

इब्ने ह़ब्बान ने उन को सिक़ाते मुह़दिदसीन की फ़ेहरिस्त में लिख कर फ़रमाया कि यह बेह़द इबादत गुज़ार और इन्तिहाई सालेह़ व मुत्तक़ी आ़लिमे ह़दीस थे इब्ने शुब्रमा कहते हैं कि ज़ूबैद बिन ह़ारिस रात भर नफ़्ल नमाज़ पढ़ा करते थे अबू नईम का क़ौल है कि 122

हिजरी में उन की वफ़ात हुई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

74–हरत जुहरा बिन मअ़ब्बद मदनी(रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबू अ़कील और वतन मदीना मुनव्वरह है लेकिन आख़िरी उम्र में उन्हों ने मिस्र को अपना वतन बनाया था यह ताबेई हैं और इल्मे ह़दीस के लिए अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर व अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की सोहबत व शागिदी इख़्तियार की और सईद बिन मुसय्यब व उ़मर बिन अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ वग़ैरह ताबेईन से भी इल्मी फ़ैज़ उठाया और उन की दर्सगाहों से इल्मी इस्तिफ़ादा करने वालों में हैवह बिन शरीह़ व लैस क़ाबिले ज़िक्र है इमाम निसाई, व अबूहातिम वग़ैरह ने उन को मोअ़तमद, दुरुस्त ह़दीसों वाला और सच्चा लिखा और अबू मुहम्मद दारमी का क़ौल है कि उन के बारे में आ़म तौर पर मुहद्दिसीन का यही ख़याल था कि यह बाकरामत वली और त़ब्क़ा–ए–अब्दाल में से हैं यह इस्कन्दरिया गए थे जहाँ 127 हिजरी या 125 हिजरी में उन की वफ़ात हुई और इस्कन्दरिया ही में मदफून हूए (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

75–हज़रत ज़ियाद बिन अबी ज़ियाद मख़ज़ूमी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन का वत़न मदीना मुनव्वरह है लेकिन यह दमिश्क़ में आकर मुक़ीम हो गए थे यह इल्मे ह़दीस में मुहम्मद बिन कअ़ब क़र्ज़ी व अबूलजरयह वग़ैरा से तलम्मुज़ रखते हैं और इमाम मालिक व मुहम्मद बिन इस्हाक़ वग़ैरा ने उन से रिवायत की है।

इमाम निसाई व इब्ने ह़ब्बान ने उन को क़ाबिले एअ़तेमाद और आ़बिद व ज़ाहिद बुज़ुर्ग तहरीर फ़रमाया उ़मर इब्ने अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ उन के इल्म व फ़ज़्ल और तक़वा व इबादत की वजह से उन की बहुत ज़्यादा तअ़ज़ीम करते थे ।

यह बहुत ही गोशा नशीन व क़नाअ़त पसन्द मुह़द्दिस थे और इल्म व अ़मल के एअ़तेबार से एक बेमिसाल और क़ाबिले तक़लीद

इबातद गुज़ार साहिबे इल्म थे आम तौर पर लोग उन को अपने ज़माने का फ़ज़लुन्नास और बाकरामत वली समझते थे और मुहद्दिसीन तो उन को अबदाल में शुमार करते थे उन्हों ने 135 हिजरी में वफ़ात पाई और दमिश्क़ में दफ़न किए गये। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

76—हज़रत इमाम ज़ुफ़र (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप का नसब नामा ज़ुफ़र बिन हूज़ैल बिन क़ैस बिन सुलैम बिन क़ैस बिन ज़ुहल अ़मबरी है और लक़ब फ़कीहे हन्फ़ी है यह हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा के बहुत ही महबूब व मोअ़तमद शागिर्द हैं हसन बिन ज़ियाद का बयान है कि इमाम अबू हनीफ़ा की मज्लिस में सब से आगे इमाम ज़ुफ़र बैठते थे और इमाम अबूहनीफ़ा हर मौके पर इमाम ज़ुफ़र की तअ़ज़ीम और मदह व सना फ़रमाते थे।

मन्कूल है कि इमाम ज़ुफ़र ने अपनी शादी में इमाम अबूहनीफ़ा को मदऊ किया और इमाम ममदूह ने निकाह का खुत्बा पढ़ाया तो खुत्बे में इरशाद फ़रमाया कि ऐ हाज़ेरीन ! यह ज़ुफ़र हैं यह मुस्लमानों के इमामों में से एक इमाम हैं और शरफ़े हसब व नसब की बलन्दी और इल्मी जलालत के लिहाज़ से मुसलमानों की अ़ज़मत का एक निशान हैं ।

इब्ने ख़लकान ने फ़रमाया कि पहले इमाम ज़ुफ़र उ़लमाऐ हदीस में से फ़िर इमाम अबूहनीफ़ा की सोहबत में मसाइल फ़िक़ह पर उ़बूर कर के दर्जा ए इजतिहादी हासिल कर लिया।

हदीस व फ़िकह में इमामत का दर्जा रखने के साथ साथ ज़ुहद व तक़वा और इ़बादत व रियाज़त में भी बे मिसाल थे हसन बिन ज़ियाद फ़रमाते हैं कि ज़ुफ़र व दाऊद ताई दोनों एक साथ इमामे अबुहनीफ़ा की ख़िदमत में हदीस व फ़िक़ह का दर्स लेते थे और दोनों में भाई चारा भी था फ़िर दाऊद ताई तो इल्मी मशग़ला छोड़ कर बिल्कुल इबादत में मशगूल होगये लेकिन इमाम ज़ुफ़र इल्म व

इबादत दोनों के जामेअ् हुए।

क़ाज़ी यहया बिन अकसम कहते हैं मैंने वकीअ् मुहद्दिस को उन की आखिरी उ़म्र में देखा कि वह रोज़ाना सुबह को इमाम ज़ुफ़र की मज्लिस में हाज़िरी देते और शाम को इमाम अबू यूसुफ की दर्सगाहों में हाज़िर रहते उस के बअ्द फ़िर सुबह व शाम दोनों वक़्त इमाम ज़ुफ़र ही की दर्स गाह में जाने लगे इमाम ज़ुफ़र के ज़ुहद व तक़्वा का यह आलम था कि दो मरतबा ह़कूमते वक़्त ने उन को क़ाज़ी बनने पर मजबूर किया मगर दोंनों मरतबा उन्हों ने अपने उस्ताद ह़ज़रत इमाम अबूह़नीफ़ा की तरह़ सरकारी ओ़ह़दा क़बूल करने से साफ़ इन्कार कर दिया और वतन छोड़ कर किसी पोशीदा मक़ाम में रूपोश हो गये और दोनों मरतबा हुकूमत ने मारे गुस्से के उन का मकान मुन्हदिम और बरबाद करादिया चुनाँचे दो मरतबा उन को अपना मकान तअ्मीर कराना पड़ा।

यह अस़ल में कूफ़े के बाशिन्दे थे मगर अपने भाई की मीरास लेने के लिए बसरा गए तो बस़रा वालों ने किसी त़रह़ उन को बस़रा से निकलने नहीं दिया यहाँ तक कि यह बस़रा के मुतवत्तिन हो गये और 158 हिजरी में वफ़ात पाकर बस़रा ही में मदफून हुए(तबस़रा तुददरायह वगै़रा)

77–ह़ज़रत ज़ुहैर बिन मुह़म्मद मरुज़ी (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबू मुह़म्मद या अ़ब्दुर्रह़मान है यह इल्मे ह़दीस की त़लब में मरू से बग़दाद आये थे और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ व रौह़ बिन उ़बादा व क़अ्नबी व अबू नज़र वग़ैरा मुह़द्दिसीन के शागिर्द हुए और इमाम इब्ने माजा व अ़ब्दुल्लाह इब्ने अह़मद व इमाम बग़वी वग़ैरा उ़लमा–ए–अहले ह़दीस ने उन की शागिर्दी इख़्तियार फ़रमाई।

इमाम बग़वी फ़रमाया करते थे कि बग़दाद में इमाम अह़मद बिन ह़मबल के बअ्द ज़ुहैर बिन मुह़म्मद से बढ़ कर साहिबे इल्म व अ़मल कोई शख़्स मुझे नज़र नहीं आया उन को जिहाद का बहुत शौक़

चुनाँचे फ़रमांया करते थे कि चालीस बरस से गोश्त खाने को मेरा दिल चाहता है लेकिन मैं उस वक़्त तक गोश्त नहीं खाऊँगा जब तक इस्लामी लश्कर के साथ मुल्के रुम को फतह़ कर के क़िलेअ़ में दाख़िल न हो जाऊँगा उस के माले ग़नीमत से गोश्त ख़रीद कर खाऊँगा चुनाँचे आख़िरी उ़म्र में बग़दाद से तरतौस रवाना हो गये और वहाँ मुजाहिदीन के घुड़ सवारों के दस्ते में शामिल हो कर जिहाद में शरीक़ हो गये और 258हिजरी में बहालते जिहाद तरतौस ही में वफ़ात पाई ।

ख़तीब का क़ौल है कि यह सिक़ह व सा़दिक़ मुह़दिदस और बहुत ही मुत्तक़ी आ़बिद व ज़ाहिद आ़लिमे ह़दीस थे यह रमज़ान शरीफ में दिन रात मिलाकर रोज़ाना तीन ख़त्म कुर्आन मजीद की तिलावत करते थे और हमेशा हर साल सिर्फ़ रमज़ान शरीफ़ में नव्वे ख़त्म कुर्आन मजीद पढ़ा करते और साल के दूसरे दिनों में भी ज़्यादा से ज़्यादा तिलावते कुर्आनमजीद का शुग्ल रखते थे ।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब, वतज़किरतुलहुफ्फाज़)

78—हज़रत सईद बिन मुसैयब (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप अमीरुल मोमेनीन हज़रत उ़मर रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िलाफ़त के दूसरे साल मदीना मुन्व्वरा में पैदा हुए जलीलुलक़दर ताबेई़ बल्कि सैयदुत्ताबेई़न हैं फ़िक़ व ह़दीस और ज़ुहद व इ़बादत चारों मैदानों के शहसवार हैं हज़रते अबू हुरैरा और दुसरे बड़े बड़े सहाबा किराम रदि़यल्लह त़आ़ला अ़न्हुम के शागिर्दे रशीद हैं इमाम ज़ुहरी इमाम मकह़ूल वग़ैरा ह़ज़ारों बाकमाल ताबिई़न व तबअ़े ताबिई़न को आप की शागिर्दी का शरफ़ ह़ासिल हैं आप के तिलमीज़े बा तमीज़ इमाम मकहूल का बयान है कि मैंने इ़ल्मे ह़दीस की त़लब में सारा जहान छान मारा मगर सईद बिनिलमुसैयब से बड़ा कोई आ़लिम रुए ज़मीन पर नज़र नही आया आप बड़े बारोअ़ब व सा़ह़िबे वक़ार थे आप

का चेहरा गोया हैबत व जलालते ह़क़ का आईना था आप के दरबार में बड़े बड़े उ़मरा भी बग़ैर इजाज़त के बारयाब होने की हिम्मत नहीं कर सकते थे आप की सौकड़ों करामतें मशहूर हैं आप ने चालीस ह़ज किए चालीस बरस तक कोई नमाज़ बाजमाअ़त फ़ौत नहीं हुई तीस बरस तक हर अज़ान मस्जिद में सुनी और पचास बरस तक इशा के वुजू से फ़ज्र की नमाज़ अदा करते रहे 93हिजरी में आप की वफ़ात हुई और हदीस फ़िक़ह जुहद व तक़वा और इबादत का यह आफ़ताब हमेशा के लिए गुरुब होगया। (तबक़ाते शेअ़रानी व इकमाल)

79–ह़ज़रत सईद बिन जुबैर(रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप कूफ़े के रहने वाले सईद बिन असदी कहलाते हैं दौरे ताबिईन के ज़लीलुश्शान आ़लिमों में आप का शुमार है ह़दीस में अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर वग़ैरा स़हाबा रिद़वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमाईन से आप को तलम्मुज़ ह़ासिल हूआ और आप के शागिर्दों की फ़ेहरिस्त भी बहुत त़वील है आप हमेशा हर रात एक ख़त्म कुर्आन मजीद पढ़ते और सुब्हे स़ादिक़ से तुलूअ़े आफ़ताब तक ज़िकरे इलाही के सिवा कोई लफ़्ज़ नहीं बोलते थे आप ह़दीस की रिवायत के साथ साथ बन ूउमय्या के ज़ालिम उमरा के रुबरु अम्र बिल मअ़रूफ़ व नहीं अ़निल मुन्कर भी खुल्लम खुल्ला फ़रमाते थे यही वजह है कि शअ़बान 95हिजरी में कूफ़ा के गवर्नर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ख़ूँखार व खून रेज़ ज़ालिम ने आप को शहीद करादिया शहादत के वक़्त आप की ह़क़ गोई उलुल अ़ज़मी और साबित क़दमी की दास्तान बड़े बड़े दिल गुर्दा वाले दिलरों को भी लर्ज़ा बरअन्दाम करदेती है कूफ़ा के गवर्मेन्ट हाऊस में ह़ज्जाज बिन यूसूफ़ और आप का मुकालमा सुनिए।

ह़ज्जज बिन यूसुफ़ : बोलो सईद मैं तुम्हें किस त़रीक़े से क़त्ल करूँ?

सईद बिन जुबैर :खुदा की क़सम तुम जिस तरीक़े से मुझे दुनिया में क़त्ल करोगे मैं उसी तरीक़े से तुम को आख़िरत में क़त्ल करूँगा।

हज्जाज बिन युसूफ : सईद बिन जूबैर ! अगर एक मरतबा तुम मुझ से मुआफ़ी माँग लो तो मैं तुम को छोड़ दूँगा ।

सईद बिन जुबैर : खुदा की क़सम मैंने जो कुछ कहा है वह हक़ है बर हक़ है इस लिए मैं हरगिज़ हरगिज़ कभी तुम से मुआफ़ी नहीं मागूँगा मैं सिर्फ़ खुदा वन्दे करीम से मुआफ़ी का ख्वास्तगार हूँ ।

हज्जाज बिन यूसुफ : ऐ जल्लादो ! ले जाओ उन को दरबार के बाहर मैदान में बेदर्दी के साथ क़त्ल करो।

सईद बिन जुबैर हँसते हुए दरबार से रवाना हूए

हज्जाज बिन यूसुफ़ : सईद बिन जुबैर ! तुम क़त्ल होने के लिए जारहे हो उस वक़्त हँसी का कौन सा मौक़ा है?

सईद बिन जुबैर :ऐ हज्जज !खुदावन्दे जब्बार व क़हहार के मुक़ाबिले में तेरी जुर्अत व सरकशी पर तअज्जुब कर के मुझे हँसी आगई ।

हज्जाज बिन युसूफ़: (जल भुन कर गुस्से में कांप कर)दरबार में मेरे सामने उस की गर्दन मार दो।

सईद बिन जुबैर : (निहायत इत्मिनान के साथ क़िब्ला रु खड़े हो कर बआवाज़े बलन्द **اِنِّىْ وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِىْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ**

हज्जाज बिन युसूफ़ : ऐ जल्लादों ! इस का मुँह क़िब्ला से फेर दो

सईद बिन जुबैर: **فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ** तुम जिधर मुँह करो उधर बिन जुबैर

वजहिल्लाह (खुदा की रहमत) तुम्हारी तरफ़ मुतव्वजह है

हज्जाज बिन युसूफ़: ऐ जल्लादो !उस को मुँह के बल ज़मीन पर लिटा कर क़त्ल करो

सईद बिन जूबैर:(सज्दे में सर रख कर)

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ

हज्जाज बिन युसूफ़:(चिल्ला कर) अरे जल्लाद ! क्या देखता है उस को ज़िबह़ कर डाल।

सईद बिन जूबैर :(सज्दे में सर रखे हुए)ज़ालिमो !गवाह रहना मैं पढ़ता हूँ

أَشْهَدُ اَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ.

फिर आप ने बुलन्द आवाज़ से यह दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह हज्जाज को ऐसा कर दे कि यह मेरे बअ़्द किसी मोमिन को क़त्ल न कर सके।

आप की दुआ़ ख़त्म हुई और जल्लाद ने आप को निहायत बेदर्दी के साथ ज़िबह़ कर दिया और ह़क़्क़ानियत व इस्तिक़ामत का यह सुर्ख़ पोश दूल्हा उ़रूसे शहादत की आग़ोश से हमकिनार हो गया

इस क़दर खून निकला कि सारा दरबार खून से भर गया हज्जाज ने हैरान होकर अहले दरबार से पूछा कि मैंने एक लाख इन्सानों का क़त्ल किया मगर इत्ना कसीर खून किसी मक़तूल का नहीं देखा एक दरबारी ह़कीम ने जवाब दिया कि ऐ अमीर!हर मक़तूल क़त्ल के वक़्त डर जाता है इस लिए उस का खून बदन में खुश्क़ हो जाता है मगर यह ख़ौफ़े इलाही का पैकर और इस्तिक़ामत का पहाड़ आख़िरी दम तक बे खौफ़ रहा इस लिए उस के बदन में खून खुश्क नहीं हो सका और सारा खून ज़मीन पर गिर पड़ा ।

आप की दुआ़ की मक़बूलियत और करामत का असर तो देखो कि उस के बअ़्द ह़ज्जाज सिर्फ़ पन्द्रह दिन उस बुरे ह़ाल में ज़िन्दा रहा कि पेट में आकिला का फ़ोड़ा हो गया त़बीब रोज़ाना सड़े हुऐ बदबू दार गोश्त की बोटी धागे से बान्ध कर उस के ह़लक़ में डालता और ह़ज्जाज उस को निगल जाता धागा खीच कर वह बोटी निकाली जाती तो खून से भरी होती उन पन्द्रह दिनों में ह़ज्जाज एक घन्टे भी

सो नहीं सका जब गुनूदगी आती तो चौंकता और चीख मार कर उठ बैठता और कहता कि हाए मुझे क्या हो गया ? कि मुझे यही ख्वाब नज़र आता है कि सईद बिन जूबैर ग़ैज़ व ग़ज़ब में भरे हुए मेरी टांग पकड़ कर घसीटते हैं इसतरह ज़ालिम हज्जाज पन्द्रहवें दिन कहरे इलाही में गिरफ़तार हो कर सर पटक पटक कर ऐड़ियाँ रगड़ रगड़ कर हलाक हो गया और आजरूए ज़मीन पर उसकी क़ब्र का भी कोई निशान बाक़ी नहीं रहा मगर सईद बिन जुबैर की क़ब्रे मुनव्वर आज भी वसतुलइराक़ में अहले बसीरतके लिए मशअ़ले नूर और हाजत मन्दों के लिए क़िब्ला-ए-हाजत बनी हूई है और आज भी हज़ारो मुहद्दिसीन की जुबानो पर **عن سعيد بن جبير عبد الله بن مسعود عن النبى صلى الله تعالى عليه وسلم** की ईमान अफ़रोज़ व रूह परवर क़िरअत का डंका बज रहा है जिस से अहले रूहानीयत की अरवाहे मुकद्दसा में रूहानी बालीदगी और अरबाबे कुलूब के दिलों में ईमानी ज़िन्दगी पैदा होती है।

बना करदन्द खुश रस्मे बखाक व खून ग़लतीदन
खुदा रहमत कुनद ई आशिक़ाने पाक त़ीनत रा

(इकमाल, त़ब्क़ात शेअ़रानी, व ताहज़ीबुत्तहज़ीब)

80-हज़रते सालिम बिन अब्दुल्लाह (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नीयत अबू उ़मर या अबू अ़ब्दुल्लाह है यह हज़रत अमीरुल मोमेनीन उ़मर फारूक़ रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पोते हैं और मदीना मुनव्वरह के सात मशहूर फुक़्हा में उन का शुमार है यह इल्मे ह़दीस में अपने वालिद ह़जरत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर व अबूहूरैरा व अबूराफ़ेअ् वग़ैरह सह़ाबा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के क़ाबिले फ़ख़्र शागिर्द हैं और उन के शागिर्दो की फेहरिस्त बहुत त़वील है जिन में इमाम ज़हरी अबूबकर बिन सालिम व सालेह़ बिन केसान व उ़मर बिन दीनार बस़री वग़ैरह क़ाबिले ज़िक्र हैं सईद बिन मुसय्यब फ़रमाया

करते थे कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर के तमाम साहबज़ादों में हज़रत सालिम सूरत व सीरत के लिहाज़ से अपने बाप के साथ बहुत ही मुशाबहत रखते थे इमाम मालिक का क़ौल है कि सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह अपने ज़माने के सुलहा व आ़बिदीन में बे मिसाल और जुहद व इबादत व इल्मी फ़ज़ीलत में बे नज़ीर थे मिज़ाज में इन्तिहाई तवाज़ोअ् व इन्किसारी थी ज़िन्दगी भर अपनी ज़रूरत का सारा सामान खुद ही बाज़ार से ख़रीद कर लाते और कभी किसी लौन्डी या गुलाम से ख़िदमत लेने को पसन्द नहीं फ़रमाते थे।

यहाँ एक तारीख़ी लतीफ़ा क़ाबिल ज़िक्र है कि अहले मदीना लौन्डीयों के पेट से पैदा होने वाले बच्चों को अच्छी नज़र से नहीं देखते थे लेकिन खुदा की शान कि जब मुल्के फ़ारस के क़ैदियों में यज़्द जर्द बादशाह की तीन बेटियाँ गिरफ़तार हो कर आईं तो उन तीनों लौन्डीयों को ह़ज़रत अ़ली रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ख़रीद लिया और एक लौन्डी अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को हिबा कर दी तो उस के पेट से सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह पैदा हुए और एक लौन्डी अपने फ़रज़न्द इमाम हुसैन रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अ़ता फ़रमाई तो उस के पेट से इमाम ज़ैनुलआ़बिदीन पैदा हुए और एकलौन्डी मुहम्मद बिन अबूबक सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआ़ला अ़नहुमा को इनायत फ़रमाई तो उस के पेट से क़ासिम बिन मुहम्मद पैदा हुए और यह तीनों यानी सालिम व इमाम ज़ैनुलआ़बिदीन व क़ासिम इल्म व अ़मल जुहद व तक़्वा व रियाज़त में तमाम अहले मदीना से बढ़ गए ह़ालाँकि यह तीनों लौन्डी के बतन से पैदा हुए थे यह देख कर अहले मदीना को लौन्डी की रग़बत बहुत बढ़ गई और लौन्डीयों के बतन से पैदा होने वाले बच्चों को अहले मदीना इ़ज़्ज़त व वक़्अत की नज़र से देखने लगे।

अबू नईम वग़ैरह का क़ौल है कि सालिम इब्ने अ़ब्दुल्लाह ने

ज़ीक़अ़दा या ज़िल्हिज्जा 106में वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

81–हज़रत सअ़्द इब्ने इबराहीम अ़ब्दुर्रहमान (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबु इस्हाक़ या अबूइबराहीम है यह हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर सहाबी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का दीदार कर ने वाले ताबेई हैं यह अपने वालिद व क़ासिम इब्ने मुहम्मद व अ़ब्दुल्लाह इब्ने जअ़्फ़र व अबू सलमा वग़ैरा मुहद्दिसीन से ह़दीस की रिवायत करते हैं और इमाम जुहरी व सुफ़यान इब्ने अ़ैनीया व अय्यूब सख़्तयानी व सुफ़यान सौरी व शेअ़्बा वग़ैरा अकाबिरे अइम्मा ह़दीस उन से ह़दीस रिवायत कर ने वालों में हैं।

शेअ़्बा मुहद्दिस जब कभी उन का तज़किरा फ़रमाते थे तो यूँ कहते थे कि सअ़्द इब्ने इबराहीम मेरे ह़बीब हैं बेह़द मुत्तक़ी इन्तिहाई परहेज़ गार और अअ़्ला दरजे के इ़बादत गुज़ार हैं।

इब्ने अ़ैनीया फ़रमाते हैं कि सअ़्द इब्ने इबराहीम मदीना मुनव्वरा के क़ाज़ी भी थे मगर वह उस ओ़हदे पर फ़ाइज़ होने के बाद भी इतने ही मुत्तक़ी व इ़बादत गुज़ार रहे ।

चालीस बरस तक रोज़ाना हर दिन रोज़ा रहे है और उसी क़िस्म के दूसरे बड़े बड़े मुजाहिदात करते थे 125 हिजरी में बहत्तर साल की उ़म्र पाकर वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

82–ह़ज़रत सुलैमान तैमी(रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबुल मुई़र और वतन बसरा है ताबेई बुजुर्ग है और मुह़द्दिसीन बसरा में एक इम्तियाज़ी शान रखते हैं सहाबा में ह़ज़रत अनस रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और ताबेई़न में से अअ़्मश व हसन बसरी व अबू इस्हाक़ सबीई़ वग़ैरा के शागिर्दे रशीद हैं और शअ़्बा व सुफ़यान सौरी व सुफ़यान इब्ने अ़ैनीया व अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक व हम्माद इब्ने सल्मा जैसे कसीरुल ह़दीस फ़ाज़िलों के उस्तादे ह़दीस हैं इब्ने मुई़न व इमाम निसाई व अ़जली वग़ैरा ने उन

के इल्म व फ़ज़्ल की शहादत देते हुए उनको सिक़ह कसीरुल हदीस के लफ़ज़ों से मुताआरफ़ कराया (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

बसरा बड़े बड़े आबिदों में उन का शुमार है यह ऐसे साहिबे करामत इबादत गुज़ार थे कि उम्र भर उन का यह मअ़मूल रहा कि इशा के वुज़ू से फ़ज्र तक सारी रात नवाफ़िल पढ़ा करते थे ज़िल क़अ़दा143 हिजरी में 92 बरस की उम्र पाकर वफ़ात पाई।(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

83–हज़रत सुफ़यान सौरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि)

अबू अ़ब्दुल्लाह सुफ़यान इब्ने सईद सौरी का वतन कूफ़ा है आप के मनाक़िब व फ़ज़ाइल का क्या कहना ! बिलाशुबा आप इमामुल मुस्लिमीन व हुज्जतुल्लाह हैं फ़िक़ह व हदीस और इज्तिहाद व तक़्वा में यकताए रोज़गार और इबादत व रियाज़त में फ़क़ीदुल मिसाल हैं आप की दीनदारी व परहेज़गारी पर सारी उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है आप यक़ीनन अपने ज़माने के कुत्बे इस्लाम व रुक्ने दीन थे।

अपने दौर के सैकड़ों मुहद्दिसीन से अहादीस की समाअ़त फ़रमाई और इमाम आज़म अबूहनीफ़ा की मज्लिसे दर्स में भी शरीक हो कर इल्मे हदीस में आप की शागिर्दी का शरफ़ हासिल किया और फ़िक़हे हनफ़ी का इल्म अ़ली इब्ने मुसर्रह से हासिल किया जो हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा के मख़सूस तलामिज़ा में से हैं यही वजह है कि जब इमाम तिर्मिज़ी अपनी जामेअ़ में सुफ़यान सौरी का मज़हब नकल फ़रमाते हैं तो वह अकसर इमाम अबूहनीफ़ा के मुवाफ़िक़ होता है ।

आप के शागिर्दों की जमाअ़त बहुत बड़ी है जिन में सुफ़यान इब्ने अ़ैनीया व इमाम औज़ाई व मुअ़म्मर व इब्ने जुरैह व इमाम मालिक व शेअ़बह जैसे हदीसों के पहाड़ हैं ।

आप के मिज़ाज में तवाज़ेअ़ व इन्केसारी बहुत ज़्यादा थी कभी सदरे मज्लिस में नहीं बेठते थे न कभी किसी ख़ादिम से अपनी कोई ख़िदमत लेते थे एक कपड़े के सिवा दूसरा कपड़ा नहीं रखते थे न

उम्र भर कोई इमारत बन्वाई उमरा व सलातीन के दरबारों से इन्तिहाइ नफ़रत फ़रमाते और उन लोगों के हदाया व तहाइफ़ से बेहद इज्तिनाब फ़रमाते थे और खूल्लम खुल्ला ज़ालिम उमरा और बादशाहों की बद आमालियों पर रोक टोक और वअ्ज़ व नसीहत फ़रमाया करते थे यही वजह है कि खलीफ़ा –ए–बग़दाद अबूज़अ्फ़र मनसूर अब्बासी आप की जान का दुश्मन हो गया था चुनाँचे जब आप हज के लिए रवाना हुए तो उस ज़ालिम बादशाह ने आप के पीछे जल्लादों को रवाना किया और हुक्म दे दिया कि तुम लोग जहाँ भी सुफ़यान सौरी को पाओ गिरफ़तार कर के सूली पर लटका दो और मैं भी लश्कर के साथ तुम्हारे पीछे पीछे आरहा हूँ जल्लादों ने तलाश करते करते आप को मक्का मुकर्रमा में पालिया और सूली गाड़ कर आप को गिरफ़तार करने के लिए हरमे कअ्बा में पहुँचे तो क्या देखा कि सुफ़यान सौरी इस शान से लेटे हूए हैं कि आप का सर फुज़ैल इब्ने अयाज़ की गोद में और आप के पाँव सुफ़यान इब्ने अैनीया की गोद में हैं जल्लादों ने बादशाह का हुक्म सुनाया और यह भी अर्ज़ किया कि खुद बादशाह भी मक्का मुकर्रमा आ रहा है अगर हम लोगों ने आप को सूली पर लटकाने में देर कर दी तो वह हम सब लोगों को क़त्ल करा देगा यह सुन कर आप को जलाल आगया और फ़िर बफ़र कर उठ कर खड़े होगए और चन्द क़दम चल कर ग़िलाफ़ कअ्बा हाथ में लिया और तड़प कर बआवाज़े बलन्द फ़रमाया कि तुम लोग इत्मिनान रखो मन्सूर अब्बासी बादशाह हरगिज़ हरगिज़ मक्का में नहीं पहुँच सकता और सुन लो अगर वह मक्का मुकर्रमा आगया तो मैं इस कअ्बा की तरफ़ आँख उठा कर नहीं देखूँगा।

आप की करामत देखो कि मनसूर अब्बासी बादशाह गुस्से में भरा हुआ बग़दाद से मक्का मुकर्रमा रवाना हुआ मगर रास्ते ही में मरगया और मर कर मक्का मुकर्रमा तक नहीं पहुँच सका और आप

ख़ैर व आफ़ियत के साथ हज़ से फ़ारिग़ हो कर वतन तशरीफ़ लाए 161 हिजरी में विसाल फ़रमाया और आप की क़ब्र मुबारक बसरा में आज तक मरजअ़े ख़लाइक़ और ज़ियारत गाहे खास व आ़म है।

(इकमाल तब्क़ात, तहज़ीबुत्तहज़ीब वग़ैरा)

84–हज़रत सुफ़यान बिन अ़ैनीयह (रहमतुल्लाह तआला अलैहि)

अबू मुहम्मद सुफ़यान इब्ने अ़ैनीया अबी इमरान मैमून हिलाली 107 हिजरी में कूफ़े के अन्दर पैदा हुए आप की इमामत व इल्मी जलालत और तक़वा व इबादत पर तमाम अइम्मा ह़दीस का इत्तिफ़ाक़ है और फ़ने ह़दीस में आप की महारत व ह़ज़ाक़त तमाम मुह़दि्दसीन के नज़दीक मुसल्लमुस्सुबूत है आप ने अपने दौर के बड़े बड़े अअ्ला दरजे के मुह़दि्दसीन से इल्मे ह़दीस ह़ासिल किया और बड़े बड़े बाकमाल बुज़ुर्गों की आग़ोशे तरबीयत में आप ने इल्म व अ़मल का कमाल ह़ासिल किया आप के उस्तादों में इमाम जअ्फ़र सादिक़ व इमाम ज़ुहरी व सुलैमान तैमी व सुफ़यान सौरी वग़ैरा कामिल व मुकम्मल अइम्मा ह़दीस हैं और आप के शागिर्दों का ह़ल्क़ा भी बहुत वसीअ् है जिन में इमाम शाफ़िई व इमाम अह़मद इब्ने ह़मबल आफ़ताब व माहताब की त़रह़ चमकते हैं।

अप इल्मी जलालत के साथ साथ इबादत व रियाज़त में भी बहुत बलन्द मक़ाम रखते हैं इन्तिहाई इबादत गुज़ार व ज़ाहिद शब ज़िन्दा दार थे और ज़ुहद व क़नाअ़त में भी अपने इक़रान पर बड़ी खास फ़ज़ीलत रखते थे साठ बरस तक सिर्फ़ जौ की रोटी बग़ैर किसी सालन के खाते रहे आप से बहुत ज़्यादा खवारिक़े आ़दत व नादिर करामात का सुदूर हुआ चार बरस की उ़म्र में आप ने पूरा क़ुर्आन मजीद ह़िफ़्ज़ करलिया और सात साल की उ़म्र में ह़दीस की किताबत व रिवायत फ़रमाने लगे।

आप का वतन कूफ़ा है लेकिन आप ने मक्का मुकर्रमा में जवारे

बैतुल्लाह की मुस्तक़िल सुकूनत इख़्तियार फ़रमाली थी आप ने उम्र भर में सत्तर हज किए हसन इब्ने इमरान का बयान है कि मैं सुफ़यान इब्ने अ़ैनीया के आख़िरी हज में उन के साथ था मुज़्दलफ़ा में आप ने यह दुआ माँगी कि ऐ अल्लाह मुज़्दलफ़ा की उस ज़ियारत को मेरी आख़िरी ज़ियारत मत बना फिर हम लोगों की त़रफ़ मुत्वज्जह हो कर फ़रमाया कि मैं मुज़्दलफ़ा में सत्तर बरस से बराबर यह दुआ करता हूँ मगर अब मुझे अल्लाह तआ़ला से शर्म आ रही है कि किस क़दर ज़्यादा मैंने खुदा से उस का सवाल किया चुनाँचे आप इस हज से वापस हुए तो फिर हज का मौक़अ़ न मिला और उसी साल यकुम रजब 198 हिजरी में आप की वफ़ात होगई और मक्का मुकर्रमा के क़ब्रस्तान जन्नतुल मुअ़ल्ला में मदफ़ून हुए। (इकमाल, त़ब्क़ात, तहज़ीबुत्तहज़ीब)

85 हज़रत सुरैज इब्ने यूनुस बग़दादी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नीयत अबूल ह़ारिस और अ़स्ली वतन मरू है लेकिन बग़दाद को आप ने अपना वतन बनालिया था इस लिए बग़दादी कहलाते हैं आप इल्मे ह़दीस में सुफ़यान इब्ने अ़ैनीया व हशीम वलीद इब्ने मुस्लिम वग़ैरह मुह़द्दिसीन के शागिर्द हैं और अबूज़ुर्आ़ व अबूह़ातिम व इमाम मुस्लिम इब्ने ह़ज्जाज वग़ैरा मुह़द्दिसीन आप के तलामिज़ा में हैं

इमाम अ़हमद ने आप को मरदे स़ालेह़ व स़ाहिबे ख़ैर फ़रमाया और नाक़िदीने ह़दीस ने आप को सच्चा क़ाबिले एअ़्तेमाद पारसा वग़ैरह लिखा आप बहुत ही कसीरुल इबादत व साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे आप को ख़्वाब में अल्लाह तआ़ला का दीदार नसीब हूआ तो अल्लाह अ़ज़्ज व जल्ल ने फ़रमाया कि ऐ सुरैज तू मुझ से कुछ माँग ! तो आप ने अ़र्ज़ किया इलाही ! मैं तुझ से तेरी रहमत का त़लबगार हूँ ह़ामिद इब्ने शुएब कहते हैं कि सूरैज इब्ने यूनूस एक दिन अपने मकान की छत पर बैठे थे नागाहाँ एक साँप ने नीचे तालाब में ऐक

मेंढक को पकड़ लिया मेंढक के चिल्लाने की आवाज़ आप के कान में पड़ी और आप को मेंढक पर रहम आगया तो आप ने छतपर से चिल्ला कर फ़रमाया ऐ साँप ! तुझ को खुदा का वास्ता देता हूँ कि तू उस मेंढक को फ़ौरन छोड़ दे साँप ने आप का फ़रमान सुनते ही मेंढक को छोड़ दिया रबीउ़लअव्वल 245 हिजरी में आप का विसा़ल हूआ (तहजीबुत्तहजीब)

86—हज़रत शक़ीक़ इब्ने अबी सल्मा (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नीयत अबू वाइही असदी है नबी—ए—अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व स़ल्लम का ज़माना पाया मगर दीदार का शरफ़ हासिल नहीं हुआ आप ने सहाबा किराम रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की बहुत बड़ी जमाअ़त से शरफ़े मुलाक़ात हासिल किया और उन हज़रात से इल्मे ह़दीस की तहस़ील की और अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द स़ह़ाबी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के तो बड़े चहीते शागिर्द व अकाबिर अस़हाब में से हैं और उन के शागिर्दों में अअ़मश व मन्सूर व हम्माद अबी सुलैमान वग़ैरा बहुत मशहूर हैं ।

आप पर ख़ौफ़े इलाहि का बड़ा ग़लबा था ह़रमे कअ़बा में फ़रमाते थे कि मैं अपने उन क़दमों से किस तरह़ कअ़बा का त़वाफ़ करूँ? हाए!मुझे बड़ी शर्म आती है कि जो क़दम गुनाह की तरफ़ चल चुके हों मैं उन गुनाह गार क़दमों को खुदा के मुक़द्दस घर के पास किस तरह़ रखूँ? यह कहते थे और ज़ार ज़ार रोते थे आप के सामने कोई खुदा का तज़किरा कर देता तो आप मुरग़े बिस्मिल की तरह़ ज़मीन पर तड़पने लगते थे।

एक मरतबा आप के सामने किसी ने कह दिया कि फ़लाँ आदमी बड़ा मुत्तक़ी है तो आप ने फ़रमाया कि चुप रहो तुम ने किसी मुत्तक़ी को देखा भी है? ऐ नादान! मुत्तक़ी कहलाने का ह़कदार वह शख़्स़ है कि आगर उस के सामने जहन्नम का ज़िक्र कर दिया जाए

तो ख़ौफ़े इलाही से उस की रूह परवाज़ कर जाए आप बड़ी बड़ी मशक़्क़त पर इबादते करते थे और बड़े खुदा तरस पारसा और आरिफ़ बिल्लाह व साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे ख़लीफ़ा का क़ौल है कि आप ने 82 हिजरी में वफ़ात पाई और बअ्ज़ ने सने वफ़ात 99हिजरी बताया वल्लाहु तआला अअ्लमु (इकमाल तबक़ाते तहज़ीब)

87—हज़रत इमाम शअ्बी (रहमतुल्लहि तआला अलैहि)

आप का इस्मे गिरामी आमीर इब्ने शरजील है कूफ़ा के बाशिन्दे हैं और बहुत ज़लीलुक़द्र व अज़ीमुश्शान ताबेअी हैं पाँच सौ सहाबा किराम रदियल्लहु तआला अन्हुम से मुलाक़ात की और बड़े बड़े बलन्द मरतबा सहाबीयों से हदीस की रिवायत और हज़ारों मुहद्दिसीन आप के शागिर्द हुए जिन में इमाम अअ्ज़म अबूहनीफ़ा भी हैं।

आप ने भी कोई हदीस तहरीर नहीं फ़रमाई हर हदीस को अपने हिफ़्ज़ से जुबानी बयान फ़रमाते थे इब्ने शबरमा में इमाम शअ्बी को यह फ़रमाते हुए सुना कि बीस साल हो गये कभी किसी मुहद्दिस से मैंने कोई ऐसी हदीस नहीं सुनी कि जिस का मुझे उस से ज़्यादा इल्म न हो इमाम जुहरी का क़ौल है कि आलिमे हदीस कहलाने के मुस्तहिक़ सिर्फ़ चार ही शख़्स हैं इमाम शअ्बी कूफ़े में, हसन बसरे में सईद इब्ने मुसय्यब मदीना में, मकहूल शाम में ।

आप मक्का मुकर्रमा का बहुत ज़्यादा एहतिराम फ़रमाते थे अहले मक्का ने तमन्ना ज़ाहिर की थी कि आप कुछ दिन मक्का मुकर्रमा में क़ियाम फ़रमा कर दर्से हदीस की मज्लिस क़ाइम फ़रमाएं तो आप ने जवाब दिया कि मुझे गर्म गर्म हमाम में क़ियाम करना क़बूल है मगर मक्का मुकर्रमा में सुकूनत करनी गवारा नहीं है क्यों कि उस मुकद्दस ज़मीन जहाँ जमाले इलाही की तजल्लियाँ और जलाले खुदावन्दी की बिज्लियाँ चमक रही हों एक गुनाह का सादिर हो जाना भी बहुत बड़ी तबाही और सख़्त हलाकत है आप का इरशाद है कि बदकार आलिमों

और जाहिल आबिदों से बचो क्योंकि यह दोनों उम्मत के लिए बहुत बड़ा फितना हैं।

आप यह भी फ़रमाते थे कि फ़कीह वही है जो अल्लाह तआ़ला के महारिम से इन्तिहाई परहेज़ रखे और आ़लिम वही है जो ख़ौफ़े इलाही की दौलत से मालामाल हो।

आप एक अ़ज़ीम तरीन इमामे ह़दीस होने के इलावा अअ्ला दरजा के फ़कीह व मुफ़ती अअ्ज़म भी थे और फने शेअ्र व अदब में भी कामिल दस्तगाह और अअ्ला महारत रखते थे और इल्मी कमालात के साथ साथ जुहद व तक़वा और इबादत व रियाज़त में भी अपने दौर के फरदे फ़रीद और जूद व सख़ा में भी नादिरे रोज़गार थे रोज़ा व नमाज़ की कसरत और तिलावते कुर्आन मजीद का ज़ौक इश्क़ के दरजे को पहुँचा हूआ था सख़ावत का यह आ़लम था कि अपने तमाम रिश्ता दारों का क़र्ज़ खुद अदा फ़रमाते थे और किसी साइल को अपने दरवाज़े से नामुराद नहीं लौटाते थे तवाज़ोअ् व इन्किसारी इस क़दर थी कि कभी किसी लोन्डी या गुलाम को न मारा न सख़्त व सुस्त कहा उ़लमा व फुक़हा व शोअ़रा हर त़ब्के में आप की सियादत मुसल्लम थी और खास व आ़म में आप की बुज़ुर्गी व करामत का चरचा था 104 हिजरी या 109हिजरी में विसाल पाया

(इकमाल, त़ब्काते तहज़ीब, तज़किरतुल हुफ़्फाज़)

88—हज़रत शोअ्बा इब्ने हज़्जाज (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नीयत अबू बुस्तान और वतन बसरा इल्मे हदीस में आप की इमामत व जलालत मुह़द्दिसीने सलफ़ व ख़लफ़ के नज़दीक मुसल्लमुस्सुबूत है और इल्मे ह़दीस में आप का लक़ब अमीरूल मोमीनीन फ़िल ह़दीस है और आप के उस्तादों और शागिर्दों की तअ़दाद इस क़दर ज़्यादा है कि उन का शुमार इन्तिहाई दुश्वार है आप के बारे में ह़ज़रत इमाम शाफ़ेई का क़ौल है कि अगर शोअ्बा न

होते तो इराक़ में कोई हदीस पहचानने वाला न होता।

आप बहुत ही रहम दिल नेक व सालेह और अअ्ला दरजे के मुत्तकी व परहेज़गार और अपने दौर के बे मिसाल इबादत गुज़ार थे आम तौर से लोग उन को साइमुद्दहर व क़ाइमुल लैल कहा करते थे यअ्नी दिन के रोज़ा दार और रात के तहज्जुद गुज़ार मुस्लिम इब्ने इबराहीम कहते हैं कि दिन या रात में जब भी शोअ्बा के मकान पर गया तो उन्हें नमाज़ ही में मशगूल पाया ।

कसरते इबादत और मुजाहिदा व रियाज़त की वजह से जिस्म पर हड्डी और चमड़े के सिवा गोश्त की एक बोटी भी नहीं थी इस्राफ़ व फुजूल ख़र्ची से बेहद नालाँ थे अगर किसी शागिर्द को आठ दिरहम का कपड़ा पहने हुए देख़ लेते तो बेहद ख़फ़ा होते और फ़रमाते कि क्यों नहीं चार ही दिरहम का कपड़ा पहना और चार दिरहम ख़ैरात किया खुद की सख़ावत का यह आलम था कि अगर कोई साइल दरवाज़े पर आ जाता तो घर में तशरीफ़ ले जाते और घर का सारा सामान उठा कर साइल को दे देते रास्ते में अगर कोई साइल सवाल कर बैठता और पास में कुछ न होता तो अपनी सवारी का गधा साइल को दे देते और खुद पैदल चलने लगते अगर कश्ती में सवार होते तो कश्ती के तमाम मुसाफ़िर का किराया खुद ही अदा फ़रमाते।

एक मरतबा ख़लीफ़ा–ए–बग़दाद मेहदी अ़ब्बासी ने आप की ख़िदमत में तीस हज़ार दिरहम नज़राना भेजा तो आप ने यह सारी रक़म उसी मज्लिस में अपने शागिर्दों और फुकरा व मसाकीन में तक़सीम फ़रमादी और खुद एक दिरहम भी अपने पास नहीं रखा हालाँकि उस दिन उन के घर वाले नाने शबीना के मुहताज थे आप का लिबास ख़ाकी रंग का होता था ताके जल्द मैला न होजाए एक कुर्ता एक तहबन्द एक चादर के सिवा दूसरा लिबास नहीं रखते थे और यह तीनों कपड़े भी दस दिरहम से कम ही के होते थे एक

मरतबा लोगों ने आप की सवारी के गधे जीन लगाम वग़ैरह की कीमत का आन्दजा लगाया तो सत्तर दिरहम से ज़्यादा नही हुए सतानवे साल की उ़म्र पाकर 166हिजरी में विसाल फ़रमाया और बसरा में मदफून हुए। (तब्क़ात ,तहज़ीबत्तहजीब)

89–हज़रत इमाम शाफ़िअ़ी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि)

मशहूर इमामे फिक़ह व हदीस साहिबे मज़हब हज़रत इमाम शाफ़ेअ़ी की कुन्नीयत अबू अ़ब्दुल्लाह और नाम व नसब मुहम्मद इब्ने इदरीस इब्ने अ़ब्बास इब्ने उ़समान इब्ने शाफिअ़् है और लकब इमाम शाफ़िई है जो आप के मूरिसे अअ़्ला की तरफ़ निस्बत है।

आप 150 हिजरी में फ़िलिस्तीन के क़रीब शहर ग़ज़्जा में पैदा हुए और बअ़्ज़ का कौ़ल है कि आप ख़ास उसी दिन पैदा हुए जिस दिन हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वफ़ात हुई ।

जब आप शिकमे मादर में थे तो आप की वालिदा ने यह ख्वाब देखा कि मेरे शिकम से सितारए मुश्तरी निकल कर फ़ज़ा में बिखर गया और उस के टुकड़े चारों तरफ़ फैल गऐ मुअब्बेरीन ने इस ख़्वाब की तअ़्बीर यह बताई कि तुम्हारे शिकम से एक ऐसा फरज़न्द पैदा होगा जिस के इ़ल्म से अतराफ़े आ़लम में उजाला हो जाएगा दो बरस की उ़म्र थी कि आप अपनी वालिदा के साथ शहर ग़ज़्ज़ा से मक्का मुकर्रमा आये और आग़ोश मादर में निहायत मुफ़लिसी की ह़ालत में परवरिश पाई ।

बचपन ही में आप ने खुद यह ख्वाब देखा कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने नमाज पढाई और आप ने हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम के पीछे नमाज़ पढ़ी फिर क़रीब लाकर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने आप को एक तराज़ू अपनी आस्तीन में से निकाल कर अ़ता फ़रमाई मक्का मुकर्रमा के एक मुअ़ब्बिर ने उस ख़्वाब की तअ़्बीर यह बताई कि आप हुज़ूर

अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नतों की सच्ची पैरवी करने वाले और इल्मे ह़दीस व आसारे सुन्नत के इमाम होंगे और आप का इल्म व अ़मल ह़क़ व बातिल की पहचान का एक मेअ़्यार व मीज़ान होगा ।

एक मरतबा आप ने यह भी ख्वाब में देखा कि आँहज़रत स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व स़ल्लम ने अपना लुआबे दहन आप के मुँह में डाला और फ़रमाया कि जाओ खुदावन्द तआ़ला तुम्हें बरकत अ़ता फ़रमाए।

सब से पहले आप ने मक्का मुकर्रमा में आप ने सुफ़यान इब्ने अ़ैनीयाह व मुस्लिम इब्ने ख़ालिद ज़न्जी की ख़िदमत में फ़िक़्ह व ह़दीस की तअ़लीम फ़रमाई फ़िर तेरह बरस की उम्र में मदीना मुनव्वरा का सफ़र फ़रमाया और इमाम मालिक रह़मतुल्लाहि ताआ़ला अ़लैहि की शागिर्दी का शरफ़ ह़ासिल फ़रमाया इमाम मालिक ने आप की सूरत देखते ही बातिनी फ़िरासत से मअ़्लूम करलिया कि यह सितारा किसी दिन आफ़ताब बन कर चमकने वाला है चुनाँचे इमाम ममदूह ने बड़ी शफक़त के साथ यह नस़ीहत फ़रमाई कि साह़बज़ादे तुम तक़्वा की ज़िन्दगी इख़्तियार करो अ़न्करीब तुम्हारी एक शान होने वाली है।

फिर जब आप के चचा यमन के क़ाज़ी हुए तो आप भी यमन चले गये जहाँ आप के इल्म व फ़ज़्ल की बेहद शोहरत हुई फिर इराक़ का सफ़र फ़रमाया और शुयूख़े बग़दाद वग़ैरा खुसूसन इमाम मुहम्मद इब्ने ह़सन शैबानी ने आप की वालिदा से निकाह़ फ़रमालिया था इस लिए वह आप पर बेह़द शफ़ीक़ थे चुनाँचे ह़ज़रत इमाम शाफ़िई रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि खुद भी फ़रमाया करते थे फ़िक़्ह में मुझ पर सब से बड़ा एह़सान इमाम मुह़म्मद का है।

आप आख़िरी उम्र में मिस्र से बग़दाद तशरीफ़ ले गए और वहाँ शबे जुमा बअ़्द मग़्रिब 204 हिजरी में चव्वन बरस की उम्र पाकर वफ़ात पाई।

आप के तलामिज़ा की जमाअ़ते कसीरह में इमाम अह़मद इब्ने हमबल व अबूसौर इबराहीम इब्ने ख़ालिद व अबू इबराहीम मुज़नी व रबीअ़ इब्ने सलीम मुरादी वग़ैरह अअ़्ला दरजे के सैंकड़ों बाकमाल मुह़द्दिसीन हैं।

आप बेह़द ज़हीन मेहनती और निहायत क़वी क़ुव्वते ह़ाफ़ज़ा वाले थे और जमाले सूरत के साथ हुसने सीरत का भी कमाल रखते थे इस क़दर बारोअ़ब थे कि आप की हैबत से कोई शख़्स आप के सामने पानी भी नहीं पी सकता ।

आप तक़वा शिआरी व परहेज़गारी नीज़ इ़बादते कसीरा में भी अपने दौर के बे मिसाल आ़बिद व ज़ाहिद और स़ाहिबे विलायत व बाकरामत बुज़ुर्ग थे हमेशा आप का मअ़्मूल रहा कि एक तिहाई रात सोते और एक तिहाई रात में इ़बादत करते और एक तिहाई रात में तसनीफ़ात तह़रीर फ़रमाते और रोज़ाना बिलानाग़ा एक ख़त्म कुर्आन मजीद की तिलावत फ़रमाते ज़िन्दगी भर में कभी कोई झूट आप की ज़ुबान पर नहीं आया न कभी क़सम खाई सख़्त से सख़्त सरदीयों में भी कभी गुस्ले जिमा नहीं छोड़ा और सोलह बरस तक लगातार कभी शिकम भर खाना नही तनावुल फ़रमाया फ़ुकहा व मुह़द्दिसीन के इ़लावा अपने दौर के बहुत से मशाइख़ सूफ़िया की भी स़ोहबत उठाई अहले बैते किराम से वालिहाना मुह़ब्बत रखते थे यहाँ तक कि बअ़्ज़ कम फ़हमों ने आप पर राफ़ज़ी होने की तोहमत लगाई तो आप ने उन मुफतरीयों का अपने एक शेअ़्र में इस त़रह जवाब दिया कि।

لو کان رفضا حب ال محمد صلی اللہ تعالی علیہ وسلم
فلیشھد الثقلان انی رافضی

(यअ़्नी अगर तुम लोगों के फ़ासिद गुमान में आले पाक ह़ज़रत मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व स़ल्लम से मह़ब्बत रखने ही का नाम राफ़ज़ी है तो तमाम इन्स व जिन गवाह होजाऐं कि उस मअ़्ना

के एअ्तिबार से मैं राफ़्ज़ी हूँ कि मैं अहले बैत से इश्क व महब्बत रखता हूँ)

आप बहुत ही मुत्तबअ़े सुन्नत थे और मरजिया व कद्रीयह व रवाफ़िज़ व ख़वारिज़ वग़ैरा बददीनों व बद ऐबों से इन्तिहाई इज्तिनाब व नफ़रत फ़रमाते थे और साफ साफ एलान फ़रमाते थे कि अगर कोई बद अ़कीदा व बद मज़हब हवा में भी उड़ने लगे जब भी वह मेरी नज़र में क़ाबिले क़बूल नहीं होसकता ।

आप के नसीहतें की वसीयतें आबे ज़रसे लिखने के क़ाबिल हैं आप की किताबों और आप के मज़हब को बड़ी मक़बूलियत ह़ासिल हुई और आज भी आप के मुक़ल्लिदीन करोड़ों की तअ़्दाद में ख़ास मिस्र व यमन व इन्डोनेशिया व हिन्दुस्तान के इलाके कोकुन वग़ैरा में मौजूद हैं (इकमाल व तबकाते शेअ्रानी व तहज़ीबुत्तहजीब)

90–हज़रत शम्सुलअइम्मा सरख़सी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन का नाम व नसब मुहम्मद इब्ने अहमद इब्ने सुहैल और लक़ब शम्सुलअइम्मह है सरखस खुरासान का मशहूर शहर है उस की निस्बत होने की वजह से सरखसी कहलाते हैं ।

यह फ़िक्ह हन्फ़ी के बहुत बड़े मुबल्लिग़ व मुसन्निफ़ होने के साथ साथ इल्मे कलाम व फन्ने मुनाज़िरा के भी ज़बर दस्त माहिर और उसूले फ़िकह में भी बड़े बाकमाल आलिम थे इब्ने कमाल बाशा ने उन को मुजतहेदीन में से शुमार किया है।

यह शम्सुलअइम्मा अ़ब्दुल अज़ीज़ ह़ल्वानी के शागिर्दे रशीद हैं और अपने ज़माने में इल्म व फ़ज़्ल और दीनदारी व परहेज़ गारी के एतिबार से स़ाहिबे करामत बुज़ुर्ग हुए हैं ।

उनकी एक बहुत बड़ी करामत यह है कि उन्होंने बादशाहे वक़्त खाक़ान को नस़ीहत फ़रमाई तो उस ज़ालिम बादशाह ने आप को औज़जन्द के जेल खाने में एक कुँए के अन्दर कैद करदिया मगर उस

हालत में भी उन के शागिर्द कुँए के ऊपर बैठ कर लिखते थे और आप कुँए के अन्दर से जब कि आप के पास कोई किताब न थी अपनी याद दाश्त से इमला कराते थे और इस तरह मबसूत की पन्द्रह ज़खीम जिल्दें तैयार हुई चुनाँचे मबसूत की शरहुलइबादात के आख़िर में यह इबारत दर्ज है– **هذا اخر شرح العبادات باوضع المعانی ه اوجز العبادات املأالمحبوساملاء المجوس فی مجلسمن الجمع والجماعات** यअ्नी यह शरहुलइबादात का आख़िरी हिस्सा है जिस के मआनी निहायत वाज़ेह और इबातें इन्तिहाई मुख़्तसर हैं यह उस शख़्स का इमला है जो जेल खाने ने क़ैद और जुम्आ व नमाज़े जमाअत से रोक दिया गया है।

इसी तरह शरहुल इक़रार के आख़िरी में यह इबादत तहरीर है **املاء المجلس فی مجلس الاشرار**कियअ्नी यह उस शख़्स की लिखाई किताब है जो जेल ख़ाने के अन्दर शरीर लोगों की मज्लिस में मुक़य्यद किया हुआ है इसी तरह उसूले फिक्ह की एक किताब और सीयरे कबीर की शरह भी आप ने कुँए के अन्दर क़ैद होते हुए तहरीर कराई जब बाबुश्शुरूत तक उस का इम्ला करा चुके तो कैद खाने से आप की रिहाई हो गई उस के बअ्द आप अपनी आख़िरी उम्र में फ़रग़ाना चले गऐ और वहाँ के अमीर हसन नामी ने आप का बेहद एअज़ाज़ किया और बकसरत तलबा आप की ख़िदमत में हाज़िर होने लगे और आप ने फरग़ाना ही में अपनी तमाम किताबों का इम्ला मुकम्मल फ़रमाया।

आप 400हिजरी में पैदा हुए और 410 हिजरी में दस बरस की उम्र में अपने वालिद के साथ तिजारत की ग़र्ज से बग़दाद का सफ़र किया उस के बअ्द सारी ज़िन्दगी तअ्लीम व तअ्ल्लुम और दीनी किताबों की तसानीफ़ में बसर फ़रमाई और जमादिलऊला 494हिजरी में आप की वफ़ात हुई। (तब्सरतुद्दराया)

91–हज़रत शम्सुद्दीन मुहम्मद इब्ने जज़री (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नीयत अबुलखैर और लक़ब क़ाज़ीयुलक़ज़ा है उन के वालिद बहुत बड़े ताजिर थे मगर कोई औलाद नहीं थी चुनाँचे हज को गये तो ज़मज़म शरीफ़ के कुँए के पास ज़मज़म शरीफ पीते वक़्त औलाद की दुआ माँगी तो अल्लाह तआला ने इतना बलन्द मरतबा फ़रज़न्द अ़ता फ़रमाया।

यह 25रमज़ान 751 हिजरी में बमक़ाम दमिश्क़ पैदा हुए और मग़्रिब के बड़े बड़े शहरों की मरकज़ी दर्सगाहों में सफ़र कर के फ़िक़्ह व ह़दीस और फन्ने किराअ्त का इल्म हासिल किया और खूब खूब इल्मे किराअ्त व हदीस की तअ्लीम व इशाअ्त से बन्दगाने खुदा को फाइदा पहुँचाया और इस क़दर शोहरत हासिल हुई कि मुल्के रोम में इमामे अअ्ज़म के लक़ब से मशहूर होगऐ बहूत खूबसूरत और फसीह व बलीग़ थे और बेहतरीन लिबास पहनते थे बारहा हज किया और बावजूद यह कि आप के पास इल्मे ह़दीस व किरअ्त के त़लबा का हर वक़्त मेला लगा रहता था मगर फिर भी अपने औराद, वज़ाइफ़ और कसरते इबादत के बहुत पाबन्द थे सफ़र और वतन में हमेशा सारी रात शब बेदारी करते थे और नवाफ़िल पढ़ते थे हर दोशमबा और पन्ज शमबा को रोज़ा रखते और हर महीने में भी तीन रोज़े बराबर रखते थे।

आप ने इल्मे ह़दीस व व फने किरअ्त में बहुत सी किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई हैं मगर आप की दो किताबें अहले इल्म में बहुत मशहूर हैं एक एक ''हस्ने हसीन'' और दुसरी ''अन्नशरो फिल किरातिल अ़शर'' आख़िर उम्र में शीराज़ की सुकूनत इख़्तियार करली थी और शीराज़ ही में जुम्आ के दिन 833 हिजरी में आप का विसाल हुआ

(बुस्तानुल महद्दिसीन)

92–हज़रत सुफ़यान इब्ने सुलैम (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबू अब्दुल्लाह सुफ़यान इब्ने सुलैम क़रशी ज़ुहरी मदीना मुनव्वरा के नामवर फ़क़ीह व जलीलुलक़दर ताबेई मुहद्दिस हैं अनस इब्ने मालिक व अब्दुल्लाह इब्ने उमर वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम के फ़ैज़ याफ़्ता आलिम हैं और आप की दर्स गाह से मुस्तफ़ीज़ होने वालों में सुफ़यान सौरी व सुफ़यान इब्ने अैनीया जैसे सैकड़ों मशहूर मुहद्दिसीन हैं।

सिक़ह, कसीरुल हदीस और निहायत ही आबिद व ज़ाहिद थे और आम तौर पर लोग उन को साहिबे विलायत व बकरामत बुज़ुर्ग थे चुनाँचे इमाम अहमद इब्ने हमबल का क़ौल है कि सुफ़यान इब्ने सुलैम की बयान करदा हदीसें तो इस क़ाबिल हैं कि दुआऐ इस्तिस्क़ा के वक़्त उन को खुदा की बारगाह में वसीला बनाया जाये और सुफ़यान इब्ने सुलैम वह बाखुदा व साहिबे करामत बुज़ुर्ग हैं कि अगर बारिश की दुआ माँगते वक़्त उन का नाम ले लिया जाए तो आसमान से बाराने रहमत का नुज़ूल होने लगे।

इबादत का अजीब ज़ौक़ था के कड़ कड़ाती हुई सरदियों में छत के ऊपर रात को नमाज़ें पढ़ते और सख़्त गरमियों में कोठरी के अन्दर बन्द हो कर नमाज़ नवाफ़िल अदा फ़रमाते ताके सर्दी व गर्मी की शिद्दत से नीन्द न आने पाये।

सुफ़यान इब्ने अैनीयह का बयान है कि सुफ़वान इब्ने सुलैम ने क़सम खाली थी कि क़ब्र के सिवा ज़मीन पर पीठ कभी नहीं सोऊँगा चुनाँचे तीस बरस से ज़्यादा मुद्दत तक आप ने बिस्तर से पीठ लगाकर नहीं लगाई।

कसरते नमाज़ और तवील सजदों की वजह से आप की पेशानी में ज़ख़्म पड़ गया था अनस इब्ने अयाज़ कहते हैं कि सफ़वान इब्ने सुलैम इस क़दर ज़्यादा इबादत करते थे कि अगर उन से कह दिया जाता कि कल ही क़ियामत आने वाली है तो वह जितनी इबादत

करते थे उस से ज़्यादा नहीं कर सकते थे।

इब्ने हब्बान ने उन को सिक़ात मुहद्दिसीन की फ़ेहरिस्त में लिख कर उन के बारे में तहरीर फ़रमाया कि यह मदीना में बहुत ही अअ्ला दर्जे के आबिद, ज़ाहिद थे।

बहुत ही क़नाअत पसन्द व मुतवक्किल थे बादशाहों और अमीरों के नज़रानों से इन्तिहाई नफ़रत फ़रमाते थे 123हिजरी में बहत्तर साल की उम्र पाकर मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पाई।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब व तबक़ाते शेअ्रानी)

93–हज़रत सालेह़ मरी

(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आपकी कुन्नीयत अबू बशर और नाम सालेह़ इब्ने बशीर है बसरा के रहने वाले थे मरी इस लिऐ कहलाते है कि बनी बशर मर्रह क़बीले की एक औरत ने आप को गुलामी से आज़ाद किया था आप इल्मे हदीस में हसन बसरी व इब्ने सीरीन व क़तादा वग़ैरा नामवर मुहद्दिसीन के शागिर्द हैं और आप के तलामिज़ा की बहुत बड़ी जमाअत है जिन में बड़े बड़े नामी गिरामी मुहद्दिसीन हैं।

आप अपने दौर के आबिदों और ज़ाहिदों में बहुत मुमताज़ आबिद व ज़ाहिद थे आप की आवाज़ भी बड़ी सुरीली और दिलकश थी कुर्आन मजीद इतनी खुश इलहानी के साथ पढ़ते थे कि बहुत से सामिईन तड़प कर दम तोड़ देते थे आप बहुत ही सहर बयान वाइज़ भी थे अफ़्फ़ान इब्ने मुस्लिम का बयान है कि दरमियाने वअ्ज़ में खुद उन की यह कैफ़ियत होती थी कि ख़ौफ़े इलाही से लरज़ते और काँपते जाते थे और इस क़दर फूट फूट कर ज़ार व क़तार रोते थे जिस तरह किसी औरत का इकलौता बेटा मरगया हो और वह उस के ग़म में ज़ार ज़ार रो रही हो कभी कभी तो ज़्यादा रोने और बदन के लरज़ने से आप के अअ्ज़ा के जोड़ उठ जाते थे और सामिईन आप के वअ्ज़ से इस क़दर मुताअस्सिर होते थे कि कुछ तड़प तड़प कर बेहोश हो जाते और बअ्ज़ों की रूह परवाज़ कर जाती थी ख़ौफ़े इलाही का यह आलम था कि अगर आप किसी क़ब्र को देख लेते

थे तो दो दो तीन तीन दिन तक मबहूत व ख़ामोश रहते और खाना पीना छोड़ देते थे।

आप की एक बड़ी ख़ास करामत यह थी कि आप कब्रस्तान के मुर्दों की गुफ़्तगू सुन लेते थे और खुद भी मुर्दों से गुफ़्तगु और सवाल व जवाब करते थे।

ख़लीफ़ा ने आप का सने वफ़ात 172 हिजरी लिखा हैं और इमाम बुख़ारी का क़ौल है कि आप ने 176 हिजरी पाई।

(नौवी तहज़ीबुत्तहज़ीब व तबक़ात)

94–हज़रत साबूनी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

अबू उ़समान इसमाईल इब्ने अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अह़मद इब्ने इसमाईल इब्ने इबराहीम इब्ने आ़बेदीन आमिर साबूनी बहुत बड़े वाइज़ व बाकमाल मुफ़स्सिर थे 373 हिजरी में बमक़ाम नीशापुर पैदा हुए मुद्दत हिरात व खुरासान व सरख़स व शाम व ह़िजाज़ वग़ैरा का दौरा कर के मशहूर मुह़द्दिसीने वक़्त से इल्मे ह़दीस पढ़ा और मशहूर मुह़द्दिस बैहक़ी उन के ख़ास शागिर्दो में हैं।

यह बीस बरस तक नीशापुर की जामेअ़ मस्जिद के इमाम व ख़तीब रहे और सत्तर बरस तक बराबर वअ़ज़ व नसीहत में मशगूल रहे अहले बिदअ़त के मुक़ाबले में शमशीर बरहना और मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त की ह़िमायत व अह़याऐ सुन्नत के लिऐ दिन रात सर गरम रहते शहरे सलमास में एक मुद्दत तक वअ़ज़ फ़रमाकर जब रुख़सत होने लगे तो फ़रमाया कि मैं तुम लोगों को सिर्फ़ एक ही आयत की तफ़सीर इतने दिनों तक सुनाता रहा अगर एक साल और भी रहता तो भी उसी आयत के मुतअ़ल्लिक़ वअ़ज़ बयान करता रहता।

यह इबादत व इताअ़त में भी अपने ज़माने के ज़र्बुलमिस्ल थे और बिलाशुबा उ़लमाऐ रब्बानीन में से थे खुद उन की वफ़ात का सबब

उन की बुज़ुर्गी पर खुली दलील है मन्कुल है कि एक दिन दरमियाने वअ्ज़ किसी ने उन के हाथ में एक किताब दी जिस में ख़ौफ़े इलाही के मज़ामीन थे आप ने उस किताब की चन्द सतरें मुतालआ फ़रमाई फिर क़ारी को हुक्म दिया कि यह आयत पढ़ो।

افامن الذین مکرو السیّات ان یخسف اللہ بھم الارض(پ ۱۴ ع ۱۱)

फिर उसी क़िस्म की दूसरी वईद की आयतें क़ारी से पढ़वाते रहे और हाज़िरीन को अ़ज़ाबे इलाही से डराते रहे और खुद उन पर ऐसी कैफ़ीयत पैदा हो गई कि ख़ौफ़े खुदावन्दी से काँपने और लरज़ने लगे और शिकम में ऐसा दर्द उठा कि बेचैन हो गये और कुछ लोग आप को उठा कर मकान ले गये हर चन्द तबीबों ने इलाज किया लेकिन दर्द में कोई कमी नहीं हुई बिलआख़िर उसी हालत में बरोज़े जुम्आ 4 मुहर्रम में आपकी वफ़ात होगई।

उन की एक करामत यह भी है कि इमामुलहरमैन (अबुल मआनी जो मीनी) फलासफ़ा व मोअ्तज़ला व अहले सुन्नत की किताबों को पढ़ कर और हर तरफ़ के दलाइल को क़वी पाकर हैरान थे के आख़िर किस के मज़हब को हक़ तस्लीम किया जाए (1)इमामुल हरमैन की कुव्वते फ़ैसला जवाब दे चुकी थी और क़रीब था कि सिराते मुस्तक़ीम से उन के क़दम डगमगा जाते कि नागहाँ हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम ने ख़्वाब में फ़रमाया कि علیک باعتقاد الصابونی यअ्नी साबून के अक़ाइद पर मज़बूती से जम जाओ चुनाँचे आप न साबूनी की किताबों को पढ़ा तो अक़ाइदे अहले सुन्नत व जमाअ़त के

1–मुसलमानों! इमामुलहरमैन जैसा आलिम बददीनो की किताबों का मुतालआ कर के शुकूक के दलदल में फँस गया था हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन पर करम फरमाया जिस से बदमज़हबों और मुलहिदों के फन्दों से वह बच गये तो जो लोग आलिम नहीं वह अगर बद दीनों बदमज़हबों की किताबों की मुतलआ करेंगे तो उन की खराबी का क्या हाल होगा लिहाजा अगर तुमहें अपना अकीदा दीन ईमान बचाना है तो मौजूदा जमाने के बद दीनों मसलन वहाबीयों राफ़जीयों कादयानियों मुलहिद सुफियों की किताबों को देखने उन की सोहबत में रहने से उसी तरह दूर भागो जिस तरह एक इन्सान अपना माल बचाने के लिए चोर डाकू से भागता है।

नूर ने फ़लासिफ़ा व मोअ्तज़िला की ज़ुलमतों को काफूर कर दिया और आप अ़काइदे हक़्क़ा पर मुस्तक़ीम व साबित क़दम रह गये।

आप की तसनीफ़ात में किताबुलमाअ़ तीन बहुत मशहूर है जिस में दो सौ ह़दीसों, दो सौ ह़िकायात, और दो सौ क़तआत ऐसे अशआ़र के हैं जो ह़दीसों के मज़ामीन से मुनासिबत रखते है ।

(बुस्तानुल मुह़द्दिसीन)

95–हज़रत ज़र्रार बिन मर्रह कूफ़ी(रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नीयत अबूसनान और शीबानी अकबर लक़ब है सईद इब्ने ज़ुबैर ओर अबू सालेह़ वग़ैरह मुह़द्दिसीन के शागिर्द और शोअ्बा व सुफ़यान सौरी व सुफ़यान इब्ने अ़ैनीयह वग़ैरा के उस्ताद हैं।

यह अगरचे बहूत क़लील अह़दीस रिवायत फ़रमाते थे मगर बहुत ही सिक़्हा व सालेह़ और इन्तिहाई मुत्तक़ी व इबादत गुज़ार थे अपनी वफ़ात से पन्द्रह साल क़ब्ल ही अपनी क़ब्र तैयार करली थी और रोज़ाना उस क़ब्र में बैठ कर एक ख़त्म कुर्आन मजीद पढ़ा करते थे

(तहजीबुत्तहज़ीब)

96–हज़रत ज़हाक इब्ने मुख़ल्लद बसरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबू आ़सिम और लक़ब नबील है उस लक़ब की वजह यह हुई कि एक दिन इमाम इब्ने जुरैज की दर्स गाह में अह़ादीस की समाअ़त व किताबत कर रहे थे कि इतने में सड़क पर एक हाथी गुज़रा तमाम त़लबा दर्स छोड़ कर हाथी देखने चले गए मगर यह अपनी जगह रहे इमाम इब्ने जुरैज ने पूछा कि ज़हाक ! तुम हाथी देखने क्यों नहीं गए ? आप ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! हाथी आप से बढ़ कर नहीं हाथी तो फिर कभी देख लेंगे मगर हुज़ूर का ह़ल्का–ए–दर्स फिर कहाँ मिलेगा ? यह जवाब सुन कर इमाम इब्ने जुरैज ने फ़रयामा कि यह जवाब अन्तन नबील यअ्नी तुम नबील (बहुत शानदार)हो।

ज़हाक इंब्ने मुख़ल्लद इमाम अबू हनीफ़ा के भी शागिर्द हैं और इमाम मालिक व इमाम औज़ाओ़ी वग़ैरा से भी ह़दीस की समाअ़त की है और उन के शागिर्दों में इमाम अह़मद इब्ने हमबल भी हैं।

यह बहुत ही बज़िल्ल सन्ज व पुर मज़ाक़ भी थे लेकिन इन्तिहाई मुत्तक़ी व इबादत गुज़ार भी इमाम बुख़ारी ने फ़रमाया कि उ़म्र भर में कभी उन्होंने किसी की ग़ीबत नहीं की और ख़लील का क़ौल है कि उन केइल्म व फ़ज़्ल और जुहद व इबादत पर तमाम मुह़द्दिसीन का इत्तिफ़ाक़ है इमाम बुख़ारी कहते हैं कि उन की वफ़ात 214हिजरी में हुई। (तह़ ज़ीबुलत्तहज़ीब व मनाक़िब समीरी)

97–हज़रत ताऊस इब्ने कैसान (रहमतुल्लाहि ताआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नीयत अबू अ़बदुर्रह़मान और नाम ताऊस कैसान है और बअ़ज़ का क़ौल है कि आप का ज़क्वान और ताऊस लक़ब है और आप फ़ारसीयुन्नस्ल यमनी ताबिई़ हैं और ह़दीस में अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द व अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर व अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास व अबूहुरैरह व बी बी आ़इशा वग़ैरा सहाबा किराम रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के शागिर्द हैं और तक़रीबन पचास सहाबा किराम के दीदार से मुशर्रफ़ हुए हैं इमाम ज़ुहरी व सुलैमान तैमी व आ़सिम अह़वल वग़ैरा आप की मज्लिसे दर्स के तर्बियत याफ़्ता मुह़द्दिसीन हैं।

इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु तआला अ़न्हुमा फ़रमाया करते थे कि ताऊस अहले जन्नत में से हैं अबू ज़ुरआ़ इब्ने ह़ब्बान वग़ैरा का क़ौल है कि ताऊस यमन के उ़ब्बाद व सादाते ताबिई़न में एक मुमताज़ शख़्सीयत के मालिक हैं आप की दुआ़एं बहुत जल्द और बहुत ज़्यादा मक़बूल होती थीं अ़म्र बिन दीनार अ़लानिया कहा करते थे कि मैं ने ताऊस इब्ने कैसान जैसा साहिबे इल्म व अ़मल बुज़ुर्ग नहीं देखा बिला शुब्ह वह इल्म व अ़मल के एतिबार से अपने ज़माने के सैयदुन्नास थे आप पर ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी का बड़ा ग़लबा था और बहुत ही ख़ुदा

तरस व रक़ीकुलक़ल्ब थे जब कभी भड़कती हूई आग देख लेते तो जहन्नम को याद कर के हवास बाख़्ता हो जाते एक मरतबा किसी होटल वाले ने उन के सामने तन्नूर में से बकरी का सर भून कर निकाला तो आप उस को देख कर बे होश हो गये।

आप गवरनरों और अमीरों के सामने कलिमा–ए–हक़ कह देने में बड़े जरी और निहायत बेबाक थे तब्लीगे हक़ व सदाक़त आप का शेवा था आप कभी अल्लाह तआला के बारे में न किसी बादशाह या गवरनर से मरऊब हूए और न किसी मलामत करने वाले की मलामत का आन्देशा किया।

आईने जवाँ मरदाँ हक़ गोई व बे बाकी
अल्लाह के शेरों को आती नहीं रुबाही

आप ने चालीस हज किए और चालीस बरस तक इशा के वज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़माई 105 हिजरी या 106 हिजरी में आप की वफ़ात हूई मक्का मुकर्रमा में मदफ़ून हुए तबकाते शेअ्रानी और (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

98–हज़रत तलहा इब्ने मुसरिफ़ इब्ने उमर (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

यह कूफ़ा के बलन्द मरतबा व बाकरामत ताबेई मुहद्दिस हैं उन की कुन्नीयत अबू अब्दुल्लाह या अबूमुहम्मद है हज़रत अनस सहाबी रदियल्लाहु तआला अन्हु और दूसरे सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम से सुन कर हदीसें याद फ़रमाई थीं और इमाम अअ्मश वग़ैरा मुहद्दिसीन को आप ने हदीस का सबक़ पढ़ाया।

इब्ने मुईन व अबू हातिम व अजली वग़ैरा ने उन के इल्म व अमल तक़वा व दियानत की तारीफ़ फ़रमाई और उन को सच्चा व मोअ्तमद लिखा और अब्दुल्लाह इब्ने इदरीस नाकिल हैं कि उन का लक़ब सैयदुल कुर्राअ् है और यह कूफ़ा के तमाम आलिमों और क़ारियों में सब से ज़्यादा नेक और मुत्तक़ी व परहेज़गार थे यहाँ तक

कि अ़ब्दुल म़लिक इब्ने अबजर

मुहद्दिस का क़ौल है कि मैंने त़लहा इब्ने मुसारिफ़ का मिस्ल नहीं देखा और मैंने जिस मजमेअ् में उन्हों देखा हर हैसियत से उन ही को सारी क़ौम से अफ़ज़ल व अअ्ला पाया।

112हिजरी या 113हिजरी में उन का इन्तिक़ाल हुआ और कूफ़ा में ही मदफून हुए (तह्ज़ीबुत्तहज़ीब)

99–हज़रत त़ह़ावी (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबूज़अ्फ़र और नाम व नसब अह़मद इब्ने मुहम्मद इब्ने सलामा इब्ने अ़ब्दुलमलिक अज़वी है त़ह़ा मिस्र में एक गाँव का नाम है उस की त़रफ़ निस्बत होने की वजह से त़ह़ावी कहलाते हैं यह मिस्र में फुक्हा –ए–ह़न्फ़ीया के इमाम शुमार किए जाते थे और फ़िक़्ह व ह़दीस में उन की महारत बल्कि इमामत पर अहले इ़ल्म का इत्तिफ़ाक़ है।

यह अबू इबराहीम मोजनी (शागिर्द इमाम शाफ़िई) के भान्जे हैं यह पहले अपने मामूँ अबू इबराहीम मोज़नी के पास पढ़ते थे और शाफ़िई मज़हब के मुक़ल्लिद थे मगर ह़ज़रत इमाम अबूह़नीफ़ा रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि की किताबों का बकसरत मुत़ालअ़ा फ़रमाते रहते थे एक दिन इमाम मोज़नी उन पर ख़फ़ा हो गए और ग़ुस्सा में कह दिया कि खुदा की क़सम तुझ को कुछ भी इ़ल्म ह़ासिल नहीं होगा मामूँ के इस जुमले को सुन कर त़ह़ावी को भी ग़ुस्सा आ गया और दर्स गाह से उठ कर चले गऐ और अबूजअ्फर ह़न्फ़ी के मदरसे में जा कर फ़िक्ह की तअ्लीम ह़ासिलकरने लगे फिर शाम का सफ़र किया और अबू ह़ाज़िम अ़ब्दुलह़मीद क़ाज़ीयुल्लक़ज़ा की मज्लिसे फ़िक़्ह व ह़दीस का इ़ल्म ह़ासिल किया फ़िर मिस्र चले गऐ वहाँ के मुहद्दिसीन से इ़ल्मी इस्तिफ़ादा करने लगे और मज़हबे ह़नफ़ी के मुक़ल्लिद बन गये और मिस्र में खुद फ़िक़्ह व ह़दीस की एक अपनी दर्स गाह क़ाइम कर

के दर्स देने लगे आप की आदत पड़ गई थी कि जब आप तल्बा के सवालों का शाफ़ी जवाब अता फ़रमाते और तल्बा आप के इल्म व फ़ज़्ल की दाद देने लगते तो आप यह फ़रमाते कि अल्लाह तआला मेरे मामूँ इमाम मोज़नी पर रहम फ़रमाऐ अगर वह ज़िन्दा होते तो अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करते आप दर्से फ़िक़ह व हदीस की मसरूफ़ियात के बावजूद बड़ी बड़ी ज़ख़ीम व मुफ़ीद किताबों के मुसन्निफ़ भी हैं आप की तस्नीफ़ करदा किताबों में अहकामुलक़ुर्आन व इख़्तिलाफ़ुल उलमा व शरहे मआनीयुलआसार व शरहे मुश्किलुल आसार व किताबुश्शुरूत व शरहे जामअे सग़ीर व शरहे जामेअ् कबीर व किताब मनाक़िबे अबी हनीफ़ा व तारीख़े कबीर वग़ैरा मशहूर हैं इब्ने ख़लकान अबूसअ्द समआनी से नाक़िल हैं कि इमाम अबू ज़अ्फ़र तहावी 229हिजरी में पैदा हुए और यकुम ज़ीक़अ्दा पन्ज शमबा की रात 321हिजरी में आप की वफ़ात हुई और क़िराफ़ा मिस्र में आप मदफ़ून हुए। (तबसरतुद्दराया वग़ैरा)

100—हज़रत अल्क़मा इब्ने क़ैस (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नीयत अबू शबील और नाम व नसब अल्क़मा इब्ने क़ैस इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने अल्क़मा नख़ई है आप का वतन कूफ़ा है और आप बहुत ही जलालत(बुज़ुर्गी)व अज़मत वाले बलन्द मरतबा ताबिई हैं और इल्मे हदीस में हज़राते ख़ुलफ़ाऐ राशिदीन इब्ने मसऊद वग़ैरा किबार सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम की शागिर्दी का शरफ़ रखते हैं और आप की दर्सगाहे हदीस में सबक़ पढ़ कर दर्जा—ए—इमामत हासिल करने वालों में मुहम्मद इब्ने सीरीन व इबराहिम नख़ई व अबूवाइल वग़ैरा हैं इबराहीम नख़ई का क़ौल है कि अलक्मा इल्म व अमल में अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु से कमाल मुशाबहत रखते थे और अबूइस्हाक़। फ़रमाते हैं कि अल्क़मा यक़ीनन बा करमात उलमाऐ रब्बानीन में से

आप का ज़ुहद व तक़्वा बहुत मशहूर है और इबादते कसीरा में आप अपने ज़माने के बे मिसाल आ़बिद व आ़रिफ़ बिल्लाह थे।

आप बड़े खुश इलहान भी थे हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अकसर आप से कु़र्आन मजीद की तिलावत सुनते थे और फ़रमाते कि ऐ अ़ल्क़मा ! तुझ पर मेरे माँ बाप कुर्बान हो जाऐं मैंने हुज़ूर अ़लैहिस्लाम से सुना है कि अच्छी आवाज़ कु़र्आन की ज़ीनत है ।

आप के मिज़ाज में तवाज़ोअ़ व इन्केसारी भी ह़द से ज़्यादा था शोहरत से बहुत दुर भागते थे लोगों ने अ़र्ज़ किया कि आप दर्से कु़र्आन मजीद का जलसा-ए-आम क्यों नहीं काइम फ़रमाते तो आप ने जवाब दिया कि मैं उस को पसन्द नहीं करता कि जलसा आम में अ़वाम मेरी त़रफ उँगली से इशारा कर के कहें कि देखो यह अ़ल्क़मा हैं।

उमरा और गवरनरों के दिल में आप की बड़ी अ़ज़मत थी और वह लोग आप की ज़ियारत के लिऐ तरसते थे एक मरतबा लोगों ने दर ख़्वास्त की कि आप उन उमरा के पास जा कर लोगों के ह़क़ में सिफ़ारिश क्यों नहीं फ़रमाते ? तो आप ने जवाब दिया कि मैं उमरा के पास से जितनी दुनिया ह़ासिल करूँगा उतना ही यह लोग मेरा दीन बर्बाद कर देंगे।

आप की आ़दत थी कि आप इन्तेहाई मुफ़लिस व फकीर लोगों की लड़कियों से निकाह़ फ़रमाते थे मगर किसी औ़रत से आप की कोई औलाद नहीं हुई यह भी आप के अब्दाल होने की ख़ास़ निशानी है क्यों कि औलियाऐ अब्दाल के औलाद नहीं हुआ करती।

इन्तिक़ाल के बअ़्द आप के तरके में एक चादर एक तहबन्द और एक कुर्आन शरीफ़ के सिवा कुछ भी नहीं था 62 हिजरी या 74हिजरी

में आप की वफ़ात हुई। (ऐनी व तब्क़ाते शेअ्रनी व तहज़ीबुत्तहज़ीब)

इमाम नौवी ने उन के बारे में तहरीर फ़रमाया कि كان من الرّبانين यअ्नी यह उ़लमाऐ रब्बानी में से थे और उन की जलालते शान बलन्दी–ए –मरातिब और इल्मी व अ़म्ली खुबियों पर मुअर्रेख़ीन का इजमाअ् है उन के बारे में इबराहीम नख़ई का क़ौल है कि كان علقمة يشبه بابن مسعود यअ्नी अल्क़मा इब्ने मसऊ़द से मुशाबह थे (तहज़ीबुल असमा नोवी)

उन की खुश नसीबी तो देखिए कि उन के दो भतीजे असवद और अ़ब्दुर्रह़मान बलन्द पाया ताबिई मुहद्दिस और एक नवासा इबराहीम नख़ई फ़क़ीह व मूहद्दिस अल्लाहु अकबर ! एक घर में चार चार ताबेई और आ़ली क़दर मुहद्दिस व फ़क़ीह ! सुब्हानल्लाहि।

101–ह़ज़रत अ़म्र इब्ने मैमून (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

यह हुजूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माने ही में इस्लाम लाए थे मगर दीदारे नबवी के शरफ़ से मह़रूम रहे। कूफ़ा के किबार ताबिईन में उन का शुमार और इल्मे ह़दीस में उन को ह़ज़रत अमीरुलमोमेनीन उ़मर व अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द व मआज़ इब्ने जबल व सअ्द इब्ने अबी वक़ास व अबूहुरैरा और बीबी आइशा वग़ैरा सहाबा–ए किराम रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की शागिर्दी का क़ाबिले फ़ख़्र शरफ़ ह़ासिल है और और उन से शर्फ़े तलम्मुज़ पाने वाले मुह़द्दिसीन में सईद इब्ने जुबैर व अबूइस्ह़ाक़ सबीई व आ़मिर शोअ्बी वग़ैरा खास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

अबुइस्ह़ाक़ सबीई का क़ौल है कि अ़म्र बिन मैमून पर सह़ाबा –ए–किराम का बे ह़द करम था और उन के इल्म व अ़मल के कमाल पर ह़ज़राते स़ह़ाबा को बेह़द मसर्रत व शादमानी थी और यह इस क़द्र आरिफ़ ब्लिलाह व बाकरामत बुज़ुर्ग थे कि जब यह मस्जिद में दाख़िल होते थे तो हाज़िरीने मस्जिद को उन की सूरत देख कर खुदा

याद आजाता था इबादत की कसरत में मशहूर थे पचास हज और पचास उमरा अदा किया था और दूसरी इबादतों का तो शुमार ही नहीं हो सका।

74हिजरी में वफ़ात पाई और कूफ़ा में मदफून हुऐ। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

102हज़रते इमाम अ़ली इब्ने हुसैन (रहमतुल्लाहि तआ़लाअ़लैहि)

आप की कुन्नीयत अबुलहसन और नाम व नसब अ़ली इब्ने हुसैन इब्ने अमीरुलमोमेनीन अ़ली इब्ने अबी तालिब है और कसरते इबादत की वजह से आप का लक़ब "ज़ैनुलआ़बेदीन" है आप ख़ानऐ अहले बैत के रौशन चिराग़ बल्कि अपने दौर के सैयदुस्सादात और ज़मान–ए–ताबिईन के जलीलुल क़दर इमाम और वारिसे इल्मे बाबे नुबुव्वत कसीरुल इबादत व साहिबे करामत, सरदारे औलिया सरताजे असफ़िया हैं।

इल्मे हदीस में अपने वालिद माजिद हज़रत इमाम हुसैन व दीगर सहाबा किराम रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के वारिसे उ़लूम हैं और उन के फ़ैज़ाने तअ़लीम व तर्बियत से मुस्तफ़ीज़ होने वालों में आप के साहब ज़ादे

इमाम मुहम्मद बाक़र व इमाम जुहरी ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

मुहद्दिस अबूबकर इब्ने शीबा वग़ैरा का क़ौल है कि **اصح الاسانيد الزهری، عن علی بن الحسين عن ابيه** यअ़नी हदीस की सनदों में सब से ज़्यादा सहीह सनद वही है जिस में इमाम ज़ैनुलआ़बेदीन अपनेवालिद इमाम हुसैन से और वह अपने वालिद हज़रत अमीरुलमोमेनीन अ़ली रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत करते हैं।

इमाम जुहरी फ़रमाते हैं कि मैंने किसी कुरैशी को इमाम ज़ैनुलआ़बेदीन से अफ़ज़ल व अअ़ला नहीं देखा सईद इब्ने मुसैयब कहते हैं कि मेरी नज़र में उन से बढ़ कर कोई साहिबे तक़वा नही है।

आप करबला में बहालते बीमारी अपने वालिद माजिद हज़रत इमाम

हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु के हमराह थे और शोहदाऐ करबला रदियल्लाहु तआला अन्हुम की शहादत के बअ्द ख़वातीने अहले बैत को हमरार ले कर करबला से कूफ़ा से दमिश्क़ और दमिश्क़ से मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाये।

आप बहुत ही हलीम और साबिर व शाकिर थे यज़ीद पलीद के दौरे हुकूमत में आप को करबला से दमिश्क़ तक हथकड़ी और बेड़ी पहना कर लाया गया फिर अ़ब्दुलमलिक इब्ने मरवान ने अपनी हुकूमत के ज़माने में आप को लोहे की हथकड़ी और गले में भारी तौक़ पहना कर मदीना मुनव्वरा से शाम तक चलने पर मजबूर किया और दमिश्क़ में आप को क़ैद कर दिया आप ने उन तमाम मशक़्क़तों को बरदाश्त फ़रमालिया और उफ़ भी नहीं किया बल्कि हर दम हर क़दम पर सब्र व शुक्रे इलाही के सिवा एक लफ़्ज़ भी ज़ुबान पर नहीं लाए आप के अक़ीदत शिआर व वफ़ादार शागिर्द इमाम ज़ुहरी को आप की गिरफ़तारी की ख़बर मअ्लूम हुई तो तड़प गए और दमिश्क़ में अ़ब्दुलमलिक इब्ने मरवान के दरबार में पहुँच कर आप को रिहा कराया और फिर पूरे एअ्ज़ाज़ के साथ आपको मदीना मुनव्वरा लाए!

शहद से मीठे बोल

आप के हिल्म का यह हाल था कि आप एक दिन मस्जिदे नबवी से बाहर निकले तो बिला वजह एक शख़्स आप को गालियाँ देने लगा और आप की शान में इन्तिहाई बेहूदा और दिल ख़राश अल्फ़ाज़ बकने लगा आप के ख़ुद्दाम व मुहिब्बीन जोशे इन्तिक़ाम में उस को मारने के लिए दौड़े तो आप ने निहायत सख़्ती के साथ सब को मनअ् फ़रमाया और उस शख़्स से निहायत नर्म लहजे में फ़रमाया कि तुम ने जितनी बुराईयाँ बयान की हैं उन से कहीं ज़्यादा बुराईयाँ हमारे अन्दर हैं जिन को तुम नहीं जानते बहर हाल अगर तुम्हारी

हम से कोई हाजत हो तो उस को बयान करो हम इन्शाअल्लाह तआला तुम्हारी हाजत को पूरी करेंगे वह शख़्स बर्फ़ से ज़्यादा ठन्डे और शहद से ज़्यादा मीठे बोल सुन कर बिल्कुल ही ठन्डा पड़ गया और बेहद शर्मिन्दा हो कर मअज़िरत करने और मुआफ़ी माँगने लगा आप को उस की निदामत पर रहम आगया तो अपनी चादर मुबारक और एक हज़ार दिरहम उस को इनायत फरमाये वह आपकी उस करीमाना नवाज़िश पर हैरान रह गया और ज़ोर ज़ोर से कहने लगा कि اَشْهَدُ اَنَّكَ مِنْ اَوْلَادِ الرَّسُوْلِ यअ़्नी मैं इस बात की शहादत देता हूँ कि बिला शुबह यक़ीनन आप रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद में से हैं।

आप ने अपनी ज़िन्दगी में दो मर्तबा अपना सारा माल खुदा की राह में खै़रात किया और आप की सख़ावत का यह आलम था कि आप बहुत से गुर्बा –ए–अहले मदीना के घरों में ऐसे पोशीदा तरीक़ों से रक़म भेजा करते थे कि उन गुरबा को ख़बर ही नहीं होती थी कि यह कहाँ से आता है ? मगर जब आप का विसाल हो गया तो उन ग़रीबों को पता चला कि यह हज़रत इमाम ज़ैनुलआ़बिदीन रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हु की सख़ावत थी।

आप बहुत ही शाइस्ता व बाअदब थे अपने बड़ों ख़सूसन सहाबा किराम रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हुम का तो बेहद एहतेराम फ़रमाते और हज़रत अबूबकर व उ़मर रदि़यल्लाहु ताआ़ला अ़न्हुमा की मदह व सना तो बर सरे मिम्बर फ़रमाते और तमाम सहाबा के लिए दुआए रहमत फ़रमाते एक मर्तबा किसी ने आप से हज़रत अबूबकर व उ़मर रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के बारे में पूछा कि उन दोनों का मर्तबा बारगाहे रिसालात में क्या था ? तो आप ने दोनों क़बरों की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि इस वक़्त उन दोनों को जो क़ुर्ब ह़ासिल है यही क़ुर्ब उन दोनों का ह़यात में भी था।

आप बड़े खुदा तरस भी थे और और आप का सीना गोया ख़ौफ़ व ख़शीयते इलाही का सफ़ीना था हज का एहराम बाँधा था तो लब्बैक नहीं पढ़ा लोगों ने कहा कि हुज़ूर लब्बैक क्यों नहीं पढ़ते ? तो आबदीदा हो कर फ़रमाया कि मुझे डर लगता है कि मैं लब्बैक कहूँ और खुदा की तरफ़ से ''ला लब्बैक'' की अवाज़ न आ जाए यअ्नी मैं तो यह कहूँ कि ऐ खुदावन्द! मैं बार बार तेरे दरबार में हाज़िर हूँ और इधर से कहीं यह आवाज़ न आजाए कि नहीं नहीं ! तेरी हाज़री क़बूल नहीं लोगों ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! बग़ैर लब्बैक पढ़ते हूए आप का एहराम कैसे होगा ? तो आप ने बलन्द आवाज़ से लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक आखिर तक पड़ा मगर एक दम ख़ौफ़े इलाही से लरज़ कर ऊँट की पुश्त से ज़मीन पर गिर पड़े और बे होश हो गये जब होश में आते ''लब्बैक''पढ़ते और फिर बे होश हो जाते इसी हालत में आप ने हज़ अदा फ़रमाया।

आप की कसरते इबादत खुद एक बहुत बड़ी करामत है सफ़र और वतन में कभी भी आप की नमाज़े तहज्जुद क़ज़ा नहीं हुई और आप रोज़ाना बिला नाग़ा एक हज़ार रकअ्त नफ़्ल उम्र भर पढ़ते रहे अठावन बरस की उम्र पाकर 93 हिज़री में विसाल फ़रमाया और मदीना मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुलबक़ीअ् में हज़रत इमाम हुसन मुज्तबा रदियल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र शरीफ़ के पहलू में मुदफ़ून हुए (इकमाल व तबकाते शेअ्रानी व तहजीबुत्तहजीब)

103–हज़रत अम्रबिन उतबा बिन फरक़द (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

यह कूफ़े के बहुत मुमताज़ मुहद्दिस व मुजाहिदीन और तबक़ऐ–ताबिईन में एक बड़ी ख़ास इम्तियाज़ी शान रखते हैं यह इल्मे हदीस में हज़रत अब्दुल्ला इब्ने मसऊद के बड़े ख़ास शागिर्द हैं और उन के शागिर्दों में आमिर शअ्बी वग़ैरा मुहद्दिसीन हैं।

यह जुहद व इबादत में मशहूरे ज़माना और बहुत ही

कसीरुलकरामात थे अ़ली इब्ने स़ालेह़ का बयान है कि यह धूप में अपने साथियों के साथ ऊँट चराते थे तो बदली का एक टुकड़ा उन पर साया करता था और जंगल में यह अकेले नमाज़ पढ़ते थे तो जंगली दरिन्दे उन के पास बैठ कर दुम हिलाते रहते थे और उन की हिफ़ाज़त करते थे!

इमाम अअ़मश कहते हैं कि अ़म्र इब्ने उ़तबा फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह तआ़ला से तीन मुरादों की दुआ़ माँगी है जिन में से दो मुरादें तो खुदा वन्द तआ़ला ने पूरी फ़रमादी हैं लेकिन एक मुराद का मुश्ताक़ और बेचैनी के साथ मुन्तज़िर हूँ मैंने खुदा से यह दुआ माँगी थी कि मैं जाहिद हो जाऊँ तो मेरी यह मुराद पूरी हो गई क्योंकि मेरे क़ल्ब का यह ह़ाल है कि न किसी चीज़ के मिलने की खुशी होती है न किसी चीज़ के बर्बाद होने का ग़म होता है मेरी दूसरी दुआ़ यह थी कि मुझे बहुत ज़्यादा नमाज़ पड़ने की त़ाक़त व तौफ़ीक़ ह़ासिल होजाये तो मेरी यह दुआ़ भी मक़बूल होगई कि अल्ह़म्दु लिल्लाह ! मैं दिन रात में बहुत ज़यादा नमाज़ें पढ़ लेता हूँ मेरी तीसरी दुआ़ यह थी कि मुझे शहादत नसीब होजाये अभी तक मेरी यह मुराद पूरी नहीं हुई लेकिन खुदा वन्द कुद्दूस से उम्मीद वार हूँ कि वह मेरी तीसरी मुराद भी ज़रूर पूरी फ़रमादेगा!

अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने यज़ीद से मन्कूल है कि हम लोग एक लश्कर के साथ जिहाद में गये तो हमारे साथ अ़ल्क़मा इब्ने क़ैस और अ़म्र इब्ने उ़तबा यह दोनों मुहद्दिसीन भी शरीके जिहाद हुए एक दिन अ़जीब इत्तिफ़ाक़ हुआ कि अ़म्र इब्ने उ़तबा निहायत सफ़ेद लिबास पहन कर इस्लामी लश्कर में खड़े थे कहने लगे कि मेरे उन सफ़ेद कपड़ों पर अगर खुदा की राह में मेरा खून बहे तो यह कितना ह़सीन मन्ज़र होगा अभी उन की बात पूरी भी नहीं हूई थी कि लश्करे कुफ़्फ़ार में से किसी काफ़िर ने गोफन से एक पत्थर फेंका जो अ़म्र

इब्ने उ़तबा के सर में लगा और आप के सफेद कपड़े खून से रंगीन होगए और थोड़ी देर में आप शहीद हो गये !

इबराहीम नख़ई बयान करते थे कि अम्र इब्ने उ़तबा शहीद की नमाज़े जनाज़ा मेरे उस्ताद अ़ल्क़मा इब्ने कैस ने पढ़ाई थी यह वाक़ेआ तनतर में पेश आया जो हज़रते अमीरुलमोमेनीन उ़समान ग़नी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दौरे ख़िलाफ़त में हुआ (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

104–हज़रत उ़रवा इब्ने जुबैर (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उ़र्वा इब्ने जुबैर इब्ने अ़वाम कुरैशी की कुन्नीयत अबू अ़ब्दुल्लाह है 22हिजरी में पैदा हुए बहुत ही साहिबे इल्म व फ़ज़्ल और निहायत ही बलन्द मरतबा ताबिई हैं अपने वालिद माजिद हज़रत ज़ुबैर इब्ने अ़वाम और अपनी वालिदा असमा बिन्ते अबूबक्र सिद्दीक़ और अपनी खाला बी बी आ़इशा और दूसरे सहाबा किराम रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से सुन कर अहादीस की रिवायत फ़रमाते हैं और आप से रिवायतें कर ने वालों में खुद आप के फ़रज़न्द हिश्शाम इब्ने उ़रवा व इमाम जुहरी बहुत ही नामवर गुज़रे हैं मदीना मुनव्वरा के उन सात फुक़्हा की फ़िहरिस्त में आप का इस्मे गिरामी हैं जिन की इल्मी जलालत पर तमाम मुहद्दिसीन व फुक़हा का इत्तिफ़ाक़ है अबुलज़ियाद का क़ौल है कि मैं मदीना मुनव्वरा के उन सातों फुक़हा से मुलाक़ात कर चुका हूँ जो इल्म व फ़ज़्ल की अअ़ला मन्ज़िल पर पहुँचे हुए हैं और उ़रवा इब्ने जुबैर इल्म का एक ऐसा समन्दर हैं जो कभी खुश्क़ नहीं हो सकता इल्मी फ़ज़ीलत के साथ साथ अअ़्माले सालिहा की दौलत से भी माला माल थे और स़ब्र सख़ावत और इबादत व रियाज़त में भी अपने हम अ़सरों में बड़ी ख़ास खुसूसियत रखते थे कसरते नमाज़ व तिलावत के इलावा महीनों लगातार रोज़ा रखते थे आप के पाँव में आकिला का फ़ोड़ा हो गया

था पाँव काटना पड़ा आप ने रोज़े की हालत में बैठे हुए आपरेशन करालिया और किसी ने आप के जिस्म पर हाथ भी नहीं लगाया पाँव कट जाने के बअ़्द आप की ज़ुबान से सिर्फ़ यह जुमला निकला कि अल्हमदु लिल्ला ! खुदावन्द करीम का शुक्र है कि मेरा एक पाँव तो अभी सलामत है मदीना मुनव्वरा में बहालते रोज़ा 94हिजरी में आप का विसाल हुआ। (तब्क़ाते शेअ़रानी व तहज़ीबुत्तहज़ीब)

105–हज़रत अ़ला इब्ने ज़ियाद (रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैहि)

अ़ला इब्ने ज़ियाद बिन मुतिर अ़द्वी बसरा के उन ताबिई मुहद्दिसीन में से हैं जो बसरा छोड़ कर शाम में मुक़ीम होगये थे आप ने अपने वालिद और हज़रत अबूहुरैरा व अबूज़र गफ़्फ़ारी वग़ैरह सहाबा रदियल्लाहु अ़न्हुम से ह़दीस की समाअ़त व रिवायत की है और किबार ताबिईन में ख़्वाजा ह़सन बस़री से भी इल्मी इस्तिफ़ादा फ़रमाया है और आप के शागिर्दों में से क़तादा मुहिद्दस बहुत मशहूर हैं ।

आप बहुत ही ख़लवत पसन्द व गोशा नशीन बुज़ुर्ग थे नमाज़े जमाअ़त या किसी कारे ख़ैर के सिवा कभी किसी मज़्मअ़े में आना पसन्द नहीं फ़रमाते थे आप पर ख़ौफ़े इलाही ज्यादा ग़ालिब था दिन रात क़ियामत को याद कर के रोया करते थे यहाँ तक कि आप की आँखों में सुर्ख़ी और आशोब चश्म की मुस्तक़िल बीमारी होगई थी आप की यह भी एक करामत थी कि हफ़्तों बिग़ैर कुछ खाए पिए दिन रात रोया करते थे।

मिज़ाज में तवाज़ोअ़ और इन्किसारी भी ह़द से ज़्यादा थी किसी ने ख़्वाब देखा कि आप जन्नत में हैं उस ने खुशी खुशी आकर आप से अपना ख़्वाब बयान किया तोआप ने ख़फ़ा हो कर उस को डाँट दिया और फ़रमाया कि तेरा सत्तियानास हो ! क्या शैत़ान को मेरे और तेरे सिवा दूसरा कोई मज़ाक़ करने

के लिए नहीं मिला था?

आप आपनी दर्स गाह में अपने शागिर्दों को अकसर यह नसीहत फ़रमाया करते थे तुम लोग सिराते मुस्तक़ीम पर क़ाइम रहो क्योंकि तुम लोग ऐसे ज़माने में हो कि बहुत कम लोग ऐसे मिलेंगे कि जिन के दीन का दसवाँ हिस्सा बर्बाद हो गया हो मगर आइन्दा ऐसा ख़राब ज़माना

आने वाला है कि बहुत कम लोग ऐसे होंगे जिन के दीन का दसवाँ हिस्सा भी सलामत रह जाऐगा 94हिजरी में आप ने दुनिया से रेहलत फ़रमाई। (तब्क़ाते शेअ्रानी व तहज़ीबुत्तज़ीब)

106–हज़रत अ़ब्दुर्रहमान इब्ने नेअ्म बिज्ली (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

कूफ़े के उ़ब्बाद व जुहहाद ताबिईन में आप का शुमार है हज़रत अबूहुरैरा व अबु सईद खुदरी वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हुम के बलन्द पाया शागिर्द हैं और आप के शागिर्दों में भी सैकड़ों मुहद्दिसीन हुए। यह बहुत ही अअ्ला दरजे के मुत्तक़ी और निहायत बुज़ुर्ग साहिबे करामत इबादत गुज़ार थे बुकैर आ़मिर का क़ौल है कि अगर अ़ब्दुर्रहमान इब्ने नेअ्म से कह दिया जाए के मलिकुलमौत इस वक़्त तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करने के लिए आचुके हैं तो उस वक़्त भी वह उस से ज़्यादा इबादत नहीं कर सकते थे जितनी वह रोज़ाना इबादत करते थे कूफ़ा से हर साल हज के लिए जाते थे।

उन की एक अ़जीब करामत मन्कूल है और वह यह कि हज्जाज इब्ने यूसुफ़ सक़फ़ी ने उन को गिरफ़तार कर के एक अन्धेरी कोठरी में बन्द कर दिया और पन्द्रह दिन तक दरवाज़े को मुक़फ़्फ़ल रखा फिर हज्जाज ने हुक्म दिया कि ताला खोल कर लाश को दफ़न कर दो ग़ालिबन लाश सड़ चुकी होगी मगर जब ताला खोला गया तो यह नज़र आया कि आप निहायत खुज़ूअ व खुशूअ् के साथ इतमीनान से नमाज़ पढ़ रहे हैं

हज्जाज आप की करामत देख कर दंग रह गया और फ़िर उस पर ऐसी हैबत तारी हुई कि उस ने आप को रिहा कर दिया कि आप आज़ाद हैं जहाँ चाहें चले जायें (तहजीबुत्तहज़ीब)

107–हज़रत अ़ब्दुर्रहमान इब्ने उसैला मुरादी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

यह अबुअ़ब्दुल्लाह ज़ाबेही के लक़ब से मशहूर हैं यह हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के दीदार व बैअ़त के लिए मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए मगर उन की आमद से पाँच या छः दिन क़ब्ल हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम दुनिया से रेहलत फ़रमा चुके थे इस लिए यह सहाबियत के शरफ़ से महरूम रह गए मगर बड़े मरतबे वाले ताबिईन में इनका शुमार है और यह इल्मे हदीस में हज़राते खुल्फ़ाए राशिदीन व बी बी आइशा वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हुम की शागिर्दी का शरफ़ हासिल किए हुए हैं यह फ़त्हे मिस्र के जिहाद में भी शामिल हुए थे ख़लीफ़ा अ़ब्दुलमलिक इब्ने मरवान उन का बेहद मोअ़तक़िद था इस क़दर तअ़ज़ीम करता था कि तख़्ते शाही पर अपने बराबर उन को बिठाता था यह बहुत ही फ़ज़ाइल व मनाक़िब वाले बुज़ुर्ग हैं उन के अअ़माले सालिहा व कसरते इबादत पर सहाबए किबार भी तहसीन व आफ़रीन फ़रमाते थे चुनाँचे इब्ने मुहीरीज़ नाक़िल हैं कि एक दिन हम लोग हज़रत उ़बादा इब्ने सामित रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बीमार पुरसी के लिए हाज़िर हुए तो बिल्कुल अचानक अबु अ़ब्दुल्लाह जाबेही भी उस मज्लिस में आगए उन्हें देख कर उ़बादा इब्ने सामित सहाबी ने फ़रमाया कि अगर किसी को ऐसे आदमी के देखने का शौक़ हो जिस को आसमानों पर चढ़ा कर अहले जन्नत व दोज़ख दिखा दिए गए हों और फिर वह ज़मीन पर आकर इबादत करता हो तो उस शख़्स को चाहिए कि वह अबु अ़ब्दुल्लाह ज़ाबे को देख ले क्योंकि उन की इबादत

का ज़ौक़ शौक़ ऐसा ही है जेसे मअ्लूम होता है कि उन्हों ने जन्नत व जहन्नम को देख़ लिया है इमाम बुख़ारी ने अपनी तारीख़े औसत में उन का तज़किरा 70हिजरी और 80हिजरी के दरमियान वफ़ात पाने वाले मुहद्दिसीन की फ़ेहरिस्त में किया है (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

108–हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने ग़ालिब हद्दानी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

बसरा के बहुत मशहूर आ़बिद व ज़ाहिद ताबिई मुहद्दिस हैं और इल्मे हदीस में हज़रते अबू सईद खुदरी वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अ़न्हुम के शागिर्द और क़तादा वग़ैरा नामवर मुहद्दिसों के उस्ताद हैं!

यह रोज़ाना एक सौ रकअ़त नमाज़ चाश्त पढ़ते थे मगर इतने इतमीनान के साथ और इतनी त़वील नमाज़ पढ़ते थे कि सईद इब्ने यज़ीद बयान करते हैं कि एक बार मैंने देखा कि यह सज्दे में गए और एक शख़्स बसरा के पुल पर से गुज़र कर जानवरों का चारा ख़रीदने के लिए गया वह शख़्स बाज़ार से चारा ख़रीद कर आगया मगर उस वक़्त तक उन्हों ने सज्दे से सर नहीं उठाया था ।

यहया इब्ने सईद का क़ौल है कि यह 8ज़िल्हिज्जा 83हिजरी को शहीद कर दिए गए दफ़न के बअ्द उन की क़ब्र शरीफ़ की मिट्टी से मुश्क की खुश्बू आती थी चुनाँचे आ़म तौर पर लोग उन की क़ब्र की मिट्टी उठा कर ले जाते थे बार बार क़ब्र पर मिट्टी डाली जाती थी और खुश्बू की वजह से लोग उठा ले जाते थे । (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

109—हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुहीरीज जमही कुर्शी(रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

बेहतरीन आबिद व सालेह़ मुहद्दिस थे और ताबिईन में इल्म व अमल का एक पहाड़ समझे जाते थे रजा इब्ने हिवा कहा करते थे कि अगर अहले मदीना को अपने आबिद अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर पर फ़ख़्र है तो हम लोगों को अपने आबिद अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने मुहीरीज़ पर नाज़ है!

उन्होंने हज़रत अ़बूमहज़ूरा व उ़बादा इब्ने सामित वग़ैरा सहाबा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से ह़दीस की समाअ़त व रिवायत की और मकहूल व इमाम जुहरी वग़ैरा बाकमाल ह़दीस के इमामों ने उन की ख़ि़दमत में तह़सीले इल्म की 100हिजरी से क़ब्ल आप का विसाल हुआ (तब्क़ाते शेअ़रानी वग़ैरा)

110—हज़रते उ़मर इब्ने अ़ब्दुल अज़ीज़ (रहमतुल्लाहि तआ़लआ अ़लैहि)

आपकी कुन्नियत अबूहफ़्स और नाम व नसब उ़मर बिन अ़ब्दुल्ल अजीज़ मरवान इब्ने जोअ़म हैं आप की वालिदा हज़रत अमीरुलमोमेनीन उ़मर फ़ारुक़ रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की पोती उम्मे आसि़म बिन्ते आ़सिम इब्ने उ़मर इब्ने ख़त्ताब हैं।

ह़दीस में आप अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रह़मान और दूसरे बलन्द मर्तबा ताबिई़ मुहद्दिसीन के शागिर्द हैं और आप से इल्मे ह़दीस की तह़सील करने वालों में इमाम जुहरी व अबूबकर इब्ने हज़म बहुत बलन्द मरतबा व नामवर हैं बनू उमय्या के बादशाह सुलैमान इब्ने अ़ब्दुलमलिक के बअ़द आप वालीए ख़ि़लाफ़त व अमीरूल मोमेनीन हुए और सिर्फ़ दो बरस पाँच महीने आप सरीर आराए खि़लाफ़त रहे मगर इतनी क़लील मुद्दत मे आपने अपने अ़द्ल व इन्साफ़ और अम्र बिल मअ़रूफ़ व नही अ़निल मुन्कर से एक इन्क़िलाबे अ़ज़ीम पैदा फ़रमा दिया और शाहाने बनू उमय्या के बरसहा बरस के जुल्म व उ़दवान और मआ़सी व बिदआत का बेड़ा ग़र्क़ कर दिया और उमवी सल्त़नत को ख़ि़लाफ़ते

राशेदा का नमूना बनादिया

आप के दौर ख़िलाफ़त की बरकतें दीनी ख़िद्मतें 'और उम्मते रसूल पर आप की करीमाना रहमतें जो मशहूरे ख़लाइक़ हैं दर हक़ीक़त आप के ऐसे शानदार कारनामे हैं कि हज़ारों बरस की गरदिशे लैल व नहार भी उन चमकते हुए नुकूश को महव नहीं कर सकती आप बचपन ही से नेक नफ़्स निहायत सालेह और आबिद व ज़ाहिद थे मगर जिस दिन से आप को ख़िलाफ़त सुपुर्द की गई उस दिन से तो आप की दुनिया ही बदल गई अपनी बीवी बनूउमय्या की शाहज़ादी फ़ात्मा बिन्ते अब्दुलमलिक और अपनी बान्दीयों से आप ने फ़रमाया कि अब अमानते खुदावन्दी यअ्नी ख़िलाफ़त का इतना बड़ा बोझ मेरे सर पर आगया है कि अब मैं तुम लोगों की तरफ़ तवज्जह नहीं कर सकता इस लिए अगर तुम सब चाहो तो तलाक़ या आज़ादी क़बूल कर लो यह सुन कर सब चीख़ मार कर रो पडीं मगर किसी ने आपकी जुदाई क़बूल नहीं की जिस दिन आप ख़लीफ़ा हुए पचास हज़ार दीनार आप के घर में थे यह सारी दौलत आप ने खुदा की राह में ख़ैरात कर दी और बिल्कुल फ़कीराना ज़िन्दगी बसर करने लगे उन की बीवी का बयान है कि जब से आप ख़लीफ़ा हुए कभी आप ने गुस्ले जनाबत नहीं किया आप पर इस क़दर ख़ौफ़े खुदावन्दी ग़ालिब हो गया था कि ख़िलाफ़त के कामों से फ़ारिग़ हो कर घर में दाख़िल होते तो नमाज़े तहज्जुद की जगह पर सारी रात नमाज़ और गिरया व जारी में गुज़ार देते और दिन को अकसर रोज़ा दार रहते आप का एक ख़ास मअ्मूल यह भी था कि जब मदीना मुनव्वरा किसी क़ासिद को रवाना फ़रमाते तो उस को ख़ास तौर पर यह ताकीद फ़रमाते कि वह रोज़ा–ए– मुकद्दसा पर हाज़िर हो कर हुजूरे अकरम अलैहिस्सलातु वस्सलाम और हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के दर बार में मेरा सलाम

अर्ज़ करे।

आप के जुहद व तक़्वा और इबादात नीज़ आप के मनाक़िब व करामात के अहवाल बहुत ज़्यादा हैं जो आप की तारीख़ में मुफ़स्सल तौर पर तहरीर हैं।

किसी ने आप को ज़हर खिला दिया था उस की तकलीफ़ से रजब 101हिजरी में बमक़ाम दैर सम्आन सूबा हम्स में आप शहीद हुए

(तब्क़ाते शेअ़रानी व इकमाल वग़ैरा)

111–हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने शक़ीक़ अक़ीली (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबूअ़ब्दुर्रहमान या अबू मुहम्मद है आप बहुत ही बाकरामत बुज़ुर्ग ताबिई मुहद्दिस हैं और इल्मे हदीस में हज़रत अमीरुलमोमेनीन उ़मर व उसमान व अ़ली वग़ैरा किबार सहाबा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के शागिर्द हैं और आप से इल्मी फ़ैज़ उठाने वाले मुहद्दिसीन में मुहम्मद इब्ने सीरीन व क़तादा वग़ैरा हैं।

इब्ने सअ़द ने उन को ताबिईने बसरा के त़ब्क़–ए–ऊला में शुमार किया और अबू हातिम वग़ैरा ने उन को सिक़्ह मुहद्दिस बताया और हरीरी का क़ौल है कि अ़ब्दुल्लाह इब्ने शक़ीक़ की दुआऐ इस क़दर जल्द मक़बूल होती थीं कि अगर कोई बदली उड़ती हूई गुज़रतीऔर यह दुआ कर देते कि ऐ अल्लाह!यह बदली बग़ैर बरसे हुए यहाँ से न जाने पाए तो फ़ौरन वह बदली ठहर जाती और बारिश होने लगती थी चुनाँचे इब्ने अबी ख़ैस्मा ने आप की इस करामत को अपनी तारीख़ में बहुत नुमायाँ तौर पर ज़िक्र किया है 108 हिजरी में आप की वफ़ात हुई।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

112–हज़रत उ़बादा इब्ने नसी कन्दी (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबू उ़मर और वतन के एअ्तेबार से शामी उर्दनी हैं और तिब्रिया के क़ाज़ी भी रह चुके हैं हज़रत उ़बादा बिन सा़मित वग़ैरा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से ह़दीस का सिमाअ़् किया और उन से बड़े बड़े मुह़द्दिसीन ने ह़दीस की समाअ़त व रिवायत की है ।

अ़ज्ली ने उन को क़ाबिले एअ्तेमाद मुह़द्दिस फ़रमाया और इमाम बुख़ारी ने उन को मुह़द्दिसीन का सरदार कहा।

यह दौरे ताबिईन के इस कदर नेक व सा़लेह़ और बाकरामत वली थे के मुस्लिमा बिन अ़ब्दुलमलिक फ़रमाया करते थे कि कुन्दा में तीन बुजुर्ग ऐसे बाकरामत हैं कि उन्हें तीनों के तुफ़ैल में अल्लाह तआ़ला बारिश अ़ता फ़रमाता है और उन्हीं तीनों की बरकत से कुफ़्फ़ार पर इस्लामी लश्कर को फतहे मुबीन हा़सिल होती है (1) उ़बादा इब्ने नसी (2)रजा इब्ने ह़ीवा (3) अ़दी इब्ने अ़दी और यह तीनों अअ्ला दरजे के मूहद्दिस हैं उ़बादा इब्ने नसी का सने वफ़ात 118हिजरी है (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

113–हज़रत अ़ता इब्ने अबी रबाह़ (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

आप की कुन्नीयत अबू मुहम्मद है ह़ब्शी नस्ल के थे घूंघरु वाले बाल 'काला रंग पस्त नाक आ़खिर उ़म्र में नाबीना होगये थे बहुत ही जलीलुश्शान ताबिई मुह़द्दिस और मक्का मुकर्रमा के फकीहे अअ्ज़म थे आप को इल्मे ह़दीस में अ़ब्दुल्ललाह इब्ने अ़ब्बास व अबूहुरैरा व अबू सईद खुदरी वग़ैरा सह़ाबा–ए–किराम रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की शागिर्दी का शरफ़ हा़सि़ल हुआ और बड़े बड़े ह़दीस के इमामों ने आप की शागिर्दी इख़्तियार की जिन की तअ्दाद बहुत ज़्यादा है बड़े बड़े फुक्हाऐ किराम और ह़दीस के इमामों ने आप के फ़ज़्ल व कमाल और तक़्वा व दीनदारी की शहादत दी सल्मा इब्ने कुहैल मुह़द्दिस

अ़लानिया फ़रमाया करते थे कि मेरे इल्म में तीन ही शख़्स ऐसे हैं जिन्होंने इल्मे ह़दीस को सिर्फ़ रज़ाऐ इलाही के लिए पढ़ा है (1)अ़ता (2)त़ाऊस (3)मुजाहिद

इमाम औज़ाई ने आप की ख़बरे वफ़ात सुन कर फ़रमाया कि अफ़सोस! इस वक़्त दुनिया का सब से ज़्यादा बेहतरीन स़ाह़िबे इल्म व अ़मल दुनिया से चला गया ।

आप के मिज़ाज में इस्तिग़ना के साथ साथ इन्किसारी भी बहुत ज़्यादा थी कोई मुलाक़ात के लिए आता तो उस वक़्त तक दरवाज़ा नहीं ख़ोलते जब तक यह दरयाफ़्त कर लेते कि किस नीयत से मुलाक़ात के लिए आया है?अगर कोई कहता कि मैं सिर्फ़ आप की ज़ियारत के लिए आया हूँ तो आप फ़रमाते कि कितना ख़राब ज़माना आगया है कि लोग मुझ जैसे ख़राब आदमी की मुलाक़ात के लिए आते है ! अक्सर बनू उमय्या के सलात़ीन आप के शागिर्द थे उमवी ख़लीफ़ा सुलैमान इब्ने अ़ब्दुल मलिक आप से किताबुलह़ज पढ़ता था मगर आप उस की बादशाही का मुतलक़ ख़याल नहीं फ़रमाते थे और फ़ुक़रा व मसाकीन तल्बा की सफ़ में उस को बिठाते थे चुनाँचे सुलैमान इब्ने अ़ब्दुलमलिक अपने लड़कों से कहा करता था कि मेरे बच्चों ! बचपन ही में इल्म सीख लो क्यों कि इल्म सीखने के लिए मुझे उस काले गुलाम (अ़ता इब्ने अबी रबाह़) के सामने जो ज़िल्लत उठानी पड़ी है मैं उस को उ़म्र भर नहीं भूलूँगा।

आप नमाज़े तहज्जुद के बेह़द पाबन्द थे और रोज़ाना नमाज़े तहज्जुद में दो सौ आयतें निहायत तजवीद व तरतील के साथ पढ़ा करते थे

आप ने ज़िन्दगी में सत्तर ह़ज किए और सौ बरस की उ़म्र पाकर 115हिजरी में मक्का मुअ़ज़्ज़मा के अन्दर विस़ाल फ़रमाया

(तब्क़ाते शेअ़रानी वग़ैरह)

114–हज़रत अ़ली इब्ने अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

यह हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास सहाबी रदि़यल्लाहु अ़न्हुमा के सब से छोटे फरज़न्द हैं उन की वालिदा का नाम ज़ुरअ़ह बिन्ते मशरह़ है ख़ानदाने क़ुरैश में सब से ज़्यादा ह़सीन व जमील थे बालों में वसमा का ख़िज़ाब फ़रमाते थे यह 40 हिजरी में ख़ास़ उस रात में पैदा हुऐ जिस रात में ह़ज़रत अ़ली रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कूफ़ा में शहीद हो गये।

उन का वत़न मदीना मुनव्वरा है और ताबेई मुह़द्दिसीन में उन का शूमार है उन्होंने इल्मे ह़दीस अपने वालिद माजिद हज़रत अ़ब्दुल्ला इब्ने अ़ब्बास व अबूहुरैरा वग़ैरा सहाबऐ किराम रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से पढ़ा और उन की मज्लिसे दर्स में सबक़ पढ़ने वालों की फ़िहरिस्त में उन के फ़रज़नद मुह़म्मद इब्ने अ़ली और इमाम ज़ुहरी ख़ास़ त़ौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

यह बहुत सिक़ा व मोअ्तमद मुह़द्दिस थे मगर बहुत ही कम ह़दीसों की रिवायत फ़रमाते थे ज़्यादा तर उन का मैलान इबादत की तरफ़ था चुनाँचे रोज़ाना एक हज़ार रकअ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़ा करते थे यहाँ तक कि कसरते नमाज़े की वजह से लोग उन को सज्जाद (बहुत ज़्यादा सज्दे करने वाला)कहा करते थे।

उन को इबादत का ज़ौक़ व शौक़ इस तरह़ पैदा हुआ कि इन्होंने ह़ज़रत अमीरुल मोमेनीन सैयदिना उसमाने ग़नी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पोते अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अब्बान को बहुत ज़्यादा इबादत करते हुए देखा तो उन के दिल पर बहुत ज़्यादा असर हुआ और कहने लगा कि हुज़ूर सरवरे काइनात स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मेरा रिश्तऐ नसब अब्दुर्रहमान इब्ने अ़ब्बान की ब निस्बत बहुत ही क़रीब है लिहाज़ा मुझे उन से ज़्यादा इत्तिबाअ़े सुन्नत व कसरते इबादत का ह़क़ है बस एक दम यह ख़याल आते ही दर्से ह़दीस की मज्लिस छोड़

कर गोशा नशीन होगये और दिन रात इबादत में मशगूल रहने लगे इब्ने मदीनी का कौल के 117हिजरी में आप की वफ़ात हूई

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

115–हज़रत उमैर बिन हानी अन्सी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबुलवलीद है और वतन की निसबत के एअ्तेबार से दमिश्क़ी दारानी है शाम के ताबेई मुहद्दिसों में सलाह व तक़्वा और कसरते इबादत के लिहाज़ से बहुत मुम्ताज़ व नामवर हैं ।

हदीस में हज़रत अबूहुरैरा व अमीर मआवीया वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम से इस्तिफ़ादा–ए–इल्म किया और अब्दुर्रहमान इब्ने साबित व उसमान इब्ने अबी आत्का व सईद इब्ने बशीर वग़ैरा मुहद्दिसीन के उस्ताद हैं।

यह रोज़ाना बिलानागा एक हज़ार रकअ्त नमाज़े नफ़्ल और एक लाख मरतबा. سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ कि तस्बीह पढ़ा करते थे।

सफ़र इब्ने हबीब मतरी ख़ारिजी ने उन को शहीद कर दिया और उन के सर मुबारक को नेज़े पर चढ़ा कर शहर में गश्त कराया मरवान तातारी का बयान है कि मैंने उमैर बिन हानी के सर को नेज़े पर चढ़ा कर गश्त करने वाले शख़्स को देखा तो मुझे बरदाश्त की ताक़त नहीं रही तो मैंने चिल्लाकर कहा कि अफ़सोस ऐ बद नसीब ! काश तुझे ख़बर होती कि तू किस के सर को नेज़े पर ले जारहा है ? आप की शहादत का यह वाक़िआ 127हिजरी में पेश आया।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

116 हज़रत उ़बैदुल्लाह इब्ने अबी जअ़फ़र मिस्री(रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबू बकर और लक़ब फ़क़ीहे मिस्र है यह ख़ास कर मिस्री मुहद्दिसीन के उस्तादे ह़दीस हैं इब्ने सअ़द ने फ़रमाया कि यह बहुत ही सिक़ा मुहद्दिस और अपने ज़माने के बेहतरीन फ़क़ीह थे इब्ने यूनुस का क़ौल है कि यह अअ़्ला दरजे के आ़लिम व आ़बिद व ज़ाहिद थे और मिस्र में उनकी करामतों का बड़ा चर्चा था उन की एक बड़ी अ़जीब करामत यह है कि यह कुस्तुन्तुन्या के समन्दरी जिहाद में शरीक हुए समन्दर में तूफ़ान आया और उन की कश्ती टूट गई और यह दरिया की तूफ़ानी मौजों में गिर पड़े खुदा की शान कि समन्दर की मौजों ने उन को मअ़ छह साथियों के एक बहुत बड़ी लकड़ी पर फेंक दिया जो समन्दर में तैरती हुई जारही थी चुनाँचे यह अपने साथियों के साथ उस लकड़ी पर सवार होगए लकड़ी समन्दर में बहती चली जा रही थी जब यह लोग भूक प्यास से बचैन हो गये तो उस सूखी लकड़ी पर नागहाँ छः हरे हरे पत्ते उग गऐ और उन लोगों ने एक एक पत्ता तोड़ कर चूसना शुरूअ़ कर दिया उसी एक एक पत्ते के चूसने से उन लोगों की भूक प्यास ख़त्म हो गई इसी तरह़ जब भी उन लोगों को भूक प्यास लगती तो बिल्कुल अचानक उस सूखी लकड़ी पर छः पत्ते उगते और यह लोग उन को चूसने लगते एक मुद्दत के बअ़्द कोई कश्ती उन लोगों के क़रीब से गुज़री तो यह लोग उस पर सवार होगए और ज़िन्दा व सलामत अपने वत़न में आ गये इब्ने सअ़्द का क़ौल है कि 135 हिजरी या 136हिजरी में उ़बैदुल्लाह इब्ने अबी जअ़फ़र का विसाल हुआ।

(तह़ज़ीबुत्तहजीब)

117–हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न ख़ज़ाज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नियत अबू औ़न और वतन बसरा है इमाम मालिक की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए और इब्राहीम नख़ई व मुहम्मद इब्ने सीरीन व हसन बसरी वग़ैरा हदीस के इमामों से इल्मे हदीस हासिल किया और उन के तलामिज़ा इमाम अअ़मश व सुफ़यान सौरी व वकीअ़ वग़ैरा सैंकड़ों अइम्मा हदीस हैं।

उन के पास बहुत ज़्यादा अहादीस का ज़ख़ीरा था और यह इन्तिहाई सिका व क़ाबिले एअ़तेमाद उस्तादे हदीस थे हश्शाम बिन हस्सान कहते हैं कि मेरी आँखों ने अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न का मिस्ल नहीं देखा और अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक फ़रमाते थे कि मेरी यह तमन्ना है कि मैं अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न की सोहबत उस वक़्त तक न छोड़ूँ कि या तो मेरी मौत हो जाये या उन की वफ़ात हो जाये इब्ने हब्बान का क़ौल है कि जुहद व इबादत तक़वा व फ़ज़ीलत सुन्नत पर इस्तिक़ामत अहले बिदअ़त पर शिद्दत में अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न की सरदारी व बे मिसाली मुसल्लमुस्सुबूत है तमाम उ़म्र सौमे दाऊदी के पाबन्द रहे यअ़्नी एक दिन का नाग़ा दे कर उ़म्र भर रोज़ा रखते रहे।

मुहम्मद इब्ने फ़ज़ा ने फ़रमाया कि मैं ख़्वाब में हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ तो मुझ से इरशादे नबवी हुआ कि तुम लोग अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न की ज़ियारत करते रहो और उन की सोहबत को लाज़िम पकड़ो क्योंकि वह महबूबे इलाही हैं कुर्रा कहते हैं कि पहले हम लोग मुहम्मद इब्ने सीरीन की परहेज़ गारी पर तअ़ज्जुब किया करते थे मगर जब हम लोगों ने अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न को देखा तो हम लोग मुहम्मद इब्ने सीरीन की परहेज़ गारी को भूल गये 151 हिजरी में उन की वफ़ात हुई।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

118– हज़रत अ़ब्दुलमलिक इब्ने अब्जर हमदानी(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन का नसब नामा अ़ब्दुलमलिक इब्ने सईद इब्ने हब्बान बिन जब्र है बअ़ज़ का कौल है कि उन का वतन कूफ़ा है इक्रमा व इमाम शअ़बी वग़ैरा ताबिई मुहद्दिसीन से इल्मे हदीस पढ़ा और सुफ़्यान सौरी व सुफ़्यान इब्ने अ़ैनिया वग़ैरा मुहद्दिसीन ने उन से इल्मे ह़दीस ह़ासिल किया है।

सुफ़्याम बिन सौरी रिवायत में जब उन का नाम लेते तो यूँ कहते कि حدثنا من لم تر عينكمثله ابن ابجر यअ़नी इब्ने अबजर ने मुझ से और कभी यूँ फ़रमाते هو من الابرار हदीस बयान फ़रमाई है जिन का मिस्ल तुम्हारी आँखों ने कभी नहीं देखा और वह सालेह़ व नेकोकार थे।

उन की अ़ज़मत का अन्दाज़ा करने के लिए यही काफ़ी है कि सुफ़यान सौरी ने ख़ास तौर पर यह वसीयत फ़रमाई थी कि मेरे जनाज़े की नमाज़ इब्ने अब्जर के सिवा कोई न पढ़ाऐ और सुफ़यान सौरी यह भी फ़रमाते थे कि कूफ़े में सिर्फ़ पाँच आदमी ऐसे हैं कि जिन की नेकियाँ रोज़ाना ज़्यादा से ज़्यादा बड़ती चली जारही हैं और उन ही पाँच अल्लाह वालों में इब्ने अब्जर भी हैं।

यह बहुत ही हाज़िक तबीब भी थे और बग़ैर किसी मुआवज़े के लिवज्हिल्लाह खिदमते खल्क़ के तौर पर मरीज़ों का इलाज भी फ़रमाते

उन के मिज़ाज में ज़राफ़त व मिज़ाह का जौहर भी था चुनाँचे एक दिन उन के मतब में एक आराबी आकर बोला कि मैं ज़िन्दगी में कभी बीमार नहीं हुआ हूँ हालाँकि मुझे बीमारी का बड़ा शौक़ है तो आपने तमाम मरीज़ों की तरह उस को तसल्ली दी और बड़ी सन्जीदगी व मतानत के साथ उस को बीमारी का यह नुस्ख़ा लिखवाया कि तुम नमक लगाई हुई मछली खूब ज़्यादा खाओ फ़िर भर

पेट सड़ी हुई ,नबीज़ पी लो फिर उस के बअ्द धूप में बैठ कर निहायत खुलूस के साथ खुदा वन्द तआला से बीमारी त़लब करो।

इमाम अअ्मश उस वक़्त मत़ब में ह़ाज़िर थे उन को बे इख़्तियार हँसी आगई के इब्ने अब्जर ने बीमार होने का नुस्ख़ा भी बिल्कुल उसी अन्दाज़ से लिखवाया जिस अन्दाज़ से शिफ़ाऐ अमराज़ का नुस्ख़ा लिखवाते थे।

उ़लूमे नाफ़िआ व अअ्माले सालिह़ा की उन बे शुमार दौलतों के इलावा इब्ने अब्जर इस क़दर ज़्यादा साबिर व शाकिर थे कि उन के स़ब्र व शुक्र को अअ्ला दरजे की करामत के सिवा कुछ भी नहीं कहा जासकता मन्कूल है कि उन के बदन में इतना बड़ा और ख़त़र नाक फ़ोड़े का ज़ख़्म था कि अगर ऐसा ज़ख़्म किसी ऊँट के बदन में होता तो वह भी उस को बरदाश्त नहीं कर सकता था मगर यह इन्तिहाई तकलीफ़ के बावजूद बिल्कुल पुर सुकून रहते थे और अगर कोई पूछता कि आप के ज़ख़्म का क्या ह़ाल है ? तो फ़रमाते कि अल्ह़म्दु लिल्लाह !अच्छा ह़ाल है। खुदा वन्द करीम का शुकर है मैं अपने उस ज़ख़्म की वजह से जिस क़दर अपने रब से खुश हुआ हूँ मुझे किसी नेअ्मत पर इतनी खुशी नहीं हूई है यअ्कूब इब्ने सुफ़यान बरमला फ़रमाया करते थे कि बिला शुब्ह इब्ने अब्जर कूफ़े के उन मुह़द्दिसीन में से हैं जो अपने दौर के बेहतरीन साह़िबे ख़ैर और इल्म व अ़मले सालिह़ के एअ्तिबार से निहायत ही अअ्ला दरजे के आ़लिमे रब्बानी और अल्लाह वाले बुजुर्ग हैं। (तहजीबुत्तहज़ीब)

119—हज़रत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ इब्ने मुस्लिम क़स्मली(रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबूज़ैद है यह अस्ल में मरव के बाशिन्दे थे मगर बसरा को अपना वतन बना लिया था इस लिए बसरी कहलाते हैं। इमाम अअ्मश वग़ैरह मुह़द्दिसीन के ह़ल्का–ए–दर्स में शामिल हुए और अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने मेहदी व क़अ्नबी वग़ैरा मुह़द्दिसीन उन के

मशहूर तलामिज़ा में से हैं

यहया इब्ने हस्सान का कौल है यह अपने दौर के बेहतरीन फ़ाज़िले हदीस थे और इब्ने मुईन व अबूहातिम वग़ैरा ने उन को बरगुज़ीदा सिक़ा 'मुहद्दिस और अअ्ला दरजे का इबादत गुज़ार व तक़्वा शिआर लिखा और आम तौर पर मुहद्दिसीन फरमाते हैं कि उस में किसी को कोई शुब्ह नहीं था कि अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ इब्ने मुस्लिम वली–ए–कामिल और मकामे वलायत में ''अबदाल''के मरतबा पर फाइज़ थे 167हिजरी में उन की वफ़ात हूई (तहज़ीबुत्तहजीब)

120–हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नियत अबू अ़ब्दुर्रहमान है मरव के रहने वाले थे इस लिए मरूज़ी कहलाते हैं आप का साले विलादत 118 हिजरी या 119हिजरी है आप की वालिदा चूँके बहुत मालदार ताजिर की साहबज़ादी थीं इस लिए उन्हें मीरास में बहुत ज़्यादा माल मिला था और अ़ब्दुल्ला इब्ने मुबारक ने बड़े मालदार माँ बाप की गोद में परवरिश पाई थी और मालदार वालिदैन ने अपने इस होनहार सपूत को बड़े नाज़ व नेअ्मत से पाला था अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ने सारी उम्र सफ़र में गुज़ारी कभी इल्मे ह़दीस की त़लब के लिए सफ़र करते कभी ह़ज के लिऐ जाते कभी जिहाद के लिए मुजाहिदीन के लश्कर में शामिल हो जाते और कभी ताजिरों के क़ाफ़िले के साथ तिजारत के लिए रवाना हो जाते और हमेशा इसी त़रह इस्लामी ममालिक का गश्त फ़रमाते रहते एक मरतबा उन के वालिद ने पचास हज़ार दिरहम दे कर कहा कि इस रुपये से तिजारत करो अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक उन दिरहमों को ले कर चले गऐ और सब को इल्मे हदीस की त़लब में ख़र्च कर के वापस आगये जब वालिद बुज़ुर्गवार ने पूछा कि उन दिरहमों से तुम ने कौन सा सामान ख़रीदा और कितना नफ़अ् हुआ ? तो आपने उस मुद्दत में जिस क़दर ह़दीस के दफ़्तरों को लिखकर जमा किया था वह बाप के सामने पेश कर दिया और कहा कि मैंने

ऐसी तिजारत की है जिस से दोनों जहान का नफ़अ् हासिल हो वालिद बुजुर्गवार बहुत खुश हुए और तीस हज़ार दिरहम और दिए और कहा कि उन को भी इल्मे ह़दीस में ख़र्च कर के अपनी तिजारत को कामिल कर लो !आप सब से पहले ह़ज़रत इमामे अअ्ज़म के शागिर्द हुए और इल्मे फ़िक़्ह हासिल किया और जब इमाम अअ्ज़म की वफ़ात हो गई तो मदीना मुनव्वरा में इमाम मालिक की मज्लिसे दर्स में हाज़िर हो कर इल्म की तकमील फ़रमाई यही वजह है कि उ़लमाए हन्फ़ीया उन को अपनी जमाअ़त में शुमार करते हैं और माल्किया उनको त़ब्क़ात में लिखते हैं ।

उन दो जलीलुल क़दर इमामों के इ़लावा आप ने दूसरे बहुत से मुहद्दिसीन से इल्मी इस्तिफ़ादा फरमाया है चुनाँचे आप खुद फ़रमाया करते थे कि मैंने चार हज़ार शुयूख़ से इल्मे ह़दीस हासिल किया है लेकिन रिवायत सिर्फ़ एक हज़ार शुयूख़ से करता हूँ आप के इल्म की वुस्अ़त का यह आ़लम था के अ़ली इब्ने हुसैन इब्ने शक़ीक़ फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक के हमराह इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर मस्जिद के बाहर निकला अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक अपने मकान पर जाना चाहते थे कि मैंने मस्जिद के दरवाज़े पर उन से एक ह़दीस का ज़िक्र कर दिया तो वह ठहर गये सख़्त जाड़ों की रात थी मगर उन्हों ने मस्जिद के दरवाज़े पर ख़ड़े ही ख़ड़े मुझे जवाब देना शुरूअ् किया तो उसी मक़ाम पर सुब्ह़ होगई और मुअज़्ज़िन ने आकर फ़ज्र की अज़ान दे दी ।

अ़वाम व ख़ास में आप की मक़बूलियत की यह कैफ़ियत थी कि एक दिन आप शहर रक़्क़ा में तशरीफ़ ले गये इत्तिफ़ाक़ से ख़लीफ़ा बग़दाद हारून रशीद अ़ब्बासी भी वहाँ मौजूद थे अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक की आमद पर तमाम शहर में शोर व ग़ल्ग़ला बलन्द हुआ और हर त़रफ़ से आदमी दौड़ दौड़ कर इस्तिक़बाल के लिए आ रहे थे हारून रशीद की एक लोन्डी ने छत पर से यह शोर व ग़लग़ला सुन कर दरयाफ़्त किया कि आज शहर में इतना शोर व ग़ोग़ा क्यों और

किस लिए है ? लोगों ने जवाब दिया कि खुरासान के एक आ़लिम अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक तशरीफ़ लाए हैं उन्हीं की ज़ियारत व इस्तिक़बाल के लिए यह मख़लूक़े खुदा दौड़ती चली जारही है लोन्डी ने कहा दरह़क़ीक़त बादशाहत यह है कि जो इस आ़लिमे दीन के पास है न कि हारून रशीद के पास जो चाबुक और डन्डों के ज़ोर से लोगों को अपने इस्तिक़बाल के लिए जमअ़ करता है।

इ़ल्मी कमाल के साथ साथ आप ज़ुहद व तक़्वा और कसरते इ़बादत में भी बे नज़ीर व बे मिसाल थे सुफ़यान सोरी अपने इ़ल्म व अ़मल के बावजूद फरमाया करते थे कि मैंने बहुत कोशिश की कि एक साल ही अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक के त़रीके पर गुज़ार दूँ मगर मुझ से यह भी न हो सका कभी कभी यूँ भी फ़रमाते थे कि काश! मेरी तमाम उ़म्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक के तीन दिन और तीन रात के बराबर होती।

कुतैबा जो सिहाह सित्ता के मुसन्निफीन के शैख़ हैं फ़माया करते थे कि हमारे ज़माने के सब से अफ़ज़ल व अअ़ला शख़्स अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक हैं फ़िर इमाम अहमद इब्ने ह़मबल !तारीख़े सिक़ात में है कि एक मरतबा बुज़ुर्गों की जमाअ़त किसी मक़ाम पर जमअ़ हुई और (1)फ़िक़्ह(2) ह़दीस (3)अदब (4)नह़व (5)लुग़त (6)ज़ुहद(7)शेअ़र गोई (8)फ़साह़त(9)शब बेदारी (10)तहज्जूद (11)इ़बादत(12)हज(13)जिहाद (14)शह सवारी (15) हथयार बन्दी (16) तक़्वा (17)इन्साफ़ की पाबन्दी उन तमाम सिफ़ाते ह़मीदा में तमाम बुज़ुर्गों ने अपने ज़माने का सरदार अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक को तस्लीम किया!

अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक को अपने उस्तादेअव्वल ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा से इन्तिहाई अ़कीदत और वालिहाना महब्बत थी चुनाँचे उन्हों ने इमाम ममदूह़ की मन्क़बत में एक त़वील क़सीदा लिखा है जिस के तीन शेअ़र दर्जे ज़ैल हैं।

لَقَدْ زَانَ الْبِلَادَ وَ مَنْ عَلَيْهَا   اِمَامُ الْمُسْلِمِيْنَ اَبُوْ حَنِيْفَه

यक़ीनन तमाम शहरों और शहर के बाशिन्दों के (इल्म व अमल)की ज़ीनत बख़्शने वाले मुसलमानों के इमाम अबूहनीफ़ा हैं)

فَمَا فِیْ الْمَشْرِقَیْنِ لَهٗ نَظِیْرٌ"   وَلَا فِیْ الْمَغْرِبَیْنِ وَلَا بِکُوْفَه

लिहाज़ा न तो मश्रिक़ ही में कोई उन का हमसर है न मग्रिब में और न कूफ़े में।

فَاِنَّ النَّاسَ فِیْ فِقْهٍ عِیَالٌ   عَلٰی فِقْهِ الْاِمَامِ اَبِیْ حَنِیْفَه

तमाम दुनिया के लोग फ़िक़ह के मुआमले में इमाम अबूहनीफ़ा की फ़िक्र के सामने अयाल (मोहताज) हैं।

अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक बहुत सी किताबों के मुसन्निफ़ भी हैं और आप की तस्नीफ़ात में ''किताबुज़जुहद वर्रक़ाइक़'' बहुत मशहूर और बड़े पाए की किताब है!

आप की वफ़ात मुसाफ़िरत की हालत में हुई जिहाद से वापसी के वक़्त जब आप मुसिल के क़रीब क़स्बा हैत में पहुँचे तो अलील हो गए–अपने गुलाम नज़र से फ़रमाया कि मुझ को बिस्तर से उठा कर ख़ाक पर लिटा दो गुलाम रोने लगा तो फ़रमाया कि रोते क्यों हो 'ख़ामोश रहो मैं हमेशा खुदा से यही दुआ माँगा करता था कि या अल्लाह मेरी ज़िन्दगी मिस्ल दौलत मन्दों के हो और मेरी रुह ख़ाके ज़मीन पर लेटे लेटे निकले इसी हालत में कि आप बिग़ैर बिस्तर के ज़मीन पर लेटे हुए थे कि माह रमज़ान' 181हिजरी में आप की वफ़ात हुई।

इन्तिक़ाल के बअ्द किसी बुजुर्ग ने ख़्वाब में देखा कि कोई कहने वाला कहता है कि अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक फ़िरदौस अअ्ला में पहुँच गये।

(नोवी 'तब्क़ात, बुस्तानुल मुहद्दिसीन वग़ैरा)

121–हज़रत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी ह़ाज़िम (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उन की कुन्नियत अबू तमाम और लक़ब फ़क़ीह है मदीना मुनव्वरा के रहने वाले थे हश्शाह इब्ने उ़रवा वग़ैरा मुह़द्दिसीन के शागिर्द और अ़ली इब्ने मदीनी व ह़मीदी वग़ैरा मुह़द्दिसीन के शुयूख़ में से हैं ।

मदीना मुनव्वरा में उन से बढ़ कर कोई फ़क़ीह नहीं था इमाम मालिक उन के बेह़द मद्दाह़ थे फ़रमाया करते थे कि जिस क़ौम में अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ इब्ने अबी ह़ाज़िम हो उस क़ौम पर कभी अ़ज़ाब नहीं आसकता यह बहुत कसीर अह़ादीस वाले उस्ताद थे इब्ने ह़ब्बान ने उन को सिक़ह फ़क़ीह और सालिहुलह़दीस फरमाया यह सुलैमान इब्ने बिलाल के हम सबक़ थे और उन दोनों में बेह़द मह़ब्बत थी चुनाँचे सुलैमान इब्ने बिलाल ने वसीयत की थी कि मेरी मौत के बअ़्द मेरी सारी किताबें अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ इब्ने अबी ह़ाज़िम को दे दी जाऐं 184हिजरी में उन की वफ़ात हुई और वफ़ात भी कैसी शानदार व बाकरामत हुई कि मस्जिद नबवी के अन्दर सज्दे में सर रखे हुऐ थे कि त़ाइरे रूह़ आलमे बाला को परवाज़ कर गया।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

122–हज़रत उ़मरी ज़ाहिद (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उन का नाम व नसब अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ इब्ने उ़बैदुल्लाह इब्ने अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर इब्ने ख़त्ताब है और उ़मरी ज़ाहिद के लक़ब से मशहूर हैं मदीना मुनव्वरा उन का वतन है और यह इल्मे ह़दीस में अपने वालिद नीज़ दूसरे मुह़द्दिसीन के शागिर्दे रशीद हैं और सुफयान इब्ने अ़ैनियह व अ़ब्दुल्ला इब्ने मुबारक जैसे अइम्मा–ए–हदीस के शैख़ुलह़दीस हैं इब्ने सअ़्द व इब्ने शाहीन व इब्ने ह़ब्बान वग़ैरा ने उन को अपने ज़माने का सब से बड़ा ज़ाहिद सब से बढ़ कर आ़बिद और इ़ल्म और अ़मल में बे नज़ीर बुज़ुर्ग बताया यहाँ तक कि सुफ़यान इब्ने अ़ैनीया का क़ौल है कि यह जो ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुआ है

कि।

"एक ज़माना ऐसा आयेगा कि मदीना के आ़लिम से बढ़ कर कोई आ़लिम नहीं रहेगा और लोग दूर दूर से उँटों का जिगर मारते हुए उस की ख़िद्मत में आयेंगे उस आ़लिम से मुराद उ़मरी ज़ाहिद ही हैं"

उन का दस्तूर था कि उमरा व सलातीन को उन की ख़िलाफ़े शरअ् बातों पर डाँट देते थे और उन की इल्मी जलालत की वजह से उन की ह़क गोई पर उम्रा व सलातीन दम नहीं मार सकते थे मशहूर बुज़ुर्ग व नामवर मुह़द्दिस ह़ज़रत फ़ुज़ैल इब्ने अ़याज़ का क़ौल है कि मेरे पास आने वाले हज़ारों इन्सानों में मुझे सब से ज़्यादा मह़बूब और प्यारे दो ही शख़्स हैं एक उ़मरी ज़ाहिद दुसरे अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक

184हिजरी में 66बरस की उ़म्र पा कर उन्हों ने वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहजीब)

123–हज़रत ईसा इब्ने यूनुस इब्ने इस्ह़ाक़ (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नियत अबू उ़मर या अबू मुह़म्मद है कूफ़ा उन का अस़ली वतन था लेकिन शाम में सुकूनत इख़्तियार करली थी इस लिए शामी भी कहलाते हैं यह ह़दीस में अपने दादा इस्ह़ाक सबीई व सुलैमान तैमी व सुफ़यान सौरी व शेअ़बा वग़ैरा बड़े बड़े कामिल मुह़द्दिसों के शागिर्द हैं और उनके शागिर्दों की फ़िहरिस्त भी बहुत लम्बी है जिन में ह़म्माद इब्ने सलमा व इस्माईल इब्ने अ़याश व अबूबक्र इब्ने अबी शीबा व अ़ली इब्ने मदीनी व इस्ह़ाक़ इब्ने राहविया वग़ैरा माहिरीने ह़दीस भी हैं।

मुह़द्दिसीने वक़्त उन के इल्म व अ़मल की वजह से उन का बेह़द एह़तराम करते थे सुलैमान इब्ने दाऊद कहते हैं कि हम लोग सुफ़यान इब्ने अ़ैनियह की मज्लिस में बैठे थे कि बिल्कुल अचानक ईसा इब्ने यूनुस आगए तो सुफ़यान इब्ने अ़ैनिया ने यह कह कर इस्तिक़बाल फ़रमाया

सल्तनते बग़दाद के वज़ीर आज़म जअ़्फ़र इब्ने यहया बर मकी का क़ौल है कि मैंने ईसा इब्ने यूनुस का मिस्ल तमाम आ़लिमों में किसी को नहीं देखा मैंने उन की ख़िदमत में एक सौ दीनार नज़राना पेश किया तो उन्हों ने यह कह कर ठुकरा दिया कि अगर तुम ह़दीस सुनने से पहले मुझे यह पेश करते तो मैं क़बूल कर लेता लेकिन मुझ से ह़दीस सुन कर अगर तुम मुझे एक घुँट पानी भी पिलाओगे तो मैं नहीं पियूँगा क्योंकि मुझे लोगों का यह त़अ़्ना सुन्ना गवारा नहीं है कि ईसा इब्ने यूनुस ह़दीस सुनाने की उजरत लिया करते थे।

अज़ली ने उन को कूफ़े का एक सिक़ह मुह़द्दिस लिख कर यह भी तह़रीर फ़रमाया कि यह इस्लामी सर ह़द के बहुत जाँबाज़ मुजाहिदीन में से भी थे अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी) का बयान है कि एक साल हज करते थे और एक साल जिहाद करते थे।

अ़ली इब्ने उ़समान इब्ने नुफ़ैल बयान करते है कि मैंने इमाम अह़मद इब्ने ह़मबल के सामने यह ज़िक्र किया कि अबू क़तादा ह़रानी ने ईसा इब्ने युनूस व अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक व वकीअ़् के बारे में कुछ कलाम किया है तो इमाम ममदूह़ ने ख़फ़ा हो कर बड़े जलाल में फ़रमाया कि जो शख़्स उन सच्चों को झूटा बताए वह खुद सब से बड़ा झुटा है अह़मद जनाब का क़ौल है कि ईसा इब्ने यूनुस का साले वफ़ात 187 हिजरी है (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

124–हज़रत अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने क़ासिम अ़त्की(रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

अबू अ़ब्दुल्लाह अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने क़ासिम अ़त्की यह मिस्र में मालिकी मज़हब के मशहूर फ़क़ीह बल्कि उस मज़हब के मुदव्विने अव्वल हैं इमाम मालिक के मशहूर शागिर्दो और मुअत्ता इमाम मालिक के नामवर रावीयों में से हैं इमाम के बताए हुए फ़तावा को यह लिखते रहते थे चुनाँचे ऐसे फ़तावा की तीन सौ जिल्द उन के पास मौजूद थीं

उन्होंने ने इल्मे,ह़दीस की त़लब में बहुत ज़्यादा माल ख़र्च किया था और बड़ी मेह़नत व जाँफ़िशानी से इल्मे दीन ह़ासिल किया था।

जुहद व तक़वा और शाने इस्तिग़ना में यकताए ज़माना थे कभी किसी बादशाह या अमीर का हद्या व नज़राना क़बूल नहीं फ़रमाया और अकसर यह दुआ करते रहते थे कि या अल्लाह ! तू मुझ को दुनिया की त़रफ़ रग़बत करने से रोक दे और दुनिया को मेरी त़रफ़ आने से मनअ् फ़रमादे,उन्होंने साल के महीनों को इस तरह़ तक़सीम कर के रखा था कि चार महीने अस्कन्दरया में रह कर रोम व बरबरवज़गं के काफ़िरों से खुदा की राह में जिहाद फ़रमाते और तीन महीने सफ़रे ह़ज व ज़ियारते मदीना मुनव्वरा में सर्फ़ करते और पाँच महीने अपनी दर्सगाह में इल्मे ह़दीस की तअ्लीम देते ।

एक मरतबा इमाम मालिक की मज्लिस में अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने क़ासिम का ज़िक्र आया तो इमाम मौसूफ़ ने फ़रमाया कि वह तो मेरे शागिर्दों में एक मुश्क से भरी हुई थैली हैं अल्लाह तआ़ला उन को आफ़ियत के साथ रखे।

यह हमेशा रोज़ाना दो ख़त्म कुर्आन मजीद पढ़ते थे कि मगर जब उन के दोस्तों ने उन को तअ्लीमे ह़दीस की त़रफ़ तवज्जह दिलाई तो एक ख़त्म मौक़ूफ़ करदिया और आख़िर उ़म्र तक एक ही ख़त्म रोज़ाना पढ़ते रहे ! वफ़ात के बअ्द किसी बुज़ुर्ग ने उन को ख़्वाब में देखा और दरयाफ़्त किया कि इस दुनिया के कौन से अ़मल ने सब से ज़्यादा आप को फ़ाइदा दिया ? आप ने जवाब दिया कि अस्कन्दरिया की उन चन्द रकअ्त नमाज़ों ने जिन को मैंने जिहाद की ह़ालत में पढ़ा था यह 130हिजरी में पैदा हुए और 191हिजरी में वफ़ात पाई और मिस्र की ज़मीन में मदफ़ून हुए (बुस्तानुल मुह़द्दिसीन)

125—हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने इदरीस कूफ़ी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

यह हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा के तलामिज़ा और इमाम मालिक के असातिज़ा में से हैं और उन का शुमार अकाबिर फुक़हाऐ हन्फ़ीया में है बड़े आबिद व ज़ाहिद और तारिकुद्दुनिया थे मिज़ाज़ में कमाल दरजे का इस्तिग़ना था जाह व मन्सब से इन्तिहाई मुतनफ़्फ़िर और उमरा व सलातीन की मुलाक़ातों और उन के नज़रानों से हमेशा बेज़ार रहे एक मरतबा ख़लीफ़ा बग़दाद हारून रशीद ने आप के लिए क़ाज़ी का ओहदा पेश किया तो आपने निहायत बे परवाही के साथ जवाब दिया कि मैं उस का अहल नहीं हूँ इस लिए मअ़ज़िरत चाहताहूँ ख़लीफ़ा को भरे दरबार में यह सूखा जवाब सुन कर गुस्सा आ गया और बिगड़ कर कहा कि काश! मैं तेरी सूरत न देखता आप ने भी निहायत सन्जीदगी से जवाब दिया कि काश! मैं भी तेरी सूरत न देखता! यह कह कर फ़ौरन दरबार से रवाना हो गए बअ़द को ख़लीफ़ा ने पाँच हज़ार दिरहम की थैली आप की ख़िदमत में बतौर नज़राना भेजी मगर आप ने ख़लीफ़ा के उस नज़राने को भी ठुकरा दिया और क़ासिद से डाँट कर फ़रमाया कि बाहर निकल जाओ और फ़ौरन मेरे पास से यह थैली ले कर वापस चले जाओ और ख़बर दार! आइन्दा फिर हरगिज़ हरगिज़ दोबारा कभी भी मेरे पास न आना ख़लीफ़ा ने उस के बअ़द अपने एक ख़ास क़ासिद के ज़रीए पैग़ाम भेजा कि आप ने न हमारा इकराम किया और न हमारा नज़राना क़बूल फ़रमाया उस का हमें बड़ा रन्ज हुआ मगर ख़ैर! आप हमारी इतनी दरख़्वास्त मन्ज़ूर कर लीजिए कि मेरा फ़रज़न्द मामून आप की ख़िदमत में हाज़िर हो तो उस को हदीस का दर्स दीजिए अब्दुल्लाह इब्ने इदरीस ने कहला भेजा कि अगर मामून आम तल्बा की सफ़ में बैठ कर पढ़ना चाहेगा तो मैं उस को पढ़ा दूँगा उस के साथ दर्सगाह में कोई ख़ास इम्तियाज़ बरतने पर

तैयार नहीं।

चुनाँचे हज के मोक़ेअ् पर जब हारून रशीद कूफ़े में शाहाना कर व फ़र के साथ दाख़िल हुआ तो उस ने क़ाज़ी इमाम अबूयूसुफ़ से यह ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि तमाम मुहद्दिसीन कूफ़े मेरे दरबार में तशरीफ़ लाकर ह़दीस बयान फ़रमायें चुनाँचे कूफ़े के तमाम मुहद्दिसीन ने ख़लीफ़ा की फ़रमाइश पूरी कर दी मगर अ़ब्दुल्लाह इब्ने इदरीस और ईसा इब्ने यूनुस अपनी जगह् से टस से मस नहीं हुए और शाही दरबार में किसी त़रह़ ह़ाज़री देने के लिए तैयार नहीं हुए मज्बूरन अमीन व मामून दोनों शहज़ादे खुद सवार हो कर अ़ब्दुल्लाह इब्ने इदरीस की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़ब्दुल्लाह इब्ने इदरीस ने एक सौ ह़दीसें उन दोनों के सामने बयान फ़रमाईं जब दर्स ख़त्म हो चुका तो मामून ने कहा कि शैख़े मोहतरम! अगर इजाज़त हो तो मैं आप को यह सब ह़दीसें ज़ुबानी सुना दूँ अ़ब्दुल्लाह इब्ने इदरीस ने फ़रमाया कि सुनाओ ! चुनाँचे मामून ने बिला झिजक एक सौ ह़दीसों को अपनी कुव्वते ह़ाफ़ज़ा से ज़ुबानी पढ़ कर सुना दिया अ़ब्दुल्लाह इब्ने इदरीस मामून की इस बे पनाह कुव्वते ह़ाफ़िज़ा को देख कर हैरान रह गये और अ़श अ़श करने लगे फ़िर उन दोनों शहाज़ादों ने ईसा इब्ने यूनुस की दर्स गाह में भी हाज़री दी और उन से भी कुछ ह़दीसों का समाअ् किया फिर सबक़ पढ़ने के बअ़्द मामून ने दस हज़ार दिरहम की थैली नज़र की तो ईसा इब्ने यूनुस ने स़ाफ़ इन्कार कर दिया और फ़रमाया कि दर्से ह़दीस के एवज़ में तो मैं तुम्हारा एक घूँट पानी भी क़बूल नहीं कर सकता ।

अ़ब्दुल्लाह इब्ने इदरीस की वफ़ात 192हिजरी में हुई वफ़ात के वक़्त उन की साह़ब्ज़ादी फूट फूट कर रोने लगीं तो आप ने फ़रमाया मेरी प्यारी बेटी! तुम्हें रोना नहीं चाहिए तुम इत़्मीनान रखो तुम्हारे बाप ने सिर्फ़ इस एक कोठरी में चार हज़ार ख़त्मे कुर्आन मजीद पढ़ा है।

(नौवी व तज़किरतुलहुफ्फाज़ तरजमा ईसा इब्ने युनुस)

126–हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने वहब मुस्लिम फ़हरी(रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि)

यह 125 हिजरी में पैदा हुए और मिस्र उन का वतन है मदीना मुनव्वरा व मिस्र वग़ैरा के चार सौ इमामों से उन्होंने इल्मे ह़दीस पढ़ा उन में से इमाम मालिक और लैस ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं यह मुअत्ता इमाम मालिक के रावीयों में से भी हैं उन को एक लाख ह़दीसें जबानी याद थी और ह़ाफ़िज़ ज़हबी का बयान है कि उनकी तस्नीफ़ कर्दा किताबों में एक लाख बीस हज़ार ह़दीसें मौजूद हैं यह बहुत ही साहिबे करामत थे और उन की दुआऐं बहुत जल्द मक़बूल होती थीं मन्क़ूल है कि इ़बाद इब्ने मुह़म्मद ने जो उस मुल्क का अमीर था' उन को क़ाज़ी बनाना चाहा यह वहाँ से चले गए और रूपोश होगए इ़बाद इब्ने मुह़म्मद ने गुस्से में अकर उन का मकान मिस्मार करदिया जब उन को ख़बर पहुँची तो उन्होंने इ़बाद इब्ने मुह़म्मद के अन्धा होने की बद्दुआ की चुनाँचे एक हफ़्ता गुज़र नहीं पाया था कि इ़बाद बिन मुहम्मद अन्धा होगया।

आप पर ख़ौफ़े इलाही का बड़ा ग़लबा था एक रोज़ हमाम में तशरीफ़ ले गऐ किसी ने यह आयत पढ़ दी وانـيتحاجون فى النار बस जहन्नम का नाम सुनते ही बे होश हो कर गुस्ल खाने में गिर पड़े और बहुत देर के बअ़द होश में आए उसी तरह़ आप के एक शागिर्द ने आप की किताब जामेअ़ इब्ने वहाब में से क़ियामत का वाक़िआ पढ़ दिया तो आप खौफ़ की वजह से बेहोश हो कर गिर पड़े लोग उन को उठा कर मकान पर लाए जब होश आता तो बदन पर लरज़ा तारी हो जाता और फिर बे होश होजाते उसी ह़ालत में 25 शअ़बान 197हिजरी को बहत्तर साल की उ़म्र में रेह़लत फ़रमाई।

जब सुफ़यान इब्ने ऊ़ैनियह को आप के इन्तिक़ाल की ख़बर पहुँची तो आप ने 0 اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن फ़रमाया कि अ़ब्दुल्लाह इब्ने वहब की मौत तमाम अहले इस्लाम के लिए एक बड़ी मुसीबत है

आप के इन्तिक़ाल की रात में बअ़ज़ औलिया ने यह ख़्वाब देखा कि लोग दस्तर ख्वाानों को यह कह कर उठा रहे हैं कि उठो! अब इल्म का दस्तर ख्वान उठा लिया गया!

अ़ब्दुल्लाह इब्ने वहब ने अपनी यादगार में बहुत सी किताबें अपनी तसनीफ़ात की छोड़ी हैं जिन में ''किताबुलअहवाल'' व ''किताबुलमनासिक'' व ''किताबुलमग़ाज़ी''वग़ैरा बहुत मशहूर व मअ़रूफ़ हैं (बुस्तानुलमुहद्दिसीन वग़ैरा)

127–हज़रत अ़ब्दुर्रहमान इब्ने असवदी नख़ई (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नियत अबू ह़फ़स या अबूबक्र हैं और फ़क़ीह लक़ब है यह बलन्द मरतबा ताबिई और हज़रत अनस व बी बी आ़इशा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के ख़ास शागिर्दों में हैं और इमाम अअ़्मश वग़ैरा मुहद्दिसीन उन के शागिर्दों में हैं ।

यह बहुत ही आ़बिद व ज़ाहिद व साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे मुहम्मद इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि यह जब हज करने के लिए मक्का मुकर्रमा आऐ तो उन के एक पाँव में कोई ऐसी बीमारी थी जिस की वजह से पाँव ज़मीन पर नहीं रख सकते थे तो हम लोगों ने देखा कि इशा के बअ़्द एक पाँव पर ख़ड़े हो कर सारी रात नवाफ़िल पढ़ते रहे यहाँ तक कि इशा के वज़ू से उन्हों ने फ़ज्र की नमाज़ अदा की।

उन्होंने अपनी उ़म्र में चालीस हज और चालीस उ़मरे अदा किये थे और कभी भी एक ही सफ़र में हज व उमरा दोनों नहीं अदा किए बल्कि हज के लिए अलग सफ़र करते और उ़मरा की नीयत से दो बारा सफ़र करते उसी तरह उन के वालिद माजिद असवद इब्ने यज़ीद नख़ई ने भी चालीस हज और चालीस उ़मरे किए थे इब्ने हब्बान ने उन का साले वफ़ात 199हिजरी बताया है।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

128–हज़रत उ़मर इब्ने हुसैन जम्ही (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नीयत अबू क़दामा और वतन मक्का मुकर्रमा है यह मदीना मुनव्वरा के क़ाज़ी भी रह चुके हैं यह ह़दीस में आइशा बिन्ते क़दामा व अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी सलमा माज्सून वग़ैरा के शागिर्द हैं और उनके शागिर्दों की भी एक बड़ी जमाअ़त है जिन में इमाम मालिक भी हैं यहया इब्ने सईद अन्सारी ने उन को फ़ुक़्हाए मदीना की फ़िहि्रस्त में शुमार किया है और इमाम निसाई व इब्ने ह़ब्बान वग़ैरा ने उन को सिक़ा फ़रमाया।

इमाम मालिक का क़ौल है कि यह बहुत ही इबादत गुज़ार थे और रोज़ाना एक ख़त्म कुर्आन मजीद की तिलावत करते थे और इल्मी फ़ज़ीलत व इबादत में यकताए रोज़गार थे ।

उन की वफ़ात के वक़्त जो लोग ह़ाज़िर थे उन का बयान है कि नज़अ़ रूह की ह़ालत में उन की ज़ुबान से यह निकला لمثل هذا فليعمل العاملون ० और रूह परवाज़ कर गई ।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

129–हज़रत अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने मेहदी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबूसईद अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने मेहदी बसरा के रहने वाले इन्तिहाई कसीरुलहदीस अअ़्ला दरजे के फ़क़ीह और बहुत बलन्द पाया इमामे ह़दीस हैं इमाम शाफ़ेई का बयान हैं कि मैंने दुनिया भर में उन के जैसा महारत वाला उस्तादे ह़दीस किसी को नहीं पाया हि़फ़्ज़ व इत्क़ान वरअ़् व तक़वा में भी अपने दौर के बे मिसाल शैख़ुल ह़दीस थे अ़ली इब्ने मदीनी फ़रमाते हैं कि अगर ह़जरे असवद और मक़ामे इबराहीम के दरमियान में मुझ से क़सम ली जाए तो मैं क़सम खाकर कह दूँगा कि मैंने अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने मेहदी से बढ़ कर अह़ादीस को जानने वाला किसी को नहीं देखा।

यह इल्मे ह़दीस में शोबा व सुफ़यान सौरी व सुफ़यान इब्ने अ़ैनियह व इमाम मालिक वग़ैरा सैकड़ों अइम्मा हदीस की शागिर्दी का शरफ़ पाए हुए हैं और इमाम अह़मद इब्ने हमबल व अ़ब्दुल्लाह इब्ने

मुबारक व यह़या इब्ने मुईन जैसे इमामों ने उन के ख़िरमने इल्म से खुशा चीनी फ़रमाई और उन की दर्स गाह में ज़ानुए तलम्मुज़ तै किया

यह बहुत ही बावक़ार और रोअ़्ब व हैबत वाले शैख़ हैं त़लबा उन की मज्लिसे दर्स में उस क़दर मूअद्दब बैठते थे कि गोया उन के सरों पर परिन्द बैठे हुऐ हैं एक मरतबा एक त़ालिबे इल्म को दर्स में हँसी आगई तो आप ने उस को दर्स गाह से निकाल दिया।

आप हर रात निस्फ़ कुर्आन मजीद नमाज़े तहज्जुद में और निस्फ़ बैठ कर तिलावत करते इस तरह ज़िन्दगी भर एक ख़त्म कुर्आन मजीद हर रात में तिलावत करते एक रात बिस्तर पर लेटे थे कि नीन्द आगई और सुब्ह तक सोते रहे उस का इतना रन्ज व मलाल हुआ कि दो माह तक बिस्तर से पीठ नहीं लगाई ऐसी इबादतों की तौफ़ीक़ सैंकड़ों करामतों से बढ़ कर है औलिया अल्लाह का मक़ूला है कि اَلْاِسْتِقَامَةُ فَوْقَ الْكَرَامَةِ यअ़्नी इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है आप 135 हिजरी में पैदा हुए और 198 हिजरी में विसाल फ़रमाया।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब व तब्क़ाते शोअ़्रानी)

130–ह़ज़रत अ़ली इब्ने आ़सिम वास्ती (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

अ़बुलहसन अ़ली इब्ने आ़सिम वास्ती का लक़ब मुस्नदुल इराक़ है फ़िक़ह व हदीस में इमाम अअ़्ज़म अबूहनीफ़ा के बहुत ही मख़सूस व महबूब शागिर्दे रशीद हैं और इमाम अह़मद इब्ने हमबल व मुह़म्मद यह़या ज़हली व अ़ब्द इब्ने ह़मीद व यअ़्क़ूब इब्ने शीबा व ह़ारिस इब्ने अबी उसामा जैसे ह़दीस के इमामों ने आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर शरफ़े तलम्मुज़ ह़ासिल किया है।

अ़ली इब्ने आ़सिम के वालिद ने एक लाख दिरहम आप को दे कर फ़रमाया था कि जाओ अब बग़ैर एक लाख ह़दीसों के मैं तुम्हारी सूरत देखना पसन्द नहीं करूँगा होनहार फ़रज़न्द ने अपने वालिद बुज़ुर्गवार के हुक्म की तअ़्मील में ऐसी जिद्द व जहद फ़रमाई कि एक लाख से ज़्यादा ह़दीसों के ह़ाफ़िज़ बन गए और इमामुलह़दीस व मुस्नदुलइराक़ के लक़ब से मशहूर हुए।

आप को इमाम अअ्ज़म अबूहनहीफ़ा से इन्तिहाई वालिहाना रूहानी तअ्ल्लुक़ था चुनाँचे आप के तलामिज़ा जब यह महसूस करते कि आप कुछ मुजमहिल होगए हैं तो फ़ौरन इमाम अअ्ज़म अबूहनीफ़ा का तज़किरा छेड़ देते और आप फ़ौरन इमाम अअ्ज़म के ज़िक्रे जमील में मशगूल हो जाते और फिर आप को इस क़दर निशात हासिल हो जाता कि बिल्कुल ताज़ा दम हो कर अहादीस सुनाने में मसरूफ़ हो जाते आप का हल्का–ए–दर्स इतना वसीअ् था कि हर मज्लिस में तीस हज़ार से ज़ाइद का मज्मअ् होता था आप 150 हिजरी में पैदा हुए और 201हिजरी में वफ़ात पाई।

(तज़किरतुलहुफ़्फ़ाज़ व मनाक़िबे मोफ़िक)

131–हज़रत आ़सिम इब्ने अ़ली इब्ने आ़सिम वास्ती(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

यह मज़कूरा बाला मुस्नदुलइराक़ अ़ली इब्ने आ़सिम के फ़रज़न्द हैं उन की कुन्नीयत अबुल हसन है और यह इमाम बुख़ारी व इमाम तिर्मिज़ी वग़ैरा बाकमाल इमामों के शैख़ हैं हाफ़िज़ ज़हबी ने तज़किरतुलहुफ़्फ़ाज़ में तहरीर फ़रमाया है कि यह बग़दाद आए और ह़दीस का दर्स शुरूअ् किया तो उन की मज्लिसे दर्स में त़लबा का अज़दहाम लग गया अबुलहसन इब्ने मुबारक कहते हैं कि उन के दर्स में एक लाख त़ालिबे इल्मों से ज़्यादा का मजमा होता था हारून नामी एक बहुत बलन्द आवाज़ शख़्स खजूर के एक दरख़्त पर चढ़ कर उन की त़रफ़ से मुस्तमली (शैख़ की आवाज़ को दूर दूर तक पहुँचाने वाला) होते थे उ़मर इब्ने हफ़्स का बयान है कि शहज़ादा मोअ्तसिम बिल्लाह जो बअ्द में ख़लीफ़ा हुआ शैख़ आ़सिम की मज्लिसे दर्स में यह अन्दाज़ा लगाने के लिए हाज़िर हुआ कि हाज़ेरीन की तअ्दाद कितनी है ? उस वक़्त नख़्लिस्ताने बग़दाद के एक वसीअ् मैदान में शैख आ़सिम एक छत पर बैठ कर लोगों को अहादीस सुनाते थे और हारून मुस्तमली एक ख़म्दार ख़ज़ूर के दरख़्त पर चढ़ कर आप की अवाज़ हाज़िरीन तक पहुँचाते थे मोअ्तसिम बिल्ला के

कारिन्दों ने जब हाज़िरीने मज़मअ् का आन्दज़ा किया तो दर्स में होने वालों की तअ्दाद एक लाख़ बीस हज़ार पहुँची अ़जली ने फ़रमाया कि मैं खुद शैख़ आसिम की मज्लिसे दर्स में हाज़िर हुआ था उस दिन लोंगों ने हाज़िरीन का अन्दाज़ा लगाया तो एक लाख 60 हजार इन्सानों का मज़मअ् था।

अल्लाहु अक्बर! यह बे पनाह मक़्बूलियत 'यह कुलूबे बनी आदम की जाज़्बीयत उस को करामत के सिवा और क्या कहा जासकता है आप आख़िर उम्र में बग़दाद से फिर वतन वास्ता चले गए और 51रजब 221हिजरी को वास्ता ही में आप की वफ़ात हूई।

(तज़्किरतुलहुफ़्फ़ाज़ व तहज़ीबुत्तहज़ीब)

132–हज़रत अ़ली इब्ने बुकार बस्री (रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि)

अबुल हसन अ़ली बुकार का लक़ब मुहद्दिस ज़ाहिद है उन्का असली वतन बस्रा मगर यह लशकरे मुजाहिदीन के साथ तरतोस व मुसीसा में मुस्तक़िल तौर पर मुक़ीम होगए थे ।

इमाम औज़ाई व इबराहीम इब्ने अदहम वग़ैरा मशाइख़े हदीस के उस्ताद हैं और इमाम निसाई ने भी एक हदीस उन से रिवायत की है।

उन का दिल ख़ौफ़े इलाही से लब्रेज़ था दिन रात रोते रोते आँखों की बीनाई जाती रही थी मूसा इब्ने तरीक़ का बयान है कि सारी रात नवाफ़िल में मसरूफ़ रहते थे यहाँ तक कि उम्र भर इशा के वज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा करते रहे ।

हज़रमी का क़ौल है कि उन्हों ने 207 हिजरी में विसाल फ़रमाया और इब्ने सईद ने कहा कि उनका सने वफ़ात 208 हिजरी है मगर इब्ने हब्बान ने लिखा हैं कि यह 199हिजरी में बमक़ाम मुसीसा शहीद हुए हैं वल्लाहु तआ़ला अअ्लमु (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

133–हज़रत अ़ब्दान (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबु अ़ब्दुर्रहमान और नाम व नसब अ़ब्दुल्लाह बिन उस्मान इब्ने जब्ला अज़दी अ़त्की है मगर यह आ़म तौर पर अ़ब्दान के लक़ब से बहुत ज़्यादा मशहूर हैं बहुत नामवर व माहिरे ह़दीस मुह़द्दिस हैं अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक व शोअ़बा व ह़म्माद ज़ैद वग़ैरा असातिज़ा–ए– ह़दीस से उस इल्म को ह़ासिल किया और हज़ारों मुह़द्दिसीन उन के हलक़ा –ए–दर्स में शामिल हुए इमाम बुख़ारी ने भी उनकी शागिर्दी इख़्तियार फ़रमाई और एक सौ दस हदीसें उन से रिवायत फ़रमाई हैं ।

अ़ब्दान बहुत ही सख़ी थे अपनी ज़िन्दगी में दस लाख दिरहम त़लबा व मुह़द्दिसीन पर ख़र्च किया और अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक की तमाम किताबों का अपने क़लम से लिख डाला ह़ाकिम ने उन को अपने दौर का इमामुलह़दीस लिखा और अबू रजाअ़ मुह़म्मद इब्ने ह़म्दिया ने उन को सिक़ह, सच्चा, 'मोअ़्तमद ह़ाफ़िज़े हदीस तह़रीर किया।

यह बालों में ख़िज़ाब का शौक़ फ़रमाते और खुश पौशाक भी थे ! सरकारी ओ़हदों से इन्तिहाई नफ़रत करते थे और उ़मरा व सलात़ीन के क़ुर्ब से ह़द दरजा बेज़ार रहते थे अ़ब्दुल्लाह इब्ने त़ाहिर ने उन को जुज़ जान का क़ाज़ी बनाना चाहा मगर उन्होंने इन्तिहाई बे परवाही से उस ओ़हदे को ठुकरादिया ।

इमाम अहमद इब्ने ह़मबल का क़ौल है कि मरु (खुरासान)में अ़ब्दान की दर्सगाह इल्मे ह़दीस के त़ालिबे इल्मों का मरजअ़ थी।

221हिजरी में 76 बरस की उ़म्र पाकर अपने वतन मरु में वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

134–हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुसलिमा क़अ़नबी (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबू अब्दुर्रहमान और नाम व नसब अ़ब्दुल्लाह इब्ने क़अ़नब है अपने दादा कअ़नब की त़रफ़ निसबत होने की वजह से क़अ़नबी कहलाते हैं यह मदीना मुनव्वरा में पैदा हुए फिर बस़रा को अपना वत़न बनालिया आख़िर उ़म्र में मक्का मुकर्रमा चले गए और वहीं 6 मुहर्रम 221हिजरी को विसाल फ़रमाया।

उन्हों ने बहुत से मशाईख़ की दर्स गाहों से इल्मी इस्तिफ़ादा किया है मगर चुँकि 8 बरस तक इमाम मालिक की ख़िदमत में रह कर इल्मे ह़दीस पढ़ा और उन से मुअत़्त़ा की रिवायत भी की इस लिए इमाम मालिक के ख़ास़ शागिर्दों में उन का शुमार है यहया इब्ने मुईन का क़ौल है कि मेरी नज़र में खुदा की रज़ा के लिए दो ही शख़्स अहादीस का दर्स देते हैं एक वकीअ़ दुसरे क़अ़नबी

एक मरतबा क़अ़नबी बसरा से मदीना मुनव्वरा आये तो इमाम मालिक ने अपने तलामिज़ा से फ़रमाया कि उठो ! चलो ! एक ऐसे शख़्स को सलाम कर आयें जो इस वक़्त रुए ज़मीन पर बेहतरीन इन्सानों में से हैं।

इमाम मालिक ख़ाना–ए–कअ़बा का त़वाफ़ करते हुए फ़रमाया करते थे इस वक़्त क़अ़नबी से ज़्यादा अफ़ज़ल व बेहतर कोई शख़्स तवाफ़ नहीं करता है अ़ब्दुल्लाह इब्ने ह़कम कहते हैं कि मैंने हुज़ूर नबी अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व स़ल्लम को ख़्वाब में देखा तो मुझ से आप ने इरशाद फ़रमाया कि तुम क़अ़नबी से ह़दीस का इ़ल्म हासिल करो।

क़अ़नबी इ़ल्म व अ़मल व ज़ुहद व तक़्वा के जामेअ़ और साह़िबे करामत व मुस्तजबुददअ़वत थे और अकसर लोगों को यह यक़ीन था कि यह औलिया–ए–अल्लाह के त़ब्क़ा–ए–अबदाल में से हैं और उन की बुज़ुर्गी व अफ़ज़लियत पर तो तमाम अहले ज़माना का

इत्तिफ़ाक़ था। (बुस्तानुलमुहद्दिदसीन)

135–हज़रत अ़ब्दुलमालिक इब्ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ कुशैरी(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नीयत अबू नस्र है यह चूँकि बग़दाद में खजूरों की तिजारत करते थे इस लिए अबू नसर तमार (खजूर वाला) के लक़ब से ज़्यादा मशहूर हैं यह इमाम मुस्लिम के उस्तादों में से हैं इब्ने सअ़्द ने फ़रमाया कि यह निहायत ही सच्चे और क़ाबिले एअ़्तिमाद मुहद्दिस हैं और इल्म व फ़ज़्ल और तक़्वा व इबादत की कसरत के एअ़्तेबार से अपने दौर के बहुत ही बलन्द मरतबा आ़लिमे दीन हैं।

ख़ल्के क़ुर्आन के फ़ितने में यह भी क़ैद में डाले गऐ और इमाम अहमद इब्ने हमबल की त़रह अ़ब्बासी हुकूमत ने इन को भी कोड़े लगावाये थे मगर इमाम अहमद बिन हम्बल ही की त़रह़ यह भी सब्र व इस्तिक़ामत का पहाड़ बन कर ह़क़ पर साबित क़दम रहे ।

अहले बग़दाद आ़म त़ौर पर उन को वलीए कामिल और अब्दाल समझते थे और उन के फ़ुयूज़ व बरकात से फ़ैज़ उठाते थे आख़िरी उ़म्र में आँखों की बसारत जाती रही थी मगर उस ह़ालत में भी दर्से ह़दीस व कसरते इबादत के मअ़्मूलात में कोई फ़र्क़ नहीं पैदा हुआ 228हिजरी में इक्यानवे बरस की उ़म्र पाकर बग़दाद में वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

136–हज़रत अ़ली इब्ने अलजोअ़द (रहतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

अबुल ह़सन अ़ली इब्ने जोअ़द का वतन बग़दाद है इमाम मालिक व शोअ़बा व सुफ़यान सौरी वग़ैरा इमामों की दर्स गाहों के फ़ाज़िले ह़दीस हैं और अ़हमद इब्ने हमबल व इमाम बुख़ारी व यहया इब्ने मुईन व इमाम अबू दाऊद वग़ैरा अइम्मा–ए–ह़दीस के शैख़ुलहदीस व उस्ताद हैं उन का ह़ाफ़िज़ा निहायत क़वी था और यह अपने ह़िफ़्ज़ से ज़ुबानी अह़ादीस सुनाया करते थे मूसा इब्ने दाऊद का क़ौल है कि मैंने अ़ली इब्ने जोअ़द से बढ़ कर कोई ह़दीसों का ह़ाफ़िज़ नहीं देखा।

यह्या इब्ने मुईन फ़रमाते हैं कि मैं तीस बर्स से ज़्यादा मुद्दत तक अ़ली इब्ने जोअ़्द की ख़िद्मत में अह़ादीस लिखता रहा मगर इतनी तवील मुद्दत में कोई फ़ेअ़्ल ख़िलाफ़े सुन्नत उन से स़ादिर होते हुए मैंने नहीं देखा और यक़ीनन अ़ली इब्ने जोअ़्द आ़लिमे रब्बानी थे।

अबुज़ुरआ़ अबूहा़तिम वग़ैरा ने उन को स़ादिक़ व सालेह़ और ठोस इल्म वाला बताया इबादत की कसरत व साहिबे करामत होने में भी उन की शोहरत थी।

अबू इसराईल मुह़द्दिस ने अ़ली इब्ने जोअ़्द के जनाज़ा पर खड़े हो कर ऐलान किया कि ऐ लोगो! यह वह बाकरामत आ़लिमे रब्बनी हैं कि उन्हों ने साठ बरस तक सौमे दाऊदी रखा है यअ़्नी एक दिन का नाग़ा देकर हमेशा साठ बरस तक रोज़ा रखते रहे हैं। 123हिजरी में उन की विलादत 230 हिजरी में वफ़ात हुई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

137–ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्दुर्रह़मान दारमी (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

अबूमुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्दुर्रह़मान दारमी का वत़न समर क़न्द है इमाम बन्दार का क़ौल है कि हुफ़्फ़ाज़े दुनिया चार ही शख़्स हैं मुह़म्मद इब्ने इस्माईल बुख़ारी बुख़ारा में और अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्दुर्रह़मान दारमी समर कन्द में अबूज़ुरआ़ रै में और मुस्लिम इब्ने हिजाज़ नीशापूर में।

मुह़म्मद इब्ने इबराहीम इब्ने मनसूर शीराज़ी का बयान है कि इमाम दारमी अ़क़्ल व ह़िफ़्ज़ में अअ़्ला और ह़िल्म व ज़ुहद व इबादत में ज़र्बुलमिस्ल थे।

आप ने इल्मे ह़दीस बड़े बड़े जलीलुल क़द्र इमामों से ह़ासिल किया और आप की जलालते इल्म का अन्दाज़ा करने के लिए यही काफ़ी है कि इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम व इमाम तिर्मिज़ी व इमाम अ़बूदाऊद व इमाम अबूज़ुरआ़ जैसे ह़दीस के पहाड़ों ने आप की शागिर्दी इख़्तियार की समर क़न्द में आप की दर्स गाहे इल्मे ह़दीस

की नश्र व इशाअ़त में मरजओ ख़लाइक़ और आप की हस्ती इल्मे ह़दीस के त़ालिब इल्मों का मलजा व मावा थी ।

आप इमामे ह़दीस होने के साथ अअ़्ला दर्जे के फ़क़ीह और इन्तिहाई माहिर मुफ़स्सिर भी थे ख़त़ीब ने तह़रीर फ़रमाया कि आप की ज़ात इल्मी सफ़र करने वालों का मरज़अ् और आप सिद्क़ व तक़्वा और ज़ुहद व क़नाअ़त का एक अअ़्ला नमूना थे।

बादशाहे वक़्त ने आप को क़ाज़ी बनने पर मजबूर कर दिया तो आप बड़ी मुश्किल से सुलतान की बात रखने के लिए क़ाज़ी बन गए—मगर सिर्फ़ एक ही मुक़द्दमा का फ़ैसला कर के हमेशा के लिए इस ओ़हदे से मुस्तअ़फ़ी हो गए।

8ज़िल्हिज्जा 255 हिजरी में 74 बरस की उ़म्र पाकर आप ने विसाल फ़रमाया और 9 ज़िल्हिज्जा के दिन आप मदफ़ून हूए।

इस्ह़ाक़ इब्ने अह़मद कहते हैं कि मैं इमाम बुख़ारी की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि नागहाँ उन के पास इमाम दारमी के इन्तिक़ाल का ख़त़ आया इमाम बुख़ारी ने ख़त़ पढ़ कर सर झुका लिया फिर सर उठाया और इन्ना लिल्लाह पढ़ा और उन की आँखों से आँसू की धार उन के रुख़्सार पर बहने लगी और फ़ौरन यह शेर पढ़ कर रोने लगे।

ان تبق تفجع بالاحبه کلهم
وفناء نفسک لا اباتک افجع

इस्हाक़ इब्ने अ़हमद कहते हैं कि इमाम बुख़ारी इन अशआ़र के इलावा जो अह़ादीस में आये हैं कभी कोई शेअ़्र नहीं पढ़ते थे मगर इमाम दारमी की वफ़ात पर दर्द नाक व रिक़्क़त अन्गेज़ लहजे में उनहोंने यह शेअ़्र पढ़ा (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

138—हज़रत उ़मर इब्ने इबराहीम बग़दादी(रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

अबू बकर उ़मर इब्ने इबराहीम बग़दादी का लक़ब अबुलआज़ान है यह ह़दीस में इस्माईल इब्ने मसऊ़द जहदरी व अबू कुरैब व अ़ली इब्ने शुऐ़ब समसार वग़ैरा के शागिर्द और इमाम निसाई वग़ैरा मुह़द्दिस के उस्ताद हैं ख़लीली व ख़त़ीब ने उन को सिक़ा फ़रमाया

और उन के हिफ़्ज़ की मदह फ़रमाई और इस्माईल ने उन को साहिबे तक़्वा व़ इबादत और बाकरामत मुहिद्दस बताया और उन का एक वाकिआ नक़्ल किया कि यह एक यहूदी से मुनाज़रा कर रहे थे यहूदी अपनी हट धर्मी से हक़ को तस्लीम नहीं करता था इस लिए जलाल में आकर आप ने फरमाया कि ऐ यहूदी चल ! हम दोनों मुबाहिला कर लें और दोनों अपना अपना हाथ आग में डाल दें जो ह़क़ पर होगा वह नहीं जलेगा चुनाँचे यह कह कर अपना हाथ आग में डाल दिया और आप का हाथ बिल्कुल नहीं जला मजबूरन यहूदी ने भी अपना हाथ आग में डाला तो वह राख हो गया। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

139–ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह ह़ारसी (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अलैहि अलैहि)

अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह ह़ारसी बुख़ारी का लक़ब अ़ब्दुल्लाह उस्ताज़ है इल्मे ह़दीस के लिए आप ने हिजाज़ व ख़ुरासान वग़ैरा के बड़े बड़े शहरों का सफ़र किया और इल्मी मरकज़ों में पहुँच कर बड़े बड़े नामवर शुयूख़ से अहादीस की रिवायत की इल्मे फ़िक़्ह आप ने अबू ह़फ़्स सग़ीर से सीखा और ह़फ़्स सग़ीर अपने वालिद माजिद अबू हफ़्स कबीर के शागिर्द हैं जो इमाम मुह़म्मद (शागिर्द इमाम अबू ह़नीफ़ा) के शागिर्द हैं ।

अ़ब्दुल्लाह ह़ारसी बहुत कसीर ह़दीसों के ह़ाफ़िज़ थे आप मुसनद इमाम अबूह़नीफ़ा के जामेअ़ हैं और अपने ज़माने में फुक़्हा–ए–हन्फ़ीया के इमाम हुए।

आप उन फुक़्हा–ए–मुह़द्दिसीन में से हैं जिन को रुए ज़मीन पर मक़बूलियत की करामत ह़ासिल हूई मन्कुल है कि आप जब अपनी किताब ''कशफुल आसारिश्शरीफ़ा फ़ी मनाक़िबिल इमामे अबी ह़नीफ़ा' का बग़दाद में इमला कराते थे तो आप की मज्लिसे दर्स में चार सौ मुस्तमली (शैख़ की आवाज़ को दूर दूर तक पहुँचाने वाल) होते थे ग़ौर कीजिए कि जब मुस्तमलीयों की यह तअ़दाद होती थी तो सामेईन की तअ़दाद कितनी होती होगी?

फिर जब मनाक़िबे इमाम अबू हनीफ़ा के सामेईन का यह आ़लम था तो फिर मुसनदे इमाम अबूहनीफ़ा के दर्स के हाज़ेरीन की तअ़दाद किस क़दर होती होगी 340 हिजरी में आप की वफ़ात हुई।

(अलजवाहिरुल मुज़िया फी तब्क़ातुलहन्फ़िया)

140—हज़रत अ़याज़ क़ाज़ी(रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नीयत अबुलफ़ज़्ल और नाम नसब अयाज़ इब्ने मूसा इब्ने अ़याज़ इब्ने अ़म्र इब्ने मूसा इब्ने अ़याज़ इब्ने मुहम्मद इब्ने मूसा इब्ने अ़याज़ यहया है और आ़म तौर पर क़ाज़ी अ़याज़ के नाम से मशहूर हैं आप का ख़ान्दान दर अस्ल यमनी है मगर आप चूँके शहरे सब्तह में पैदा हुए और यही आप की परवरिश भी हुई इस लिए आप सब्ती भी कहलाते हैं ।

पहले अपने शहर के फ़ाज़िलों से इल्म की तहसील की फिर उन्दलस का सफ़र किया और वहाँ इब्ने ह़म्दैन व इब्ने अलहाज व अबू अ़ली सदफ़ी व इब्ने इ़ताब वग़ैरा बाकमाल फुक़हा व मुहद्दिसीन से इल्मे फ़िक़ह व हदीस व दीगर उ़लूम को ह़ासिल किया और ख़ास कर फ़िक़ह व ह़दीस व नह़व व शेअ़र गोई उन चार उ़लूम में कमाल पैदा किया।

आप बड़ी मुफ़ीद किताबों के मुसन्निफ़ भी हुए उन में से एक किताब "मशारिकुल अनवार अ़ला सिह़ाहिलआसार" है कहते हैं कि यह किताब इस दर्जे की है कि अगर उस को आबे ज़र से लिखा जाए और मोती व जवाहिर से तोला जाए तो भी उस का ह़क़ अदा नहीं हो सकता।

उसी त़रह़ आप की किताब اکمال المعلم فی شرح صحیح مسلم भी बहुत नादिर व बेहद् मक़बूल किताब है उसी त़रह की तक़रीबन आठ दस किताबें आप ने तस्नीफ़ फ़रमाई है मगर इस सब किताबों में सब से है ज़्यादा मशहूर व मक़बूल किताब आप की तस्नीफ़ كتاب الشفاء بتعريف حقوق المصطفےٰ है सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम वस्सलाम यह किताब अजीब ईमान अफ़रोज़ है कि उस के

पढ़ने से रूह में बालीदगी और ईमान में ताज़गी पैदा हो जाती है और साहिबे ईमान का सीना महब्बते रसूल का मदीना बन जाता है उस किताब की मक़बूलियत के लिए यह वाकिआ इतमीनान बख़्श सनद है कि आप के भतीजे ने एक मरतबा ख्वाब में देखा कि मेरे चचा क़ाज़ी अ़याज़ हुजूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ सोने के तख़्त पर एक साथ बैठे हुए हैं उस ख़्वाब के देखने से उन पर दहशत त़ारी होगई फ़िर तरह तरह का वहम होने लगा कि भला मेरे चचा (क़ाज़ी अ़याज़ को इतन बड़ा मरतबा क्यों और कैसे मिल गया ? कि यह हुजूर अ़लैहिस्सलातु व स्सलाम के इतने मुर्क़रब हो कर एक साथ सोने के तख़्त पर बैठे हुए हैं) क़ाज़ी अ़याज़ ने अपने कश्फ़ से भतीजे के दिल की कैफ़ियत और उस के ख़त़रात को मअ़लूम कर लिया फिर भतीजे को क़रीब बुला कर बड़ी शफ़क़त के साथ फ़रमाया कि मेरे फ़रज़न्द!तुम मेरी किताब शिफ़ा को मज़बूती के साथ पकड़े रहो और उस को अपने अ़क़ाइद व अअ़्माल में हुज्जत बनाओ।

इस कलाम में आप ने इशारा फ़रमा दिया कि मुझ को यह मरतबा उसी किताब की बदौलत ह़ासिल हुआ है किताबुश्शिफ़ा की मदह़ में शोअ़्रा ने बड़े बड़े अजीब क़साइद और नादिर नादिर क़त्आत लिखे हैं चुनाँचे लिसानुद्दीन ख़त़ीबे तिल्मिसानी के क़सीदे के चार शेअ़्र यह हैं।

شفاء عياض للصدور شفاءٌ　　وليس للفضل قد حواه خَفَاءٌ

क़ाज़ी अ़याज़ की शिफ़ा दिलों की शिफ़ा है और जिस फ़ज़ीलत को इस किताब ने जमअ़् किया वह कोई पोशीदा चीज़ नहीं है।

وفى لنبىّ الله حق وفائهٖ　　وَاَكْرَامُ اَوْصَافُ الْكِرَامِ وَفَاءٌ

उन्हों ने अल्लाह के नबी के ह़क को पूरा अदा कर दिया और बुजुर्गों के औसाफ़ में सब से बड़ा वस्फ़ वफ़ा ही तो है।

وَحَقِ رَسُوْلِ اللّٰه بَعْدَ وَفَاتِهٖ　　رَعَاهُ وَاَغْفَالُ الْحُقُوْقِ جَفَاءٌ

"मुझे रसूले खुदा के ह़क की क़सम है कि हुजूर अ़लैहिस्सलातु

वस्सलाम के बअ्द उन्हों ने आपके हक़ की रिआयत की और हुक़ूक़ स
ग़फ़लत बरतना यह बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

هُوَ الْاَثْرُوَا الْمَحْمُوْدُ لَيْسَ يَنَالُهٗ دُثُوْرٌ وَلَا يَخْشٰى عَلَيْهِ عَفَاءٌ

यह एक ऐसा पसन्दीदा निशान है जिस पर कभी पुराना पन नहीं आ सकता और न उसके मिट जाने का ख़ौफ़ किया जा सकता है। उसी तरह अबू हुसैन अ़ब्दुल्लाह इब्ने अहमद इब्ने अ़ब्दुल मजीद अज़दी ज़ुब्ज़ी का क़सीदा भी बड़ा ही कैफ़ आवर है दो शेअ्र उस क़सीदे के भी मुलाहिज़ा फ़रमाऐं।

كِتَابُ الشِّفَاءِ شِفَاءُ الْقُلُوْبِ قَدِ ائْتَلَقَتْ شَمْسُ بُرْهَانِهٖ

किताबुश्शिफ़ा दिलों की शिफ़ा है और बिला शुब्ह उस की दलील का आफ़ताब चमक उठा है।

فَاَكْرِمْ ثُمَّ اَكْرِمْ بِهٖ وَاَعْظَمْ مُدَى الدَّهْرِ مِنْ شَانِهٖ

पस तुम बार बार उस की तअ्ज़ीम व इकराम करते रहो और क़ियामत तक उस की अ़ज़मते शान को बढ़ाते रहो।

क़ाज़ी अयाज़ 496 हिजरी में बमक़ाम सब्ता तव्वलुद हूऐ और 544 हिजरी में मराकश में वफ़ात पाई। (बुस्तानुलमुहद्दिदसीन)

141—हज़रत गुन्दर (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप का नाम मुहम्मद इब्ने ज़अ़फ़र और वतन बस्रा है आप क़बीला हुज़ैल के आज़ाद करदा गुलाम थे इस लिए हज़ली कहलाते हैं गुन्दर आप का लक़ब है गुन्दर के मअ्ना बहुत ज़्यादा शोर मचाने वाला यह लक़ब इब्ने जरीज मुहद्दिस ने आप को दिया जिस का वाक़िआ यह है कि इब्ने जरीज मुहद्दिस जब बस्रा में तशरीफ़ लाए और हसन बसरी से रिवायत करते हुए एक हदीस सुनाई तो सामेईन ने बड़े ज़ोर व शोर के साथ उस हदीस के बारे में पूछ गछ शुरुअ् की और मुहम्मद इब्ने जाफ़र सब से ज़्यादा ज़ोर ज़ोर से चिल्ला चिल्ला कर सवाल व जवाब करने लगे तो इब्ने जरीज ने उन को डाँट कर फ़रमाया कि سكت يا غندر यअनी ऐ शोर मचाने वाले ख़ामोश हो

जा ! उसी दिंन से गुन्दुर आप का लक़ब हो गया यह लक़ब इस क़दर मशहूर हो गया कि ह़दीस की सनदों में आप का नाम बहुत कम आता है अकसर सनदों में आप का लक़ब गुन्दुर ही इस्तेमाल होता हैं।

आप इल्मे ह़दीस में सुफ़यान सौरी व सुफ़यान इब्ने अैनीयह व शोअ़बा व अ़ली इब्ने मदीनी वग़ैरा जलीलुल क़दर मुह़द्दिसीन के शागिर्दे रशीद हैं और अबू बकर अबी शीबा वग़ैरा मुह़द्दिसीन के उस्ताद हैं।

इबादत व तक़्वा में भी आप का मक़ाम बहुत बलन्द है आप की एक बाकरामत इबादत यह है कि आप ने मुसलसल 50 बरस तक सौमे दाऊदी रखा यअ़नी पूरे पचास बरस तक एक दिन रोज़ा रखा और एक दिन इफ़तार किया माह ज़ीक़ादा 193 हिजरी में आप ने वफ़ात पाई

(नोवी)

142–हज़रत फुज़ैल इब्ने अयाज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

अबू अ़ली फुज़ैल बिन अ़याज़ इब्ने मसऊ़द बशर तमीमी खुरासानी बहुत नामवर मुहद्दिस और मशहूर औलिया में से हैं यह पहले बहुत ज़बर दस्त डाकू थे फ़ज़्ल इब्ने मूसा का बयान है कि यह डाका डालने के लिए किसी मकान की दीवार पर चढ़ रहे थे इत्तिफ़ाक़ से मालिक मकान कुर्आन मजीद की तिलावत कर रहे थे नागाहाँ फुज़ैल इब्ने अयाज़ ने यह आयत أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ यानी क्या ईमान वालों के लिए अभी वक़्त नहीं आया कि उन के दिल ज़िक्रे इलाही के लिए नर्म पड़ जाऐं ? यह आयत फुज़ैल इब्ने अयाज़ के कान में पड़ी और तासीरे रब्बानी का तीर बन कर दिल में चुभ गई और इतना असर हुआ कि यह ख़ौफ़े खुदावन्दी से काँपने लगे और बिला इख़्तियार उन के मुँह से निकल गया कि क्यों नहीं! ऐ मेरे परवर दिगार ! अब उस का वक़्त आगया चुनाँचे आप रोते हुए दीवार से उतर पड़े और रात में एक सुन्सान गिरे पड़े मकान के खन्डहर में जाकर बैठ गए थोड़ी देर के बअ़द वहाँ एक क़ाफ़िला आकर ठहरा

क़ाफ़िले वाले आपस में कहने लगे कि रात को सफ़र मत करो और यहाँ पर ठहर जाओ क्यों कि फुज़ैल इब्ने अ़याज़ डाकू इसी अत्राफ़ में रहता है आप क़ाफ़िले वालों की बातें सुन कर और ज़्यादा रोने लगे हाए ! अफ़सोस मैं कितना बड़ा गुनाहगार हूँ कि मेरे ख़ौफ़ से उम्मते रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) के क़ाफ़िले रात में सफ़र नहीं करते और घरों में औ़रतें मेरा नाम ले कर बच्चों को डराती हैं आपने उसी जगह रोते रोते सुबह कर दी और सच्ची तौबा कर के खुदा से यह अ़हद कर लिया कि अब सारी ज़िन्दगी बैतुल्लाह शरीफ़ की मुजावरी और इ़बादत में गुज़ारूँगा चुनाँचे पहले आप ने इ़ल्मे ह़दीस पढ़ना शुरूअ़ किया और इमाम अअ़मश और इमाम जअ़फ़र सादिक़ व मन्सूर व उ़बैदुल्लाह इब्ने उ़मर वग़ैरा औलिया –ए–मुह़द्दिसीन की शागिर्दी इख़्तियार की और थोड़े ही अर्से में आप एक साहिबे फ़ज़ीलत मुह़द्दिस होगये और खुद भी ह़दीस का दर्स शुरूअ़ कर दिया चुनाँचे आप की दर्सगाहे ह़दीस में तअ़लीम ह़ासिल करने वाले इमाम शाफ़िई व अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक व सुफ़यान सौरी इब्ने अ़ैनीया व यहया इब्ने सईद क़त्तान वग़ैरा जैसे अइम्मा–ए–ह़दीस हुए जो आसमाने इ़ल्म व फ़ज़्ल पर आफ़ताब व माहताब बन कर चमके ख़लीफ़ा बग़दाद हारून रशीद कहा करता था कि मैंने उ़लमा में इमाम मालिक से ज़्यादा बारोअ़ब और फुज़ैल इब्ने अ़याज़ से बढ़ कर परहेज़ गार किसी को नहीं देखा।

फुज़ैल इब्ने अ़याज़ के ख़ादिम अशअ़स का बयान है कि फुज़ैल इब्ने अ़याज़ के दिल में इस क़दर ख़ौफ़े इलाही था कि इस क़दर फूट फूट कर रोते थे के ह़ाज़िरीने मज्लिस को रहम आने लगता था जिस दिन फुज़ैल इब्ने अ़याज़ का इन्तिक़ाल हुआ तो इमाम वकीअ़ बोल उठे कि आज ख़ौफ़े इलाही दुनिया से रुख़सत हो गया।

आप मक्का मुकर्रमा की मस्जिदे ह़राम में मुस्तक़िल तौर पर मोअ़्तकिफ़ होगए थे और आख़िरी उम्र में दर्से ह़दीस बन्द कर के

हरमे इलाही में इबादत गुज़ारी और रात दिन गिर्या व ज़ारी करना आप का बेहतरीन मशग़ला था बदन पर दो कपड़ों के सिवा कोई सामाने दुनिया आप के पास नहीं था और उसी हालत में मुहर्रम 187हिजरी में आप का विसाल हुआ (तहजीबुत्तहजीब वग़ैरा)

143–हज़रत क़ासिम इब्ने मुहम्मद (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नीयत अबूमुहम्मद या अबू अ़ब्दुर्रहमान है आप अमीरुल मोमेनीन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआला अ़न्हु के पोते हैं जब उन के वालिद मुहम्मद इब्ने अबी बक्र शहीद कर दिए गए तो यह अपनी फूफ़ी हज़रत बी बी आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अ़न्हा की परवरिश में रहने लगे आप अकाबिर ताबिईन में से हें और मदीना मुनव्वरा के मशहूर सात फुक़हा में आप का शुमार है और अपने ज़माने में इल्म व अ़मल के लिहाज़ से आप तमाम अहले मदीना में सब से अफ़ज़ल माने जाते थे चुनाँचे यहया इब्ने सईद का क़ौल हैं कि हम लोग क़ासिम इब्ने मुहम्मद से बढ़ कर किसी को अफ़ज़ल नहीं समझते थे अबुज़्ज़नाद ने फ़रमाया कि क़ासिम इब्ने मुहम्मद से बढ़ कर कोई अहादीस का जानने वाला मेरी नज़र में नहीं आया।

यह हदीस में अपने वालिद मुहम्मद इब्ने अबूबक्र और अपनी फूफी हज़रत बी बी आइशा व अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द व अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर व अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास व अ़मीर मुआविया व अबू हुरैरा वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अ़न्हुम की एक जमाअ़ते कसीरा के शागिर्द हैं और आप के तलामिज़ा में इमाम शअ़बी वसालिम इब्ने अ़ब्दुल्लाह व इमाम ज़हरी वग़ैरा सैकड़ों ताबिईन व तबअ़े ताबिईन मुहद्दिसीन हुए।

आप हदीस की रिवायत बहुत कम करते थे ज़्यादा तर ख़ामोश रहते और अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त इबादत में गुज़ारते थे।

मिज़ाज में इन्किसार व तवाज़ोअ़ की ख़स्लत भी थी इब्ने इस्हाक़

ने आप का एक वाक़िआ नक़ल किया है कि एक देहाती ने आप से मस्जिद नबवी में सवाल किया कि आप का इल्म ज़्यादा है या सालिम इब्ने अ़ब्दुल्लाह का ? आप सुब्हानल्लाह कह कर ख़ामोश हो गए मगर देहाती बार बार यही सवाल करता रहा तो आप ने उस से फ़रमाया कि तुम यह सवाल सालिम इब्ने अ़ब्दुल्लाह से करो और आप फ़ौरन मस्जिद से बाहर निकल गए इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि वाक़िआ यह है कि आप इल्म में सालिम इब्ने अ़ब्दुल्लाह से बढ़ कर थे मगर आप ने देहाती को इस लिए जवाब नहीं दिया कि अगर आप यह कहते कि मेरा इल्म ज़्यादा है तो इस में अपनी बड़ाई का इज़्हार होता और अगर यह कह देते कि सालिम इब्ने अ़ब्दुल्लाह का इल्म ज़्यादा है तो यह झूट और ग़लत होता।

आप शरीअ़त व त़रीक़त दोनों के इमाम थे और बहुत ही आबिद व ज़ाहिद और बाकरामत साहिबे वलायत थे आप ने फ़ैज़े बातिनी हज़रत सलमान फ़ारसी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हासिल किया और आप के ख़लीफ़ा व जानशीन हैं चुनाँचे सिल्सला-ए-नक़्शबन्दिया के शजरा में आप का नाम नामी व इस्मे गिरामी मज़कूर है।

मदीना मुनव्वहा में 101 हिजरी में या 106 हिजरी में आप ने विसाल फ़रमाया और जन्नतुलबक़ीअ़ के क़ब्रस्तान में मदफ़ून हुए

(तहज़ीबुत्तहज़ीब वग़ैरा)

144—हज़रत क़ासिम इब्ने मुख़ैमेरा (रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि)

अबूउ़रवह क़ासिम इब्ने मुख़ैमरा हमदानी कूफ़ी अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर व अबु सईद ख़ुदरी वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के शागिर्द और अ़ल्क़मा इब्ने मुरसद व अबू इस्हाक़ सबीई व इमाम औज़ाई वग़ैरा मुहद्दिसीने किराम के उस्ताद हैं यह कूफ़ा में लि वज्हिल्लाह हदीस का दर्स देते थे और तिजारत की कमाई से गुज़र बसर करते थे ख़लीफ़ा आदिल उ़मर इब्ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने उन की तन्ख़्वाह मुकर्रर फ़रमादी तो उन को बड़ी ख़ुशी यह हुई कि अल्हम्दु लिल्लाहि! मैं अब तिजारत से बे नियाज़ हो कर सारा वक़्त दर्सेहदीस

में सर्फ़ करूँगा।

इब्ने हब्बान ने उन को सिक़ा मुहद्दिस लिख कर फ़रमाया कि यह अपने ज़माने में इल्म व अमल के एअ्तिबार से अफ़ज़लुन्नास थे और कसरते इबादत में कूफ़ा के सालेहीन में बहुत मुमताज़ थे।

आख़िर उम्र में कूफ़ा से शाम चले गये और मुजाहिदीन के लश्कर में शामिल हो कर जिहाद में मसरुफ़ हो गये और उसी हाल में 108 हिजरी में आप ने वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

145–हज़रत क़ासिम इब्ने अ़ब्दुर्रहमान (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबू अ़ब्दुर्रहमान इब्ने अ़ब्दुर्रहमान यह मशहूर सहाबी हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु के पोते हैं और हदीस में अपने वालिद और दादा के इलावा अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्र वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम से तलम्मुज़ रखते हैं और उन के शागिर्दों में अबु इस्हाक़ सबीई व अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुहीरीज़ व अ़ता इब्ने साइब वग़ैरा मोअ्तबर मुहद्दिसीन हैं।

इब्ने सअ्द ने उन को सिक़ा व कसीरुल हदीस बावक़ार ताबिई लिखा है यह कूफ़ा के क़ाज़ी भी थे लेकिन अपने इस ओहदे की कोई तन्ख़्वाह नहीं लेते थे।

मुहारिब का क़ौल है कि हम लोग कूफ़ा से बैतुलमुक़द्दस तक सफ़र में उन के साथ रहे तो हम ने नमाज़ की कसरत और सख़ावत व ख़ामोशी वग़ैरा सिफ़ाते हमीदा में उन को सब से अफ़ज़ल पाया 120हिजरी मे उन्हों ने वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

146–हज़रत क़ासिम इब्ने सलाम (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबू उ़बैद क़ासिम इब्ने सलाम का लक़ब क़ाज़ी व फ़क़ीह है उन की जाए पैदाइश हिरात है मगर बग़दाद को अपना वतन बना लिया था इस लिए बग़दादी कहलाते हैं ।

उन्होंने यहया इब्ने सअ्द क़तान व अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक व वकीअ् इब्ने अलजराह इब्ने ऐनीया ताबिई मुहद्दिसीने हदीस की समाअ्त व रिवायत की हैं और उन के शागिर्दों की जमाअ्त भी बहुत

कसीर है जिन में सअ्द इब्ने अबी मरयम बहुत नुमायाँ हैं और खुद कासिम इब्ने सलाम ने भी सईद इब्ने अबी मरयम से हदीसें रिवायत की हैं।

हिलाल इब्ने अलाअ् रकी का कौल है कि अल्लाह तआला ने उस उम्मत पर चार आदमियों को पैदा फ़रमा कर बहुत बड़ा एहसान फ़रमाया और यह चारों आदमी अपने अपने ज़माने में उस उम्मत पर बड़े बड़े इन्आमे रब्बानी का मज़हर थे इमाम शाफ़ेई और इमाम अहमद इब्ने हमबल व यहया इब्ने मुईन व क़ासिम इब्ने सलाम रदियल्लाहु तआला अन्हुम इमाम हरबी ने फ़रमाया कि क़ासिम इब्ने सलाम को देख कर ऐसा लगता था कि गोया एक इल्म व अमल का पहाड़ है जिस में रुह फूँक दी गई है।

यह अठारह बरस तक तरतूस के काज़ी भी रहे इमाम अबू बक्र अमबारी का बयान है कि क़ासिम इब्ने सलाम रात को तीन हिस्सों में तक़सीम करते थे एक तिहाई रात सोते और एक तिहाई रात में नमाज़ तहज्जुद व नवाफ़िल पढ़ते और एक तिहाई रात में किताबें तस्नीफ़ फरमाते।

इस लिए आपकी तस्नीफ़ात भी काफी तअ्दाद में हैं क़ाज़ी बन जाने के बअ्द फुर्सत नहीं मिलती थी इस लिए दर्से हदीस बन्द कर दिया था आख़िरी उम्र में हज के लिए गए और मक्का मुअज़्ज़मा ही में 224हिजरी में वफ़ात पाई। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

147—हज़रत क़ुदूरी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नीयत अबुल हुसैन और नाम व नसब अहमद इब्ने मुहम्मद इब्ने अहमद जअ्फ़र इब्ने हमदान है बग़दाद के गाँव ''क़ुदूरा'' के रहने वाले थे इस लिए क़ुदूरी कहलाते हैं और बअ्ज़ का क़ौल है कि यह क़ुदूर (हान्डीयों) की तिजारत करते थे इस लिए क़ुदूरी कहलाते हैं।

यह बग़दाद बल्कि पूरे इराक़ में उलमा—ए—हन्फ़ीया के मूसल्लमुस्सुबूत इमाम थे और इल्मे फ़िक़्ह व हदीस में अपने दौर के

बहुत ही बाकमाल फ़कीह व मुहद्दिस थे यह फ़िक़्ह में अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने यह्या जरजानी फ़कीह के शागिर्द हैं जो इमाम कर्ख़ी के शागिर्द के शागिर्द हैं और इल्मे ह़दीस में तो यह इस क़दर बलन्द मरतबा और नामवर शैख़े ह़दीस थे कि ख़तीबे बग़दादी ने उन की दर्स गाह में ज़ानुए तलम्मुज़ तै किया और बरसों उन के ख़िरमने इल्म से ख़ुशा चीनी करते रहे कुदूरी बहुत बड़े मुनाज़िर भी थे चुनाँचे उन्होंने शैख़ अबू हामिद असफ़राईनी फ़कीहे शाफ़िई से मुनाज़िरा भी किया था।

आप की तस्नीफ़ करदा किताबों में मुख़्तसरुल कुदूरी बहुत मशहूर हैं जो आज तक अ़रब व अ़ज़म के मदारिसे इस्लामिया में दाख़िले दर्स है।

यह बहुत ही इबादत गुज़ार और मुत्तक़ी व परहेज़ गार थे और दिन रात तिलावते कुर्आन मजीद फ़रमाते रहते थे अहले इराक़ उन का बेहद एहतिराम करते और उन को इराक़ के बड़े सालेहीन व आ़बिदीन में शुमार करते थे 428हिजरी में शहरे बग़दाद के अन्दर आप की वफ़ात हुई पहले अपने मकान ही में दफ़न किए गए फिर कुछ दिनों के बअ़्द आप के जिस्मे मुबारक को क़ब्र से निकाल कर शारेअ़े मन्सूर में अबू बक्र ख़ार ज़मी की क़ब्र के पहलू में दफ़न किया गया (तब्सरतुददराया वग़ैरा)

148–हज़रत कसीर इब्ने उ़बैद (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

इमाम अबुल हसन कसीर इब्ने उ़बैद ह़म्सी का लक़ब हिज़ा (जूते की तिजारत करने वाला)है यह वकीअ़ इब्ने वलीद व सुफ़यान इब्ने अ़ैनीयह व वकीअ़् इब्ने अलजराज वग़ैरा नामवर मुहद्दिसीन के अरशद तलामिज़ा में से हैं और उन के इल्मे व फ़ज़्ल का अन्दाज़ा लगाने के लिए यही काफ़ी है कि इमाम अबूदाऊद व इमाम निसाई व इमाम इब्ने माजा व अबु ज़ुरआ वग़ैरा मुहद्दिसीने किराम ने उन की दर्स गाह में हाज़िरी देकर इल्मे ह़दीस हासिल किया यह निहायत सिक़ाह व सालेह मुहद्दिस और इबादत व रियाज़त के एतिबार से ख़ुदा रसीदा

आबिद व साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे

साठ बरस तक मुसल्सल ह़म्स की जामेअ् मस्जिद के इमाम व ख़तीब रहे मगर कभी सज्दा सहव की ह़ाजत नहीं पड़ी लोगों ने इस बारे में दरयाफ़्त किया तो आप ने जवाब दिया कि मैं जब मस्जिद के फाटक में क़दम रखता हूँ तो ग़ैरुल्लाह का ख़्याल अपने दिल से निकाल कर मस्जिद में दाख़िल होता हूँ 250 हिजरी में आप का इन्तिक़ाल हुआ (तह्ज़ीबुत्तहज़ीब)

149—ह़ज़रत कर्ख़ी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन का नाम व नसब उ़बैद इब्ने हुसैन इब्ने दल्लाल है और कुन्नीयत अबुल ह़सन है कि कर्ख़ी बग़दाद के क़रीब में एक गाँव है इस की त़रफ़ निस्बत होने से कर्ख़ी कहे जाते हैं ।

यह इल्मे फ़िक़ह में अबू सईद बरदई के शागिर्द हैं जो इमाम अबूह़नीफ़ा के पोते इस्माईल बिन ह़म्माद के शागिर्द थे और उन के शागिर्दों में अबुबक्र राज़ी व अली तनुख़ी व अबूअ़ली शाशी व अबू अ़ब्दुल्लाह दामग़ानी वग़ैरा बहुत मशहूर हैं।

यह फ़ुक़हाऐ हन्फ़िया में इमाम का दर्ज रखते हैं और अबू ह़ाज़िम व अबू सईद बरदई के बअ़्द यह रईसुल ह़न्फ़ीया थे उनहोंने जामिअ् सग़ीर व जामेअ् कबीर की शरह़ भी तह़रीर फ़रमाई है।

यह बहुत ही पाकदामन क़नाअ़त पसन्द और मुतवक्किल थे और सौम व सलात की कसरत व नफ़्ली इबादत में भी मशहूर व मअ़रूफ़ थे। आख़िरी उ़म्र में उन को फ़ालिज की बीमारी होगई तो उन के शागिर्दों ने अमीर सैफ़ुद्दौला इब्ने ह़म्दान के पास दरख़्वास्त भेजी कि इमाम कर्ख़ी के इलाज के लिए शाही ख़ज़ाने से कुछ रक़म अ़ता की जाये जब आप को पता चला तो आप बिस्तरे बीमारी पर रो रो कर दुआ करने लगे कि या अल्लाह! जिस त़रह़ तूने अब तक मुझे शाही ख़ज़ाने की रक़म से बचाया आख़िरी वक़्त में भी ऐसी रक़म से मेरे दामन को दाग़दार होने से बचाले अमीर सैफ़ुद्दौला ने दरख़्वास्त पाते

ही दस हज़ार दिर हम फ़ौरन भेजा मगर यह रक़म पहुँचने से पहले ही आप की वफ़ात होगई 260हिजरी में आप की विलादत हुई और 340 हिजरी में ख़ास शबे बराअ्त की मुक़द्दस रात में आप ने वफ़ात पाई।

(तब्सारतुद्दराया)

150—हज़रत लैस इब्ने सअ्द(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

फ़क़ीहे मिस्र अबुलहारिस लैस इब्ने सअ्द इब्ने अब्दुर्रहमान फ़हमी की जलालते शान और इमामत व बुज़ुर्गी के अहवाल बे शुमार हैं उन की अज़मत के लिए दो बुज़ुर्ग इमामों यानी इमाम शाफ़िई व इमाम यहया इब्ने बुकैर की यही शहादत काफ़ी है कि लैस इब्ने सअ्द इमाम मालिक से ज़्यादा फ़क़ीह थे हालाँके इमाम शाफ़िई व इमाम यहया इब्ने बुकैर दोनों इमाम मालिक के शागिर्द हैं और यह दोनों इमाम मालिक के इल्म व इत्क़ान व बुज़ुर्गी व जलालते शान से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं।

लैस इब्ने सअ्द 94 हिजरी में मिस्र की तराई के एक गाँव में पैदा हुए उन के आबा व अजदाद फ़ारसीयुन्नस्ल असफ़हान के रहने वाले थे यह बचपन ही से निहायत ज़हीन व मेहनती और इल्म के शौक़ीन थे यह इल्मे हदीस में इमाम जुहरी इमाम नाफ़िअ् व यहया इब्ने सईद अन्सारी व हिश्शाम व अता इब्ने अबी रबाह वग़ैरा सैकड़ों शुयूख़े हदीस के शागिर्दे रशीद हैं और उन की दर्स गाहे इल्म से फ़ैज़े तअ्लीम पाने वाले तलामिज़ा हज़ारों मुहद्दिसीन हैं जो अपने दौर में इमामत का दर्जा रखते थे ।

इब्ने सअ्द का बयान है कि लैस इब्ने सअ्द अपने ज़माने के सब से बड़े मुफ़ती और कसीरुलहदीस मुहद्दिस थे और सख़ावत व जवाँमरदी में तो यह बे मिसाल थे इमाम अहमद इब्ने हमबल अललएलान फ़रमाते थे कि इन मिस्री मुहद्दिसीन में कोई भी लैस इब्ने सअ्द से बढ़ कर सहीह हदीसों का बयान करने वाला नहीं हुआ यहया इब्ने मुईन से पूछा गया कि सईद मक़बरी के शागिर्दों में लैस

इब्ने सअ्द ज़्यादा इल्मे वाले हैं या इब्ने अबी ज़िअ्ब ? तो यह्या इब्ने मुईन ने जवाब दिया कि दोनों ठीक हैं मगर लैस इब्ने सअ्द का मरतबा बहुत बलन्द है।

161हिजरी में यह बग़दाद आये तो ख़लीफ़ा–ए–बग़दाद मन्सूर अ्ब्बासी ने उन को मिस्र का गवर्नर बनाना चाहा मगर आप ने उस ओह्दे का बे परवाही से ठुकरा दिया ।

इब्ने अबी मरयम मुहद्दिस कहा करते थे कि मैंने खुदा के बन्दों में लैस इब्ने सअ्द से ज़्यादा अफ़ज़ल किसी को नहीं देखा और इल्म व अ़मल व ज़ुहद व तक़्वा व इ़बादत व सख़ावत ग़र्ज़ कोई भी ऐसी नेकी नहीं है जो लैस इब्ने सअ्द में मौजूद न हो।

आप त़ालिबे इल्मों की बहुत ज़्यादा माली इम्दाद फ़रमाते थे मन्सूर इब्ने अ़म्मार मुहद्दिस जब आप की मुलाक़ात के लिए आए तो आप ने उन की ख़िदमत में एक हज़ार दीनार नज़राना पेश फ़रमाया उसी त़रह़ जब इब्ने लहीआ़ मुहद्दिस का घर जल गया तो उन की भी एक हज़ार दीनार से इम्दाद फ़रमाई इमाम मालिक ने आप की ख़िदमत में ख़त लिखा कि मेरे बच्चों की शादी में कपड़ा रंगने के लिए कुछ अस्फ़र भेज दीजिए तो आप ने तीस ऊँटों पर लाद कर अस्फ़र मिस्र से मदीना मुनव्वरा भेज दिया अ़ब्दुल्लाह इब्ने सालेह़ बयान करते हैं कि मैं बीस बरस तक लैस इब्ने सअ्द की ख़िदमत में रहा वह दिन या रात का खाना उस वक़्त तक नहीं खाते थे जब तक त़लबा व उ़लमा की एक जमाअ़त आप के दस्तर ख़्वान पर न बैठ जाए यह भी मन्कुल है कि आप रोज़ाना तीन सौ साठ मिस्कीनों को ख़ाना ख़िलाते थे आप की जाइदादों की अमदनी अस्सी हज़ार दीनार सालाना थी मगर उन्ही सख़ावतों की वजह से आप पर कभी ज़कात फ़र्ज़ नही हुई शअ्बान 175 हिजरी में यह सईद रूह आ़लमे बाला को रवाना हुई (तहज़ीबुत्तहज़ीब व नोवी व इकमाल)

151–हज़रत मुहम्मद इब्ने हन्फ़ीया (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप का नाम मुहम्मद इब्ने अमीरुलमोमेनीन हज़रत अली है और आप की कुन्नीयत अबुलक़ासिम है बअ्ज़ों ने आप की वालिदा का नाम ख़ौला बिन्त जअ्फ़रुलहन्फ़िया लिखा है और बअ्ज़ का क़ौल है कि आप की वालिदा जंगे यमामा के क़ैदीयों में से थीं और बनू हनीफ़ा की बान्दी थीं इस लिए हन्फ़िया कहलाती हैं।

आप इल्मे हदीस में अपने वालिद बुज़ुर्गवार हज़रत अमीरुलमोमेनीन इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु तआला अन्हु व दीगर सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम के शागिर्द हैं और आप के तलामिजा में खुद आप के फ़र्ज़न्द इबराहीम इब्ने मुहम्मद बहुत बलन्द मरतबा मुहद्दिस हुए हैं ।

उमवी बादशाह अब्दुलमलिक इब्ने मरवान को बादशाहे रोम ने ख़त लिखा और धमकी दी कि तुम ख़िराज दो वरना मैं एक लाख फ़ौज खुश्की के रास्ते और एक लाख फ़ौज दरया के रास्ते भेज़ कर तुम्हारी सल्तन्त की ईंट से ईंट बजा दुँगा अब्दुल्लमालिक इब्ने मरवान हैरान था कि मैं उस ख़त का क्या जवाब दूँ आख़िर उस ने अपने गवर्नर हज्जाज इब्ने यूसुफ़ सक़्फ़ी को ख़त लिखा कि तुम ऐसा ही धम्कीयों से भरा हुआ एक ख़त मुहम्मद इब्ने हन्फ़ीया को लिखो कि वह मेरी बैत कर लें और वह इस ख़त का जो जवाब तहरीर करें उस को मेरे पास भेज दो चुनाँचे हिज़ाज इब्ने यूसूफ़ ने मुहम्मद इब्ने हन्फ़िया को ख़त लिखा कि तुम अमीरुल मोमेनीन अब्दुल्लमलिक इब्ने मरवान की बैत कर लो वरना मैं एक लाख फ़ौज खुश्की के रास्ते और एक लाख फ़ौज दरिया के रास्ते भेज कर मदीना मुनव्वरा की ईंठ से ईंट बजा दूँगा और तुम्हें और तुम्हारे अहल व अयाल को ग़ारत कर दूँगा मुहम्मद इब्ने हन्फ़िया ने उस ख़त के जवाब में तहरीर फ़रमाया कि ऐ हज्जाज! अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ पर रोज़ाना तीन सौ नव्वे मरतबा नज़रे रहमत फ़रमाता है और मुझे यही उम्मीद है कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की एक नज़रे रहमत मुझे तेरी इतनी बड़ी

फ़ौज से बचाने के लिए काफ़ी है ! हज्जाज ने मुहम्मद इब्ने हनफ़ीया का ख़त अ़ब्दुलमलिक इब्ने मरवान के पास भेज दिया और अ़ब्दुलमलिक इब्ने मरवान ने यही जवाब बादशाहे रोम को लिखा तो बादशाहे रोम ने लिखा ऐ अ़ब्दुल मलिक यह तेरा जवाब नहीं है और न तू कभी ऐसा जवाब लिख सकता था खुदा की क़सम यह जवाब तो किसी अहले बैते नुबुव्वत ही का हो सकता है।

मुहम्मद इब्ने हन्फ़िया की शुजाअ़त व सख़ावत और इबादत व करामत के अ़हवाल इस क़दर कसीर हैं कि उन को लिखने के लिए एक दफ़तर दरकार है आप ने 81हिजरी में वफ़ात पाई और मदीना मुनव्वरा के क़ब्रस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफून हुए पैंसठ बरस की उम्र शरीफ़ हुई (इकमाल व तब्क़ात शेअ़रानी वग़ैरा)

152–हज़रत मुतरिफ़ इब्ने अ़ब्दुल्लाह शख़ीर (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप क़बीला बनी आ़मिर के ख़ानदान से हैं और बस़रा आप का वत़न है इस लिए आ़मिरी व बस़री कहलाते हैं बहुत ही बुज़ुर्ग ताबिई हैं और ह़दीस में हज़रत अबूज़र गफ़्फ़ारी व उ़स्मान इब्ने अबिलआ़स वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हुम के शागिर्द हैं और आप के शागिर्दों की फ़िह्‌रिस्त भी बहुत त़वील है जिस में सैकड़ों औलिया –ए–मुहद्दिसीन हैं!

स़ब्र व शुक्र और तस्लीम व रज़ा में अपने ज़माने के बे मिसाल आ़लिमे रब्बानी थे आप के फ़र्ज़न्द का इन्तिक़ाल हो गया तो खूब दाढ़ी में तेल कंघी कर के और बेहतरीन पोशाक पहन कर बैठे लोगों ने तअ़ज्जुब का इज़्हार किया तो आप ने फरमाया क्या तुम लोग चाहते हो कि उस मुसीबत पर ग़मग़ीन हो कर घर में बैठ रहूँ ! मैं अपने रब्बे करीम पर राज़ी हूँ और उस के हुक्म पर साबिर व शाकिर हूँ आप बहुत ही साहिबे करामत थे जब एकेले अपने मकान में बैठते तो मकान की एक एक ईंट आप के साथ तस्बीह़ पढ़ती थी एक मरतबा किसी ज़ालिम ने आप को बहुत ज़्यादा सताया आप बराबर स़ब्र करते रहे मगर जब वह अपने ज़ुल्म से बाज़ नहीं आया तो आप

ने बद्दुआ फ़रमाई कि इलाही उस को फ़ौरन ही मौत दे दे चुनाँचे वह ज़ालिम फ़ौरन ही मर गया लोग आप को पकड़ कर बसरा के गवर्नर ज़ियाद के दरबार में ले गऐ और आप पर क़त्ल का मुकद्दमा दाइर कर दिया गवर्नर ने पूछा कि क्या उन्हों ने मरने वाले शख़्स को हाथ लगाया था ? लोगों ने कहा कि नहीं ! गवर्नर ने कहा कि फ़िर उन पर क्या इल्ज़ाम है ? यह तो एक अल्लाह वाले की बद्दुआ है जो उस को लग गई है और उस की तक्दीर में यूँ ही मरना लिखा था गवर्नर ने आप को बाइज़्ज़त बरी कर के रिहा कर दिया।

आप की यह भी एक बड़ी ख़ास करामत थी कि आप क़ब्रस्तान के मुर्दों से गुफ़्तगु और सवाल व जवाब फ़रमाते थे चुनाँचे आप फ़रमाते थे कि मैं क़ब्रस्तान में गया तो मैं ने सब क़ब्र वालों को बैठा हुआ देखा लेकिन जब मैं ने उन लोगों को सलाम किया तो किसी ने भी सलाम का जवाब नहीं दिया मैंने उस की वजह दरयाफ़्त की तो क़ब्र वालों ने जवाब दिया कि सलाम का जवाब देना नेकी व इबादत का काम है और उस की ताक़त व इजाज़त नहीं है कि हम कोई इबादत कर सकें अमल का घर तो दुनिया है और अब दारे आख़िरत के रहने वाले हो चुके हैं !

आप की वफ़ात के बारे में साहिबे इकमाल ने इतना ही लिखा है कि 87 हिजरी के बअ्द आप का विसाल हुआ (इकमाल व तब्क़ात शेरानी)

153–हज़रत मुहम्मद इब्ने सीरीन (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबूबक्र मुहम्मद इब्ने सीरीन हदीस में हज़रत अबूहुरैरा व इब्ने उमर व अनस इब्ने मालिक वग़ैरा सहाबी रदियल्लाहु तआला अन्हुम की जमाअ़ते कसीरा के शागिर्दे जलील हैं और किबार मुहद्दिसीन की एक बहुत बड़ी जमाअ़त ने आप से हदीस का दर्स लिया।

आप बहुत ही जलीलुश्शान शैख़ुलमुहद्दिसीन व साहिबे फ़तावा थे और ख़्वाब की तअ्बीर में तो इमामुलवक़्त थे मोरिके अ़जली कहते हैं कि मैंने तक़्वा में अअ्ला दरजे का फ़क़ीह और फ़तावा में अअ्ला दरजे का मुत्तक़ी मुहम्मद इब्ने सीरीन से बढ़ कर किसी को नहीं

देखा ख़लफ़ इब्ने हश्शाम का क़ौल है कि मुहम्मद इब्ने सीरीन की सूरत व सीरत सरापा करामत थी आप का चेहरा देखते ही खुदा याद आ जाता था अशअ़स से मन्कूल है कि जब मुहम्मद इब्ने सीरीन से किसी ह़लाल व ह़राम के बारे में फ़तवा पूछा जाता था तो उन के चेहरे का रंग बदल जाता और उन पर कुछ अ़जीब कैफ़ियत पैदा हो जाती कि गोया आप उस वक़्त किसी दूसरे आ़लम में पहुँच गये हैं बिल्कुल खा़ैफ़ व खशीयते इलाही का पैकर बन कर फ़तवा देते थे।

ख़लीफ़ा बग़दाद मेहदी अ़ब्बास का बयान है कि हम लोग मुहम्मद इब्ने सीरीन की ख़िदमत में हा़ज़री देते तो वह हम लोगों से बहुत ज़्यादा दीनी गुफ़्तगु फ़रमाते और हम लोग भी उन से बहुत ज़्यादा सवाल व जवाब करते मगर बात करते करते अगर मज्लिस में मौत या क़ियामत का ज़िक्र छेड़ा जाता तो बस आप बिल्कुल ही बे काबू हो जाते चेहरे का रंग एक दम ज़र्द पड़ जाता और अचानक आप में ऐसा तग़य्युर व इन्क़िलाब पैदा हो जाता कि हमें पहचानना मुश्किल हो जाता कि आप वही मुहम्मद इब्ने सीरीन हैं जो एक मिनट पहले थे या कोई दूसरे शख़्स हैं ।

एक मरतबा आप क़र्ज़ दार हो गए और क़र्ज़ ख्वाह ने आप को जेल ख़ाने में क़ैद करादिया जेल का दारोग़ा आप की जलालते शान और बाकरामत चेहरा देख कर हैरान व मरऊ़ब हो गया उस ने निहायत अदब से अ़र्ज़ किया कि आप रात को अपने मकान पर चले जायें और दिन को जेल ख़ाने में चले आयें आप ने फ़रमाया कि नहीं हर गिज़ नहीं मैं कभी अमानत में ख़ियानत का मददगार नहीं बन सकता।

आप के क़र्ज़दार होने और जेल ख़ाने में जाने का वाक़िआ बअ़ज़ लोगों ने यह बताया है कि एक मरतबा आप ने हज़ारों रुपये का रोग़ने ज़ैतून ख़रीदा जब खरीदा हुआ रोग़ने ज़ैतून मकान पर आ गया तो उस में एक मरा हुआ चूहा निकला आप के तक़्वा ने यह गवारा न

किया कि यह नजिस तेल फ़रोख़्त किया जाये चुनाँचे आप ने तमाम तेल फेंक दिया जिस की वजह से तिजारत में हज़ारों रुपये का नुक़सान हो गया और आप क़र्ज़ दार हो गये यहाँ तक कि जेल ख़ाने में क़ैद किए गए।

जेल ख़ाने से रिहा होने के बअ़्द आप ने फ़रमाया कि मैं ने एक क़र्ज़ दार मुसलमान को आर दिलाया था तो कुद्रत की तरफ़ से मुझे उस की सज़ा यह दी गई कि मैं खुद क़र्ज़ दार हो गया और जेल ख़ाने गया।

तक़रीबन अस्सी बरस की उम्र पा कर 110 हिजरी में विसा फ़रमाया (तब्क़ाते शेअ़्रानी व तहज़ीबुत्तहज़ीब वग़ैरा)

154–हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप का नाम व नसब मुहम्मद इब्ने अ़ली इब्ने हुसैन इब्ने अ़ली इब्ने तालिब और कुन्नीयत अबू जअ़्फ़र हैं लेकिन आप मुहम्मद बाक़र के लक़ब से ज़्यादा मशहूर हैं आप को निहायत वसीउ़ल इल्म व कसीरुल हदीस होने की वजह से बाक़िरुलउ़लूम भी कहा जाता है आप हदीस में अपने वालिद माजिद अ़ली इब्ने हुसैन व इब्ने अ़ब्बास व जाबिर इब्ने अ़ब्दुल्लाह व अबू सईद खुदरी व बी बी आइशा व बी बी उम्मे सल्मा वग़ैरा सहाबा रदि़यल्लाहु तआला अ़न्हुम के मख़सूस व महबूब तलामिज़ा में से हैं और आप के शागिर्दों में आप के फ़र्ज़न्द इमाम जअ़्फ़र सादिक़ व इमाम ज़हरी व इमाम औज़ाई वग़ैरा निहायत जलीलुलक़दर व नामवर मुहद्दिसीन हैं।

इमाम निसाई ने आप को फ़ुक़्हा ए ताबिईन व सिक़ा मुहद्दिसीन की फ़िहरिस्त में शुमार किया है और आप की इल्मी जलालत व बसीरत पर किबार मुहद्दिसीन ने शहादत दी है।

आप को अमीरुल मोमेनीन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रदि़यल्लाहु तआला अ़न्हु से वालिहाना महब्बत थी आप फ़रमाया करते थे कि जो अबू बक्र को सिद्दीक़ नहीं मानेगा अल्लाह तआला उस के किसी क़ौल को दुनिया व आख़िरत में सच्चा नहीं फ़रमायेगा आप को ख़बर

मिली कुछ इराक़ी लोग ह़ज़रत अबूबक्र व हज़रत उ़मर रदियल्लाह तआ़ला अ़न्हुमा से बुग्ज़ रखते हैं और अहले बैत की मह़ब्बत का दअ़्वा करते हैं तो आपने फ़रमाया कि मैं लोगों से बरी व बेज़ार हूँ क्यों कि मैंने अपने अहले बैत में से हर शख़्स को ह़ज़रत अबू बकर व ह़ज़रत उ़मर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मह़ब्बत करते हुए पाया है।

आप यह भी इरशाद फ़रमाते थे कि पेट और शर्म गाह की पाकदामनी से बढ़ कर कोई इबादत नहीं है आप को उम्मते रसूल के फ़ुक़रा व मसाकीन से बड़ी मह़ब्बत थी और अपने दरबार में उन लोगों को इतना कु़र्ब अ़ता फ़रमाते थे कि उमरा को रश्क आता था।

आप बड़े आ़बिद व ज़ाहिद और इन्तिहाई मुस्तजाबुद्दअ़्वात (मक़बूलियत दुआ़ वाले)थे और उ़लमा से शरीअ़त व उर्फ़ाए त़रीक़त दोनों गिरोह का इत्तिफ़ाक़ है कि आप औलिया ए मुह़द्दिसीन व आरेफ़ीन में से निहायत बाबरकत व सरापा करामत बुज़ुर्ग हैं।

ह़दीस की जिस सनद में आप का और आप के फ़रज़न्द और आप के वालिद व जद बुज़ुर्गवार का ज़िकर है यअ़्नी।

جَعْفَرُنَالصَّادِقُ عَنْ اَبِيْهِ مُحَمَّدُ الْبَاقِرِ عَنْ اَبِيْهِ عَلِىْ بِنُ الْحُسَيْنِ عَنْ اَبِيْهِ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ اَبِيْهِ عَلِىْ بْنِ اَبِىْ طَالِبْ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ۔

मुह़द्दिसीन का इस सनद के बारे में यह क़ौल है अगर यह सनद किसी मजनून पर पढ़ दी जाये तो वह शिफ़ायाब हो कर साहिबे अ़क़्ल हो जाए।

आप 56हिजरी में पैदा हुए और 118 हिजरी में वफ़ात पाई और मदीना मुनव्वरा में जन्नतुलबक़ीअ़ के अन्दर ह़ज़रत इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन व ह़ज़रत इमाम जअ़्फ़र रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा की दोनों कबरों के दरमियान में आप की क़ब्रे मुबारक आज तक ज़ियारत गाहे ख़ास व आ़म हैं (तब्क़ाते शेअ़रानी व तहज़ीबुत्तहज़ीब वग़ैरा)

155—हज़रत मुहम्मद इब्ने मुन्कदिर तैमी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

दौरे ताबिईन के निहायत बावक़ार व बलन्द मरतबा मुहद्दिस व साहिबे इबादत व बाकरामत बुज़ुर्ग हैं।

हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह व अनस इब्ने मालिक व अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम से अहादीस की रिवायत की है और आप के शागिर्दों में इमाम मालिक व सुफ़्यान सौरी बहुत मशहूर हैं आप इल्म व अमल ज़ुहद व तक़वा, सिद्क़, इस्तिक़ामत इबादत तमाम दौलतों के धनी थे सुफ़्यान इब्ने ऐनीया का क़ौल है कि आप की ज़ात सिद्क़, व अमानत की कान और आप का मकान सालेहीन का मलजा व मावा था इब्ने हब्बान ने आप को मुहद्दिसीन का सरदार और वाक़दी ने आप को बहुत बड़ा परहेज़गार व इबादत गुज़ार बताया।

आप हमेशा छोटे छोटे बच्चों को हमराह ले कर हज के लिए जाते थे और फ़रमाया करते थे कि मैं इन बे गुनाहों को अपने रब के हुज़ूर में इस लिए पेश करता हूँ ताकि वह जब उन पर नज़रे रहमत फ़रमाए तो उन के साथ मैं भी रब्बे करीम का मन्ज़ूरे नज़र होजाऊँ 123हिजरी में आप का विसाल हुआ और मदीना मुनव्वरा के क़ब्रस्तान जन्नतुलबक़ीअ् में मदफून हुए। (इकमाल व तब्क़ात व तहज़ीबुत्तहज़ीब)

156—हज़रत मन्सूर इब्ने मोअ्तमर कूफ़ी (रहमतुल्लाहितआलाअलैहि)

आप अगरचे तब्अ़े ताबिईन में से हैं मगर ताबिईन में से बड़े बड़े बाकमाल अहले इल्म आप की जलालते शान के क़ाइल हैं इमाम अहमद इब्ने हम्बल व अब्दुर्रहमान इब्ने मेहदी व अली इब्ने मदीनी वग़ैरा ने आप को कूफ़े का सब से सिक़ा व अअ्ला मुहद्दिस तस्लीम किया बल्कि इमाम अअ्मश से भी बढ़ कर हिफ़्ज़ व इत्क़ान वाला उस्तादे हदीस लिखा सुफ़यान सौरी का बयान है कि मैं इमाम अअ्मश के सामने जब कूफ़ा के किसी भी मुहद्दिस की रिवायत बयान करता तो वह रद कर देते थे मगर मन्सूर इब्ने मोअ्तमर का नाम लेता तो वह बिल्कुल ख़ामोश हो जाते थे।

ज़ुहद व तक़वा में भी आप यकताए ज़माना थे कूफ़े के गवर्नर ने आप को क़ाज़ी बनाना चाहा तो आप ने साफ़ इन्कार कर दिया गवर्नर ने ख़फ़ा हो कर आप को क़ैद कर दिया और कहा कि जब तक आप क़ाज़ी का ओहदा क़बूल नहीं करेंगे मैं आप को क़ैद से रिहा नहीं करुँगा चुनाँचे आप एक माह क़ैद में रहे मगर जब कूफ़े के तमाम आलिमों और बुज़ुर्गों ने गवर्नर को समझाया कि क़ैद तो क्या चीज़ है ? अगर तुम उस के बदन के गोश्त का क़ीमा कर डालोगे जब भी यह क़ाज़ी का ओहदा क़बूल नहीं करेंगे तो गवर्नर ने आप को क़ैद से रिहा करदिया इबादत का यह हाल था कि सुफ़यान सौरी का क़ौल है कि अगर तुम मन्सूर इब्ने मोअ्तमर को नमाज़ पढ़ते हुए देखते तो यह समझते कि बस अभी उन का इन्तिक़ाल हो जायेगा दाढ़ी सीने से लगी हूई इस्तिग़राक़ के आलम में खुज़ूअ़ व खुशूअ़ का पैकर बने हुए रात भर नमाज़ में मशगूल रहते जब हुज़ूर मन्सूर इब्ने मोअ्तमर का इन्तिक़ाल हो गया तो उन के पड़ोसी की एक छोटी लड़की ने अपने बाप से पूछा कि ऐ बाप! हमारे पड़ोसी की छत पर जो एक सुतून था वह कब गिर गया ? बच्ची के सवाल की वजह यह थी कि मन्स़ूर इब्ने मोअ्तमर दिन में कभी छत पर नहीं चढ़ते थे सिर्फ़ रात में छत पर खड़े हो कर सारी रात नमाज़ पढ़ते थे तो वह बच्ची यह समझती थी कि यह कोई सुतून है!

आप रात में इस क़दर रोया करते थे कि उन के घर वालों को उन पर रह़म आने लगता था और शब बेदारी व गिर्याज़ारी की वजह से आप की आँखों में सुर्ख़ी व आशोबे चश्म की सी कैफ़ियत रहने लगी थी मगर आप अपनी शब बेदारी को छुपाने के लिए सुबह़ को आँखों में सुर्मा लगा कर और चेहरे पर तेल की मालिश कर के अपनी दर्स गाहे ह़दीस में उस शान से बैठते कि गोया सारी रात नीन्द भर सो चुके हैं।

आपकी बाकरामत इबादत का अन्दाज़ा करने के लिए यही काफ़ी है कि आप साठ बरस तक मुसलसल साइमुद्दहर व क़ाइमुल्लैल रहे

यअ्नी साठ बरस तक रोज़ाना दिन में रोज़ा रखा और हर रात नफ़्ल नमाज़ों में गुज़ारी अल्लाहु अकबर।

यह इश्के इलाही के फन्दे कहाँ हैं ?
यह अल्लाह के पाक बन्दे कहाँ हैं?

(तबकाते शेअ्रानी व नोवी)

157–हज़रत मुहम्मद इब्ने अ़ब्दुर्रहमान इब्ने मुग़ीरा (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नीयत अबुल महारिस और वतन मदीना मुनव्वरा है यह इब्ने अबी ज़ेइब के लक़ब के साथ ज़्यादा मशहूर हैं उन के उस्तादों और शागिर्दों की तअ्दाद बहुत ज़्यादा है और यह अपने दौर के बहुत कसीर अहादीस वाले सादिक़ व मोअ्तमद थे इमाम अहमद इब्ने हमबल उन को सईद इब्ने मुसैयब का हम पल्ला बताते थे और इब्ने हब्बान ने मदीना मुनव्वरा में फ़ुक़हा और आबिदों में उन का शुमार किया है इमाम शाफ़िई फ़रमाते थे कि मुझ को दो मुहद्दिदसों से मुलाक़ात न होने का तमाम उ़म्र अफ़सोस रहेगा एक इब्ने अबी ज़िइब दूसरे लैस इब्ने सअ्द वाक़दी का क़ौल है कि इब्ने अबी ज़िइब अअ्ला दरजे के मुत्तक़ी बे हद शरीफ़ और इन्तिहाई साहिबे अख़लाक़ बुज़ुर्ग थे उन की इबादत का यह हाल था कि रात में एक मिनट के लिए भी नहीं सोते थे और पूरी रात नमाज़ नवाफ़िल पढ़ते रहते थे इस के साथ साथ उ़म्र भर सौमे दाऊदी के पाबन्द रहे यअ्नी एक दिन का नाग़ा दे कर उ़म्र भर रोज़ा रखते रहे।

यह उ़मरा और बादशाहों को नसीहत करने में इमाम मालिक से भी ज़्यादा जरी थे ख़लीफ़ा बग़दाद मन्सूर अ़ब्बासी के दरबार में बुलाये गए तो ज़रा भी मरऊ़ब नहीं हुए और बे धड़क बादशाह के मुँह पर कह दिया कि ऐ मन्सूर मैं तेरे दरवाजे पर हर त़रफ़ ज़ुल्म ही ज़ुल्म फ़ैला हुआ देखता हूँ और उन की इल्मी जलालत व हक़्क़ानी हैबत का मन्सूर के दिल पर ऐसा दबदबा छा गया कि वह आप के सामने ज़ुबान न खोल सका–ख़लीफ़ा मेहदी का सफ़रे हज के दौरान मस्जिद नबवी में वुरूद हुआ ख़लीफ़ा के दाख़िले मस्जिद होते ही तमाम

हाज़िरीन खड़े हो गऐ मगर इब्ने अबी ज़िइब तन्हा बैठे रहे मुसैय
इब्ने ज़ुबैर चोबदार ने कहा के खड़े हो जाओ यह अमीरुलमोमेनीन
इब्ने अबी ज़िइब ने तड़प कर फ़रमाया कि0انما يقوم الناس لرب العلمين
आदमी सिर्फ़ अपने परवरदिगार की तअ्ज़ीम के लिए खड़े होते हैं !
ख़लीफ़ा उस जवाब की जलालत से काँप गया और चोबदार से कहा
कि उन को मत छेड़ो उन के एक जुम्ले से मेरे सर के तमाम बाल
खड़े हो गऐ (तारीख़े बग़दाद)

एक मरतबा इब्ने अबी ज़िइब अ़ब्दुस्समद इब्ने अ़ली के पास पहुँचे दरम्याने गुफ़्तगू अ़ब्दुस्समद ने कह दिया कि ऐ इब्ने अबी ज़िइब मेरा ख़याल है कि आप के अअ्माल में कुछ रियाकरी और दिखावे की बू आती है तो आप ने फ़ौरन ज़मीन से एक तिन्का उठाया और फ़रमाया कि ऐ अ़ब्दुस्समद मैं किस को दिखाने के लिए अअ्माल करूँगा? खुदा की क़सम तमाम रुऐ ज़मीन के दुनियादार इन्सान मेरी नज़र मैं उस तिन्के से भी ज़्यादा ज़लील हैं 158हिजरी या 159 हिजरी में आप की वफ़ात हुई। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

158–हज़रत मुहम्मद ताऱिक़ मक्की (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

यह ताबिई मुहद्दिस हैं और ह़दीस में अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर सहाबी रदियल्लाहु तआला अ़न्हुमा के शागिर्द हैं और ताऊस व मुजाहिद वगै़रा दौरे ताबिईन के मुहद्दिसीन से भी उन्हों ने इल्मी इस्तिफ़ादा किया है और लैस इब्ने सअ्द व सुफ़यान सौरी व सुफ़यान इब्ने ऐ़नीया वग़ैरा के उस्तादे हदीस हैं इमाम निसाई व इब्ने हब्बान वग़ैरा ने उन को सिक़ा व सालेह़ मुहद्दिस और अपने ज़माने का मुमताज़ आ़बिद तह़रीर किया है।

यह बैतुल्लाह शरीफ़ के मुजाविर बन गए थे और रोज़ाना बिला नाग़ा सत्तर तवाफ़ करते थे कअ्बा शरीफ़ के सत्तर तवाफ़ करने में तक़रीबन दस मील रास्ते के बराबर चलना पड़ता हैं (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

159—हज़रत ईमाम मालिक (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप की कुन्नीयत अबू अ़ब्दुल्लाह और नाम व नसब मालिक इब्ने अनस इब्ने मालिक इब्ने अबी आ़मिर अस्बही और लकब "इमामे दारूल हिजरत" और वतन मदीना मुनव्वरा है 93हिजरी में पैदा हुए और 189हिजरी में वफ़ात पाई और मदीना मुनव्वरा के क़ब्रस्तान जन्नतुल बक़ीअ् में मदफून हुए।

किसी बुज़ुर्ग ने आप की पैदाइश व वफ़ावत की तारीख़ को इस क़तआ़ में नज़्म किया है ।

فَخْرُ الاَئِمَّةِ مالِکُ　　نعم الاِمَامِ السَّالِکِ
مَوْلِدُهٗ نَجْمُ هُدًى　　وَفَاتُهٗ فَازَ مَالِکُ
٣٩　　١٧٩

लफ़ज़े "नजम" से तारीख़े पैदाइश और "फ़ाज़ मालिक" से तारीख़े विसाल ज़ाहिर होती है नौ सौ मशाइख़ से इल्मे हदीस पढ़ा जिन में से तीन सो ताबिईन थे और आप के बे शुमार शागिर्दों में से हज़रत इमाम शाफ़िई जैसे इमामुलहदीस व साहिबे मज़हब मुज्तहिद भी हैं जो इल्म व फ़ज़्ल में आप ही के हम पल्ला हैं उन के इलावा मुईन इब्ने ईसा व अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुस्लिमा कअ़नबी व अ़ब्दुल्लाह इब्ने वहब वग़ैरा भी आप ही के शागिर्दों में हैं जो इमाम बुख़ारी इमाम मुस्लिम व इमाम अबूदाऊद व इमाम तिर्मिज़ी व इमाम अह़मद इब्ने ह़मबल वग़ैरा के असातज़ा व मशाईख़े ह़दीस हैं आप को इल्म तलब करने की ख्वाहिश बल्कि हिर्स बहुत ज़्यादा थी हाँलाकि ज़माना—ए—त़ालिबे इल्मी में मुफ़लिसी का यह आलम था कि मकान की छत तोड़ कर उस की कड़ियों का बेच कर किताबें वग़ैरा ख़रीदते मगर उस के बअ़द आप पर दौलत का दरवाज़ा खुल गया और कसरत से बड़ी बड़ी फुतूह़ात शुरूअ् होगई।

आप दर्से ह़दीस का बड़ा एहतेमाम फ़रमाते थे गुस्ल कर के बावज़ू बेहतरीन पोशाक पहन कर खुश्बू लगा कर एक चौकी पर निहायत इज्ज़ व इन्किसारी के साथ बैठते और जब तक ह़दीस का

दर्स रहता ऊद व लोबान की अँगीठी जलती रहती दर्से ह़दीस के दौरान कमाल अदब की वजह से पहलू नहीं बदलते थे बल्कि जिस हालत और नशिस्त के साथ अव्वल बैठते आख़िर तक उसी हैअत व हालत पर बैठे रहते एक मरतबा दर्से ह़दीस के दौरान आप के पैरहन में बिछ्छू घुस गया और उस ने चन्द मरतबा आप को डन्क मारा और आप के चेहेरे का रंग बदलता रहा मगर आप ने एहतेरामे दर्स की वजह से न सबक़ बन्द किया न पहलू बदला।

मदीनतुर्रसूल के एह्तेराम का यह आलम था कि तमाम उ़म्र मदीना मुनव्वरा में रहे मगर ज़माना बीमारी के सिवा कभी शहर के अन्दर क़ज़ाऐ ह़ाजत नहीं फ़रमाई बल्कि हमेशा ह़रम के बाहर जंगलों और मैदानों में रफ़अ़े ह़ाजत के लिए तशरीफ़ ले जाते बादशाहों ने तहाइफ़ में बेह्तरीन घोड़े आप को नज़्र किए मगर आप ह़रमे मदीना में कभी घोड़े पर सवार नहीं हुए और यही फ़रमाते रहे कि मुझे बड़ी शर्म आती है कि मैं उस
ज़मीन को अपने चौपाय के पाँव से किस त़रह़ रौन्द वाना गवारा करूँगा जिस ज़मीन के चप्पे चप्पे को हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की क़दम बोसी का फ़ख़्र व शरफ़ ह़ासिल हुआ है।

अबू अ़ब्दुल्लाह नामी एक बुज़ुर्ग से मन्क़ुल है कि मैं ख़्वाब में हुज़ूर अक़्दस अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ और मैंने देखा कि आप मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा हैं और आप के सामने मुश्क रखा है और आप मुठ्ठी भर भर कर इमाम मालिक को अ़ता फ़रमा रहे हैं और और इमाम मालिक तमाम ह़ाज़िरीन पर वह मुश्क छिड़कते हैं उस ख्वाब की तअ़बीर मेरे दिल में यही आई कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम की मुक़द्दस ह़दीसें बारगाहे नुबुव्वत से इमाम मालिक को अ़ता हुई और फिर आप के ज़रीए सारी उम्मत को यह ह़दीसें पहुँच रही हैं ।

हज़रत सुफ़्यान सौरी जिन की इल्मी जलालत व शोहरत मोह़ताजे तआ़रूफ़ नहीं एक दिन इमाम मालिक की मज्लिस में

तशरीफ़ लाये तो मज्लिस की अज़मत और अनवार व बरकात की कसरत को देख कर बे हद मुतास्सिर हुए और इमाम मालिक की शान में मदह का यह क़तआ
नज़्म फ़रमाया।

يَابَى الْجَوَابَ فَلَا يُرَاجِعُ هَيْبَةً وَالسَّائِلُوْنَ نَوَاكِس الْاَذْقَانِ

अगर वह (इमाम मालिक) जवाब न दें तो आप हैबत से दो बारह कोई सवाल न कर सके और सब साइल सर झुकाये बैठे रहे।

اَدبُ الْوَقَارُ وَعِزُّ سُلْطَانُ التُّقیٰ فَهُوَا لْمَطَاعُ وَلَيْسَ ذَا سُلْطَانِ

"वक़ार आप का अदब करता है और तक़्वा की बादशाही आप की इ़ज़्ज़त करती है सारी दुनिया आप की इताअ़त करती है हालाँकि आप कोई बादशाह नहीं हैं।

ख़लीफ़ा हारून रशीद आप की बेह़द तअ़्ज़ीम करता था मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुआ तो बहुत गिराँ क़द्र नज़राना आप की ख़िदमत में पेश किया और आप को बग़दाद ले जाने की इन्तिहाई कोशिश की मगर आप ने साफ़ इन्कार फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया के मुझे मदीनतुर्रसूल की जुदाई किसी क़ीमत पर भी गवारा नहीं हैं।

दर्से ह़दीस के बअ़द तिलावते क़ुर्आन मजीद आप का बेहतरीन शुग़ल था और इतनी बार कलामुल्लाह ख़त्म किया कि शुमार नहीं हो सका आप बहुत ही साह़िबे करामत भी थे मदीना मुनव्वरा में एक पारसा औ़रत का इन्तिक़ाल हुआ ग़ुस्ल देने वाली औ़रत ने अपने किसी दुश्मनी की वजह से उस पारसा व सालिह़ा औ़रत की शर्म गाह पर हाथ रख कर यह कहा कि यह फ़र्ज किस क़दर ज़िना कार थी फ़ौरन ही ग़ुस्ल देने वाली औ़रत का हाथ शर्मगाह से ऐसा चिमट गया कि हज़ारों कोशिशों के बावजूद हाथ शर्म गाह से जुदा नहीं हुआ तमाम उ़लमाऐ मदीना उस का सबब और तदबीर मअ़लूम करने से आ़जिज़ रहे लेकिन इमाम मालिक ने अपने कश्फ़ व करामत से मअ़लूम कर लिया और फ़रमाया कि इस ग़ुस्ल देने वाली औ़रत को ह़दे क़ज़्फ़ (वह सज़ा जो शरीअ़त ने ज़िना की तोहमत लगाने वालों

की मुकर्रर की है) लगाई जाऐ चुनाँचे आप के इरशाद के मुताबिक़ जब उस को अस्सी कोड़े लगाए गये तो खुद बखुद उस का हाथ शर्म गाह से जुदा हो गया और सब के दिलों में इमाम मालिक की इमामत व करामत का नूर जग मगाने लगा।

आप की तस्नीफ़ करदा किताबों में सब से ज़्यादा मशहूर किताब मुअत्ता इमाम मालिक है जिस को तक़रीबन एक हज़ार मुहद्दिसीन ने आप की जुबाने मुबारक से सुन कर तहरीर किया है यूँ तो मुअत्ता के सोलह नुस्ख़े पाये जाते हैं मगर सब से ज़्यादा मशहूर व राइज यहया इब्ने यह्या मसमदी उन्दुलसी का नुस्ख़ा है।

यही यह्या इब्ने यह्या बयान करते हैं कि इमाम मालिक की वफ़ात के वक़्त आख़िरी मुलाक़ात के लिए एक सौ तीस फुक़्हा व मुहद्दिसीन हाज़िर थे और सब इसी इन्तिज़ार में खड़े थे कि शायद इस आख़िरी वक़्त में इमाम की कोई नज़रे करम मुझ पर पड़ जाये और मेरी दुनिया व आख़िरत सुधर जाये इस हालत में इमाम मालिक ने आँखें खोली और यह्या इब्ने यह्या को मुख़ातब कर के फरमाया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَضْحَکَ وَ اَبْکٰی وَ اَمَاتَ وَ اَحْیٰی यअ्नी उस खुदा ए अज़्ज़ा व जल्ल के लिए हम्द है जिस ने हमें कभी खुशी दे कर हँसाया और कभी ग़म दिख़ला कर रूलाया हम उसी के हुक्म पर ज़िन्दा रहे और उसी के हुक्म पर जान कुर्बान करते हैं उस के बअ्द फ़रमाया कि अब मौत सर पर खड़ी है और खुदावन्द तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है लोगों ने अर्ज़ किया कि ऐ इमाम इस वक़्त आप का क्या हाल है? इरशाद फ़रमाया कि अल्हम्दु लिल्लाह मैं औलिया अल्लाह की सोहबत की वजह से बहुत खुश हूँ और मैं अहले इल्म ही को औलिया समझता हूँ याद रखो हज़राते अमबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के बअ्द अल्लाह तआला को उलमा से ज़्यादा अज़ीज़ कोई मख़लूक़ नहीं है उलमा अमबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के वारिस हैं और मैं बेहद मसरूर व खुश दिल हूँ कि मेरी तमाम उम्र इल्मे दीन की तहसील व तअ्लीम में बसर हो गई सुन लो

! मैं किसी मुसलमान को शरीअ़त का एक मसअला बता कर उस के अअ़्माल की इस्लाह कर देना या किसी आ़लिम से एक मसअ्ला पूछ कर अपने अअ़्माल की इस्लाह कर लेना एक सौ ह़ज नफ़्ल और एक सौ जिहाद से बेह्तर समझता हूँ उस के बअ़्द आप की आवाज़ धीमी पड़ गई और फ़िर चन्द मिनट के बअ़्द आप का विसाल हो गया

(इकमाल व तब्क़ात व बुस्तानुल मुह़द्दिसीन)

160–ह़ज़रत इमाम मुह़म्मद इब्ने ह़सन शेबानी (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप की कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह है 131हिजरी या 132हिजरी में आप की विलादत शहर वासित में हुई और कूफ़ा में परवरिश पाई आप ह़ज़रत इमाम अअ़्ज़म अबूह़नीफ़ा के बहुत ही ख़ासुलख़ास व मह़बूब शागिर्दे रशीद हैं और आप ही ने अपनी किताबों के ज़रीअ़े सब से ज़्यादा ह़न्फ़ी मज़हब की इशाअ़त फ़रमाई इसीलिए फ़ुक़हा–ए–ह़न्फ़िया की तारीख़ में आप का लक़ब मुहर्रिरुल मज़हब (मज़हब का लिखने वाला)है आप ने नौसौ से ज़्यादा किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई हैं जो सब इल्मे दीनीया से तअ़ल्लुक़ रखती हैं इमाम अबूह़नीफ़ा के इ़लावा दूसरे बहुत से मशाइख़ से भी आप ने इल्मे ह़दीस की तह़सील फ़रमाई जिन में मुसअ़र इब्ने कदाम व सुफ़यान सोरी व उ़मर इब्ने दीनार व मालिक इब्ने मुग़व्विल व इमाम मालिक व इमाम ओज़ाई व क़ाज़ी अबू यूसुफ़ वग़ैरा ख़ास़ तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

आप को त़लबे इ़ल्म का इन्तिहाई शौक़ था चुनाँचे खुद इरशाद फ़रमाते हैं कि मुझ को अपने वालिद की मीरास में से तीस ह़ज़ार दिरहम मिले थे उन में से पन्द्रह ह़ज़ार मैंने इ़ल्मे नहव व शेअ़्र, अदब व लुग़त वग़ैरह की तअ़्लीम व तह़सील पर ख़र्च किया और पन्द्रह ह़ज़ार ह़दीस व फ़िक़्ह की तकमील पर।

आप के तलामिज़ा इस क़दर बे शुमार हैं कि उन की तअ़्दाद का शुमार इन्तिहाई दुश्वार है जब आप कूफ़ा में मुअत्ता का दर्स देते थे तो आप के दर्स में इस कसरत से त़लबा व सामिईन आते थे कि कूफ़े की तमाम सड़कें और रास्ते बन्द हो जाते थे मगर आप के चन्द ख़ास़

ख़ास शागिर्दों की फ़िहरिस्त में हज़रत इमाम शाफ़िई व अबू हफ़्स कबीर व अबू सुलैमान मूसा इब्ने सुलैमान जोज़ जानी व हिश्शाम इब्ने उ़बैदुल्लाह राज़ी व अ़ली इब्ने मुस्लिम तोसी व ख़ल्फ़ इब्ने अय्यूब व अबू उ़बैद क़ासिम इब्ने सलाम वग़ैरा इन्तिहाई नुमायाँ व दर्ख़शाँ हैं ।

आप ने हज़रत इमाम शाफ़िई की वालिदा से निकाह फ़रमा लिया था और अपना सारा माल व असबाब और किताबें इमाम शाफ़िई को सौंप दिया था इमाम शाफ़िई खुद फ़रमाते हैं कि मैं एक ऊँट के बोझ के बराबर इमाम मुहम्मद की किताबें अपने साथ लाया और उन की किताबों से बराबर इ़ल्मी इस्तिफ़ादा करता रहा इमाम शाफ़ेई यह भी फ़रमाते थे कि इ़ल्मे फ़िक़ह में मुझ पर सब से बड़ा एहसान इमाम मुहम्मद का है । इमाम हरबी नाक़िल हैं कि मैंने इमाम अहमद बिन हमबल से दरयाफ़्त किया कि आप ऐसे ऐसे दक़ीक़ मसाइल कहाँ से बयान फ़रमाते हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि यह सब इमाम मुहम्मद की किताबों का फ़ैज़ है।

ख़लीफ़ा बग़दाद हारून रशीद ने आप को रिक़ा का क़ाज़ी मुक़र्रर कर दिया था चूनाँचे आप ने अपनी मशहूर किताब''रूक़क़ियात''की तस्नीफ़ रिक़ा में फ़रमाई फिर बअ़्द को आप ओ़हदा क़ज़ा छोड़ कर रिक़ा से बग़दाद चले आये।

हारूनरशीद जब पहली मरतबा ईरान गये तो इमाम मुहम्मद को भी अपने हमराह ले गये और ईरान ही में आप की वफ़ात हुई अ़जीब इत्फ़िाक़ है कि इमाम मुहम्मद इब्ने हसन शीबानी और इमाम अबुलहसन अ़ली इब्ने हम्ज़ा किसाई दोनों की एक ही दिन ईरान में वफ़ात हुई और हारूनरशीद दोनों के दफ़न में शरीक हुए और निहायत अफ़सोस के साथ यह कहा कि''हायमैंने आज फिकह व अ़रबियत दोनों को ईरान की ज़मीन में दफ़न कर दिया''।

इमाम मुहम्मद अपनी इ़ल्मी जलालत व उ़लूमे दुनिया की महारत व इमामत के इ़लावा कसरते इ़बादत में भी अपने दौर के बहुत बड़े आ़बिद व ज़ाहिद शुमार किए जाते थे और इस क़दर बाकरामत

साहिबे विलायत थे कि आम तौर पर लोग उन को औलियाए अब्दाल में से समझते थे और उन से फ़ैज़ हासिल करते।

(तबसरतुद्दराया व मनाक़िब मौफ़िक़ वग़ैरा)

क़ाज़ी इब्ने रज़ा ने महमोया से (जो औलिया के तब्क़ा अब्दाल में शुमार होते थे) रिवायत किया है कि मैं ने इमाम मुहम्मद इब्ने हसन को उन की वफ़ात के बअ्द ख़्वाब में देखा तो मैंने उन से पूछा कि आप पर क्या गुज़री ? तो उन्होंने फ़रमाया कि मुझ से हक़ तआ़ला ने यह इरशाद फ़रमाया कि अगर मैं तुम को अज़ाब देने का इरादा रखता तो मैं तुम को इल्म का ख़ज़ाना न बनाता यह फ़रमा कर हक़ तआ़ला ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमादी फिर मैंने दरयाफ़्त किया कि इमाम अबू युसुफ का क्या हाल है? तो जवाब दिया कि ''फ़ौक़ी'' वह तो मुझ से बाला तर हैं फिर मैंने हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा के बारे में पूछा तो उन्होंने फ़रमाया कि فوقہ بطبقات वह अबू यूसुफ़ से भी बदर जहा तब्क़ात ऊपर है।

189 हिजरी में आप ने वफ़ात पाई। (तारीख़े बग़दाद लिल्ख़तीब)

161–हज़रत मक्की इब्ने इबराहीम बल्ख़ी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन का नाम उ़मर इब्ने हारून है यह बल्ख़ के रहने वाले बहुत बड़े इमामे फ़िक़ह व उस्तादे ह़दीस हैं और हज़रत इमाम अअ्ज़म अबू ह़नीफ़ा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु के शागिर्दे ख़ास हैं ह़ाफ़िज़ ज़हबी ने उन को ह़ाफ़िज़ व इमाम व शैख़े खुरासान लिखा और इमाम बुख़ारी व इमाम अहमद इब्ने ह़मबल व इमाम यह़या इब्ने मुईन व इमाम ज़हली जैसे इमामों ने उन के सामने ज़ानुए अदब तै किया है इमाम बुख़ारी ने अपनी बेश्तर सुलासी ह़दीसों को उन ही से रिवायत किया है।

यह पहले एक मरतबा इमाम ममदूह़ की ख़िदमत में मुलाक़ात के लिए आये तो आप ने फ़रमाया कि मक्की! तुम तिजारत तो करते हो मगर तिजारत के लिये भी इल्म की ज़रूरत है जब तक इल्म न हो तिजारत में भी बड़ी ख़राबी रहती है हज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा की इस पुर ख़ुलूस नसीहत का मक्की के दिल पर बहुत बड़ा असर हुआ और

उन्हों ने फ़िक़ह व ह़दीस का इल्म पढ़ना शुरूअ् कर दिया यहाँ तक कि उन दोनों उ़लूम में इमामत का दर्जा ह़ासिल हो गया ।

यही वजह है कि मक्की को अपने उस्ताद इमाम अबूह़नीफ़ा से इन्तिहाई गहरा रुहानी तअ़ल्लुक़ और बे पनाह वालिहाना अ़क़ीदत थी चुनाँचे हर मज्लिस बिलखुसूस नमाज़े पन्ज गाना के बअ़्द इमाम अबू ह़नीफ़ा के लिए दुआ़ऐ ख़ैर करते और फ़रमाते थे कि उन ही की बरकत से अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिऐ उलूम का दरवज़ा खोला ।

एक मरतबा दर्से ह़दीस की मज्लिस में रिवायत शुरूअ् फ़रमाई और हद्दसना अबू ह़नीफ़ा फ़रमाया कि एक त़ालिबे इल्म ने चिल्ला कर कहा कि आप इब्ने जुरैज की अहादीस बयान कीजिए अबू ह़नीफ़ा की रिवायत बयान न कीजिए तो आप को इस क़दर गुस्सा आ गया कि चेहरे का रंग बदल गया और फ़रमाया कि हम बे वक़ूफ़ों को हदीस नहीं सुनाते तू मेरी मज्लिस से उठ जा तेरे लिऐ मुझ से ह़दीस लिखना ह़राम है चुनाँचे जब तक उस त़ालिबे इल्म को मज्लिस दर्स से निकाल नहीं दिया गया आप ने ह़दीस नहीं बयान फ़रमाई और जब उस को निकाल दिया गया तो फिर हद्दसना अबू हनीफ़ा का सिलसिला शुरूअ् हो गया।

इल्म व फ़ज़्ल की जलालत के साथ साथ इबादत व रियाज़त में भी साहिबे करामत थे साठ हज किए और दस बरस तक ह़रमे कअ़्बा में मोअ़्तकिफ़ रह कर इबादत में मसरूफ़ रहे।

(तज़किरतुलहु फ़्फ़ाज़ व मनाकि़बुल इमामे अअ़्ज़म अज़ स़दरूल अइम्मा)

162—हज़रत मुह़म्मद इब्ने सुक़ा गन्वी(रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि)

कुन्नियत अबू बक्र वतन कूफ़ा और लक़ब आ़बिद है यह ताबिई हैं और ह़ज़रत अनस इब्ने मालिक रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु के शागिर्द हैं और ताबिई मुह़द्दिसीन में से सईद इब्ने जुबैर व इबराहीम नख़ई से भी इल्मे ह़दीस में बहुत ज़्यादा इल्मी फ़ैज़ उठाया है और उन के ह़ल्क़ा दर्स के शुरकाए ख़ास में सुफ़यान सौरी व सुफ़यान इब्ने अ़ैनीया

व अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक वग़ैरा बहुत नामवर हैं।

हुसैन इब्ने ह़फ़्स का बयान है कि सुफ़यान सोरी ने अपनी दर्स गाह में त़ालिबे इल्मों से फ़रमाया कि मैं कूफ़ा में सब से बेहतरीन मुह़द्दिस की किताब निकालता हूँ यह कह कर उन्हों ने मुह़म्मद इब्ने सुका की किताब निकाली सुफ़यान इब्ने अ़ैनीया फ़रमाया करते थे कि कूफ़ा में तीन आदमी ऐसे हैं कि अगर उन में से किसी एक से कह दिया जाये कि तुम कल ही मरने वाले हो तो वह जितना अ़मले सालेह़ करते हैं उस से ज़्यादा नहीं कर सकते कि यह तीन शख़्स मुह़म्मद इब्ने सोक़ा "अ़म्र इब्ने कैस मलाई और अबू ह़ब्बान तैमी हैं मुहम्मद सोक़ा रेशमी कपड़ों के ताजिर थे उन्हों ने तिजारत से एक लाख दिरहम कमाए थे लेकिन मक्का मुअ़ज़्ज़मा ह़ाज़िर हुए तो फ़रमाया कि इस माल के जमअ़ा होने में कोई भलाई नहीं हैं और फिर सारा माल ख़ैरात कर दिया पाबन्दी–ए–सुन्नत व कसरते इबादत में अपने ज़माने के स़ाहिबे करामत बुजुर्ग थे इब्ने ह़ब्बान व निसाई व दारे कुत्नी वग़ैरा ने उन को सिक़ा व आ़बिद व फ़ाज़िल व दीनदार व सख़ी और कूफ़ा और कुफ़ा का सब से नेक आदमी बताया है।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

163–ह़ज़रत मुअ़ल्ला इब्ने मन्सूर राज़ी(रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

फ़ुक़हाए हन्फ़ीया में निहायत बलन्द मरतबा और अअ़्ला दरजा के इमामे ह़दीस हैं और क़ाज़ी इमाम अबू यूसुफ़ व इमाम मूह़म्मद (शागिर्दाने इमाम अबू ह़नीफ़ा) के माया नाज़ व क़ाबिले फ़ख़्र शागिर्द हैं इमाम बुख़ारी ने भी उन की मज्लिसे ह़दीस में ह़ाज़िर हो कर कुछ अह़ादीस की समाअ़त है ह़ाफ़िज़ ज़हबी ने उन के बारे में फ़रमाया कि كَانَ مِنْ اَوْعِيَةِ الْعِلْمِ यअ़्नी यह इल्म के भरे बरतनों में से थे अ़जली का क़ौल है कि यह सिक़ा व मोअ़्तमद व स़ाहिबे इ़ज़्ज़त हैं बारहा उन को ओ़हद ए क़ज़ा के लिए त़लब किया गया मगर उन्होंने अपने जुहद व तक़्वा की वजह से कभी भी क़ाज़ी का ओ़ह़दा क़बूल नहीं फ़रमाया।

इन्तिहाई आ़बिद व ज़ाहिद और स़दाक़त शिआ़र व परहेज़ गार बुज़ुर्ग थे और नमाज़ों में उन का खुज़ूअ़ व खुशूअ़ तो करामत की ह़द तक पहुँचा हुआ था एक मरतबा यह नमाज़ पढ़ रहे थे कि अचानक भिड़ों का छत्ता उन के सर पर गिर पड़ा मगर यह इन्तिहाई इस्तिग़राक़ के साथ मशगूल रहे क्या मजाल कि ज़रा तवज्जोह हट जाऐ आख़िर उसी ह़ालत में नमाज़ खत्म की जब फ़ारिग़ हुए लोगों ने देखा तो भिड़ों के डन्क से उन के तमाम सर में वरम आ गया था आप का असली वतन रै है मगर बग़दाद आये तो यहीं के हो कर रह गए और 211हिजरी में आप की वफ़ात हूई।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब व मीज़ानुल एअ़्तेदाल व तज़किरतुल्हुफ़्फ़ाज)

164–हज़रत मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल्लाह रिक़्क़ाशी (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन की कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह और वत़न बसरा है यह इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम व इमाम निसाई वग़ैरा मुह़द्दिसीन के उस्ताद हैं इमाम जुहली ने उन को मज़बूत इल्म वाला और अ़जली ने उन को सच्चा व क़ाबिले एअ़्तिमाद मुह़द्दिस व साह़िबे अ़क़्ल इबादत गुज़ार लिखा है उन के लिए आम तौर पर यह बात मशहूर थी कि यह रोज़ाना चार सौ रकअ़्त नमाज़ नफ़्ल पढ़ा करते थे इमाम बुख़ारी वग़ैरा का क़ौल है कि उन की वफ़ात 220हिजरी में हुई।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

165–हज़रत मुह़म्मद बिन सलाम बैकन्दी (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद इब्ने बैकन्दी मावराउन्नहर के निहायत बलन्द मरतबा मुह़द्दिस हैं इमाम मालिक व अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक व अ़ब्दुल्लाह इब्ने इदरीस वग़ैरा अकाबिर मुह़द्दिसीन की दर्स गाहों में इल्म ह़दीस की तअ़्लीम ह़ासिल की और इमाम बुख़ारी व इमाम दारमी ने उन के मदरसे में इल्मे ह़दीस पढ़ा।

उन का बयान है कि मैंने चालीस हज़ार दिरहम इल्मे ह़दीस की त़हसील में और चालीस हज़ार दिरहम इल्म ह़दीस की नश्र व इशाअ़त में ख़र्च किए उनकी मज्लिसे ह़दीस में तलबा का हुजूम बहुत

ज़्यादा रहता था यहाँ तक कि जिन्नात भी दर्स में शरीक होते थे ।

चुनाँचे अ़ली इब्ने ह़सन मुह़द्दिस का बयान है कि एक दिन मुह़म्मद इब्ने सलाम की मज्लिस में एक बूढ़ा शख़्स ह़ाज़िर हुआ और कहने लगा कि ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! मैं जिन्नों के बादशाह का क़ासिद हूँ हमारे बादशाह ने आप को सलाम अर्ज़ किया है और यह भी कहा है कि आप की दर्स गाह में इन्सानों से ज़्यादा जिन्नो का हुजूम रहता है आप उस का ख़याल रखें ।

उन के ज़माने के उ़लमा–ए–ह़दीस उन का इन्तिहाई एह़तिराम करते थे और इमाम अह़मद इब्ने ह़मबल तो उन से वालिहाना अ़क़ीदत रखते थे चुनाँचे अबू इस्मा सहल इब्ने मुतविकल कहते हैं कि मैंने इमाम अह़मद इब्ने ह़मबल की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अह़ादीस सुनने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो उन्होंने मेरा वत़न दरयाफ़्त किया मैंने जब बुख़ारा का नाम लिया तो इमाम मौसूफ़ ने फ़रमाया कि क्या तुम ने मुह़म्मद इब्ने सलाम से ह़दीस नहीं सुनी ? अगर तुम उन से ह़दीस की समाअ़त कर लेते तो फिर तुम को किसी से ह़दीस सुन्ने की ह़ाजत ही न होती (अ़ैनी व तहज़ीबुत्तहज़ीब)

166–ह़ज़रत मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल जब्बार क़र्शी हमदानी (रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

उन का लक़ब सन्दूला है यह अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक व सुफ़यान इब्ने अ़ैनिया व यज़ीद इब्ने हारून वग़ैरा मुह़द्दिसीन के शागिर्द और इमाम अबू दाऊद वग़ैरा के उस्ताद हैं निहायत मर्दे सालेह़ व सिक़ा मुह़द्दिस हैं शेरविया ने "त़ब्क़ातुल हम्दानीन" में तहरीर फ़रमाया कि यह हमारे शहर के सब से इ़बादत गुज़ार आ़बिद थे उन्हों ने चालीस मरतबा से ज़्यादा ह़ज किया और पैंतालीस जिहादों में शामिल हुए।

मुह़म्मद हुसैन मुह़द्दिस का बयान है कि उन की वफ़ात के दूसरे दिन उन के मकान की वह मेह़राब फूट गई जिस मेह़राब में यह नफ़्ल नमाजें पढ़ा करते थे।

मन्क़ूल है कि जब मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल जब्बार हमदानी बग़दाद में घोड़े पर सवार होते थे तो यह़या इब्ने मुईन उन के घोड़े की रिकाब

थाम लेते थे लोगों ने यह़या इब्ने मुईन से कहा कि आप इमामुलमुह़द्दिसीन हो कर ऐसा क्यों करते हैं ? तो उन्हों ने जवाब दिया कि मैं भला ऐसे शख़्स के घोड़े की रकाब क्यों न पकड़ूँ जो सिर्फ़ तीन ही मक़सदों के लिए सफ़र करता हैं इल्मे ह़दीस की तलब में या ह़ज में या जिहाद में मुह़द्दिस अबू नईम जब मुह़म्मद इब्ने अ़ब्दुल जब्बार को देखते तो कहा करते थे कि यह कितना मुबारक शख़्स है कि हमेशा या तो ह़ज के सफ़र में रहता है या जिहाद के सफ़र में (तहज़ीबुत्तज़ीब)

167–ह़ज़रत मुह़म्मद इब्ने समाआ़(रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

यह ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा के साह़िबैन यअ़नी इमाम अबू यूसुफ़ व इमाम मुह़म्मद के बहुत ही नामवर शागिर्द हैं और इमाम लैस इब्ने सअ़द व मुअ़ल्ला इब्ने ख़ालिद वग़ैरा से भी इल्मे ह़दीस ह़ासिल किया है अ़ल्लामा सफ़ीयुदीन ख़ज़रजी ने खुलासा "तहज़ीब तहज़ीबुल कमाल" में उन को ह़ाफ़िज़ व मुसन्निफ़ व साह़िबे इज्तिहाद लिखा और मुह़द्दिस समीरी ने भी उन को ह़ाफ़िज़ व सिक़ा बताया–192 हिजरी में यह बग़दाद के क़ाज़ी मुक़र्रर हो गए और एक मुद्दत तक इस मन्सब पर फ़ाइज़ रहे लेकिन निगाह कमज़ोर हो जाने की वजह से मुस्तअ़फ़ी हो गए।

ख़तीबे बग़दादी ने अपनी तारीख़ में नक़्ल किया है कि यह फ़रमाते थे कि चालीस बरस तक कभी मेरी तकबीरे ऊला फ़ौत नहीं हुई लेकिन जिस रोज़ मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल हुआ उस दिन एक वक़्त की जमाअ़त छूट गई तो मैंने इस ख़याल से कि जमाअ़त की नमाज़ का पच्चीस गुनाह सवाब ज़्यादा मिलता है उस नमाज़ को अकेले पच्चीस मरतबा पढ़ा इसी दरमियान में मुझे ग़नूदगी आगई तो किसी ने ख़्वाब में आकर कहा कि पच्चीस नमाज़ें तो तुम ने पढ़लीं मगर फ़रिश्तों की आमीन का क्या करोगे ? ह़दीस शरीफ़ में आया है कि इमाम जब वलद्दाल्लीन कहे तो तुम लोग आमीन कहो क्योंकि उस वक़्त फ़िरिश्ते भी आमीन कहते हैं और जिस की आमीन फ़रिश्तों

की आमीन के साथ होती है उस के अगले गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं तो इस फ़ज़ीलत को तुम बग़ैर जमाअत से नमाज़ पढ़ते हुए किस तरह हासिल कर सकते हो 233हिजरी में मुहम्मद इब्ने समाआ का विसाल हुआ। (तहज़ीबुत्तहज़ीब वग़ैरा)

168– हज़रते मुहम्मद इब्ने असलम तोसी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबुल हसन मुहम्मद इब्ने असलम बिन सालिम तोसी शहर तूसी के रहने वाले थे हदीस में यज़ीद इब्ने हारून (शागिर्द इमाम अबूहनीफ़ा)व जअ़फ़र इब्ने औन व यअ़ला इब्ने उ़बैद वग़ैरा मशाइख़े खुरासान के शागिर्द हैं उन के शुयूख़ में से बड़े नज़र इब्ने शमील हैं जो इब्ने खुज़ैमा व अबू बकर इब्ने दाऊद के भी उस्ताद थे उ़लमाए फ़ाज़िलीन व औलिए कामेलीन में उन का शुमार होता था और आम तौर पर लोग उन को अपने वक़्त का अबदाल समझते थे मुहम्मद इब्ने राफेअ़ का बयान है कि मैंने उन की ज़ियारत की है इल्म व अमल में बिल्कुल सहाबा किराम का नमूना थे एक दिन किसी ने इस्हाक़ इब्ने राहविया से पूछा कि عليكم بالسواد الاعظم(सब से बड़ी जमाअत को लाज़िम पकड़ो) उस हदीस के मिस्दाक़ कौन लोग हैं ? तो उन्होंने जवाब दिया कि इस ज़माना में मुहम्मद इब्ने असलम तूसी और उन के मुत्तबिईन हैं कि क्यों कि मैं पचास बरस से उन लोगों को बड़ी गहरी नज़र से देख रहा हूँ मगर कभी उन लोगों से बाल बराबर कोई हरकत खिलाफ़े सुन्नत सादिर नहीं हुई।

अहले खुरासान को उन से बेहद अक़ीदत थी और यह लोग उन को इमाम अहमद इब्ने हमबल का हम पल्ला समझते थे वफ़ात के बअ़द दस लाख आदमियों ने उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी मुहर्रम 242हिजरी में उन की वफ़ात हुई। (बुस्तानुल मुहद्दिसीन)

169–हज़रत मुहम्मद इब्ने यह्या अदनी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने यह्या अदनी ने मुहद्दिसीन की एक बहुत बड़ी जमाअत से इल्मे हदीस हासिल किया और उन के तलामिज़ा की तअदाद भी ज़्यादा है जिन में इमाम मुस्लिम व इमाम तिर्मिज़ी व इमाम इब्ने माजा जैसे बाकमाल मुहद्दिसीन भी हैं अबू हातिम का बयान है कि यह बहुत ही मर्दे सालेह व बा करामत बुज़ुर्ग थे इमाम तिर्मिज़ी ने फ़रमाया कि मुहम्मद यह्या ने पैदल चल कर सत्तर हज किए इमाम बुख़ारी का क़ौल है कि 243 हिजरी में उन की वफ़ात हुई।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

170–हज़रत इमाम मुस्लिम इब्ने हज्जाज कुशैरी (रहमतुल्लाहि तआलाअलैहि)

आप की कुन्नियत अबुल हुसैन व नाम व नसब मुस्लिम इब्ने हज्जाज इब्ने मुस्लिम इब्ने वर्द इब्ने करशाद और लक़ब असाकिरुदीन है बनी कुशैर क़बीला की तरफ़ निस्बत होने की वजह से कुशैरी कहलाते हैं नीशापुर के रहने वाले हैं जो खुरासान का बहुत ही खुबसूरत व मरदुम खैज़ शहर है 202 हिजरी में पैदा हुए और बअ्ज़ ने कहा कि 204 हिजरी बयान करते हैं और इब्ने असीर ने जामिउ़ल उसूल के मुकद्दमा में उसी आख़िरी क़ौल का इख़्तियार फ़रमाया है कि लेकिन उन की वफ़ात परसब का इत्तिफ़ाक है कि 24रजब 264 हिजरी में हुई और 25 रजब दो शमबा के दिन दफ़न किए गये।

इमाम मुस्लिम इल्मे हदीस के जलीलुलक़दर इमामों में शुमार किए जाते हैं अबू हातिम व अबू ज़ुरआ जैसे इमामों ने उन की इमामत की गवाही दी और उन को मुहद्दिसीन का पेशवा तस्लीम किया है और अइम्मा हदीस मस्लन इमाम तिर्मिज़ी व अबू बकर इब्ने खुज़ैमा वग़ैरा ने आप की शागिर्दी इख़्तियार की ।

सहीह मुस्लिम

इमाम मुस्लिम की बहुत सी तस्नीफात हैं जिन में आप की तहक़ीक़ व इम्आने नज़र का कमाल नज़र आता है ख़ास कर आप की

जामेअ् सहीह मुस्लिम जो सिहाह सित्ता में दाख़िल है उस में फ़ने हदीस के अ़जाइब और ख़ास कर लत़ाइफ़े अस्नाद व मतूने अह़ादीस के हुस्ने सियाक़ की ऐसी ऐसी बे मिसाल मिसालें हैं जो बिला शुबा नवादिरात का दर्जा रख़ती हैं और रिवायत में आप की एह़तियात का तो यह आ़लम है कि उस में किसी को कलाम की गुन्जाइश ही नहीं आप ने अपनी इस किताब का इन्तिख़ाब तीन लाख ऐसी ह़दीसों से किया है कि जिन को खुद अपने मशाइख़ से सुना था फिर सह़ीह़ ह़दीसों के इन्तिख़ाब में अपनी ज़ाती तहक़ीक़ात ही पर भरोसा नहीं फ़रमाया कि कमाल एहूतियात के तौर पर सिर्फ़ उन्हीं अह़ादीस को अपनी किताब में दर्ज फ़रमाया जिन की सेहत पर तमाम मशाइख़े वक़्त का इत्तिफ़ाक़ था चुनाँचे उन का बयान है कि:

''हर वह ह़दीस जो मेरे नज़दीक सह़ीह़ थी उस को मैंने यहाँ दर्ज नहीं किया''

बल्कि मैंने तो इस किताब (सह़ीह़मुस्लिम)में सिर्फ़ उन ह़दीसों को लिखा हैं कि जिन के सह़ीह़ होने पर बस तमाम शुयूख़े वक़्त का इज्माअ् है (मुक़द्दमा सह़ीह़मुस्लिम)

इमाम मुस्लिम ने उस पर भी नहीं किया बल्कि किताब मुकम्मल होने के बअ़द इमामुलह़दीस अबू ज़ुरआ़ राज़ी को दिखाया जो उस ज़माने में फ़ने जिरह व तअ़दील के इमाम माने जाते थे चुनाँचे इमाम अबू ज़ुरआ़ राज़ी ने जिस ह़दीस में किसी अदना इल्लत की त़रफ़ इशारा किया इमाम मुस्लिम ने उस ह़दीस को अपनी किताब से ख़ारिज करदिया उस त़रह़ पन्द्रह साल की मेह़नते शाक़्क़ा के बअ़द बारह हज़ार सहीह ह़दीसों का एक ऐसा मुन्तख़ब मजमुआ़ तैयार हुआ जिस के बारे में खुद मुसन्निफ़ ने यह दअ़वा फ़रमाया कि।

''मुह़द्दिसीन अगर दो सौ साल तक भी ह़दीसें लिखते रहेंगे जब भी उन का दारोमदार इसी अलमुस्नदुस्सह़ीह़ (सह़ीह़मुस्लिम)पर रहेगा

(तज़किरतुलहुफ़्फ़ाज़)

चुनाँचे उस बाखुदा मर्दे मुस्लिम के कलाम का असर जहाँ गीरी

और करामत तो देखो कि दो सौ बरस तो क्या आज ग्यारह सौ बरस से भी ज़्यादा गुज़र गये मगर आज तक उस किताब की मक़बूलियत का आफ़ताब गुरूब नहीं हुआ यही वजह है कि हाफ़िज़ अबूअ़ली नीशापुरी और मुहद्दिसीन अहले मग़रिब का यही ख़याल है कि रुए ज़मीन पर सहीह़ मुस्लिम से बढ़ कर लाजवाब व सह़ीह़ तरीन कोई किताब नहीं यहाँ तक कि यह लोग उस को सह़ीह़ बुख़ारी पर भी फ़ौक़ीयत व तरजीह़ देते हैं चुनाँचे उन लोगों ने अपने उस दअ़वा की दलील भी बयान की है इमाम मुस्लिम ने अपनी सह़ीह़ में शर्त लगाई है कि वह सिर्फ़ वही ह़दीसें ज़िक्र करेगें जिन को कम अज़ कम दो सिक़ा ताबिईन ने दो स़ह़ाबियों से रिवायत किया हो और यही शर्त तमाम तब्क़ाते ताबिईन व तब्ए़ ताबिईन में मलहूज़ रखी है यहाँ तक कि सनद का सिल्सिला इमाम मुस्लिम तक ख़त्म हो।

फिर दूसरी एक कड़ी शर्त इमाम मुस्लिम ने यह भी लगाई कि दो रावीयों के औसाफ़ में सिर्फ़ आ़दिल ही होने पर बस नहीं फ़रमाते बल्कि शराइत़ शहादत को भी पेशे नज़र रखते हैं।

और इमाम बुख़ारी के नज़दीक इतने सख़्त शराइत़ और इतनी ज़बर दस्त पाबन्दियाँ नहीं हैं फिर इमाम बुख़ारी की अकसर रिवायात मुहद्दिसीने शाम से बतरीक़ मुनावला हैं (यअ़नी उन की किताबों से ली गई हैं खुद इमाम बुख़ारी ने उनके मुस़न्निफ़ीन की ज़ुबान से उन ह़दीसों को नहीं सुना है)इसी लिए उन के रावियों में कभी कभी इश्तिबा हो जाता है कि एक ही रावी कहीं अपनी कुन्नियत से और कहीं अपने नाम से मज़कूर हो जाता है और इमाम बुख़ारी उस को दो शख़्स समझ लेते हैं मगर इमाम मुस्लिम को कभी भी यह मुग़ालता पेश नहीं आया क्यों कि उन्होने अपनी किताब स़ह़ीह़ मुस्लिम में ज़िक्र कर्दा तमाम ह़दीसों को खुद अपने मशाइख़ से सुना है।

(बुस्तानुल मुहद्दिसीन)

बहर ह़ाल सह़ीह़ बुख़ारी व स़ह़ीह़ मुस्लिम की अफ़्ज़लियत का मसअ्ला मुख़तलिफ़ फ़ी है और उस पर मुकम्मल बह़स की यहाँ

गुन्जाइश नहीं है तरफ़ैन के दलाइल सहीह बुख़ारी शरीफ़ की शरहों में मुफ़स्सल मज़कूर हैं जिन को अहले इल्म मुतालअ् कर सकते हैं।

लेकिन उस में शक नहीं कि इमाम बुख़ारी की कुछ ऐसी धौंस बैठी हुई है अहले इल्म हक़ीक़त को समझते हुए भी इमाम बुख़ारी के बारे में ज़बान खोलते हुए लर्ज़ा बर अन्दाम हो जाते हैं लेकिन फिर भी इतनी बात तो हम जैसे कम इल्म तलिबे इल्म भी अर्ज़ करने में कोई ह़रज मह़सूस नहीं करते कि इमाम बुख़ारी के बिला ज़रूरत तसर्रुफ़ात मसलन ह़दीसों की तक़दीम व ताख़ीर बे शुमार तकरार ह़ज़फ़ व इख़्तिसार ग़ैर मुताबिक़ अब्वाब 'दरमियाने ह़दीस में कहीं तफ़सीर कहीं नक़ल आयत कहीं मुताबअ़ात'कहीं नक़ले मज़ाहिब कहीं अपना इज्तिहाद कहीं अइम्मा फ़िक़्ह पर हाथ साफ़ कर देना दलाइल की तरफ़ ग़ैर वाज़ेह़ इशारात वग़ैरा सहीह़ बुख़ारी शरीफ़ के यह वह होश रूबा मुश्किलात हैं कि जिन से फ़हमे मत़ालिब में बअ़्ज़ जगह इतनी सख़्त परेशानी और इस क़दर मुश्किलात का सामना हो जाता है कि बसाऔक़ात मुअ़ल्लिम व मुतअ़ल्लिम दोनों के लिए दर्दे सर का सामान हो जाता है अगरचे इस में शक नहीं कि खुद स़हीह़ बुख़ारी ही की दूसरी सनदों और ह़दीसों को देख कर इश्काल ह़ल हो जाता है मगर बहर ह़ाल उस ह़क़ीक़त के एअ़्तेराफ़ से किसी को चारा नहीं कि स़हीह़ बुख़ारी तअ़्क़ीदात व मुग़ल्लिक़ात फ़ने ह़दीस की एक बिखरी हुई दुकान है जिस के परागन्दा सामानों को छान बीन कर छाँट लेना किसी माहिरे फ़न ही का काम है।

मगर इमाम मुस्लिम ने यह परेशान कुन तरीक़ा ही इख़्तियार नहीं फ़रमाया बल्कि लताइफ़ व तनव्वुअ़े असनाद के लुत्फ़ के साथ साथ ह़दीसों को इन्तिहाई तजरीद के साथ इस त़रह़ मोती की लड़ियों के मानिन्द मुरत्तब फ़रमा कर रिवायत फ़रमाया है कि कहीं इश्काल का नाम तक नहीं ह़दीसें पढ़ते चले जाईए आप के ज़ेहन में उन के मअ़ानी मोतीयों की त़रह़ चमकते और सितारों की तरह़ रौशन होते चले जायेंगे इस लिए सहीह़ बुख़ारी व स़हीह़ मुस्लिम की तफ़सील के

मुआमले में फ़कीर राक़िमुल हुरूफ़ का हाफ़िज़ अब्दुर्रहमान इब्ने रबीअ् यम्नी शाफ़िई काकत़आ बेहद पसन्द है —

تنازع قومٌ فی البخاری و مسلم لَدیَّ وَقَالُوْا ایُّ ذَیْنِ یُقَدَّمُ

मेरे सामने एक क़ौम ने बुख़ारी व मुस्लिम के बारे में झगड़ा किया कि उन दोनों में से कौन बड़ चढ़ कर है ।

فَقُلْتُ لَقَدْ فَاقَ البُخَارِیُّ صِحَّةً كَمَا فَاقَ فِیْ حُسْنِ الصناعة مسلمٌ

तो मैंने कह दिया कि सेहत के लिहाज़ से बुख़ारी को फ़ौक़ियत ह़ासिल है जैसे के मुस्लिम फ़न की खूबियों के एअ्तबार से बढ़ चढ़ कर है।

इमाम मुस्लिम अपनी इल्मी जलालत व फ़न्नी महारत व इमामत के इलावा अक़लीमे तक़वा व इबादत के भी ताजदार थे तमाम उम्र किसी की ग़ीबत नहीं की न किसी को मारा न किसी को गाली दी उन के इलावा अपनी बहुत सी ख़स़ाइले ह़मीदा में वह अपने तमाम हम अ़सरों में मुमताज़ हैं।

अबू ह़ातिम राज़ी ने जो उस दौर के अकाबिर मुह़द्दिसीन में से हैं इमाम मुस्लिम को वफ़ात के बअ्द ख़्वाब में देखा और उन का ह़ाल दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी जन्नत को मेरे लिए मुबाह़ फ़रमादिया है मैं जहाँ चाहता हूँ रहता हूँ ।

अबू अ़ली ज़ागुनी को वफ़ात के बअ्द किसी बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में देखा और उन से पूछा कि किस अ़मले ख़ैर से तुम्हारी नजात हूई? तो उन्हों ने स़ह़ीह़ मुस्लिम के चन्द औराक़ की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि उन ही वरकों की बदौलत मेरी नजात हुई।

इमाम मुस्लिम की वफ़ात का सबब भी बड़ा अ़जीब व ग़रीब है कि कहते है कि एक दिन दर्स गाह में आप से किसी ह़दीस के बारे में सवाल किया गया उस वक़्त आप उस ह़दीस को न पहचान सके अपने मकान में तशरीफ़ ला कर किताबों में उस ह़दीस को तलाश फ़रमाने लगे खजूरों का एक टोकरा आप के क़रीब रखा आप

मुतालआ की हालत में एक एक खजूर उस में से खाते रहे और हदीस की फ़िकर व जुस्तुजू में इस क़दर मुस्तग़रक़ हो गए कि ह़दीस के मिलने तक तमाम खजूरों को तनावुल फ़रमागये और आप को कुछ ख़बर नहीं हुई उस के बअ्‌द आप को दर्दे शिकम हो गया और यही आप की वफ़ात का सबब बना

(बुस्तानुलमुहद्दिसीन वग़ैरा कुतुबे मोअ्‌तबरा)

171—हज़रत मुहम्मद इब्ने आदम इब्ने सुलैमान जोहनी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

यह अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक वग़ैरा किबार मुहद्दिसीन के शागिर्द और इमाम अबू दाऊद व इमाम निसाई वग़ैरा मुहद्दिसीन के उस्ताद हैं अबू ह़ातिम व नसाई वग़ैरा ने उन को सिक़ा और सच्चा मुहद्दिस तह़रीर किया।

उन की इबादत व रियाज़त और कसरते करामत को देख कर आम तौर पर यह कहा जाता था कि यक़ीनन यह औलियाए अब्दाल में से हैं 250 में उन की वफ़ात हुई। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

172—हज़रत मुहम्मद इब्ने नसर मरुज़ी (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने नसर मरूज़ी का लक़ब फ़क़ीह है उन के वालिद मरु के रहने वाले थे लेकिन यह बग़दाद में पैदा हुए और नीशापुर में सुकूनत इख़्तियार की इस लिए यह नीशापुरी भी कहलाते हैं यह बड़े बाकमाल हाफ़िज़े ह़दीस हैं और उन के उस्तादों और और शागिर्दों की तअ्‌दाद बहुत ज़्यादा है मुहम्मद इसहाक़ दबूसी का बयान है कि मैंने मुहम्मद इब्ने नसर को समर क़न्द में देखा वह ह़दीसों का एक समन्दर थे इब्ने हब्बान ने उन को सिक़ा लिखा और फ़रमाया कि यह ह़दीस के उन इमामों में से सब से बड़े आ़लिमे ह़दीस थे।

इल्मी कमाल के साथ साथ तक़्वा व रियाज़त और जुहद व इबादत में भी बड़े साहिबे कमाल थे मुहम्मद इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि मैंने मुहम्मद नसर से ज़्यादा अच्छी नमाज़ पढ़ते हुए किसी को नहीं देखा एक मरतबा नमाज़ की हालत में उन की पेशानी पर भिड़ बैठ

गई और उस ने इस क़दर डन्क मारा के उन के चेहरे पर खून बह निकला मगर यह सुकून व इतमीनान के साथ नमाज़ पढ़ते रहे और ज़रा भी ह़रकत नहीं की

उसमान इब्ने ज़अ़फ़र लब्बान ने उन की एक अजीब करामत बयान की है कि यह मिस्र से कश्ती पर सवार हो कर मक्का मुकर्रमा जा रहे थे अचानक कश्ती ग़र्क़ हो गई यह और उन की बान्दी दोनों समन्दर की मौजों में फँस गये फिर उन दोनों पर ग़शी तारी होगई और समन्दर की मौजों ने उन दोनों को एक जज़ीरे में खुश्की पर फेंक दिया खुश्की पर पहुँचने के बअ़द जब मुहम्मद नस़र को होश आया तो अपने साथ अपनी बाँदी को पाया फिर दोनों प्यास से बेक़रार हो गये और मुहम्मद इब्ने नस़्र मौत के इन्तिज़ार में लेट गये कि अचानक ग़ैब से एक मर्द पानी का कूज़ा लेकर नमूदार हुआ और उन के सामने पानी का कूज़ा पेश करदिया उन्हों ने सैराब हो कर खुद भी पिया और अपनी बाँदी को भी पिलाया फिर एक दम वह मर्द नज़रों से ग़ाइब हो गया और कुछ पता नहीं चला कि कहाँ से आया था और किधर चला गया ?

यह बड़े किफ़ालत शिआ़र भी थे उन का बयान है कि इल्मे ह़दीस की त़लब में कई बरस में मिस्र में मुक़ीम रहा लेकिन साल भर में मेरी खुराक़ 'कपड़े' काग़ज़' रोश्नाई वग़ैरा तमाम ज़रूरियाते ज़िन्दगी का ख़र्च सिर्फ़ बीस दिरहम होता था 294में उन्होंने वफ़ात पाई। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

173–हज़रत मुहम्मद मुसैयब नीशापूरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि)

यह 222हिजरी में पैदा हुए ह़ाकिम का बयान है कि यह बहुत बड़े आ़बिद थे और इल्मे ह़दीस की त़लब में उन्होंने बे पनाह मशक़्क़त उठाई थी मुहम्मद इब्ने मुसैयब खुद कहा करते थे कि मुहद्दिसीन के मिमबरों में से कोई ऐसा नहीं है जहाँ मैं ह़दीस सुनने के लिए न गया हूँ हाफ़िज़ अबू अली ने बयान किया कि मुहम्मद इब्ने मुसैयब मिस्र में चलते थे और उन की आस्तीनों में एक सौ जुज़ काग़ज़ की कापियाँ

होती थीं जिन में एक लाख हदीसें लिखी हुई थीं यह बहुत ही रक़ीकुलक़ल्ब भी थे हदीस सुनाते वक्त जब।

قال رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم कहते तो इस क़दर रोते कि तालिबे इल्मों को उन के रोने पर रहम आने लगता था और यूँ ही ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से दिन रात रोया करते थे यहाँ तक कि रोते रोते दोनों आँखों की रौशनी जाती रही और बिलकुल नाबीना हो गए थे।

मुहम्मद इब्ने इस्हाक इब्ने ख़ुज़ैमा उन के शागिर्दों में बहुत मशहूर हैं हाकिम ने अपनी तारीख़ में उन का सने वफ़ात 315 हिजरी बताया है (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

174–हज़रत मुहामिली (रहमतुल्लाह तआला अलैहि)

अबू अ़ब्दुल्लाह हुसैन इब्ने इस्माईल इब्ने मुहम्मद तीबी बग़दादी का लक़ब मुहामिली है चुंके साठ बरस तक कूफ़ा के क़ाज़ी रह चुके हैं इस लिए क़ाज़ी हुसैन भी कहलाते हैं बग़दाद के बहुत नामवर मुहद्दिस और बाकरामत शैख़े तरीक़त हैं अबू हुजाफ़ा सहमी (शागिर्द इमाम मालिक)के माया नाज़ तलामिज़ा में हैं और दारे क़ुतनी वग़ैरा मुहद्दिसीन उनके शागिर्द हैं उन के दर्से हदीस की मज्लिस में दस हज़ार के क़रीब

आदमी हाज़िर रहते थे कि आख़िरी उम्र में क़ाज़ी के मन्सब से मुसतअ़फ़ी हो गये थे कूफ़ा में अपने मकान को इल्म का ठिकाना बना रखा था और रोज़ाना इल्मे हदीस की तलब के लिए उन के मकान पर सैकड़ों तालिबे इल्मों का मेला लगा रहता था मुहम्मद हुसैन जो उस दौर के निहायत ही बुज़ुर्ग शख़्स हैं बयान करते हैं कि मैं ख़्वाब में देखता कि कोई कहने वाला कहता है कि हक़ तआला मुहामिली की बरकत व तुफ़ैल से अहले बग़दाद पर से बलाओं को दफ़अ़ करता है 2रबीउस्सानी 330हिजरी को दर्से हदीस से फ़ारिग़ हो कर मअ़मूल के मुताबिक़ उठे तो अचानक कोई बीमारी होगई और पन्द्रह दिन के बअ़द उन का विसाल हो गया (बुस्तानुल मुहद्दिसीन)

175–हज़रत नस्र इब्ने अ़ली जहज़मी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप बहुत ही बलन्द मरतबा मुहद्दिस हैं मुस्लिम इब्ने हज्जाज कुशैरी वग़ैरा हदीस के इमामों ने उन की शगिर्दी का शरफ़ हासिल किया है बसरा के मुहल्ले जहाज़मा में रहते थे इस लिए जहज़मी कहलाते हैं आप के इ़ल्म व फ़ज़्ल को देख कर ख़लीफ़ा बग़दाद मुस्तईन बिल्लाह अ़ब्बासी ने आप को काज़ीयुल्कुज़ा (चीफ़ जस्टिस) बनाना चाहा चुनाँचे बसरा के गवर्नर ने आप को बुला कर शाही फ़रमान सुना दिया आप ने बादशाह का फ़रमान सुन कर फ़रमाया कि मैं घर जाता हूँ इस्तिख़ारा करके उस का जवाब दूँगा चुनाँचे मकान पर आये और दो रकअ़त नमाज़ इस्तिख़ारा पढ़कर यह दुआ़ माँगी कि या अल्लाह ! अगर तेरे दरबार में मेरे लिए भलाई हो तो मुझे फ़ौरन ही वफ़ात दे दे और ऐसी कठिन ज़िम्मेदारी से जिस में ख़लीफ़ा मुझे मुब्तला करना चाहता है मुझे निजात अ़ता फ़रमा दे यह दुआ़ माँग कर आप सो गये लोगों ने घन्टों इन्तिज़ार करने के बअ़्द आप को बेदार करना चाहा तो आप की वफ़ात हो चुकी थी आप की यह करामत रबीउ़लआख़िर 250 हिजरी में सादिर हुई (नोवी)

176–हज़रत इमाम निसाई (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

इमाम क़ाज़ी हाफ़िज़ अबू अ़ब्दुर्रहमान अहमद इब्ने शुअ़ैब इब्ने अ़ली निसाई 214हिजरी में ख़ुरासान के शहर निसाअ् में पैदा हुए और तहसीले इ़ल्म के बअ़्द मिस्र में मुक़ीम हो गये जलीलुल क़दर मुहद्दिस और बलन्द पाया मुसन्निफ़ भी हैं आप की किताब सुनने निसाई "सिहाह सित्ता" में दाख़िल है आप शाफ़िएयुलमज़हब थे और इ़ल्मे हदीस में कुतैबा इब्ने सईद व हनाद इब्ने सरी मुहम्मद इब्ने बशार व महमूद इब्ने ग़ैलान इमाम अबूदाऊद व सुलैमान इब्ने अशअ़स वग़ैरा हज़ारों मुहद्दिसीने किराम के शागिर्द हैं और आप के शागिर्दों की फ़िह्‌रिस्त भी तवील है जिन में अबुलक़ासिम तिब्रानी व अबु जअ़फ़र तहावी व अबुबक्र हद्दाद फ़कीह व अबूअहमद इब्ने इस्हाक़ सुन्नी व अबुल क़ासिम हम्ज़ा इब्ने मुहम्मद बिन अ़ली किनानी वग़ैरा इन्तिहाई

मशहूर व मअ्रूफ़ फ़ुक़हा व मुहद्दिसीन हैं अ़ल्लामा इब्ने हजर अ़स्क़लानी ने आप के असातिज़ा व तलामिज़ा के बारे में फ़रमाया لايحصون यअ्नी उन लोगों का शुमार नहीं किया जा सकता।

हाकिमे नीशापुरी ने फ़रमाया कि फ़िक़ह ह़दीस में इमाम निसाई का मक़ाम बहुत ही बलन्द है अ़ली इब्ने उ़मर का बयान हैं कि आप अपने ज़माने में मिस्र के तमाम फ़ुक़हा व मुहद्दिसीन से अफ़ज़ल थे और नक़्दे ह़दीस व मअ्रिफ़ते रिजाल में बे मिसाल थे।

दर्से ह़दीस व फ़तावा व तस्नीफ़ के साथ साथ अअ्ला दरजे के इबादत गुज़ार और मुत्तक़ी व परहेज़ गार भी थे । तमाम उ़म्र सौमे दाऊदी के पाबन्द रहे यअ्नी एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्तार करते दिन रात इबादत करते और हर साल ह़ज और जिहाद के लिए भी जाते

उमरा व सलातीन के दरबारों से सख़्त मुतनफ़्फ़िर और उन की मुलाक़ातों से हमेशा परहेज़ करते रहे और अ़वाम व ख़ास के दीनदार त़ब्के में बेह़द मक़बूल व मरज़अे ख़लाइक़ थे आप की उसी मक़बूलीयत को देख कर बअ्ज़ उ़लमा–ए–मिस्र आप के ह़ासिद बन गये थे चुनाँचे जब आप दमिश्क़ तशरीफ़ ले गये तो वहाँ हज़रत अ़ली रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुख़ालिफ़ीन की तअ्दाद बहुत ज़्यादा थी आप ने उन लोगों की हिदायत के लिए كتاب الخصائص और كتاب فضائل الصَّحَابَة तस्नीफ़ फ़रमाई लिए आप अपनी इन किताबों को रमला में अ़वाम को सुना हे थे कि मिस्र के ह़ासिद उ़लमा ने आप से सवाल कर दिया कि आप ह़ज़रत अ़मीर मुआविया के फ़ज़ाइल सुनाईए तो आप ने जवाब दिया कि उन के फ़ज़ाइल क्या हैं ? जो मैं सुनाऊँ इस पर मिस्र के ह़ासिद उ़लमा ने आप के ख़िलाफ़ शीआ होने का ज़बर दस्त परो पेगन्डा किया यहाँ तक कि जामेअ् मस्जिद में लोगों ने आप को बहुत ज़्यादा मारा और मिस्र से आप को निकाल दिया और आप ज़ख़्मी हो कर मक्का मुकर्रमा चले आये जहाँ 13 सफ़र 303 हिजरी में शहादत नसीब हूई और सफ़ा व मरवा के

दरमियान मदफून हो गए इब्ने यूनूस का क़ौल है कि आप की वफ़ात 13 सफ़र 303हिजरी को फ़िलिस्तीन में हुई फ़िर वहाँ से आप की नअ्श मुबारक मक्का मुकर्रमा पहुँचाई गई वल्लाहु तआला अअ्लमु

(इकमाल व तहज़ीबुत्तहज़ीब व बुस्तानुल मुहृद्दिसीन)

177–हज़रत वहब इब्ने मुनब्बा (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है यह हजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने ही में ईमान लाये थे मगर दीदारे नबवी का शरफ़ हासिल नहीं हुआ सहाबा में हज़रत अबू हुरैरा इब्ने अब्बास इब्ने उमर वग़ैरा रदियल्लाहु तआला अन्हुम की ज़ियारत की है इसी लिए ताबिई हैं यह अस्ल में खुरासान के रहने वाले थे मगर किसरा बादशाहे ईरान ने उन को यमन की तरफ़ शहर बदर कर दिया था इस लिए आप और आप की औलाद ने यमन को अपना वतन बनालिया यह हदीस में हज़रत अबू हुरैरा व इब्ने अब्बास व उमर वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम के शागिर्द हैं और उन के तलामिज़ा में उन के साहबज़ादे अब्दुल्लाह और उमर व इब्ने दीनार वग़ैरा काफ़ी मशहूर हैं।

इमाम अबू ज़ुरआ व निसाई व अजली व इब्ने हब्बान वग़ैरा ने उन को सिक़ा ताबिई कहा । मुसन्ना इब्ने सबा ने फ़रमाया कि यह ज़ुबान के इतने सुथरे थे कि चालीस बरस तक इन्सान तो इन्सान किसी जानवर को भी कभी उन्हों ने कोई गाली नहीं दी बहुत बड़े आबिदों में से थे बीस बरस तक इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी आप का क़ौल है कि मैंने सत्तर से ऊपर अम्बियाए साबिक़ीन की किताबों का मुतालआ किया है इब्ने सअ्द वग़ैरा ने आप के सने वफ़ात 110हिजरी बताया है (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

178–हज़रत वुहैब बिन वर्द मक्की (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबू उस्मान या अबू उमय्या है और नाम अब्दुलवह्हाब लेकिन यह वुहैब के लक़ब से मशहूर हैं अता इब्ने रबाह व सुफ़यान सौरी वग़ैरह जमाअते मुहद्दिसीन से इल्मे हदीस हासिल किया और उन से हदीस रिवायत करने वालों में अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक व फुज़ैल इब्ने अयाज़ व अब्दुर्रज़्ज़ाक़ वग़ैरा बड़े बड़े मुहद्दिसीन हैं इब्ने मुईन व निसाई वग़ैरा ने उन को सिक़ा मुहद्दिस बताया और अबू हातिम राज़ी ने उन के आबिद व ज़ाहिद और बलन्द पाया वाइज़ होने की शहादत दी और इब्ने हब्बान ने उन को बहुत बड़ा आबिद व ज़ाहिद और तारिकुद्दुनिया कहा हज़रत सुफ़यान सौरी जब दर्से हदीस से फ़ारिग़ होते थे तो शागिर्दो से फ़रमाते थे कि उठो चलो !हम एक पाकीज़ा और सुथरे मर्द (वुहैब बिन वरद) की ज़्यारत कर लें।

यह खौफ़े खुदावन्दी से बहुत ज़्यादा रोया करते थे दरमियान वअ्ज़ और दर्से हदीस के वक़्त बराबर उन की आँखों से आँसू जारी रहते थे।

किसी ने उन से पूछा कि क्या उस शख़्स को इबादत की लज़्ज़त हासिल हो सकती है जो गुनाह कर ले ?तो आप ने फ़रमाया कि नहीं ? गुनाह करने वाले का तो क्या ठिकाना ? जिस ने गुनाह का सिर्फ़ इरादा कर लिया वह भी इबादत की लज़्ज़त से महरूम हो जाता है 153हिजरी में वफ़ात पाई।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

179 हज़रत वज़ीर इब्ने सबीह सक़फ़ी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबू रूह और वतन शाम है यह यूनुस इब्ने मैसरा के शागिर्द और सफ़वान इब्ने सालेह व हिशाम इब्ने अम्मार वग़ैरा के उस्ताद हैं अबू हातिम ने उन को सालिहुलहदीस और इब्ने हब्बान ने सिक़ा लिखा और अबू नईम असफ़ाहानी ने फ़रमाया कि तमाम लोग उन को औलिया अल्लाह के तब्क़–ए–अब्दाल में शुमार करते थे

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

180–हज़रत वकीअ् इब्ने अलजर्राह (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप दौरे तबअे ताबिईन के मशहूर इमामुलहदीस हैं इमाम औज़ाई व सुफ़यान सौरी व हिश्शाम इब्ने उर्वा वग़ैरा से इल्मे हदीस की तहसील की और इमाम अहमद व अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक व यहया इब्ने मुईन व अली इब्ने मदीनी वग़ैरह हज़ारों मुहद्दिसीन ने आप से हदीसों की रिवायत की हैं आप कूफ़ा से बग़दाद तशरीफ़ लाये और दारुलहदीस क़ाइम किया जहाँ हज़ारों तालिबाने इल्म हदीस आप के दर्स से मुहद्दिस बन गये आप हज़रत इमामे अअ्ज़म अबूहनीफ़ा अलैहिर्रहमा के भी शागिर्द थे और इमाम मौसूफ़ से इन्तिहाई वालिहाना अक़ीदत रखते थे और हमेशा इमाम अबूहनीफ़ा ही के मज़हब पर फ़तावा देते थे कसरते इबादत में आप की करामत का यह हाल था कि आप साल भर रोज़ादार ही रहते थे और हर रात नवाफ़िल में एक ख़त्मे कुर्आन मजीद पढ़ा करते थे।

मिज़ाज़ में इस कदर तवाज़ोअ् व इन्किसार था कि अगर कोई शख़्स आप को तकलीफ़ देता तो आप उस को कुछ भी नहीं कहते बल्कि अपने सर पर मिट्टी डालते और रो रो कर यह कहते कि अगर मैं गुनाहगार न होता तो हरगिज़ यह शख़्स मेरे ऊपर मुसल्लत न होता फिर बकसरत तौबा व इस्तिग़फ़ार करते यहाँ तक कि आप को तकलीफ़ देने वाला शख़्स अपनी ईज़ा रसानी से ताइब हो जाता सफ़रे हज़ से वापस आते हुए 199हिजरी में इराक़ के रास्ते में आप ने विसाल फ़रमाया

(तब्क़ाते शेअ्रानी)

181–हज़रत हुमाम इब्ने हारिस नख़ई (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप का वतन कूफ़ा है साहिबे फ़ज़ीलत ताबिई हैं और कसरते इबादत की वजह से आप का लक़ब आबिद है आप हज़रत उमर हुज़ैफ़ाव मिक़दाद इब्ने असवद व बी बी आइशा वग़ैरा सहाबा रदियल्लाहु तआला अन्हुम से हदीस बयान करने वाले ताबेई मुहद्दिसीन में से हैं और आप के शागिर्दों में इमाम इबराहीम नख़ई भी

हैं जो हज़रत इमामं अबू हनीफ़ा कि दादा उस्ताद हैं।

अबुल हसन मदाइनी ने फ़रमाया कि हुमाम इब्ने हारिस जलीलुक़द्र ताबिई व साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे आप की एक बड़ी करामत यह है कि आप ने यह अज़्म कर लिया था के क़ब्र कि सिवा पीठ लगाकर कभी नहीं सोऊँगा चुनाँचे तमाम उम्र कभी पीठ लगा कर नहीं सोये हमेशा बैठे बैठे सो लिया करते थे आप ने कूफ़ा में 65 हिजरी में वफ़ात पाई। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

182—हज़रत हशीम इब्ने बशीर सल्मी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

यह वतन के एअ़तिबार से वास्ती हैं और इल्मे हदीस में सुलैमान तैमी व उमर इब्ने दीनार व आसिम अहवाल व ख़ालिद हिज़ा व यहया इब्ने सईद अन्सारी वग़ैरा से शरफ़े तलम्मुज़ रखते हैं और इमाम मालिक व सुफ़यान सौरी व अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक जैसे इमामों ने उन की बारगाहे इल्म में हाज़िर बाशी का शरफ़ हासिल कर के इल्मी इस्तिफ़ादा किया।

इमाम अहमद इब्ने हमबल ने फ़रमाया कि हशीम बहुत ज़्यादा तस्बीह पढ़ते थे और उन के चेहरे पर इतना रोअ़ब व जलाल था कि मैं चार पाँच दिन उन की सोहबत में रहा मगर दो सवालों से ज़्यादा उन से दरयाफ़्त कर ने की हिम्मत व जुर्अत न कर सका हुसैन इब्ने हसन रूमी का बयान है कि मैंने हशीम से बढ़ कर किसी को ज़िकरे इलाही करते नहीं देखा मशहूर बुज़ुर्ग और मुहद्दिस सईद इब्ने मन्सूर फ़रमाते हैं कि मुझे ख्वाब में हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत हुई तो मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मैं क़ाज़ी अबू यूसुफ़ की सोहबत में बैठूँ या हशीम की ?तो इरशाद फ़रमाया कि तुम हशीम की सोहबत में हाज़िर रहो उसी तरह इस्हाक़ ज़ियादी ने फ़रमाया कि मुझे ख़्वाब में दीदारे नबवी की दौलत हासिल हुई तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम लोग हशीम की हदीसें सुनो वह बहुत ही अच्छा आदमी है बग़दाद के मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत मअ़रुफ़ कर्ख़ी ने भी ज़िक्र फ़रमाया कि मुझे ख़्वाब में

हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के दरबार की हाज़री नसीब हुई तो मैंने देखा कि हशीम भी दरबारे नबवी में हाज़िर हैं और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमा रहे हैं कि हशीम! तुम को अल्लाह तआला मेरी उम्मत की तरफ़ से जज़ा–ए–ख़ैर अता फ़रमाए शअ्बान 182 हिजरी में उन की वफ़ात हुइ (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

183–हज़रत हसीम इब्ने जमील (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

हाफ़िज़ अबू सुहैल हसीम इब्ने जमील हदीस में इमाम मालिक वलैस इब्ने सअ्द वग़ैरा के शागिर्द और इमाम अहमद व मुहम्मद इब्ने मुसन्ना वग़ैरा मुहद्दिसीन के उस्ताद हैं उन्हों ने इल्मे हदीस की तलब में दो मरतबा अपना सारा माल ख़र्च कर दिया और बिल्कुल मुफ़लिस हो गये यह अपने ज़माने के अअ्ला दरजे के मुत्तक़ी थे सुफ़यान इब्ने मुहम्मद मसीसी ने उन का एक अजीब वाकिआ नक़ल किया है वह फ़रमाते हैं कि मैं हसीम इब्ने जमील की वफ़ात के वक़्त हाज़िर था वह सकाराते मौत में थे और किब्लारू लेटे हुए थे लोगों ने उनको चादर उढ़ादी थी और रूह परवाज़ करने के इन्तिज़ार में थे इसी हालत में उन की लोन्डी ने उन का पाँव हाथ से दबाया तो आप ने जांकनी के आलम में निहायत इत्मिनान के साथ फ़रमाया कि मेरी लोन्डी !तुम इन पैरों को खूब अच्छी तरह दबाओ अल्लाह जानता है कि मेरे यह दोनों पाँव ज़िन्दगी भर में किसी गुनाह की तरफ़ नहीं चले हैं यह फ़रमाया और रुह परवाज़ कर गई आप की वफ़ात 213हिजरी में हुई और शहरे बग़दाद में मदफून हुऐ (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

184–हज़रत हिश्शाम इब्ने इस्माईल (रहमतुल्लाह हि तआला अलैहि)

फ़कीहे दमिश्क़ अबू अब्दुलमलिक हिशाम इब्ने इस्माईल ख़ज़ाई बहुत नामवर मुहद्दिस और कसीरुल इबादत बुज़ुर्ग थे इत्र की तिजारत करते थे इस लिए लोग उन को आबिद अत्तार के लक़ब से याद करते थे यह वलीद इब्ने मुस्लिम व हक़्ल इब्ने ज़ियाद व मुहम्मद इब्ने शोऐब वग़ैरा मुहद्दिसीन के हलका–ए–दर्स के फ़ैज़ याफ़्ता हैं और इमाम बुख़ारी व इमाम अबू ज़ुरआ वग़ैरा ने उन की शागिर्दी

इख़्तियार की है इब्ने अम्मार अजली व अबू हातिम वग़ैरा का क़ौल है कि दमिश्क़ में उस से बढ़ कर मर्दे सालेह व मुत्तबए सुन्नत व इबादत गुज़ार कोई शख़्स नहीं था अबू ज़ुर्आ ने उन को दमिश्क़ के मुफ़्तीयों की फ़िहरिस्त में शुमार करते हुए उन के सलाह व तक़्वा और इबादत व रियाज़त की शहादत दी 217हिजरी में उन्होंने दुनिया से रेहलत फ़रमाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

185–हज़रत हाशिम इब्ने क़ासिम लैसी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

हाशिम इब्ने क़ासिम मुस्लिम का लक़ब क़ैसर और वतन बग़दाद है शेअ्बा व लैस इब्ने सअ्द वग़ैरा मुहद्दिसीन के शागिर्द और इमाम अहमद इब्ने हमबल व अ़ली मदीनी व यहया इब्ने मुईन वग़ैरा अइम्मा हदीस के शैख़ हैं इमाम अहमद बिन हम्बल उनकी शागिर्दी पर फ़ख़्र करते थे और फ़रमाते थे कि हमारे शैख़ शैख़ हाशिम इब्ने क़ासिम अम्र बिलमअ्रुफ़ व नही अ़निल मुन्कर करने वाले उ़लमा–ए–सालिहीन में से हैं इब्ने सअ्द व इब्ने अ़ब्दुलबर ने लिखा है कि उन के सिक़ा व सादिक़ होने पर तमाम नाक़ेदीन हदीस का इत्तिफ़ाक़ है।

हाकिम व अज़ली ने उन को मुत्तबअे सुन्नत व हाफ़िज़ लिखा है और फ़रमाया कि इल्म व अ़मल में उन के साहिबे करामत होने पर अहले बग़दाद फ़ख़्र किया करते थे 205 हिजरी में वफ़ात पाई।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

186–हज़रत यअ्क़ूब इब्ने अ़ब्दुल्लाह इब्नुलअशज (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

यह मदीना मुनव्वरा के बाशिन्दे थे लेकिन मिस्र में सुकूनत इख़्तियार कर ली थी यह सअ्द इब्ने मुसैयब व बशीर इब्ने सईद व कुरैब वग़ैरा शुयूख़े हदीस के क़ाबिले फ़ख़्र शागिर्द और इब्ने इस्हाक़ व लैस इब्ने सअ्द वग़ैरा के उस्तादे हदीस हैं इब्ने क़ासिम का बयान है कि यअ्क़ूब

बिन अ़ब्दुल्लाह इस उम्मत में बेहतरीन व सालेहीन व औलियाए कामिलीन में से थे आप समन्दरी जिहाद में मुजाहिदीन के लश्कर में शामिल हो कर जिहाद करते थे और उसी जिहाद के दौरान

122हिजरी में आप को शहादत नसीब हुई इमाम मालिक ने आप की एक करामत बयान की है कि यअ़्कूब इब्ने अ़ब्दुल्लाह ने उसी जिहाद में अपनी शहादत से पहले यह ख़्वाब देखा कि जन्नत में दाख़िल हुआ हूँ और मुझे दूध पिलाया गया है चुनाँचे जब यह ख़्वाब से बेदार हुए तो उन को दूध की कै़ हुई हालाँकि यह उस वक़्त बीच समन्दर में ऐसी जगह मस़रुफ़े जिहाद थे कि जहाँ दूर दूर तक कहीं दूध का पता नहीं था उस ख़्वाब के चन्द ही दिन के बअ़्द उसी जिहाद में आप शहीद हो गए। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

187–हज़रत यअ़्कूब इब्ने अबी सलमा माज्शून (रहमतुल्लाहितआ़ला अ़लैहि)

यह मदीना मुनव्वरा के ताबिई़ मुहद्दिस हैं और हज़रत अबूहुरैरा व इब्ने अ़ब्बास उ़मर वग़ैरा स़हाबा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के शागिर्द हैं और उनके शागिर्दों में खुद उन के दोनों स़ाहबज़ादे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ व यूसुफ़ वग़ैरा दूसरे मुहद्दिसीन हैं।

उन की एक बड़ी अ़जीब करामत यह है कि उन का इन्तिक़ाल हो गया और लोंगों ने गुस्ल देने के लिए तख़्त पर उनकी नअ़्श मुबारक को रखा और शाम के वक़्त उन के दफ़न होने का शहर में एअ़्लान भी कर दिया गया लेकिन गस्साल ने जब गुस्ल देने के लिए आप के कपड़े उतारे तो देखा कि आप के जिस्म का पसीना आप के क़द्म के नीचे से बहता है ग़स्साल ने आप को गुस्ल देने से इन्कार कर दिया चुनाँचे तीन दिन तक आप की नअ़्श मुबारक तख़्ते पर रखी रही फिर अचानक आप के बदन में हरकत हुई और आप उठ कर बैठ गए और फ़रमाया कि सत्तू लाओ चुनाँचे फ़ौरन सत्तू पानी में घोला गया और आप ने नोश फ़रमाए फिर लोगों ने सारा माजरा आप से बयान किया तो आप ने फ़रमाया कि जब मेरी वफ़ात होगई और फ़रिश्तों में मेरी रुह को सातवें आसमान तक चढ़ाया तो ऊपर से आवाज़ आई कि यह कौन है ? तो फ़रिश्तों ने जवाब दिया कि यह यअ़्कूब इब्ने अबी सल्मा माजशून हैं तो हुक्म हुआ कि उन को अभी दुनिया में इतनी इतनी

मुद्दत तक रहने दो चुनाँचे फ़रिश्तों ने मुझे आसमान से नीचे उतारा 124हिजरी में उन की वफ़ात हूई। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

188–हज़रत यूनुस इब्ने मैसरा (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबू उ़बैदा यूनूस इब्ने मैसरा दमिश्क के रहने वाले ताबिई मुहद्दिस हैं आप नाबीना थे मगर आप का हाफ़िज़ा बड़ा क़वी था आप ने हज़रत वासिला व अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर अ़ब्दुल्लाह इब्ने यस्र वग़ैरा सहाबा रदियाल्लाहु तआला अन्हुम की सोहबत व शागिर्दी में इल्मे हदीस हासिल किया आप दमिश्क़ की जामेअ् मस्जिद में दर्स देते थे आप के सैकड़ों तलामिज़ा में इमाम औज़ाई भी हैं।

अबू हातिम व बज़ाज़ व अजली व इमाम अबू दाऊद व दारेकुत्नी वग़ैरा ने आप को शामी ताबिईन की फ़िहरिस्त में लिखा और आप के सिक़ह व सालेह और बहुत बड़ा आबिद व ज़ाहिद होने की शहादत दी उन की दुआओं की मक़बूलियत और इबादत की कसरत का आम तौर पर चरचा था हसीम इब्ने इमरान का बयान है कि मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर था और यह बाद नमाज़े अस्र यूँ दुआ माँग रहे थे कि या अल्लाह! मुझे शहादत की मौत नसीब फ़रमा मैं उन की दुआ सुन कर दिल ही दिल में कहने लगा कि यह एक नाबीना आलिम हैं भला उन को कहाँ और कैसे शहादत नसीब होगी ? मगर खुदा की शान कि 132हिजरी में दमिश्क़ में एक बल्वा हुआ और उस मोक़ेअ् पर दो शख़्सों ने उन्हें शहीद कर दिया उन के क़ातिलों को जब उन के मरातिब व करामत का पता चला तो उन के दोनों क़ातिल उन की नअ्श मुबारक के पास खड़े अफ़सोस करते और ज़ार ज़ार रोते थे कि आफ़सोस हम लोगों ने इतने जैयद आलिम और बाकरामत बुज़ुर्ग को क़त्ल कर दिया (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

189–हज़रत यूनुस इब्ने उ़बैद बस़री (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

बहुत ही खुदा तरस व अअ्ला दरजे के आ़बिद व ज़ाहिद और स़ाहिबे करामत बुज़ुर्ग थे और बस़रा के मुहद्दिदसीन में इल्म व अ़मल के एअ्तिबार से मुमताज़ थे ह़सन बस़री और मुह़म्म्द इब्ने सीरीन के इल्म व अ़मल के वारिस और उन दोनों बुज़ुर्गों के मख़सूस शागिर्द थे और शेअ्बा इब्ने ह़ज्जाज ने उन के सामने ज़ानूए शागिर्दी तै किया और उन के फ़ैज़े सोहबत से ज़ाहिरी व बातिनी कमाल ह़ासिल किया।

आप फ़रमाते थे कि अगर मुझे ह़लाल कमाई का एक दिरहम मिलजाता तो मैं उस का गेहूँ ख़रीद कर अपने हाथ से सत्तू तैयार करता और उस को तमाम मरीज़ों को पिलाता तो मुझे यक़ीन है कि जो मरीज़ मेरा यह सत्तू पी लेता उस को अल्लाह तआ़ला ज़रूर शिफ़ा अ़ता फ़रमा देता 193हिजरी में आप की वफ़ात हुई।

(तब्क़ाते शेअ्रानी)

190–हज़रत यूनुस इब्ने युसूफ़ लैसी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

आप का वतन मदीना मुनव्वरा हैं और आप इल्मे ह़दीस में सईद इब्ने मुसैयब व अ़ता इब्ने यसार व सुलैमान इब्ने यसार वग़ैरा मोअ्तमद मुहद्दिदसीन की दर्स गाहों के फ़ाज़िले ह़दीस हैं आप के इल्म व फ़ज़्ल का अन्दाज़ा लगाने के लिऐ यही काफ़ी है कि इमाम मालिक व इब्ने जुरैज ने भी आप की दर्स गाह में ह़ाज़री दे कर इल्मे ह़दीस की तह़सील की है ।

आप बहुत ही पाबन्दे शरीअ़त व स़ाह़िबे इबादत व बाकरामत बुज़ुर्ग थे तक़्वा का यह आ़लम था कि एक मरतबा किसी अजनबी औ़रत पर आप की नज़र पड़गई तो आप ने यह दुआ़ माँगी कि या अल्लाह मुझे अन्धा कर दे ताकि फ़िर मुझ से यह गुनाह न हो सके चुनाँचे फ़ौरन ही आप की आँख की रौशनी जाती रही लेकिन चन्द दिनों के बअ्द जब ह़दीसों के लिखने पढ़ने की मजबूरी का ख़याल आया तो फिर यह दुआ़ माँगी कि इलाही ! मेरी आँखों की रौश्नी अ़ता फ़रमाता कि मैं ह़दीसों को लिख पढ़ सकूँ चुनाँचे यह दुआ़ भी मक़बूल

होगई और उसी दम आप की आँखों में रौशनी आगई और आप फिर बदस्तूर हदीसों की किरअत व किताबत में मशगूल होगए मक़बूलियते दुआ में आप की करामत आम तौर पर मशहूर थी (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

191–हज़रत यहया इब्ने अब्दुल मलिक (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबू ज़करिया इब्ने अब्दुलमलिक खज़ाई अस्ल में असफ़हान के रहने वाले थे मगर कूफ़े को उन्हों ने अपना वतन बना लिया था इमाम अअमश सुफ़यान सोरी वग़ैरा के शागिर्द हैं और इमाम अहमद इब्ने हमबल व इस्हाक़ इब्ने राहविया व अली इब्ने मदीनी व यहया इब्ने मुईन वग़ैरा बाकमाल मुहद्दिसीन के उस्ताद हैं ।

यह बहुत ही बारोअब व हैबत वाले शैखुल हदीस थे मगर आप पर ख़ौफ़े खुदा वन्दी का बड़ा ग़लबा था दिन रात रोते रहते थे यहाँ तक कि आपकी आँखों में हमेशा आशोबे चश्म जैसी सुर्खी रहती थी बअ्ज़ लोगों ने अर्ज़ किया कि आप की आँखों का इलाज यही है कि आप रोना छोड़ दें तो आप ने फ़रमाया कि अगर यह आँखें ख़ौफ़े खुदावन्दी से रोना छोड़ दें तो फिर इन आँखों में कौन सी भलाई बाक़ी रह जायेगी ? वाक़्दी का क़ौल है कि आप ने 186 हिजरी में वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब वग़ैरह)

192–हज़रत यहया इब्ने सलीम क़र्शी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबू मुहम्मद यहया सलीम क़र्शी का वतन असली ताइफ़ था मगर उन्होंने मक्का मुकर्रमा में मुस्तक़िल सुकूनत इख़्तियार कर ली थी उबैदुल्लाह इब्ने उमर उमरी व मूसा इब्ने उक़्बा व सुफ़यान सौरी वग़ैरा के शागिर्द हैं और उन के शागिर्दों में इमाम शाफ़िई व अब्दुल्लाह इब्ने मुबारकव वकीअ् इब्ने जर्राह व हमीदी वग़ैरा निहायत मशहूर अइम्मा हदीस हैं इमाम शाफ़िई ने फ़रमाया कि यहया इब्ने सलीम साहिबे फ़ज़ीलत वबाकरामत थे और हम लोग उन को औलिया के तबक़ा–ए–अब्दाल में शुमार करते थे 194हिजरी में उन की वफ़ात हुई

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

193–हज़रत यहया इब्ने मुईन (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

अबू ज़करिया यहया इब्ने मुईन बग़दादी का लकब''इमामुलजिरह वत्तअ़दील'' है और बिला शुब्ह उन की इल्मी जलालत और फ़ने ह़दीस व रिजाल की मअ़रिफ़त व महारत को देख कर अगर उनको ह़दीस का पहाड़ और नक़्दे रिवायत व मअ़रिफ़त रुवात का सर्राफ़ और मुहद्दिसीन का इमाम बल्कि सुल्तान कह दिया जाए तो यह एक ऐसी हक़ीक़त का इज़हार होगा जो आफ़ताब की त़रह़ रौशन है ।

उनके वालिद सूबए ईरान के अमीरे ख़िराज थे लाखों दिरहम का तर्का उन्हों ने छोड़ा था मगर उन के सपूत बेटे ने सारी रक़म इल्मे ह़दीस की ख़िदमत में ख़र्च कर डाली दस लाख ह़दीसों को उन्हों ने अपने क़लम से लिखा मुहम्मद इब्ने नस्र तिब्री का बयान है मैं यहया इब्ने मुईन की मुलाक़ात के लिए गया तो उन्होंने ह़दीस के बहुत से दफ़्तरों की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि जो ह़दीस उन दफ़तरों में न मिले समझ लो वह झूटी है।

इन्तिक़ाल के बअ़द तीस अल्मारियाँ और बीस थैले ह़दीसों के दफ़्तरों से भरे हुए आप के घर से निकले यह आप का तर्का था।

उन की इल्मी वजाहत और रोअ़ब व हैबत का यह आ़लम था कि मुहद्दिसीने ज़माना आंप का नाम सुन कर काँप उठ्ते थे हारून इब्ने मअ़रूफ़ फ़रमाते हैं कि बग़दाद में शाम से एक नामवर शैख़ुल ह़दीस तशरीफ़ लाये सुब्ह़ को सब से पहले मैं उन की ख़िदमत में पहुँचा और ह़दीस लिखने की दरख़्वास्त की आप ने फ़ौरन अपनी किताब उठाई और ह़दीसों का इम्ला शुरूअ़ करा दिया इतने में दरवाज़ा खटका आप ने पूछा कौन है ? उन्हों ने कहा अह़मद इब्ने ह़मबल शैख़ ने फ़रमाया आजाओ इमाम अह़मद इब्ने ह़मबल बैठ गये और शैख़ अपनी ह़ालत पर किताब हाथ में लिए अह़ादीस लिखवाते रहे उस के बअ़द अह़मद इब्ने दोरक़ी व अ़ब्दुल्लाह इब्ने रूमी व ज़ुहैर इब्ने ह़रब वग़ैरा बारी बारी मकान में दाख़िल हुए और शैख़ ने उन सब को बैठने का हुक्म दिया और किताब हाथ में लिए अपनी ह़ालत पर बावक़ार

बैठे बराबर अहादीस लिखाते रहे थोड़ी देर के बअ्द फिर किसी ने दरवाज़ा खटखटाया शैख़ ने पूछा कौन है ? आवाज़ आई यह्या बिन मुईन नाम सुनते ही शैख़ पर लर्ज़ा त़ारी हो गया दोनों हाथ काँपने लगे और किताब शैख़ के हाथ से गिर पड़ी!आप इल्मे ह़दीस में अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक व सुफ़यान इब्ने अ़ैनिया व वकीअ् इब्ने जर्राह़ व गुन्दर व यह़या इब्ने सईद अलक़तान व अ़ब्दुर्रहमान इब्ने मेह्दी व अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ वग़ैरा हज़ारों मुह़द्दिसीन के शागिर्द और इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम व इमाम अ़बू दाऊद व इमाम अबू ज़ुरआ़ वग़ैरा हज़ारों मुह़द्दिसीन के उस्ताद हैं आप ह़दीस के रावीयों पर स़ाफ़ स़ाफ़ बे लाग तब्स़रा फ़रमाते थे और रिवायतों पर बहुत ही ठोस नक़्द व तब्स़रा करते थे और आप के जिरह व तअ्दील में इतनी ह़क़्क़ानियत व स़दाक़त और इस क़द्र यकीने कामिल होता था कि हारून इब्ने बशीर रावी का बयान है कि मैंने अपनी आँखों से देखा कि यह़या इब्ने मुईन क़िब्ला रू बैठे दोनों हाथों को उठा कर बलन्द आवाज़ से यह दुआ़ करते थे कि ऐ अल्लाह! अगर मैंने किसी ऐसे आदमी को झूठा कहा हो जो कज़्ज़ाब न हो तो मुझे तेरी मग़फ़िरत नसीब न हो आप के बारे में हर कूचा व बाज़ार में एलानिया कहा जाता था कि यह़या इब्ने मुईन वह शख़्स हैं जो हुज़ूर अ़लैहिस्स़लातु वस्सलाम की ज़ात पाक से झूट को दफ़अ् फ़रमाते हैं और छाँट छाँट कर झूटी ह़दीसों को निकाल फेंकते हैं।

ख़त़ीबे बग़दादी ने आप के बारे में फ़रमाया कि यह़या इब्ने मुईन इमामे रब्बानी व आ़लिमे ह़क़्क़ानी हैं इब्ने हब्बान व अ़जली वग़ैरा ने उन को दीनदार व स़ाह़िबे फ़ज़ीलत व मुक़तदा व नक़्क़ाद ह़दीस व अअ्लमु व स़ाह़िबे मअ़रिफ़त तह़रीर फ़रमाया अबूबक्र इब्ने ख़ैसमा का क़ौल है कि यह़या इब्ने मुईन 158 हिजरी में बग़दाद के अन्दर पैदा हुऐ और 233हिजरी में मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पाई उन को ख़िदमते ह़दीस के तुफ़ैल में ख़ुदावन्दे आ़लम ने यह करामतें अ़ता फ़रमाई कि उन को उसी तख़्त पर गुस्ल दिया गया जिस तख़्त पर हुज़ूर सर

कारे दो आ़लम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व स़ल्लम को गुस्ल दिया गया था और उन का जनाज़ा उसी मुक़द्दस चारपाई पर उठाया गया जिस चार पाई पर ह़ुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आखि़री वक़्त में आराम फ़रमाया था और जन्नतुलबक़ीअ़ में आप की क़ब्र मुबारक बनी।

आप की करामतों में एक बहुत बड़ी करामत यह है कि आप की वफ़ात के दिन बग़दाद के एक बुजुर्ग ने यह ख़्वाब देखा कि हुजूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम स़ह़ाबा की एक बहुत बड़ी जमाअ़त के साथ तशरीफ़ ले जा रहे हैं उन बुजुर्ग़ ने अ़र्ज़ की कि या रसूलल्लाह! इस वक़्त हुजूर इतनी बड़ी जमाअ़त के साथ कहाँ तशरीफ़ ले जारहे हैं?तो हुज़ूर अ़लैहिस्सलात वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं यह़्या इब्ने मुईन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के लिये जारहा हूँ यह वह शख़्स़ था जो मेरी ह़दीसों से झूट को दफ़्अ़ करता था ।

जैश इब्ने मुबश्शिर ने बयान फ़रमाया कि मैंने यह़्या इब्ने मुईन को वफ़ात के बअ़्द ख़्वाब में देखा तो मैंने पूछा कि अल्लाह तआ़ला ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? तो आप ने जवाब दिया कि मेरी मग़फ़िरत फ़रमादी और मुझ को दो मरतबा अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाया और तीन सौ हूरें मेरे निकाह़ में आईं। (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

194–ह़ज़रत यह़्या इब्ने सईद क़त्तान(रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि)

ह़ाफ़िज़ अबू सईद यह़्या इब्ने सईद क़त्तान बस़री का शुमार उन नामवर मुह़द्दसीन में है जो ह़दीसों की जाँच पड़ ताल और रावीयों के परखने में इमामत का दरजा रखते हैं इमाम सुफ़यान सौरी उन की कुव्वते ह़ाफ़िजा और ठोस इल्मी क़ाबिलियत पर तअ़ज्जुब फ़रमाते थे अइम्मा–ए–ह़दीस उन के क़ौल को हुज्जत बनाते थे और फ़रमाते थे कि जिस रावी या ह़दीस को यह़्या इब्ने सईद ने छोड़ दिया उस को हम सब ने छोड़ दिया।

आप के असातिज़ा–ए–ह़दीस की तअ़्दाद बहुत ज़्यादा है जिन में

सुलैमान तैमी व यह़्या इब्ने सईद अन्सारी व इमाम जअ़्फ़र सादिक़ व इमाम अअ़्मश व इमाम औज़ाई व इमाम मालिक व सुफ़यान सौरी वग़ैरा अकाबिर मुह़द्दिसीन हैं और आप के ह़ल्क़ा–ए–तदरीस से इल्मी फ़ैज़ पाने वाले तलामिज़ा भी हज़ारों की तअ़्दाद मैं हैं जिन में यह़या इब्ने मुईन व इमाम अह़मद इब्ने ह़मबल व अ़ब्दुर्रहमान इब्ने मेहदी व अ़ली इब्ने मदीनी व अबूबकर इब्ने अबी शीबा इस त़रह़ चमकते हैं कि जिस तरह़ मोतीयों के हार में दुर्रे शहवार हैं ।

आप बहुत बारोअ़्ब व स़ाह़िबे वक़ार मुह़द्दिस थे इस्ह़ाक़ इब्ने इबराहीम कहते हैं कि आप नमाज़े अ़स्र के बअ़्द मस्जिद के सुतून से टेक लगा कर बैठ जाते थे और इमाम अह़मद इब्ने ह़मबल व यह़या इब्ने मुईन व अ़ली इब्ने मदीनी वग़ैरा मुह़द्दिसीन सामने ख़ड़े ख़ड़े सवाल व जवाब करत थे आप के रोअ़्ब व हैबत से किसी को बैठने की हिम्मत नहीं पड़ती थी !

आप की त़बीअ़त में क़दरे मिज़ाज व खुश तब्ई भी थी मगर उम्र भर क़हक़हा लगा कर नहीं हँसे सिर्फ़ मुस्कुरा देने की आ़दत थी तक़्वा का यह आ़लम था कि इमाम बिन्दार का क़ौल है कि मैं बीस बरस तक आप की ख़िदमत में ह़ाज़िरी देता रहा मगर कभी इस मुद्दत में आप से कोई गुनाह का काम होते हुए मैंने नहीं देखा।

आप बहुत ज़्यादा इबादत गुज़ार भी थे आप की इबादत की करामत में से यह भी है कि बीस साल तक बिलानाग़ा आप हर रात नमाज़े तहज्जुद में एक ख़त्म क़ुर्आन मजीद पड़ते रहे और चालीस बरस तक नमाज़ ज़ुहर के लिए ज़वाल आफ़ताब से पहले मस्जिद में पहुँचते रहे।

आप की वफ़ात से पहले किसी बुज़ुर्ग ने यह ख़्वाब देखा था कि मैदाने मह़शर में कोई पुकार रहा है कि यह़या इब्ने सईद के लिए अमान है ।

इसी त़रह़ ज़ुहैर इब्ने नईम बाबी का बयान है कि मैंने ख़्वाब में देखा कि यह़या इब्ने सईद के बदन पर एक कुर्ता है जिस पर यह

इबारत लिखी हुई हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ كِتَابٌ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ بَرَاءَةٌ لِيَحْيٰى بْنِ سَعِيْدِ الْقَطَّانِ مِنَ النَّارِ.

(यअ़नी खुदा की त़रफ़ से यह लिखी हुई तह़रीर है कि यह़या इब्ने सईद क़त्तान के लिए जहन्नम से निजात है)

120 हिजरी में आप की विलादत और 198 हिजरी में वफ़ात हूई

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

195—हज़रत यज़ीद बिन हारून वासित़ी(रह़मतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

यह हज़रत इमाम अबू ह़नीफा रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि के बड़े जलीलुलक़द्र व अक़ीदत मन्द शागिर्दों में हैं ह़ाफ़िज़ ज़हबी ने उन का बहुत ही मुफ़स्सल तज़किरा लिखा जिस में उन को ह़ाफ़िज़ व मुक़तदा व शैखुलइस्लाम वग़ैरा के अल्क़ाब से ज़िक्र किया हैं अ़ली इब्ने मदीनी का क़ौल है कि मैं ने यज़ीद इब्ने हारून से बड़ कर किसी को ह़ाफ़िज़े ह़दीस नहीं देखा अबुबक्र इब्ने अबी शीबा कहते हैं कि यज़ीद इब्ने हारून से ज़्यादा किसी को हम ने ह़िफ़ज़े ह़दीस में कामिल नहीं पाया यह़या इब्ने अबी त़ालिब का उन के बारे में यह बयान है कि मैंने बग़दाद में उन से ह़दीसों का सिमाअ़ किया है उन के दर्स में सत्तर हज़ार ह़ाज़ेरीन का मज़मअ़ होता था ।

अ़ली इब्ने आ़सिम से मन्कूल है कि यज़ीद इब्ने हारून कस़रते इबादत में स़ाह़िबे करामत थे पूरी रात हमेशा नमाज़ नवाफ़िल पड़ते थे और तक़रीबन चालीस साल तक इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा करते रहे आप की आँखें बड़ी खुबसूरत थीं मगर ख़ौफ़े इलाही से दिन रात इस क़दर ज़्यादा रोये कि मुस्तक़िल तौर पर आ शोबे चश्न की शिकायत पैदा हो गई यहाँ तक कि आँख़ों की खुबसूरती व रौशनी दोनों जाती रहीं।

आप का सने विलादत 117 हिजरी या 118 हिजरी हैं आप शहर वासित़ में पैदा हुऐ लेकिन तह़स़ीले इल्म के बअ़द एक मुद्दत तक बग़दाद में ह़दीस का दर्स देते रहते फिर आख़िरी उ़म्र में अपने वतन

वासित चले गये और 206 हिजरी या 217 हिजरी में वासित ही में वफ़ात पाई।

(तज़किरतुलहुफ़्फ़ाज़, तहज़ीबुत्तहज़ीब व तब्क़ाते शेअ्रानी व मनाक़िबे समीरी)

196–हज़रत यह्या इब्ने यह्या इब्ने बुकैर (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

आपकी कुन्नियत अबूज़करिया और वतन नीशापुर है आप इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम व इमाम तिर्मिज़ी व इमाम निसाई वग़ैरा इमामों के शैख़े हदीस हैं और आप ने इमाम मालिक व लैस इब्ने सअ्द व अ़ब्दुल्लाह इब्ने नमीर व अ़ब्दुर्रहमान इब्ने अबीज़्ज़नाद वग़ैरा सैकड़ों मुहद्दिसीन से अहादीस की रिवायत की हैं।

आप बड़े हसीन व खुबसूरत व बेहतरीन फ़ाज़िले हदीस व साहिबे ख़ैर थे और इल्मी फ़ज़ीलत व दीनी वजाहत और इबादत व करामत के लिहाज़ से बिला शुबह अपने ज़माने के सरदार मुहद्दिसीन व पेशवा–ए–उ़लमा थे इमाम अहमद बिन हम्बल व यह्या बिन मुईन वग़ैरा ने आप के मुत्तक़ी व सादिक़ व सिक़ा होने की शहादत दी और आम तौर पर मुहद्दिसीन उन को ريحانة اهل العراق (अहले इराक़ का फूल) कहा करते थे।

मुहम्मद इब्ने असलम तूसी का क़ौल है कि मैं ख़्वाब में हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ तो मैंने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मैं किन किन मुहद्दिसों की हदीसों को लिखूँ ? तो इरशाद फ़रमाया कि तुम यह्या इब्ने यह्या की बयान की हुई तमाम हदीसों को लिख लो।

उन की एक बड़ी करामत यह है कि उन के जनाज़े में बिग़ैर किसी एअ्लान के एक लाख मुसलमान शरीक हुए अबू अली नीशापूरी कहते हैं कि मैं एक बहुत बड़े ग़म में परेशान हाल था उसी हालत में सो गया तो हुज़ूर रहमतुल लिलआ़लमीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लाम ने ख़्वाब में तशरीफ़ लाकर मुझे बशारत दी कि तुम यह्या की क़ब्र पर हाज़ेरी दो और वहाँ इस्तिग़फ़ार करने के बअ्द दुआ़ करो तो तुम्हारी हाजत पूरी हो जायेगी चुनाँचे सुबह सवेरे मैंने ऐसा ही

किया तो मेरी हाजत पूरी हो गई और सारा ग़म दूर हो गया।

आप इमाम अहमद इब्ने हमबल से बड़ी मुहब्बत फ़रमाते थे चुनाँचे आप ने वसीयत फ़रमाई थी कि मेरे इन्तिक़ाल के बअ्द मेरे तमाम कपड़े इमाम अहमद इब्ने हमबल को दे दिए जायें माह सफ़र 220 हिजरी को नीशापुर में आप ने वफ़ात पाई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)।

197–हज़रत यूसुफ़ इब्ने यहया मिस्री (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैहि)

अबू यअ्कूब यूसूफ़ इब्ने यहया क़र्शी मिस्री का लक़ब मशहूर इमाम बवैती है यह हज़रत इमाम शाफ़िई अ़लैहिर्रहमा के निहायत मख़सूस व महबूब शागिर्द हैं और उन के शागिर्दों में रबी इब्ने सुलैमान मुरादी व अबुलवलीद इब्ने अबिल जारुद मक्की व अहमद इब्ने मन्सूर मावी वग़ैरा मशहूर मुहद्दिसीन हैं।

हज़रत इमाम शाफ़िई की बारगाह में इस क़दर मुक़र्रब व मोअ्तमद थे कि इमाम ममदूह फ़रमाया करते थे कि इमाम बवैती मेरी ज़ुबान हैं जो कुछ उन की ज़ुबान से सुनो उस को मेरा क़ौल सम्झो यह मिस्र के बहुत बड़े आबिदों में से थे अबुलवलीद फ़रमाते हैं कि मैं इमाम बवैती का पड़ोसी था मैं रात के किसी हिस्से में भी जागता तो उन को नमाज़ या तिलावते कुर्आन मजीद में मशग़ूल पाता रबीई इब्ने सुलैमान का बयान है कि हमेशा और हर वक़्त उन के होंट ज़िकरे इलाही से हिलते ही रहते थे।

हज़रत इमाम शाफ़िई अ़लैहिर्रहमा ने बरसों पहले अपने कश्फ़ से यह फ़रमाया था कि ऐ बवैती! मैं देख रहा हूँ तुम्हारी मौत लोहे के अन्दर जकड़े हुए होने की हालत में होगी चुनाँचे ऐसा ही हुआ कि ख़लीफ़ा मोअ्तसिम बिल्लाह के ज़माने में जब मसअ्ला ख़ल्के कुर्आन का फ़ितना खड़ा हुआ तो इमाम अहमद इब्ने हमबल की तरह यह भी गिरफ़्तार कर के लोहे की हथ कड़ी और बेड़ी पहना कर

मिस्र से बग़दाद लाए गये और क़ैद कर दीये गए। आप जेल ख़ाने में हर जुमे को गुस्ल फ़रमाते और कपड़े पहन कर जेल के फाटक तक तशरीफ़ ले जाते तो जेल का दारोग़ा आप को वापस लौटा देता आप यह कह कर आते कि या अल्लाह! तू जानता है कि मैं तेरे दाई (मुअज़्ज़िने जुमा)की पुकार पर हाज़िर हो गया हूँ मगर मस्जिद की हाज़री से मजबूर हूँ।

आप ख़ल्के कुर्आन के फ़ितने में इमाम अहमद इब्ने हमबल की तरह हक़ पर साबित क़दम रहे और लोहे की भारी भारी हथकड़ी व बेड़ी पहने हुए जेल ख़ाने में बरसों मसरूफ़े इबादत रहे और उसी हालत में 232हिजरी में जेल ख़ाने के अन्दर लोहे की हथकड़ी व बेड़ी पहने हुए वफ़ात पाई और हज़रत इमाम शाफ़िई अलैहिर्रहमा की पेशीन गोई हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हुई कि ऐ बवैती! तुम्हारी मौत लोहे के अन्दर होगी।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

198—हज़रत इब्ने यहया इब्ने उस्मान इब्ने सईद (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

उन की कुन्नियत अबू सुलैमान या अबू ज़करिया है यह हम्स के रहने वाले थे अपने वालिद उस्मान इब्ने सईद व मुईन इब्ने ईसा व बक़ीयह इब्ने अलवलीद वग़ैरा के तलामिज़ा और इमाम अबू दाऊद व इमाम निसाई व इमाम इब्ने माजा वग़ैरा के शूयुख़ में से हैं।

इमाम अहमद इब्ने हमबल उन की बेहद तअ्ज़ीम फ़रमाते थे सईद इब्ने वाज़ेह फ़रमाते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि कोई शख़्स यह एलान कर रहा है कि अगर इस वक़्त रुऐ ज़मीन पर अब्दाल में से कोई बाक़ी हैं तो वह यहया इब्ने उस्मान हमसी हैं ''अब्दाल''औलिया के मरातिब से एक बहुत बलन्द मरतबा है 255 हिजरी में आप ने दुनिया से रेहलत फ़रमाई

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

199–हज़रत यूनुस इब्ने अब्दुलअअ्ला (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप का वतन मिस्र है आप ने हज़रत इमाम शाफ़िई व इब्ने वहब व सुफ़यान इब्ने अैनिया व मुईन इब्ने ईसा वग़ैरा मुहद्दिसीन की दर्स गाहों में इल्मे हदीस पढ़ा और आप के दरया–ए–इल्म से सैराब होने वालों में इमाम मुस्लिम, निसाई, व इब्ने माजा वग़ैरा सैकड़ों बाकमाल व नामवर मुहद्दिसीन हैं।

आप फ़ने क़िरअ्त के भी बहुत बड़े माहिर और इमामे वक़्त थे और उस फ़न में क़ारी वर्श के माया नाज़ शागिर्द थे चुनाँचे इब्ने जरीर तिबरी वग़ैरा ने फ़ने क़िरअ्त आप ही से सीखा था आप तर्क व तजरीद और ज़ुहद व इबादत में भी यकताऐ ज़माना थे उम्र भर फ़क़ीराना ज़िन्दगी बसर फ़रमाई रियाज़त व मुजाहिद और तरह़ तरह की नफ़ली इबादतों में मस़रुफ़ रहे आप की इल्मी व अमली जलालत व वजाहत का यह आलम था कि यहया इब्ने हस्सान मुहद्दिस आप को इस्लाम का सुतून कहा करते थे और तमाम उलमा व क़ुज़ा व मुहद्दिसीन आप के इल्मी तबहहूर के सामने सरनिगूँ रहते थे।

अअ्ला दरजे के मुस्तजाबुददअ्वात व साहिबे करामत थे मिस्र में आम तौर पर यह बात मशहूर थी कि आप की दुआओं से मरीज़ों को शिफ़ा हासिल होती है चुनाँचे हज़ारों मरीज़ हर वक़्त आप के आस्ताने पर हाज़िर रहते थे और आप की दुआओं से शिफ़ायाब होते थे।

ज़िल्हिज्जा 170 हिजरी में आप की विलादत हुई और 2 रबीउल आख़िर 264 हिजरी को पीर के दिन आप की मिस्र में वफ़ात हूई (तहज़ीबुत्तहज़ीब)

200–हज़रत यअ्कूब ईब्ने सुफ़्यान इब्ने जव्वान (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि)

आप फ़ारस के रहने वाले थे और आप ने एक हज़ार मशाइख़ से हदीसें लिखीं और हदीस की तलब मैं तीस बरस तक सफ़र करते रहे जिन में उन्नीस बरस तक तो सिर्फ़ दमिश्क़ व हम्स व फ़िलस्तीन का दौरा फ़रमाते रहे आप के हज़ारो शागिर्दों की सफ़ में इमाम तिर्मिज़ी व इमाम निसाई जैसे बलन्द मशाइख़े हदीस भी हैं हाकिम व इब्ने हब्बान वग़ैरा ने आप को इमामे हदीस व साहिबे तक़वा व मुत्तबेअ़ सुन्नत व कसीरुल इबादत तहरीर किया और आप के इल्म व फ़ज़्ल की शहादत दी आप की एक बड़ी अजीब करामत यह है जो खुद आप ने बयान फ़रमाई कि एक मरतबा सफ़र की हालत में मेरा तोशा बिल्कुल ख़त्म हो गया तो मैं दिन रात हदीसें लिखने लगा ताकि जल्द से जल्द हदीसें लिख कर अपने वतन में चला जाऊँ एक मरतबा जाड़े की रात में हदीसों की तहरीर में मशगूल था कि नागहाँ मेरी आँखों मे पानी उतर आया और मैं बिल्कुल ही नाबीना हो गया और मैं अपनी इस मुसीबत पर रोने लगा और रोते रोते सो गया तो एक दम हुजूर सरकारे दो आ़लम स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम ने मुझे अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाया और मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ यअ्कूब! तुम क्यों रो रहे हो ? तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी आँख़ों की रौशनी जाती रही इस लिए इस रन्ज व ग़म में रो रहा हूँ कि मैं अब हदीसों को लिखने से महरुम हो गया तो हुजूर अ़लैहिस्स़लातु वस्सलाम ने मुझे अपने क़रीब बुला कर निहायत शफ़क़त के साथ मेरी आँखों पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और कुछ पढ़ कर आँखों पर दम फ़रमाया इस के बअ्द जब मैं बेदार हुआ तो मेरी आँखों में रौशनी आगई और मैं फिर हदीसों के लिखने में मश्गूल हो गया।

मुहद्दिस अब्दान इब्ने मरूज़ी का बयान है कि मैंने यअ़कूब इब्ने सुफ़यान को उन की वफ़ात के बअ़द ख़्वाब में देखा तो उन से पूछा कि खुदावन्द करीम ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया? तो उन्होंने जवाब दिया कि मेरी बख़शिश हो गई और अल्लाह तआ़ला ने मुझे हुक्म फ़रमाया है कि तुम जिस त़रह दुनिया में ह़दीसें सुनाया करते थे उसी तरह अब आसमान में भी ह़दीसें सुनाया करो इब्ने अबी ह़ातिम का क़ौल है कि 277 हिजरी में आप की वफ़ात हुई।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब)

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ وَرَضُوا عَنْہُ اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنَا اِتِّبَاعَ سُنَنِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَاحْشُرْنَا فِیْ زُمْرَۃِ عِبَادِکَ الْمُخْلِصِیْنَ الْکَامِلِیْنَ بِجَاہِ حَبِیْبِکَ وَرَسُوْلِکَ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی وَسَلَّمَ عَلٰی خَیْرِ خَلْقِہٖ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ خَاتِمِ النَّبِیِّیْنَ وَعَلٰی جَمِیْعِ الْاَنْبِیَاءِ وَالْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَعُلَمَاءِ شَرِیْعَتِہٖ وَاَوْلِیَاءِ طَرِیْقَتِہٖ اَجْمَعِیْنَ۔ اٰمِیْنَ

عبدالمصطفیٰ الاعظمی عفی عنہ
خادم الحدیث دارالعلوم مسکینیہ
دھوراجی (گجرات) یکم شعبان ۱۳۰۵ھ

हिन्दी तर्जमा

मुहम्मद अमीनुल क़ादरी बरेलवी

मोबाइल –09219132423